

दसवेऽध्यायं

--

उत्तर-भक्त्यर्पाणि

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

आगम-सुत्त ग्रन्थमाला

ग्रन्थ-१

दसवेआलियं
तह
उत्तरज्भयणाणि

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

सम्पादक
मुनि नथमल
(निकाय-सचिव)

प्रकाशक
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
(आगम-साहित्य प्रकाशन समिति)

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट

कलकत्ता-१

प्रद्यम्ब-त्र्यवल्पापक :

श्रीचन्द्र रामपुरिया, बी०कॉम०, बी०एल०

मयोजक,

खागन-साहित्य प्रकाशन समिति

पाठक

आदर्श साहित्य संघ

नूर (राजस्थान)

अयं-सहायक

सरावगी चेरिटेबल फण्ड

७, थोजर राऊडन स्ट्रीट,

हल्द्वत्ता

प्रकाशन-तिथि

मर्गादा-महोत्सव

माघ शुदी मत्तमी, म० २०२३

प्रति-मन्त्रा

१,१०० /

पृष्ठ-संख्या

२३२

ग्रन्थानुक्रम

समर्पण

अन्तस्तोष

प्रकाशकीय

सम्पादकीय

भूमिका

हिन्दी

अंप्रेजी

विषयानुक्रम

दसवेआलियं : विषय-सूची

उत्तररज्जयणं · विषय-सूची

दशवैकालिक

१-८४

उत्तराध्ययन

८५-३४९

परिशिष्ट :

१-३४०

(१) शब्दानुक्रम दशवैकालिक : पृ० १

(२) शब्दानुक्रम उत्तराध्ययन : पृ० ९१

(३) नामानुक्रम : उत्तराध्ययन पृ० ३३१

शुद्धि और आपूरक पत्र-१ (मूलपाठ)

३४१

शुद्धि और आपूरक पत्र-२ (पाठान्तर)

३४४

शुद्धि और आपूरक पत्र-३ (उत्तराध्ययन शब्द-सूची)

३४९

ग्रन्थानुक्रम

समर्पण

अन्तस्तोष

प्रकाशकीय

सम्पादकीय

भूमिका

हिन्दी

अंग्रेजी

विषयानुक्रम

दसवेआलियं : विषय-सूची

उत्तररञ्जयणं विषय-सूची

दशवैकालिक

१-८४

उत्तराध्ययन

८५-३४९

परिशिष्ट :

१-३४०

(१) शब्दानुक्रम : दशवैकालिक : पृ० १

(२) शब्दानुक्रम : उत्तराध्ययन : पृ० ९१

(३) नामानुक्रम : उत्तराध्ययन : पृ० ३३१

शुद्धि और आपूरक पत्र-१ (मूलपाठ)

३४१

शुद्धि और आपूरक पत्र-२ (पाठान्तर)

३४४

शुद्धि और आपूरक पत्र-३ (उत्तराध्ययन शब्द-सूची)

३४९

समर्पण

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाण पुव्व ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल सघ मे मेरे मन मे ।
हेतुभूत श्रुत-सम्पादन मे,
काकुगणी को विमल भाव से ॥

विनयावनत

आचार्य तुलसी

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है, उस माली का जो अपने हाथों से उस और सिंचित द्रुम-निकुज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन-आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। सकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में सलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। सक्षेप में वह सविभाग इस प्रकार है :—

सम्पादक	:	मुनि नथमल (निकाय-सचिव)
सहयोगी	:	मुनि दुलहराज
पाठ-सशोधन	„	: मुनि सुदर्शन
	„	: मुनि मधुकर
	„	: मुनि हीरालाल
शब्दानुक्रम	„	: मुनि श्रीचन्द्र
	„	: मुनि हनुमानमल (सरदारगहर)
विषयानुक्रम	„	: मुनि रूपचन्द्र

सविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिन ने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना सविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

—आचार्य तुलसी

प्रकाशकीय

परम श्रद्धास्पद पूज्य आचार्य श्री तुलसी की प्रकल्पित आगम-सम्पादन की रूपरेखा में छः ग्रन्थ-मालाओं की योजना है। योजना का रूप सम्पादकीय में दिया हुआ है। “आगम-सुक्त ग्रन्थ-माला” इन ग्रन्थ-मालाओं में से एक है। इस ग्रन्थ-माला में आगमों के संशोधित मूलपाठ पाठान्तर सहित प्रस्तुत किये जायेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक उक्त ग्रन्थ-माला का प्रथम ग्रन्थ है। इसमें दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—इन दोनों मूल-सूत्रों के संशोधित पाठ-मात्र प्रकाशित हो रहे हैं। संशोधित पाठों के साथ-साथ नीचे पाठ-टिप्पणों में पाठान्तर दिये गये हैं।

प्रथम परिशिष्ट में दशवैकालिक शब्द-सूची एवं दूसरे परिशिष्ट में उत्तराध्ययन शब्द-सूची विस्तृत रूप में दी गई है।

उत्तराध्ययन में प्रसंगवश उल्लिखित व्यक्ति, देश, नगर, पर्वत, समुद्र, नदी, उद्यान, मित्रका, आवाग, शस्त्र, धातु, रत्न, वनस्पति, प्राणी आदि के नामों की सूची तीसरे परिशिष्ट के अन्तर्गत दी गई है।

अन्त में तीन शुद्धि और आपूरक पत्र हैं, जिनमें मूलपाठ, पाठान्तर और शब्द-सूची विषयक सुझावों की भूलों का संशोधन उपस्थित करते हुए तद्विषयक जो नई सामग्री प्राप्त हुई, वह दे दी गई है।

दोनों आगमों की पद-विभक्त विस्तृत विषय-सूची ग्रन्थों के महत्त्वपूर्ण विषयों को निकालने में सहायक होगी।

भूमिका और सम्पादकीय संक्षेप में दोनों सूत्रों का सुन्दर परिचय दे देते हैं।

इस आगम-सुक्त ग्रन्थ-माला का मूल उद्देश्य विद्वानों के सम्मुख मूल आगमों के संशोधित पाठ भावी शोध-खाज के लिए प्रस्तुत करना है। इसी दृष्टि में प्रस्तुत ग्रन्थ-माला का यह प्रथम ग्रन्थ आपके हाथों में है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का भार नमिति की ओर से मरदारशहर-निवासी श्रीमान् मदनचन्द्रजी गोठी काँ नौपा गया था। निरन्तर अन्वेषण करने पर भी कहीं

जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा के अन्तर्गत गठित समिति के द्वारा आगम-साहित्य प्रकाशन का कार्य ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा है, त्यों-त्यों मेरे हृदय में आनन्द का पारावार नहीं है। मैं तो अपने जीवन की एक माध ही पूरी होते हुए देख रहा हूँ।

आचार्य श्री एक युग-पुरुष हैं। जहाँ एक ओर जन-मानस की आध्यात्मिक और नैतिक चेतना की जागृति के व्यापक आन्दोलनों में उनके अमूल्य जीवन-क्षण लग रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर भारतीय श्रमण-साहित्य और मस्कृति के मूल संदेश को जन-व्यापी बनाने का उनका उपक्रम भी अनन्य है। उनकी ओर से हो रही भारतीय साहित्य और मस्कृति की अमूल्य सेवाएँ हमारी कृतज्ञता को महज स्फुरित करती हैं।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति

[जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा]

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता-१

दि० १ फरवरी, १९६७

श्रीचन्द्र रामपुरिया

मयोजक

है? बड़ी बात यह है कि आचार्य श्री ने उसमे प्रोण-सञ्चार मेरी और मेरे सहयोगी साधु-साध्वियों की असमर्थ अगुलियों द्वारा कराने का प्रयत्न किया है। सम्पादन-कार्य मे हमे आचार्य श्री का आशीर्वाद ही प्राप्त नहीं है किन्तु मार्ग-दर्शन और सक्रिय योग भी प्राप्त है। आचार्यवर ने इस कार्य को प्राथमिकता दी है और इसकी परिपूर्णता के लिए अपना पर्याप्त समय दिया है। उनके मार्ग-दर्शन, चिन्तन और प्रोत्साहन का सबल पा हम अनेक दुस्तर धाराओ का पार पाने मे समर्थ हुए हैं।

आगम-सम्पादन की रूपरेखा

आगम साहित्य के अध्येता दोनो प्रकार के लोग हैं—विद्वद्-जन और साधारण-जन। दोनो को दृष्टि मे रख कर हमने इस कार्य को छह ग्रन्थ-मालाओ मे ग्रथित किया है। उसका आकार यह है :—

- १ आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि होंगे।
- २ आगम ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के मूलपाठ, पाठान्तर, सस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम या सूत्रानुक्रम आदि होंगे।
- ३ आगम-अनुसन्धान ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के टिप्पण होंगे।
- ४ आगम-अनुशीलन ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के समीक्षात्मक अध्ययन होंगे।
- ५ आगम-कथा ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमो मे सम्बन्धित कथाओ का मकलन होगा।
- ६ वर्गीकृत आगम ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के वर्गीकृत और सक्षिप्त सम्करण होंगे।

शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसलिए उन्हें पाठान्तर में पृथक् रखा है।

अध्ययन-१

स्थल	मूलपाठ	शब्दान्तर और रूपान्तर	प्रति
१।१	उक्किट्ठ	उक्कट्ठ	र,ग,घ,अच्
२।२	आवियइ	आवियती	अच्,जिच्
३।१	मुत्ता	मुक्का	अच्
३।२	साहुणो	साहवो	अच्
४।३	अहागडेमु	अहागडेहि	अच्
४।३	रीयति	रीयते	घ,जिच्
४।४	पुप्फेसु	पुप्फेहि	अच्,जिच्
४।४	भमरा	भमरो	र
५।१	महु °	मधु °	अच्,जिच्

अध्ययन-२

२।२	इत्थीओ	इत्थिओ	ख
२।४	चाइ	चागि	अच्
४।१	पेहाए	पेहाइ	क,ख
४।२	निस्सरई	नीसरई	अच्,जिच्
४।४	विणएज्ज	विणइज्ज	क,ख,ग
५।१	आयावयाही	आयावयाहि	अच्,जिच्
५।१	सोउमल्ल	सोगमल्ल, सोगुमल्ल	क,ख,ग,जिच्,घ
५।२	कमाही	कमाहि	जिच्,अच्
६।३	वन्तय	वतग	अच्
६।३	भोत्तु	भुत्तु	ग
६।१	रायस्स	राइस्स	ग
६।२	दच्छसि		
१०।२	सजयाए		

१११	करेन्ति	करति, करिति	ख, ग, क, घ
११३	भोगेसु	भोगेहि	अचू

अध्ययन-३

१११	सुद्विअप्पाण	सुद्वितप्पाण	अचू
२१३	राइभत्ते	रायभत्ते	ग, जिचू
४११	नालीय	नालीए, णालीया	ख, अचू
४१३	पाणहा	पाहणा	ख, अचू, जिचू
५१३	निसेज्जा	निसज्जा	ख
६१३	तत्तानिब्बुड-भोइत्त	तत्तानिब्बुड-भोतीत	ख, अचू
६११	धूवणत्ति	धूवणित्ति	ख
६१२	वत्थीकम्म	वत्थीकम्म, पत्थीकम्म	ख, अचू
६१४	गायाभंग	गायभंग	जिचू
१२११	गिम्हेसु	गिम्हासु	अचू
१२१३	० सलीणा	० सल्लीणा	जिचू
१३११	० रिऊ	० रिवू	अचू
१३१२	धुय ०	धूअ ०	ख, ग
१३१२	जिइदिया	जियदिया	ग
१४१२	दुस्सहाइ	दूसहाइ	जिचू
१४१३	इत्थ	एत्थ	क

अध्ययन-४

सू० ६	अभिक्कत	पडिक्कत अभिक्कत पडिक्कतं	ख
„ १०	दड	डड	अचू, जिचू
„ १०	समारभेज्जा	समारभेज्जा	अचू, जिचू
„ १०	करत	करेत	अचू
„ ११	गरिहामि	गरहामि	अचू
„ १६	राइ	राय	क

छह

सू० १८	किर्लिचेण	कलिचेण	ग,ग,घ,जिचू
,, १८	सलागाए व सलाग	सिलागाए व सिलाग	ग,ग
,, १९	ससिणिद्ध	ससणिद्ध ससिणद्ध	क, अन्,र
,, २१	विहुयणेण	विहुवणेण	अन्, जिचू
,, २३	पिपीलिय	पिपीलिय	जिचू
,, २३	हत्थसि वा	हत्थेमि वा	अन्,पा
१०।४	नाहिइ	नाहीइ,नाही	ग,ग,घ
१२।१	याणाइ	याणेइ,याणइ	ग,अन्
१२।४	नाहिइ	नाहीइ, नाहीय	क,ग,घ,ग
१३।१	वियाणाइ	वियाणेइ,वियाणाउ	ग,अन्
१६।३	निव्विदए	निव्विदिय,निव्विदउ	क,ग,अन्
२५।४	हवइ	भवइ	क,घ
२६।३	पहोइस्स	पहोयस्स	ग
२६।२	० साइस्स	० सायस्स	र
२६।४,२७।४	सुग्गइ	सुगइ, सोग्गउ	घ,अन्, जिचू
२७।३	जिण	जिणि	क,घ

अध्ययन-५(१)

३।३	वज्जतो	वज्जेतो	क,ग,अन्, जिचू
४।१	ओवाय	उवाय	ख
४।२	विज्जल	विजल	हाटी, जिचू
८।२	पडतीए	पडतिए	अन्
१०।१	अणायणे	अणाययणे	अन्
१३।३	इदियाणि	इदियाइ, इदियाय	क,ग
१६।२	रहस्सा	रहसा	क,ख,ग,हाटी
२३।४	अयपिरो	अयपुरो	अन्
२५।३	वच्चस्स	वुच्चस्स	

सम्पादक्रीय

सात

२६११	दग-मट्टिय	दग-मट्टी	ग
२७१२	आहरे	आहारे	क,ग,घ
२८११	आहरेती	आहरेती	अचू
२८१३	देतिय	दिं तिय, दतिय	क,ग,घ,ग
३३११	ससिणिद्धे	ससणिद्धे	क
३४१२	कुक्कुस	कुक्कस	ग
४०१४	पुणट्टए	पुणट्टए	घ, अचू
४२११	पिज्जेमाणी	पेज्जमाणी,पज्जेमाणी	जिचू,अचू
४५११	दग-वारएण	दग-वारेण	क,हाटी
४६११	उब्भिदिया	उब्भिय	क,ख,ग,घ
५७१३	उम्मीस	उम्मिस	क,अचू,जिचू
६७१३	मच्च	मच्च	क,ख,ग,घ,अचू
७११३	सक्कुलि	सकुलि	ख
७३१२	अणमिस	अणमिस	ख,ग
७३१३	अत्थिय	अच्छिय	अचू, जिचू
७३१४	सिबलि	सबलि, सबिल	घ,ख
७४१२	धम्मिए	धम्मए	घ
७७१३	भवेज्जा	ह्विवज्जा	ख
७७१४	रोयए	रोइए, रोवए	ग,ख
७८१४	तण्ह	तण्ह	ख
८११२	अचित्त	अच्चित्त	क, अचू
८५११	निक्खिवे	निखिवे	क,ख,ग
९०१२	अव्वक्खित्तेण	अवक्खित्तेण	अचू
९६१२	एक्कओ	एगओ, इक्कओ	घ,ख,ग
९७१३	एय	एय	अचू
९८१३	उल्ल	अल्ल	घ
१००१४	सोगगड	सोगड, सुगगड	अचू,ख,ग

अध्ययन-५(२)

११३	दुगध	दुग्गध	अचू
२१३	अयावयट्टा	आयावयट्टा	क,ख,ग
३१३	० उत्तेण	० वुत्तेण	अचू
५१२	पडिलेहसि	पडिलेहिसि	ख
५१४	गरिहसि	गिरिहसि, गिरिहिसि, गरहसि	ग,ख,अचू
७१३	त उज्जुयं	त-ओजुय	ख,घ
१०१२	क्विण	क्विण	ग
१३१२	नियत्तिए	नियत्तए	ख,ग
१३१४	व	वा	अचू
१४१३	सच्चित	सच्चित	घ,अचू,जिचू
२११३	नोम	नियम	ख
२२१३	० पिन्नाग	० पन्नाग	ख
२४१३	विहेलग	विभेलग, विहेलग	अचू,ख
२५१४	उस्सढ	उस्सढ	अचू
२६११	इत्थिय	इत्थिय	अचू
३२११	अत्तट्टु	अत्तट्टा	क,ख,ग,घ
३७११	पिया	पियए	हाटी,जिचू
४६११	वय	वई	अचू
४७१२	मूयय	मूयग	ख,ग,घ
५०१३	० हिदिए	० हिइदिए	क,घ,जिचू

अध्ययन-६

१३१३	मेत्त	मित्त	क,ख,ग,घ
१८११	लोभस्सेसो,अणुफासो	लोभस्सेसणुफासे, लोभस्सेसणफासो, लोभस्सेसणुफासो	क,घ ग,ख

२०।२	नाय °	नाइ °	क,ग
२०।४	इइ	इय	क,ख,ग,घ
२४।३	दिया	दिवा	अचू
३७।३	विईउ °	वीउ ° , वितु °	ग,अचू
५१।२	° घोयण	° धोवण	क,ख,अचू
५१।३	छिन्नति	छिन्नति, छिप्पति	क,ख,ग,हाटी
५२।१	पच्छा °	पच्छे °	अचू
५७।४	पडिकोहो	परिकोहो, पलिकोहो	अचू
६०।३	वोक्कतो	वुक्कतो, वक्कतो	क,ग,ख
६१।२	भिलुगासु	भिलगासु	क,ख,घ
६१।४	° प्पिलावए	° पलावए, ° प्पलावए	ख,ग,घ,हाटी
६३।३	° व्वट्ट °	° वट्ट °	क,ग
६४।१	नगिणस्स	निगणस्स, नगणस्स, नगणिस्स, णिगिणस्स	क,घ,ग,अचू
६७।४	नवाड पावाडं	नवाणि पावाणि	अचू
६८।३	उउप्पसन्ने	उडुपसण्णे	अचू
अध्ययन-७			
२।३	ऽणाडन्ना	अणाडण्णा	अचू
५।४	पुण	पुणो,पुण	अचू,ख
८।१	कालम्मी	कालम्मि	ख
१२।२	पडगे त्ति	पडग त्ति पडगु त्ति	क,ग,घ
१२।३	रोगि त्ति	गेग त्ति	ग
१२।४	चोरे त्ति	चोरु त्ति	घ
१३।१	वट्ठेण	अट्ठेण	क,ख,ग,घ
१४।२	वसुले त्ति	वसुल त्ति	घ
१४।३	दम्मए दुहए	दुम्मए द्हए	ख

५३।१	अतलिक्खे	अतलिक्ख, अतलिक्ख	घ,हाटी,जीचू,ख
५६।३	धुन्न	धुत्त	घ
अध्ययन-८			
२।४	इय	इय	ख
५।१	निसिए	निसीए	घ
६।२	विहुवणेण	विहुवणेण	जिचू
६।३	वीएज्ज	वीए	अचू
६।४	पोग्गल	पुग्गल	क,ख,ग,घ
१४।१	कयराड	कतमाणि	अचू
१६।३	अप्पमत्तो	अप्पमत्ते	अचू
१८।३	पडिलेहित्ता	पडिलेहित्तु	अचू
१९।२	पाणट्ठा	पाणत्था	अचू
२०।४	मग्गिह्ढ	मग्गिह्ति	अचू
२३।२	अयपिरो	अयपुरो	अचू
२५।१	सत्तुट्ठे	सत्तुट्ठो	अचू
२५।२	सुहरे	सुभरे	ख,घ
२६।१	अतित्तिणे	अत्तित्तिणे	क,ग
३५।१	पीलेड	पीडेड	ख,ग,जिचू,हाटी
३६।१	अणिग्गहीया	अणिग्गिहिया	अचू
४०।१	गडणिए	गयणिए	ख,ग,हाटी
४०।१	पउजे	पयुजे	अचू
४०।३	कुम्मो	कुम्मू,कुम्मे	क,ख,ग,घ,अचू
६५।३	मिहो	मिधु	अचू
४२।८	अट्ठ	अत्थ	अचू
४६।३	पिट्ठि	पिट्ठी	अचू
४८।३	अयपिन्	अयप्प	अचू

सम्पादकीय

ग्यारह

५३१	अतलिक्खे	अतलिक्ख, अतलिक्ख	घ,हाटी,जीचू,ख
५६३	धुन्न	धुत्त	घ
अध्ययन-८			
२१४	इय	इय	ख
५११	निसिए	निसीए	घ
६१२	विहुवणेण	विहुवणेण	जिचू
६१३	वीएज्ज	वीए	अचू
६१४	पोगल	पुगल	क,ख,ग,घ
१४११	कयराड	कतमाणि	अचू
१६१३	अप्पमत्तो	अप्पमत्ते	अचू
१८१३	पडिलेहित्त	पडिलेहित्तु	अचू
१६१२	पाणट्ठा	पाणत्था	अचू
२०१४	मरुह्ढ	मरुहति	अचू
२३१२	अयपिरो	अयपुरो	अचू
२५११	सत्तुट्ठे	सत्तुट्ठो	अचू
२५१२	सुहरे	सुभरे	ख,घ
२६११	अतित्तिणे	अर्तित्तणे	क,ग
३५११	पीलेड	पीडेड	ख,ग,जिचू,हाटी
३६११	अणिग्गहीया	अणिग्गिहिया	अचू
४०१९	राडणिए	रायणिए	ख,ग,हाटी
४०११	पउजे	पयुजे	अचू
४०१३	कुम्मो	कुम्मु,कुम्मे	क,ख,ग,घ,अचू
४११३	मिहो	मिधु	अचू
४२१४	अट्ठ	अत्थ	अचू
४३१३	पिट्ठि	पिट्ठी	अचू
४८१३	अयपिण	अयपण	अचू

१५१०	माउन्मिय	माउसिउ, माउसिय	क,ख,ग,घ
१५११	नत्तुणिए	नत्तुणिय, नत्तुणइ, नत्तुणिइ	घ,क,ग,ख
१५१२	अन्नेत्ति	अन्नेत्ति	ग
१५१३	भाउणोज्जति	भायणिज्जति	ख
१५१४	नत्तुणिय	नत्तुणइ, नत्तुणिइ	ग,ख
१५१५	हने त्ति	हल त्ति, हरे त्ति	ग,घ,अचू
२६११	मणम्म	मणुस, मणस	क,ग,घ,ख
२६१२	मगीमिव	सरीसव	ख,ग
२६१३	परिवुड्ढे	परिवुड्ढ, परिवूढ	क,ग,ख,अचू, जिचू, हाटो
२६१४	० जोग त्ति	० जोगि त्ति	ख,ग,
२६१५	वेणू	वेणू	ख
२६१६	नाग्णाण गिहाण	तोरणाणि गिहाणि	क,ग
२६१७	दग्गिणि	दग्गिसण	ग,घ,ख
		फलाणि	अचू
		निव्वडिमा, निव्वत्तिमा,	जिचू, अचू, ख
		निव्वट्टिमा	
		रुवि त्ति	क,ख,ग
		सुत्तित्थे, सुत्तित्थि	ग,घ,ख
		० पाहडा	अचू
		मने	अचू
		पयत्ति	क,घ
		पक्क त्ति	क,ग,घ
		मुक्किय	ख
		नदेवस्सजत	अचू
		मात्रवो	अचू
		वाउ ०	ख
		० वृट्ठि	क,ख,ग

सम्पादकीय

ग्यारह

५३१	अतल्लिक्खे	अतल्लिक्ख, अतल्लिक्ख	घ, हाटी, जीचू, ख
५६३	धुन्न	धुत्त	घ
अ-ययन-८			
२१४	इय	इय	ख
५१	निसिए	निसीए	घ
६२	विहुवणेण	विहुवणेण	जिचू
६३	वीएज्ज	वीए	अचू
६४	पोग्गल	पुग्गल	क, ख, ग, घ
१४१	कयराड	कतमाणि	अचू
१६३	अप्पमत्तो	अप्पमत्ते	अचू
१८३	पडिलेहित्ता	पडिलेहित्तु	अचू
१६२	पाणट्ठा	पाणत्या	अचू
२०४	मग्गिहड	मरुहति	अचू
२३२	अयपिरो	अयपुरो	अचू
२५१	मत्तुट्ठे	मत्तुट्ठो	अचू
२५२	सुहरे	मुभरे	ख, घ
२६१	अतित्तणे	अत्तित्तणे	क, ग
३५१	पीलेड	पीडेड	ख, ग, जिचू, हाटी
३६१	अणिग्गहीया	अणिग्गिहिया	अचू
४०१	गडणिण्	गयणिण्	ख, ग, हाटी
४०१	पयुजे	पयुजे	अचू
४०३	कुम्भो	कुम्भु, कुम्भे	क, ख, ग, घ अचू
४१३	मिहो	मिधु	अचू
४२४	अट्ठ	अन्ध	अच
४६३	पिट्ठि	पिट्ठी	अच
४८३	अयपिण्	अयपुण्	अचू

४६३	वृ	वाय, वय	जिचू,ख
४६४	विग्गह्तिओ	विग्गहओ	ख
४६५	पडिच्छिन्त	पडिच्छिन्त	घ,अचू,जिचू
४६६	मणन्नेमु	मणन्नेसु	क,ख,ग,घ
४६७	तण्हो	तिण्हो	क
४६८	सीडं	सीत	अचू
४६९	जमि	जमे	अचू
४७०	चदिमा	चदिमि	क,ख,जिचू

अप्पसुय	ख,ग
पावक	अचू
जम्मतिय	अचू
तम्सतिय	अचू
वुद्धीए	ख
जुत्ते	क,ग
मेहावि	ख

नग्घ	अचू
मक्कागति	अचू
हेउट्टि	ख,ग
वित्ति	क,ख,घ
ओघ ०	क,ख,हाटी

गय ०	ख,ग
नीय ०	घ,जिचू

सम्पादकीय

तेरह

८१२	दुम्मणिय	दुम्मणय	ग
१०१२	अपिसुणे	अपिस्सुणे	क,ख,ग
अध्ययन-६(४)			
२१४	० यट्ठिए	० यत्थीए	अचू
७	आग्हेतेहि	आरुहतिहि	अचू
अध्ययन-१०			
४१२	निस्सियाण	निसियाण	क,ख,ग
६१२	ह्वेज्ज	भवेज्ज	अचू
७१४	वय	वड	क,अचू
८१३	होही	होहिड	अचू
१२११	मसाणे	मुसाणे	अचू
१२१२	भायए	भाए	अचू
१८११	वएज्जासि	वएज्जाहि	ख
१८१२	जेणन्तो	जेणन्नु, जेणन्त	क,घ,ख,ग
चूलिका-१			
सू०१	स्थान२ इत्तरिया	इत्तिरिया	ख,अचू
, ,	६ पडियाडयण	पडिआयणं, पडिआययण	जिचू,ख,ग,घ
, ,	६ वहाय	वहाए	अचू
, ,	१८ वेयडत्ता	वेडत्ता	क,ख,ग,घ
, ,	१८ अवेडयत्ता	अवेडत्ता	क,ख,ग,घ
२११	जया	जहा	रु
५१८	नेट्ठि ०	निट्ठि ०	क,ख,ग,घ, ङाटी
६१३	गळ	गळि	ख,घ
६१३	गिळित्ता	गळित्ता	ख,ग
१०१८	० निग्ग	० नग्ग	क,घ,ङाटी
१०१४	माग्गिन्तो	माग्गिन्तो	रु न

सम्पादकीय			पन्द्रह
२५।२	निरट्ठ	निरत्य	क्वचित्
२६।३	एगित्थिए	एगत्थिए	उ
३६।१	सुकडे त्ति	सुककडि त्ति	ऋ
३६।३	सुलट्ठे त्ति	सुलट्ठि त्ति	उ
८०।४	तोत्त	तुत्त	चू, ऋ
४१।४	पुणोत्ति	पुणिन्ति	उ
		पुणात्ति	ऋ
४२।४	गरह	गरिह	उ, ऋ
४४।३	मुकय	मुकड	अ
अध्ययन-२			
सू० ३	दिगिच्छा	दिगच्छा	अ, उ
८।१	उसिणपरियावेण	उसिणप्परियावेण	उ, ऋ
२४।२	पडिसजले	पडिम जले	उ, ऋ
अध्ययन-३			
३।४	आहाकम्मोहिं	अहाकम्मोहिं	अ, स, मु
२०।४	सासए	सासवे	उ
अध्ययन-४			
३।२	किच्चड	कच्चर्ड	उ, क
५।२	परत्था	परत्य	चू
६।२	वीससे	विस्समे	चू
६।४	भारुण्ड	भारड	उ, ऋ, वृ
१३।३	दुगच्छमाणो	दुगच्छमाणो	ऋ
अध्ययन-५			
३।२	असड	अमय	उ
८।४	भूयग्गाम	भूयगाम	उ, ऋ, वृ
१६।४	धुत्ते व	धुत्ते वा	ऋ, उ, ऋ
२२।४	क्कमई	क्कम्मई	अ

कओ	उ, ऋ
जेण पुणो	अ
वइ-काय	उ
विचिकिच्छा	ऋ
इत्थी	अ
सथविन्थीहिं	अ
कुवियं रुदित	अ
निडए	अ, आ, इ
तहावरे	ऋ
छुठिभत्ता	उ
राय	स
पिच्चन्थ	अ, उ, ऋ
मण	स
मिच्छदिट्ठी	बृ
महट्ठीओ	स
निम्दणो	उ
निमूअणो	ऋ
भवइ	अ
नीगड	अ
वणिमिमाउ	ऋ
असाट्ठेज्जो	अ
असाट्ठिओ	ऋ
असाट्ठिज्जो	म

सम्पादकीय

उन्नीस

१८४	तण्हाए	तिण्हाइ	उ
२०१२	सपाहेओ	सपाहेज्जो	अ
		सपाहिज्जो	स
२०१४	तण्हा	तिण्हा	उ
२२१४	अवउज्ज्झड	अवयज्ज्झड	अ
२३१४	तुव्भेहि	तुहेहि	अ
२६१३	परिच्चाओ	परित्ताओ	उ
३५१२	महाभरो	मह्वभरो	उ, ऋ
३५१३	गुरुओ	गरुओ	अ
३८११	अही	अहे	अ
५२१२	मिम्बलि	सावलि	अ
५४१३	फालिओ	फाडिओ	अ, उ
७१११	एगभूओ	एगव्भूओ	आ
८५१३	अम्म	अम्ब	उ

अध्ययन-२०

३५११	ततो ह	तोह	ऋ
३७१२	दुहाण	दुक्खाण	अ

अध्ययन-२१

४१२	पगवई	पसूयई	अ
१५१४	गरुह	गरिह	उ

अध्ययन-२२

६३१२	उत्तिमाण	उत्तमाट	ऋ
४०१२	दिच्छमि	दच्छमि	क्वचित्
६०१२	मज्जयाए	मंज्जटाए	अ

वक्कजडा	उ, ऋ
णिह्णिऊण	अ
ओवायओ	अ
आहार उवहि	अ
वीडण	अ, उ, ऋ
विच्छिन्ने	अ
उत्तिमट्ट	अ
पजलियडा	अ
ताडन्ति	अ
सिणाइओ	अ
मुक्के उ गोल्ल	उ, ऋ
निस्सोहिया	अ
पचमी	उ
आसाह्मामे	अ
वयमाहेमु	अ
विद्यनडयमि	उ, ऋ
त्रितिए	अ
त्रिय	
छट्टी	
पसटिल्ल	
पटिकमिता	

अध्ययन-२७

३।२	विहम्माणो	विहिम्माणो	उ, ऋ
६।२	एगोऽत्य	एगित्य	उ
		एगत्य	ऋ

अध्ययन-२८

१६।२	आणारुई	आणरुई	उ, ऋ
३४।४	एवमव्भतरो	एमेव्भतरो	अ
		एवमविभतरो	उ, ऋ

अध्ययन-२९

सू० १	रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता	रोइत्ता फासित्ता पालित्ता	ऋ, स
सू० १	तीरइत्ता	तीरित्ता	इ
सू० १	आराहइत्ता	आराहित्ता	ऋ
सू० १	गरहणया	गरिहणया	उ
सू० ३	सिद्धिमग्गे	सिद्धिमग	अ, उ, ऋ
सू० ५	विणइत्ता	विणयइत्ता	इ
सू० ६	मिच्छादरिण	मिच्छादरिण	अ
सू० ८	अपुरक्कार	अपुरेक्कार	अ
सू० १५	थवथुइ	थयथुइ	अ, उ, ऋ
सू० ३३	विणियट्टणयाए ण	विणिवट्टणयाए ण	अ, उ
सू० ७३	आणापाणु	आणापाण	ऋ
सू० ७३	वेयणिज्ज	वेयणिय	अ

अध्ययन-३०

१८।१	रच्छामु व	रन्ध्यामु य	अ
२०।१	पोरुत्तीण	पोरिन्तीण	अ

अध्ययन-३१

५।२	तेरिच्छ	तेरिक्क	अ
-----	---------	---------	---

वृ

अ

उ

अ

उ

उ, ऋ

अ

अ

अ

अ

स

अ

अ

अ

अ, ऋ

उ, ऋ

उ, ऋ

उ, ऋ

म

अ, ऋ

ऊ, ऋ

उ, ऋ

उ, ऋ

सम्नादकीय

तेईस

३४२	तेतीम	तितीसा	ऋ
६०१	अत	अतो	उ,ऋ

अ-ययन-३५

४१	चितहर	चितधर	उ,ऋ
४३	पडुरुल्लोय	पडरुल्लोय	अ
८१	कुज्जा	कुव्विज्जा	उ,ऋ
२११	निम्ममो निरहकारो	निम्ममे निरहकारे	अ,आ,इ,म

अ-ययन-३६

१११	पुहुत्तेण	पुहुत्तेण	म
३६१	गुरुए	गरुए	म
५५३	वोन्दि	वोदि	अ
		वुदि	उ
		वुदि	ऋ
६११	पण्डुरा	पण्डरा	अ
६६३	मुमुण्ढो	मुसण्ढो	अ
१४६१८	द्विकुणे क्कुणे	द्विकुणे कुकणे	उ,ऋ
१८३१	मिगिगिटी	मिगिगिट्टि	अ
१४७२	नदावने	नदापने	अ
१८७२	विच्छिए	विच्छुए	उ
१४७४	विग्ग्री	विग्ग्री	ऋ
२०६३	दिमा	दिमि	ऋ
२२८१८	चउहम	चोहम	अ
२३७४	पण्णोमई	पण्णोमड	उ,ऋ
२८०१	अज्जातीम	अज्जातीम	म

चौत्तीसवे अध्ययन मे 'पद्मलेश्या' के लिए 'पम्हलेस्सा' गब्द का प्रयोग हुआ है। 'पम्ह' शब्द संस्कृत 'पक्ष्म' का प्राकृत रूपान्तर है। 'पद्म' शब्द के दो प्राकृत रूप बनते हैं—'पउम' और 'पम्म'। किन्तु 'पम्ह' रूप नहीं बनता। गोम्मटसार के लेश्या मार्गणाधिकार मे पद्मलेश्या के लिए 'पम्म' और 'पउम'—दोनों गब्द प्रयुक्त हुए हैं।^१ हमने 'पम्ह' शब्द ही रखा है। क्योंकि पाठ-संगोधन मे प्रयुक्त या अन्य किसी भी आदर्श मे 'पम्म' या 'पउम' गब्द नहीं मिला।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन के उद्धृत पाठ

प्रारम्भ से ही दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनों सूत्र बहुचर्चित रहे हैं। अनेक आचार्यों ने अपनी-अपनी रचनाओं मे स्थान-स्थान पर इन्हें उद्धृत किया है। ये उद्धृत पाठ शब्द और भाषा की दृष्टि से कुछ परिवर्तित रूप मे प्राप्त होते हैं। यह भिन्नता क्षेत्र, काल और परम्परा के भेद के कारण हुई, ऐसा प्रतीत होता है। इन भिन्नताओं के कुछेक उदाहरण ये हैं :—

मूल पाठ—

वितहं पि तहामुत्तिं जं गिरं भासए नरो ।

तम्हा सो पुट्ठो पावेणं कि पुण जो मुसं वए ? ॥ (दशवैकालिक ७।५)

वृहत्कल्प भाष्य, भाग २, पृष्ठ २६० पर उद्धृत पाठ—

वितहं पि तहामुत्ति, जो तहा भासए नरो ।

सो वि ता पुट्ठो पावेणं, कि पुण जो मुसं वए ? ॥

मूल पाठ—

तिण्हमन्नयरागस्त निमेज्जा जस्त कप्पई ।

जराए अन्नियस्त वाहियस्त तवस्सिणो ॥ (दशवैकालिक ६।५६)

वृहत्कल्प भाष्य, भाग २, पृष्ठ ३७२ पर उद्धृत पाठ—

तिण्हमन्नयरागस्त, निमिज्जा जस्त कप्पई ।

जराए अन्नियस्त, वाहियस्ता तवस्सिणो ॥

मूल पाठ—

नगिणस्स वा वि मुंडस्स दीहरोसनहंसिणो ।

मेहुणा उवसंतस्स कि विमूसाए कारियं ? ॥ (दशवैकालिक ६।६४)

मूलाराधना, आश्वास ४, श्लोक ३३३, विजयोदया टीका, पृष्ठ ६११ मे उद्धृत पाठ—

णगणस्स य मुण्डस्स य, दीह्लोमणखस्स य ।

मेहुणादो विरत्तस्स, कि विमूसा करिस्सदि ? ॥

मूल पाठ—

अचेल्लगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।

देसिलो वद्धमाणेण पासेण य महाजसा ॥

एगकज्जपवन्नानां विसेसे किं नु कारणं ? ।

लिंगे डुविहे मेहावि ! कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥ (उत्तराव्ययन २३।२६, ३०)

मूलाराधना, आश्वास ४, श्लोक ३३३, विजयोदया टीका, पृष्ठ ६११ मे उद्धृत पाठ—

आचेल्लक्को य जो धम्मो, जो वाय पुण रुत्तरो ।

देसिलो वद्धमाणेण, पासेण य महप्पणा ॥

एग धम्मे पवत्ताणं, डुविधा लिंग-क्पणा ।

उमएसिं पडिड्डाण, महं संसय मागदा ॥

पाठान्तर की लम्बी परम्परा

आज हमे जो पाठान्तर उपलब्ध हो रहे हैं, उनके प्रधान कारण चार है—

(१) परम्परा-भेद

(२) लिपि-दोष

(३) मूल पाठ और व्याख्या का सम्मि

(४) व्याख्या का पाठ-रूप मे परिवर्त

(१) परम्परा-भेद,

वीर-निर्वाण की सहस्र

उस समय जो पाठान्तर प्रचलित थे, उन्हें सकलित कर लिया गया। वे आगमो की व्याख्याओं में अब भी सुरक्षित हैं।^१

अगस्त्य चूर्णि के रचना-काल में भी परम्परागत पाठ-भेद प्रचलित थे। वहाँ अनेक स्थलों में मतान्तरों का उल्लेख हुआ है।^२ जिनदास चूर्णि की भी यही स्थिति है। टीका-सम्मत पाठ तो इनमें बहुत भिन्न पड़ जाते हैं। दीपिकाकार टीका से भी आगे बढ़ जाते हैं। जिन श्लोकों की व्याख्या टीका में नहीं है, उन्हें दीपिकाकार मूल सूत्र मान उनकी व्याख्या करते हैं।

चूर्णिकार और टीकाकार के बीच जो पाठ-भेद है, उसका कारण परम्परा-भेद है। किन्तु दीपिका में जो पाठ-भेद है, उसका कारण परम्परा-भेद नहीं जान पड़ता। वह लिपिकर्ता में सम्बन्धित है। आदर्शों के लेखक प्रायः मुनि रहे हैं। वे व्याख्यान भी देते थे। व्याख्यान-काल में जो प्रासंगिक श्लोक और गाथाएँ कही जाती, वे उसी स्थान पर लिख ली जाती और आगे चल कर वे ही लम्बे काल में मूल में घुस जाती। दशवंशकालिक और उत्तराध्ययन के आदर्शों में ऐसा हुआ है। दशवंशकालिक निर्युक्ति का निम्न श्लोक मूल के साथ लिखा गया है—

वयल्लक कायल्लक, अरुण्यो गिह्निभाषण ।

पल्लिकनिनेज्जा य, मिणाण मोह्वज्जण ॥ (हाटी, पत्र १६९)

इसी प्रकार उत्तराध्ययन २४१२ के पञ्चात् एक गाथा मूल आदर्श में लिखी हुई प्राप्त होती है। जैसे—

नरुण्यो सरुभो, पण्तिवरुणे भवे नमारुभो ।

आरुभो उद्वओ, मुद्वनयाण तु मव्वेनि ॥

ऐसे पाठान्तरों में स्मृतित्रय का भी योग रहा है। जो मुनि मूल-पाठ के आधार पर सूत्र-पाठ लिखते, उनके आदर्शों में स्मृति-त्रय के प्राण्य अर्थों में

१—जिनदास चूर्णि पृष्ठ २०४ :

नागशुक्तिना तु एवं पट्टि—एव तु श्रुतान्तेरी अणुणाण विव्वण्ण' ।

२—देखो—इतिहासिक, भाग २ में ३१३ ३११५, ६१४४ में लिखित ।

इसी प्रकार महाव्रतो के सूत्र-पाठ मे भी कुछ सम्मिश्रण होने का उल्लेख मिलता है।^१

(४) व्याख्या का पाठ रूप मे परिवर्तन

उत्तराध्ययन २२।२४ मे 'पचमुट्टीहिं' ऐसा पाठ आया है। वास्तव मे यह पाठ 'पचट्टा' था। 'अट्टा' का अर्थ है 'मुष्टि'। पच अट्टा अर्थात् पचमुष्टि। पचट्टा शब्द अपरिचित था। बृहद्वृत्ति (पत्र ४६२) मे पचट्टा का अर्थ पचमुष्टि है। कालान्तर मे यह व्याख्यागत अर्थ ही मूल पाठ बन गया।

अन्य आगमो मे भी ऐसे अनेक उदाहरण हमे प्राप्त हुए है।

दशवैकालिक : प्रति परिचय

क : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति हमारे 'सघीय सग्रह' की है। इसके पृष्ठ १७ व पत्र ३४ है। प्रत्येक पत्र लगभग १०। इंच लम्बा व ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ मे पाठ की पत्तियां १२-१३ व प्रत्येक पक्ति मे ४६ से ५३ तक अक्षर है। अवचूरी पाठ के चारो तरफ लिखी हुई है। प्रति काली स्याही से व गाथाओ की सख्या लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्नलिखित प्रगस्ति (पुष्पिका) है :

॥१० दशवैकालिक समाप्तमिति ॥३॥ सवत् १५०३ वर्षे आपाढ मामे कृष्ण पक्षे चतुर्थी दिने गनिवारे ॥ दशवैलिखित ॥ मुन्दरसवेगगणि योग्य ॥

ख : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति भी हमारे 'सघीय सग्रह' की है। इसके पत्र १६ व पृष्ठ ३८ है। प्रत्येक पत्र लगभग १०। इंच लम्बा व ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ मे पाठ की पत्तियां १३ व प्रत्येक पक्ति मे ४८ मे ४६ तक अक्षर है। अवचूरी पाठ के चारों

१-अगस्त्य चूर्णि .

केति नुत्तमियं पटन्नि, केति वृत्तिगतं विनेमिनि, जहा मे तं पाणातिवाते चउच्चिहे तं जहा दव्वतो, खेततो, कालतो, भावतो ।

तरफ लिखी हुई है। पाठ के अक्षर बड़े तथा अवचूरी के अक्षर छोटे हैं। प्रति काली स्याही से व गाथाओ की सख्या लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्नलिखित प्रगस्ति (पुष्पिका) है :

सवत् १४६६ वर्षे वैशाख मासे प्रतिपदाया तित्थौ रविवासरे ॥ लिखित
कर्मचन्द्रेण ॥

ग : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति भी हमारे 'सघीय सग्रह' की है। इसके पत्र १६ व पृष्ठ ३२ है। प्रत्येक पत्र १०। इच लम्बा व ४। इच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ मे पाठ की पक्तियाँ १४ व प्रत्येक पक्ति मे ५२ से ५७ तक अक्षर है। अवचूरी पाठ के चारो तरफ लिखी हुई है। पाठ के अक्षर बड़े तथा अवचूरी के अक्षर छोटे हैं। प्रति काली स्याही से व गाथाओ की सख्या व पद लाल स्याही से लिखे गए हैं। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्न प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

दसवेआलिय सुयक्खघो समत्तो ॥वा॥ शिवमस्तुचिर विजीघात् ॥

सवत् १४०० वर्षे भाद्रपद सुदि ११ तित्थौ शुक्रवासरे समस्त देजाधिदेशे
श्री मालवकाव्ये तन्मध्यवर्तिन्या महापुर्यामवत्या पातसाह श्री महसुदर
राज्ये प० श्री विशालकीर्ति पूज्यानां पादप्रसादाद्देपाकेन लिखितमिति ।

घ : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति 'गधैया सग्रहालय', सरदारशहर की है। इसके पत्र ३२ व पृष्ठ ६४ है। प्रत्येक पत्र १०। इच लम्बा व ४। इच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ मे पाठ की पक्तियाँ ८ से १३ व प्रत्येक पक्ति मे २६ से ३२ तक अक्षर है। अवचूरी पाठ के चारो तरफ लिखी हुई है। पाठ के अक्षर बड़े तथा अवचूरी के अक्षर छोटे हैं। प्रति काली स्याही से व गाथाओ के सख्याक लाल स्याही से लिखे हुए हैं। अनुमानतः १४वीं शताब्दी की लिखी हुई होनी चाहिए। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्न प्रगस्ति (पुष्पिका) है :

इति श्री दसवैकालिक सूत्र समाप्त । लिखित ॥ वा० श्री साधु
विजयगणिभिः कल्याणमस्तु सर्व-जतोः ॥ लेखकपाठकयोः भद्र भूयात् ॥

य, अचू० : अगस्त्यसिंह स्वविर कृत (जैसलमेर रुडारथ) ताडपत्रीय दशवैकालिक चूर्ण

इसकी फोटो-प्रिन्ट प्रति 'सिटिया पुस्तकालय', सुजानगढ़ की है। इसकी पत्रसंख्या १६५ व पृष्ठ ३३० हैं। पत्र क्रमांक संख्या १७७ में ३४२ तक है। फोटो-प्रिन्ट पत्र-संख्या ३६ तथा एक पृष्ठ में कगीव ६-१० पृष्ठों के फोटो है। किसी में ७-८ भी है। प्रत्येक पत्र १४ उच्च लम्बा व ३ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में ४ या ५ पक्तियाँ है। कही पक्तियाँ अधूरी है। प्रत्येक पक्ति में १४८ के कगीव अक्षर है। यह फोटो-प्रिन्ट प्रति मुनि श्री पुण्यविजयजी से उपलब्ध हुई।

भा, अचू०पा० : अगस्त्यसिंह पाठान्तर

ज, जिचू० : जिनदाम महत्तर कृत दशवैकालिक की चूर्ण (मुद्रित)

श्री ऋषभदेवजी केजरीमलजी पेढी-मुकाम रतलाम, जैनद्वन्द्व प्रिन्टिंग प्रेम इन्दौर, वि० सं० १९८६ में प्रकाशित। पृष्ठ ३८०।

जा, जिचू० पा० : जिनदान चूर्ण पाठान्तर

ह, हाटी० : हारिनद्रीय दशवैकालिक की टीका (मुद्रित)

शाह नगीन भाई घेला भाई जवहेरी, ४२६ जवहेरी बाजार द्वारा निर्णय-सागर मुद्रणालय कोल भाट गली इम्बर्ड-२३ में मुद्रापित प्रकाशित। विक्रम मवन् १९७४। पत्र २८६।

हा, हाटी० पा० : हारिनद्रीय वृत्ति के पाठान्तर

उत्तमध्वयन : प्रति पश्चिम

अ : मूत्र पाठ नावचूरी (हस्त-लिखित)

वत्तीस

प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

॥ इति षट्त्रिंशदुत्तराध्ययना नामवचूरि समाप्ताः ॥ श्री रस्तु ॥

स० १५३८ वर्षे विशाख सुदि १० रवि लिषित ॥ चिर नद्वतु ॥१॥१

आ : उत्तराध्ययन मूल पाठ (हस्त-लिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलाल दुघोडिया के संग्रहालय की है । इसके पत्र ८९ व पृष्ठ १७८ हैं । प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है । प्रत्येक पृष्ठ में ११ पक्तियाँ व प्रत्येक पक्ति में अक्षर लगभग ३२ से ४० तक हैं । अक्षर बड़े तथा पढ़ने में स्पष्ट हैं । प्रति काली स्याही से व लेखक की प्रशस्ति लाल स्याही से लिखी हुई है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है :

॥ संवत् १५९१ वर्षे श्री पत्तनपुरवरे श्री जिनवल्लभ सूरि सताने श्री खरतर गच्छेण नभोगण दिनकर करणि सैद्धान्तिक सिरोमणि श्रीजिनभद्र सूरि श्री जिनचन्द्रसूरि तत्पट्ट प्रतिष्ठित श्री जिनभद्रसूरि पट्ट पूर्वाचल सहस्रकरावतार भाग्य सौभाग्य भगी सुभग भालस्थल भट्टारक प्रभु श्री श्री श्री जिनहस सूरि पट्टे श्री श्री श्री जिनमाणिक्य सूरिभिः सार्वभोगैः वा० आणद नदन गणाय प्रसादी कृत्यं प्रति ।

इ : उत्तराध्ययन मूल (हस्तलिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलाल दुघोडिया के संग्रहालय की है । इसके पत्र ३८ व पृष्ठ ७६ हैं । प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है । प्रत्येकपृष्ठ में १७ पक्तियाँ व प्रत्येक पक्ति में अक्षर लगभग ५०-५१ हैं । अक्षर बड़े तथा पढ़ने में स्पष्ट है । प्रति काली स्याही से लिखी गई है । यह प्रति अनुमानतः १६ वीं शताब्दी में लिखी गई है । प्रति के अन्त में लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति है :

॥ इति श्रीमदुत्तराध्ययन श्रुतस्वधः समाप्तः ॥ परमाप्त प्रणीतः ॥ छ ॥
निर्युक्तिकार एतन्माहात्म्यमाह ॥ जे किर भवसिद्धीया । परित्त संसारियाय
जे भन्वा । ते किर पढति एए छत्तीस उत्तरज्भाए तम्हा जिण पन्नत्ते ।
अणतगम एज्जवेहि सजुत्ते । अब्भाए जह जोग । गुरुप्पसाया अहिजिज्जा ॥२॥
जो ज्जागविहीइ वहित्ता एए जो लिहइ सुत्त अच्छ व ॥ भासेइय भवियजणो

नो पालड निम्नग विख्या ॥ ३ ॥ जम्माहन्ती एग कद्र विमन्गति विष्णु-
हियन्म । मोलकिवज्जह भव्जो ॥ पृष्ठगिमी एव भामति ॥८ ॥३॥ वन
भवन् ॥४॥

उ उत्तराध्ययन पाठ व अवचूरी सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति जैन ज्वेताम्बर नेगापथी नसा, नरदारगहर की है । अनुमानतः
सं० १५०० में लिखी हुई है । इसके पत्र ५६ व पृष्ठ ११८ हैं । पत्र १० इंच
लम्बे और ४॥ इंच चौड़े हैं । पत्र के दोनों तरफ । इंच का मार्जिन है । पाठ
और अवचूरी काली स्याही में लिखे हुए हैं । ज्योत्काक तथा मार्जिन की रेखाएँ
लाल स्याही में हैं । दोनों तरफ के मार्जिन के मध्य भाग में पाठ और
चांगे तरफ अवचूरी है । प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की न्यूनतम ८ और अधिकतम १५
पंक्तियाँ हैं । प्रति के अन्त में निम्नलिखित प्रवृत्ति है :

इति श्री उत्तराध्ययनावचूरीः समाप्ता ॥ छ ॥ श्री रस्तु ॥ छ ॥ ए प्रति
सं० श्री विद्यानागर मुनि पद्मरीया शिष्य गुणवाय कर्मनागरे प्रति लिखी
कलकवल सहित मह ।

ग . उत्तराध्ययन पाठ व अवचूरी सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति जैन ज्वेताम्बर नेगापथी नसा, नरदारगहर की है । विक्रमाब्द
१५३५ में लिखी गई है । इसके पत्र ७६ व पृष्ठ १५८ हैं । प्रत्येक पत्र १०।
इंच लम्बा और ४। इंच चौड़ा है । यह प्रति काली स्याही में स्पष्ट लिखित
है । इसके ज्योत्काक तथा दोनों तरफ का मार्जिन लाल स्याही में है । प्रत्येक
पृष्ठ में पाठ की न्यूनतम ६ और अधिकतम १३ पंक्तियाँ हैं । अवचूरी मार्जिन
तथा पाठ के ऊपर और नीचे के भाग में लिखी हुई है । अवचूरी के अक्षर में
पाठ के अक्षर लगभग डबोड़े बड़े हैं । प्रति के अन्त में निम्नलिखित प्रवृत्ति है :

लिखिता श्री उत्तराध्ययनावचूरीः स्वर्गोपकृत्यैः ॥ १ वृष भवन् ॥१॥
सं० १५३५ वर्ष आमोज मुदि ५ भोमे अद्येह श्री ।

स उत्तराध्ययन सर्वार्थसिद्धि टीका सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति छापन निवामी मोहनलालजी दुबोडिया के संग्रहालय की है ।

इसके पत्र ३२३ और पृष्ठ ६४६ हैं किन्तु प्रारम्भ के १६ पत्र प्राप्त नहीं हैं। प्रति बहुत प्राचीन है। अनुमानतः १६ शताब्दी में लिखी हुई होनी चाहिए। पत्र इतने जीर्ण हैं कि कभी-कभी हाथ को स्पर्श से ही खिरने लगते हैं। प्रति प्रायः बहुत शुद्ध लिखी हुई है। प्रत्येक पत्र १०॥ इच्च लम्बा व ४॥ इच्च चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति में लगभग ५३-५४ अक्षर हैं। टीका और पाठ समान अक्षर में ही लिखा हुआ है।

मु सुखबोधा टीका, नेमिचन्द्राचार्य कृत (मुद्रित)

प्रकाशक :—देवचन्द्र लालभाई।

पृ बृहद्वृत्ति 'शान्त्याचार्य कृत' (मुद्रित-निर्णयसागर प्रेस, दम्बई)

प्रकाशक :—देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार प्रयांक ३३।

चू चूर्णि (गोपालिक महत्तर शिष्य कृत)

श्रेष्ठि देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, प्रयांक ३३।

मोहमयीपत्तने वीर सम्बत् २४४२।

कृतज्ञता-ज्ञापन

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएँ हो चुकी हैं। देवद्विगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्य श्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थ दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्य श्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ उच्चारण है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का

अनुसंधान, भाषान्तरण, ममीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि । इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्य श्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है । यही हमारा उन गुरुवर्य कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-स्रोत है ।

मैं आचार्य श्री के प्रति वृत्तजना-ज्ञापन कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अगिले कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संचाल पा और अधिक भारी वत् ।

प्रप्नृत ग्रन्थ के सम्पादन में मुनि दुग्धहगजजी का अविचल योग रहा है ।

पाठ-संपादन के कार्य में मुनि मुद्गर्जनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी ने धर्म और निष्ठापूर्वक योग दिया है ।

शब्दानुक्रम आदि कार्य में मुनि श्रीचन्द्रजी 'कमल' अत्यन्त दत्तचित्तता से लगे रहे हैं । मुनि हनुमानमलजी (सरदारगडर) का भी उसमें उल्लेखनीय योग रहा है ।

विषयानुक्रम मुनि रूपचन्द्रजी ने तयार किया है ।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ ।

इस कार्य में स्वर्गीय श्री मदनचन्द्रजी गोठी, आगम-सम्पादन-समिति के संयोजक श्री श्रीचन्द्रजी रामगुप्तिया, आदर्श साहित्य सघ के संचालक व व्यवस्थापक श्री हनुमानमलजी मुराणा और जयचन्द्रलालजी दफ्तरी का भी अविचल योग रहा है । आदर्श साहित्य सघ की सहयुक्त मामत्री ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है ।

एक लक्ष्य के लिए समान गति में चलने वालों की समप्रवृत्ति में योग-दान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-पूर्ति मात्र है । वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है ।

बीदासर (राजस्थान)

—मुनि नथमल

१५, अगस्त, १९६६

भूमिका का विषयानुक्रम

१ आगम सूत्रों का वर्गीकरण	पृष्ठ १
२. मूल-सूत्र	२
३ मूलाचार और मूल-सूत्र	३
४ मूल सूत्र वर्ग की कल्पना और ध्रुव-गुरुप	४
५ अध्ययन-क्रम का परिवर्तन और मूल सूत्र	६
६ मूल-सूत्रों की संख्या	६
७ मूल-सूत्रों का विभाजन-काल	८
८ दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान	६
९ दशवैकालिक : आकार और विषय-वस्तु	६
१० दशवैकालिक : निर्यूहण कृति	११
११ दशवैकालिक : व्याकरण-विमर्श	१२
१२ दशवैकालिक : भाषा की दृष्टि से	१३
१३ दशवैकालिक के व्याख्या-ग्रन्थ	१४
१४ उत्तराध्ययन	१६
१५ उत्तराध्ययन : रचना-काल और कर्तृत्व	२१
१६ क्या उत्तराध्ययन भगवान् महावीर को अंतिम वाणी है ?	२६
१७ महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र	३१
१८ उत्तराध्ययन : आकार और विषय-वस्तु	३३
१९ उत्तराध्ययन की कथाएँ : तुलनात्मक दृष्टिकोण	३७
२० उत्तराध्ययन : व्याकरण-विमर्श	३७
२१ उत्तराध्ययन : भाषा की दृष्टि से	३६
२२ उत्तराध्ययन के व्याख्या-ग्रन्थ	४३
२३ उपसंहार	४६

२ : मूल-सूत्र

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन गणधर-कृत नहीं है, इसलिए अग-वाह्य है। इन्हे 'मूल' बयो माना गया, इसका कोई प्राचीन उल्लेख उपलब्ध नहीं है। अनेक विद्वानों ने 'मूल' शब्द की अनेक आनुमानिक व्याख्याएँ की है। "दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अन्वयन" में इनका उल्लेख हम कर चुके हैं।

प्रो० विन्टरनित्ज ने 'मूल' शब्द को 'मूल ग्रन्थ' के अर्थ में स्वीकृत किया है। उनका अभिप्राय यह है—इन सूत्रों पर अनेक टीकाएँ हैं। इनसे 'मूल ग्रन्थ' का भेद करने के लिए इन्हें 'मूल-सूत्र' कहा गया।^१ यह प्रामाणिक नहीं है। प्रो० विन्टरनित्ज ने पिण्डनिर्युक्ति को भी 'मूल-वर्ग' में सम्मिलित किया है। किन्तु उसकी अनेक टीकाएँ नहीं हैं। यदि अनेक टीकाएँ होने के कारण ही 'मूल-सूत्र' की सज्ञा दी गई तो पिण्डनिर्युक्ति इस वर्ग में नहीं आ सकती।

डॉ० मरपेन्टियर^२, डॉ० ग्यारीनो^३ और प्रो० पटवर्धन^४ ने 'मूल-सूत्र' का अर्थ 'मगवान् महावीर के मूल शब्दों का संग्रह' किया है। किन्तु यह भी संगत नहीं है।

१—ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर, भाग-२, पृ० ४६६, पाद-टिप्पणी-१

Why these texts are called "root-Sūtras" is not quite clear. Generally the word mūla is used in the sense of "fundamental text" in contradistinction to the commentary. Now as there are old and important commentaries in existence precisely in the case of these texts, they were probably termed "Mūla-texts."

२—दी उत्तराध्ययन सूत्र, भूमिका, पृ० ३२ .

In the Buddhist work Mahāvīyutpatī 245, 1265 mūlagrantha seems to mean 'original text', i.e. the words of Buddha himself. Consequently there can be no doubt whatsoever that the Jains too may have used mūla in the sense of 'original text', and perhaps not so much in opposition to the later abridgments and commentaries as merely to denote the actual words of Mahāvīra himself.

३—न रिलीजीयन द'जेन, पृ० ७९

The word Mūla-Sūtra is translated as "trates originaux"

४—दी दशवैकालिक सूत्र ए स्टडी, पृ० १६

We find however the word Mūla often used in the sense of "original text", and it is but reasonable to hold that the

भगवान् महावीर के मूल शब्दों के कारण ही किसी आगम को 'मूल' सज्ञा दी जाय तो वह आचारंग के प्रथम श्रुतस्कंध को ही दी जा सकती है। वह सबसे प्राचीन और महावीर के मूल शब्दों का सकलन है।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन मुनि की जीवन-चर्या के प्रारम्भ में मूलभूत सहायक वनते हैं तथा आगमों का अध्ययन इन्हीं के पठन से प्रारम्भ होता है। इसीलिए इन्हें 'मूल-सूत्र' की मान्यता मिली, ऐसा प्रतीत होता है। डॉ० सुब्रिग का अभिमत भी यही है।^१

हमारा दूसरा अभिमत यह है कि इनमें मुनि के मूल गुणों—महाव्रत, समिति आदि का निरूपण है। इस दृष्टि से इन्हें 'मूल-सूत्र' की सज्ञा दी गई।

३ : मूलाचार और मूल-सूत्र

'मूलाचार' आचार्य वट्टकेर की रचना है।^२ उससे भी उक्त अभिमत की पुष्टि होती है। मूलाचार में मुनि के मूल आचार का निरूपण है। उसमें उत्तराध्ययन के अनेक श्लोक संगृहीत हैं।^३

word Mūla appearing in the expression Mūlasūtra has got the same sense. Thus the term Mūlasūtra would mean "the original text", i.e., "the text containing the original words of Mahāvīra (as received directly from his mouth)". And as a matter of fact we find, that the style of Mūlasūtras Nos 1 and 3 (उत्तराध्ययन and दशवैकालिक) as sufficiently ancient to justify the claim made in their favour by their original title, that they represent and preserve the original words of Mahāvīra

१—दसवेयालिय सुत्त, भूमिका, पृ० ३

Together with the Uttarajjhāyā (commonly called Uttarajjha-yana Sutta) the Āvassaganijjutī and the Pindanijjutī it forms a small group of texts called Mūlasutta. This designation seems to mean that these four works are intended to serve the Jain monks and nuns in the beginning (मूल) of their career

२—मुनि कल्याणविजयजी गणी ने 'श्रमण भगवान् महावीर' पृ० ३४३ पर 'मूलाचार' का रचना-काल विक्रम की सातवीं शताब्दी के आस-पास माना है।

३—मूलाचार, ४१६९	मिलाइए—उत्तराध्ययन, ३६१२५७
" ४१७०	" " ३६१२५८
" ४१७२	" " ३६१२६०
" ४१७३	" " ३६१२६१

दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आवश्यक तथा ओघनिर्युक्ति-पिण्डनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' वर्ग में स्थापित करने वाले आचार्य के मन में वही कल्पना रही है, जो कल्पना आचार्य वट्टकेर के मन में 'मूलाचार' के अधिकार-निर्माण में रही है। 'मूल-सूत्रों' की विषय-वस्तु में जो अधिकार तुलनीय है, वे ये हैं—

(१) मूल-गुणाधिकार	मिलाइए—दशवैकालिक, उत्तराध्ययन
(४) समाचाराधिकार	मिलाइए—ओघनिर्युक्ति
(६) पिण्ड-शुद्धि अधिकार	मिलाइए—पिण्डनिर्युक्ति
(७) पडावश्यकधिकार	मिलाइए—आवश्यक

इस सादृश्य के आधार पर दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि को 'मूल-सूत्र' वर्ग में रखने का हेतु बुद्धिगम्य हो जाता है।

४ : मूल-सूत्र वर्ग की कल्पना और श्रुत-पुरुष

'मूल-सूत्र' वर्ग की कल्पना का एक कारण श्रुत-पुरुष (आगम-पुरुष) भी हो सकता है। नदी-चूर्ण में श्रुत-पुरुष की कल्पना की गई है। पुरुष के शरीर में बारह अंग होते हैं—दो पैर, दो जघाएँ, दो ऊरु, दो गात्रार्ध (उदर और पीठ), दो भुजाएँ, ग्रीवा और शिर। आगम-साहित्य में जो बारह अंग हैं, वे ही श्रुत-पुरुष के बारह अंग हैं। अग-ब्राह्म श्रुत-पुरुष के उपाग स्थानीय है। यह परिकल्पना अग-प्रविष्ट और अग-ब्राह्म—उन दो आगमिक वर्गों के आधार पर हुई है। इसमें 'मूल' और 'छेद' की कोई चर्चा नहीं है। हरिभद्रसूरि (विक्रम की ८ वीं शताब्दी) और आचार्य मलयगिरि (विक्रम की १३ वीं शताब्दी) के समय तक भी श्रुत-पुरुष की कल्पना में अग-प्रविष्ट और अग-ब्राह्म—ये दो ही परिपार्श्व रहे हैं। इन दोनों आचार्यों ने चूर्ण का अनुसरण किया है। उममें कोई नई बात नहीं जोड़ी है।^२ आचार्य मलयगिरि ने तो अग-प्रविष्ट तथा आचाराग आदि को भी 'मूल-भूत' कहा है।^३ श्रुत-पुरुष की प्राचीन रेखा-कृतियों में अग-प्रविष्ट श्रुत की स्थापना इस प्रकार है —

१-नदी चूर्ण, पृ० ४७

इन्चेतन्स सुतपुरितस्स ज सुत अंगभागठितं तं अगपविट्टं भण्णइ ।

२-नदी, हारिनदीय वृत्ति, पृ० १० ।

३-नदी, मलयगिरीया वृत्ति, पत्र २०३

पड गमपरदेवकृत तदगप्रविट्टं मूलभूतमित्यर्थ, गणधरदेवा हि मूलभूतमाचारादिकं धुनधुनरचयन्ति ।

१—बागैँ पैर	=	आचागग
२—बागैँ पैर	=	मूत्रकृताग
३—बाईँ जंवा	=	न्यादांग
४—बाईँ जंवा	=	मनवायाग
५—बागैँ ऊन	=	भगवती
६—बागैँ ऊन	=	जातावर्षक्या
७—उवर	=	उपामकव्या
८—पीठ	=	अन्तकृद्या
९—बाईँ मुजा	=	अनुनगपयानिकव्या
१०—बाईँ मुजा	=	प्रन्तव्याकरा
११—ग्रीवा	=	विवाक
१२—गिर	=	दृष्टिवाक

इस न्यापना के अनुसार नी मूल-न्यानीय (चरण-न्यानीय) आचागग और मूत्रकृताग है ।

श्रुत-मुद्र की अन्य रेखा-कृतिगें में न्यायता सिद्ध प्रकार में मिलती है । उनमें मूल-न्यानीय चार मूत्र हैं—आव्यक्त, वगैँकालिक, निगडित्प्रकृति और उन्नगप्यग्न । तंदी और अनुपयोगद्वार को व्याख्या-रग्यों (या कृत्तिका-मूत्रों) के रूप में 'मूल' में भी नीचे प्रदर्शित किया है ।

५ : अध्ययन-क्रम का परिवर्तन और मूल-सूत्र

आगमिक-अध्ययन के क्रम में जो परिवर्तन हुआ, उससे भी इसकी पुष्टि होती है। दशवैकालिक की रचना से पूर्व आचाराग के बाद उत्तराध्ययन पढ़ा जाता था। दशवैकालिक की रचना होने के पश्चात् दशवैकालिक के बाद उत्तराध्ययन पढ़ा जाने लगा।^१

प्राचीन काल में आचाराग के प्रथम अध्ययन 'शास्त्र-परिज्ञा' का अध्ययन करा कर यज्ञ की उपस्थापना की जाती थी और फिर वह दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन 'पङ्जीवनिका' का अध्ययन करा कर की जाने लगी।^२

प्राचीन काल में आचाराग के द्वितीय अध्ययन के पंचम उद्देशक के 'आमगन्ध' मूत्र का अध्ययन करने के बाद मुनि 'पिण्डकल्पी' होता था। फिर वह दशवैकालिक के पाँचवें अध्ययन 'पिण्डपणा' के अध्ययन के पश्चात् 'पिण्डकल्पी' होने लगा।^३

ये तीनों तथ्य इस बात के साक्षी हैं कि एक समय आचाराग का स्थान दशवैकालिक ने ले लिया। आचार की जानकारी के लिए आचाराग मूल-भूत-ज्ञा, वैसे ही दशवैकालिक भी आचार-ज्ञान के लिए मूल-भूत बन गया। संभव है आदि में पढ़े जाने के कारण तथा मनि की अनेक मूल-भूत प्रवृत्तियों के उद्बोधक होने के कारण इन्हें 'मूल-सूत्र' की सजा दी गई।

६ : मूल-सूत्रों की सरख्या

१—उपाध्याय समयसुन्दर ने 'सामाचारी शतक' में (इसकी रचना विक्रम सं० १३७२ में हुई थी) 'मूल-सूत्र' चार माने हैं—(१) दशवैकालिक, (२) ओघनिर्भुक्ति, (३) पिण्डनिर्भुक्ति और (४) उत्तराध्ययन।

१—व्यवहार भाज्य, उद्देशक ३, गाथा १७६ .

आयारस्त उ उवरि, उत्तरज्भयणा उ आसि पुव्वं तु ।

दसवेयालिय उवरि, इयाणि कि ते न होती उ ॥

२—यही, उद्देशक ३, गाथा १७४

पुव्वं सत्यपरिणणा, अवीय पट्ठियाइ होउ उवट्टवणा ।

इप्पि च्छज्जीवणया, कि सा उ न होउ उवट्टवणा ॥

३—यही, उद्देशक ३, गाथा १७५

चित्तिनमि वमचेरे, पचमउद्देश आमगम्मि ।

मुत्तमि पिण्डकल्पी, इइ पुण पिण्डेसणाएओ ॥

२—भावप्रभसूरि (१८ वी शताब्दी) ने भी 'मूल-सूत्र' चार माने हैं—(१) उत्तराध्ययन, (२) आवश्यक, (३) पिण्डनिर्युक्ति-ओघनिर्युक्ति और (४) दशवैकालिक ।^१ ये नाम उपाध्याय समयसुन्दर के नामों से भिन्न हैं । इसमें पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को एक मानकर 'आवश्यक' को भी 'मूल-सूत्र' माना गया है ।

३—स्थानकवासी^२ और तेरापन्थ^३ सम्प्रदाय में उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नदी और अनुयोगद्वार—इन चार सूत्रों को 'मूल' माना गया है ।

४—आधुनिक विद्वानों ने 'मूल सूत्रों' की संख्या और क्रम-व्यवस्था निम्न प्रकार मानी है

(क) प्रो० वेबर और प्रो० बूलर—उत्तराध्ययन, आवश्यक और दशवैकालिक को 'मूल-सूत्र' ठहराते हैं ।

(ख) डॉ० सरपेन्टियर, डॉ० विन्टरनित्ज और डॉ० ग्यारिनो—उत्तराध्ययन, आवश्यक, दशवैकालिक और पिण्डनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' मानते हैं ।

(ग) डॉ० सुब्रिंग—उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, आवश्यक, पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्रों' की संज्ञा देते हैं ।^४

(घ) प्रो० हीरालाल कापडिया—आवश्यक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, दशवैकालिक चूलिकाएँ, पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' कहते हैं ।^५

उक्त सब अभिमतों को संकलित करने पर 'मूल-सूत्रों' की संख्या आठ हो जाती है—आवश्यक, दशवैकालिक, दशवैकालिक-चूलिकाएँ, उत्तराध्ययन, पिण्डनिर्युक्ति, ओघनिर्युक्ति, अनुयोगद्वार और नदी ।

आगमों के वर्गीकरण में आवश्यक का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है । अनग-प्रविष्ट आगमों के दो विभाग किए गए हैं । उनमें पहला आवश्यक और दूसरा आवश्यक-व्यतिरिक्त है । दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि आगम दूसरे विभाग के अन्तर्गत हैं, जब कि आवश्यक का अपना स्वतंत्र स्थान है । इसलिए इसे 'मूल-सूत्रों' की संख्या में मम्मिलित करने का कोई हेतु प्रस्तुत नहीं है ।

१—जैनधर्मवरस्तोत्र, श्लोक ३० की स्वोपज्ञ वृत्ति—अथ उत्तराध्ययन-आवश्यक-पिण्डनिर्युक्ति तथा ओघनिर्युक्ति-दशवैकालिक—इति चत्वारि मूलसूत्राणि ।

२—श्री रत्नगुनि स्मृति गन्य, आगम और व्याख्या साहित्य, पृष्ठ २७ ।

३—श्रीमज्जाचार्य कृत प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध, आगमाधिकार, पृ० ७३-७४ ।

४—ए हिस्ट्री ऑफ़ दी केनोनिकल लिटरेचर ऑफ़ दी जैन्स, पृष्ठ ४४-४५ ।

५—वही, पृ० ४८ ।

ओघनिर्युक्ति और पिण्डनिर्युक्ति—ये दोनों आगम नहीं है, किन्तु व्याख्या-ग्रन्थ है। पिण्डनिर्युक्ति दशवैकालिक के पाँचवें अध्ययन—पिण्डपैपणा—की व्याख्या है। ओघनिर्युक्ति ओग-नमाचारी की व्याख्या है। यह आवश्यक निर्युक्ति का एक अंश है। विस्तृत कलेवर होने के कारण इसे पृथक्-ग्रन्थ का रूप दिया गया।^१ इसलिए इन्हें 'मूल-सूत्रों' की संख्या में सम्मिलित करने की अपेक्षा दशवैकालिक और आवश्यक के सहायक ग्रन्थों के रूप में स्वीकार करना अधिक सगत लगता है।

अनुयोगद्वार और नदी—ये दोनों चूलिका-सूत्र है। इन्हें 'मूल-सूत्र' वर्ग में रखने का कोई हेतु उपलब्ध नहीं है। सम्भव है बत्तीस सूत्रों की मान्यता के साथ (वि० १६ वां शताब्दी में) इन्हें 'मूल-सूत्र' वर्ग में रखा गया। श्रीमज्जयाचार्य ने पूर्व प्रचलित परम्परा के अनुसार अनुयोगद्वार और नदी को 'मूल-सूत्र' माना है। किन्तु इस पर उन्होंने अपनी ओर से कोई मीमांसा नहीं की है।

इस प्रकार 'मूल-सूत्र' की संख्या दो रह जाती है—दशवैकालिक और उत्तराध्ययन।

७ : मूल-सूत्रों का विभाजन-काल

दशवैकालिक की निर्युक्ति, चूर्णि और हारिभद्रोय वृत्ति में मूल-सूत्रों की कोई चर्चा नहीं है।

उसी प्रकार उत्तराध्ययन की निर्युक्ति, चूर्णि और शान्त्याचार्य कृत बृहद् वृत्ति में भी उनकी कोई चर्चा नहीं है।

उममें यह स्पष्ट है कि विक्रम की ११ वीं शताब्दी तक 'मूल-सूत्र' वर्ग की स्थापना नहीं हुई थी।

घनपाल का अस्तित्व-काल ग्यारहवीं शताब्दी है। उन्होंने 'श्रावक-विधि' में पणालीस आगमों का उल्लेख किया है।^२ इससे यह अनुमान होता है कि घनपाल से पहले ही आगमों को मन्था पैतालीस निर्धारित हो चुकी थी। प्रद्युम्नसूरि (वि० की १३ वां शताब्दी) कृत विचारमार-प्रकरण में भी आगमों की संख्या पैतालीस है, किन्तु इनमें पणालीस विभाग नहीं है। उममें ग्यारह अग और चौत्तिस ग्रन्थों का उल्लेख किया है।

१-आपस्तम्ब निर्युक्ति, गाथा ६६५, वृत्ति पत्र ३४१

माप्प्रननोपनिर्युक्तिर्वक्तव्या, सा च महत्वात् पृथग्ग्रन्थान्तररूपा कृता।

२-अमचनूदर गणी विरचित श्री गाथासहस्री में घनपाल कृत 'श्रावक विधि' का उल्लेख है। उममें पाठ आता है—पणयालीस आगम (श्लोक २९७, पृ० १८)।

३-विचारमने गाथा ३८४-३५१।

प्रभावक-चरित मे अग, उगग, मूल और छेद—आगमो के ये चार विभाग प्राप्त है ।^१ यह विक्रम संवत् १३३४ की रचना है ।

इससे यह फलित होता है कि 'मूल-सूत्र' वर्ग की स्थापना चौदहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हो चुकी थी । फिर उपाध्याय समयसुन्दर के सामाचारी शतक में इसका उल्लेख प्राप्त होता है ।^२

८ : दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान

जैन-आगमो में दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है । श्वेताम्बर और दिगम्बर—दोनों परम्पराओं के आचार्यों ने इनका बार-बार उल्लेख किया है । दिगम्बर-साहित्य में अंग-ब्राह्म के चौदह प्रकार बतलाए गए हैं । उनमें सातवाँ दशवैकालिक और आठवाँ उत्तराध्ययन है ।^३

श्वेताम्बर-साहित्य में अंग-ब्राह्म श्रुत के दो मुख्य विभाग हैं—(१) कालिक और (२) उत्कालिक । कालिक सूत्रों की गणना में पहला स्थान उत्तराध्ययन का और उत्कालिक सूत्रों की गणना में पहला स्थान दशवैकालिक का है ।^४

९ : दशवैकालिक : आकार और विषय-वस्तु

दशवैकालिक के दस अध्यायन हैं और चूँकि वह विकाल में रचा गया, इसलिए इसका नाम दशवैकालिक रखा गया । इसके कर्ता श्रुतकेवली शय्यभव हैं । अपने पुत्र—शिष्य मनक के लिए उन्होंने इसकी रचना की । वीर संभवत् ७२ के आस-पास 'चम्पा' में इसकी रचना हुई ।

१—प्रभावक चरितम्, दूसरा आर्यरक्षित प्रबन्ध

ततश्चतुर्विध. कार्योऽनुयोगोऽत परं मया ।

ततोऽङ्गोपाङ्गमूलख्यग्रन्थच्छेदकृतागम ॥२४१॥

२—सामाचारी शतक, पत्र ७६ ।

३—(क) कषायपाहुड (जयधवला सहित) भाग १, पृष्ठ १३।२५

दसवेयालियं उत्तरज्ज्जयणं ।

(ख) गोम्मटसार (जीव-काण्ड), गाथा ३६७

दसवेयालं च उत्तरज्ज्जयणं ।

४—नंदी, सूत्र ४३

से कि तं कालियं? कालियं अगेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—उत्तरज्ज्जयणाइं

से कि तं उक्कालियं? उक्कालियं अगेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—दसवेयालियं

उनकी दो चूलिकाएँ हैं। अध्ययनो के नाम, श्लोक, सख्या और विषय इस प्रकार है —

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
१ द्रुममुष्पिका १	५		धर्म-प्रशंसा और माधुकरी वृत्ति ।
२ आम्रप्रपूर्वक	११		सयम में वृत्ति और उसकी साधना ।
३ धृष्टकाचार	१५		आचार और अनाचार का विवेक ।
४ धर्म-प्रज्ञति या पञ्जीवनिका	२८	२३	जीव-सयम तथा आत्म-सयम का विचार ।
५ विण्डैपणा	१५०		गवेषणा, ग्रहणैषणा और भोगैषणा की शुद्धि ।
६ महाचार	६८		महाचार का निरूपण ।
७ वाक्यशुद्धि	५७		भाषा-विवेक ।
८ आचार-प्रणिधि	६३		आचार का प्रणिधान ।
९ विनय-ममाधि	६२	७	विनय का निरूपण ।
१० सभिक्षु चूलिका	२१		भिक्षु के स्वरूप का वर्णन ।
१ गतिवाक्या	१८	१	सयममें अस्थिर होने पर पुनः स्थिरीकरण का उपदेश ।
२ विविक्तचर्या	१६		विविक्तचर्या का उपदेश ।

विविक्तकार के अनुसार दशवैकालिक का समावेश चरण-करणानुयोग में होता है । समाप्त कृत्य जय यह है कि इसका प्रतिपाद्य आचार है । वह दो प्रकार का होता है—

(१) चरण—व्रत आदि और (२) करण—पिण्ड-विशुद्धि आदि ।^२

धर्मशास्त्र के अनुसार दशवैकालिक आचार और गोचर की विधि का वर्णन करने वाला सूत्र है ।^१ जगपण्णत्ति के अनुसार इसका विषय गोचर-विधि और पिण्ड-विशुद्धि

१—नत्तार्यवृत्ति धुनसागरीय, से इसका नाम 'वृक्षकुसुम' दिया है—देखिए पृ० ११ पा० टि० २ ।

२—दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा ४

अमुत्तममुत्ताड, निदिसिड एत्य होइ अहिगारो ।

चग्गासग्गापृओगेण, तस्स दारा इमे हृत्ति ॥

३—दशवैकालिक, मत्प्रवणणा (१।१।१), पृ० ९७

दशवैकालिक आचार-गोचर-विधि चण्डोइ ।

है ।^१ तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय में इसे वृक्ष-कुसुम आदि का भेद-कथक और यनियों के आचार का कथक कहा है ।^२

उक्त प्रतिपादन से दशवैकालिक का स्थूलरूप हमारे सामने प्रस्तुत हो जाता है, किन्तु आचार्य शय्यभवन ने आचार-गोचरकी प्ररूपणा के साथ-साथ अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों का निरूपण किया है । जीव-विद्या, योग-विद्या आदि के अनेक सूक्ष्म-बीज इसमें विद्यमान हैं ।

१० : दशवैकालिक : निर्यूहण कृति

रचना दो प्रकार की होती है—स्वतन्त्र और निर्यूहण । दशवैकालिक निर्यूहण कृति है, स्वतन्त्र नहीं । आचार्य शय्यभवन श्रुतकेवली थे । उन्होंने विभिन्न पूर्वों से इसका निर्यूहण किया—यह एक मान्यता है ।

दशवैकालिक की निर्युक्ति के अनुसार चौथा अध्ययन—आत्मप्रवाद पूर्व से, पाँचवाँ अध्ययन—कर्मप्रवाद पूर्व से, सातवाँ अध्ययन—सत्यप्रवाद पूर्व से और शेष सभी अध्ययन—प्रत्याख्यान पूर्व की तीसरी वस्तु से उद्धृत किए गए हैं ।^३

दूसरी मान्यता के अनुसार इसका निर्यूहण गणिपिटक द्वादशांगी से किया गया है ।^४ किस अध्ययन का किस अंग से उद्धरण किया गया, इसका कोई उल्लेख प्राप्त नहीं है । किन्तु तीसरे अध्ययन का विषय सूत्रकृतांग १।६ से प्राप्त होता है । चतुर्थ अध्ययन का विषय भी सूत्रकृतांग १।११।७,८ तथा आचारांग १।१।१ का क्वचित् मक्षेप और क्वचित् विस्तार है । पाँचवें अध्ययन का विषय आचारांग के दूसरे अध्ययन लोक-विजय

१-अंगपण्णत्ति, ३।२४ .

जदि गोचरस्स विहि, पिडविसुद्धि च ज पख्वेहि ।

दसवेआलिय सुत्तं, दह काला जत्थ संवुत्ता ॥

२-तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय, पृष्ठ ६७

वृक्षकुसुमादीना दशाना भेदकथकं यतीनामाचारकथकच दशवैकालिकम् ।

३-दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा, १६, १७

आयप्पवायपुन्वा, निज्जूढा होइ धम्मपन्त्ती ।

कम्मप्पवायपुन्वा, पिडस्स उ एसणा तिविहा ॥

सच्चप्पवायपुन्वा, निज्जूढा होइ वक्खुद्धी उ ।

अवसेसा निज्जूढा, नवमस्स उ तइयवत्पूओ ॥

४-वही, गाथा १८

वीओऽवि अ आएसो, गणिपिडगाओ दुवालसगाओ ।

एअं किर णिज्जूढं, मणगस्स अणुग्गह्हाए ॥

ने पाँचवें उद्देशक और आठवें विमोह अध्ययन के दूसरे उद्देशक से प्राप्त होता है। छठा अध्ययन ममवायाग ममवाय १८ के “वयच्छक्कं कायच्छक्कं, अकप्यो गिहिभायणं। पन्डियक निमिज्जा य, सिगाण सोभवज्जणं ॥” श्लोक का विस्तार है। सातवें अध्ययन के बीज आचागग १।१।६।५ में मिलते हैं। आठवें अध्ययन का आशिक विषय स्थानाग ८।५।६८, ६०१, ६१५ से मिलता है। आशिक तुलना अन्यत्र भी प्राप्त होती है।^१

आचागग के दूसरे श्रुतस्कध की प्रथम चूला के अध्ययन १ और ४ से क्रमशः उनके पाँचवें और सातवें अध्ययन की तुलना होती है। किन्तु हमारे अभिमत में वह दशमकालिक के वाद का निर्यूहण है। इसके दूसरे, नवें तथा दसवें अध्ययन का विषय उत्तराध्ययन के प्रथम और पन्द्रहवें अध्ययन से तुलित होता है। किन्तु वह अग-बाह्य आगम है।

यह सूत्र श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्पराओं में मान्य रहा है। इसके कर्तृत्व के विषय में भी श्वेताम्बर-साहित्य में प्रामाणिक ऊहापोह है। श्वेताम्बर आचार्यों ने इस पर निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, दीपिका, अवचूरि आदि-आदि व्याख्या-ग्रन्थ लिखे हैं।

दिगम्बर-परम्परा में भी यह सूत्र प्रिय रहा है। घवला, जयधवला, तत्त्वार्थवातिक (राजनार्निता), तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय आदि में इस विषय का उल्लेख मिलता है। परन्तु इनके निश्चित कर्तृत्व तथा स्वरूप का कहीं भी विवरण प्राप्त नहीं होता। इसके कर्तृत्व का उल्लेख करते हुए आरातीयैराचार्यैर्निर्यूद्ध—इनना मात्र सवेत देते हैं। तत्र तत्र यह सूत्र उनको मान्य रहा और कब से यह अमान्य हुआ—यह प्रश्न आज भी अज्ञात है।

११ : दशवैकालिक : व्याकरण-विमर्श

प्रस्तुत सूत्र में अलाक्षणिक (व्याकरण-अमिद्ध) मकार के अनेक प्रयोग मिलते हैं—
वत्यगन्धमलंकारं (२।२), आहारमार्दणि (६।४६), निक्खम्ममाणए (१०।१) ।

विभक्ति और वचन के व्यत्यय भी मिलते हैं—पीढए (७।२८)—यहाँ चतुर्थी के अर्थ में प्रथमा विभक्ति है । वुद्धवयणे (१०।६)—यहाँ तृतीया के अर्थ में सप्तमी विभक्ति है ।

अच्छन्दा जे न भुजन्ति, न से चाड ति वुच्चड (२।२)—यहाँ 'भुजन्ति' बहुवचन है और 'से चाड' एकवचन है ।

इस प्रकार कुछेक उदाहरण हमने प्रस्तुत किए हैं । विस्तार के लिए देखें—
“दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन”, अध्ययन १ व्याकरण-विमर्श ।

१२ : दशवैकालिक : भाषा की दृष्टि से

इसमें अर्धमागवी और जैन-महाराष्ट्री आदि के सबलित प्रयोग हैं । 'ह्यंमि वा', 'पारंसि वा' (४। सूत्र २३) में अर्धमागवी के प्रयोग हैं । प्राकृत में सप्तमी के एकवचन के दो रूप बनते हैं—'ह्ये, ह्यमि' ।^१ 'ह्यसि' यह अर्धमागवी में बनना है । 'जे' (२।३), 'करेमि' (४। सूत्र १०)—इनमें 'ओकार' के स्थान में जो 'एकार' है, वह अर्धमागवी का लक्षण है ।^२

मणसा (८।३) जोगसा (८।१७)—ये अर्धमागवी के प्रयोग हैं । प्राकृत में ये नहीं मिलते ।

बह्वे (७।४८)—बहु शब्द का प्रथमा का बहुवचन, जमोकामी (२।७), दोच्चे (४।सूत्र १२), तच्चे (४।सूत्र १३), सोच्चा (४।११), लड्डूण (५।२।४७), ऊमंढं (५।२।२५), मंनुड (५।१।८३), परिवुड (८।१।१५), कड (४। २०), कट्टु (चूलिका १।१४) आदि-आदि तथा मकार के अलाक्षणिक प्रयोग—ये सब अर्धमागवी के प्रयोग हैं, जिन्हें हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में आप्रप्रयोग कहा है । हियडुयाए (४।सूत्र १७)—यहाँ स्वार्य में 'या' और 'य' के स्थान में 'एकार' का प्रयोग है, जो प्राकृत-मिद्ध नहीं है । तेडंदिआ में 'ति' का 'ते' हुआ है । यह अर्धमागवी का प्रयोग है ।^३ कही शौर्येनी के लक्षण भी मिलते हैं जैसे—अत्तवं (आत्मवान्) (८।४८) । यहाँ 'न' को 'म' क्रिया है, जो शौर्येनी में होता है ।^४

१-हेमचन्द्रानुशासन, ८।३।११ डे म्मि डे ।

२-वही, ८।४।२८७ .

अत एतसौ पुंमि मागध्याम् ।

३-प्राकृत भाषाओ का व्याकरण

पैग ४३८, पृष्ठ ६५१ ।

४-हेमचन्द्रानुशासन, ८।४।२६४ मो वा ।

दशवैकालिक की द्वितीय चूर्ण के अन्त में कोई प्रशस्ति नहीं है और न ग्रन्थकार का नाम ही उपलब्ध है। पारंपरिक अनुश्रुति से यह जिनदाम महत्तर कृत मानी जाती है।

उत्तराध्ययन (अ० ३०) चूर्ण पृ० २७४ में एक उल्लेख आता है—“पट्टोऽपि चित्तो नानाप्रकारो प्रकीर्णतपोऽभिधीयते, तदन्यत्राभिहित, शेष दशवैकालिकचूर्णो अभिहितम्।” इस वाक्य से दशवैकालिक और उत्तराध्ययन की चूर्णियाँ एक-कर्तृक प्रतीत होती हैं। दशवैकालिक चूर्ण (पृ० २१) में इत्वरिक तप का वर्णन बहुत संक्षिप्त रूप में किया गया है। शेष वर्णन विस्तृत है। उत्तराध्ययन चूर्ण (पृ० २७४) में इत्वरिक तप के पाँच प्रकारों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। छठे प्रकीर्ण तप के कहीं अन्यत्र वर्णन करने की सूचना दी है और शेष वर्णन दशवैकालिक चूर्ण में किया गया है—ऐसा लिखा है।

दशवैकालिक (१।१) की चूर्ण में पृ० २१ से ३७ तक तप का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसीलिए उत्तराध्ययन में उन्होंने इसकी पुनरुक्ति नहीं की। सही अर्थ में तप का इतना विस्तृत वर्णन उत्तराध्ययन के तपोव्ययन (अ० ३०) की चूर्ण में करना चाहिए था किन्तु दशवैकालिक चूर्ण की रचना पहले की थी। वहाँ प्रथम अध्ययन के प्रथम श्लोक में आए ‘तप’ शब्द का विशद वर्णन कर डाला। इसीलिए उत्तराध्ययन में, जो दशवैकालिक की चूर्ण में नहीं था, उसी का उल्लेख कर शेष के लिए दशवैकालिक चूर्ण में अभिहित की सूचना दे दी।

मुनि श्री पुण्यविजयजी के मतानुसार अगस्त्यसिंह की चूर्ण का रचना-काल विक्रम की तीसरी शताब्दी के आस-पास है।^१

अगस्त्यसिंह स्यविर ने अपनी चूर्ण में तत्त्वार्थसूत्र, आवश्यकनिर्युक्ति, ओषधिनिर्युक्ति, व्यवहारभाष्य, कल्पभाष्य आदि ग्रन्थों का उल्लेख किया है। इनमें अन्तिम रचनाएँ भाष्य हैं। उनके रचना-काल के आधार पर अगस्त्यसिंह का समय पुन अन्वेषणीय है।

अगस्त्यसिंह ने पुस्तक रखने की औत्सर्गिक ओर आपवादिक—दोनो विधियों की चर्चा की है।^२ इस चर्चा का आरम्भ जब देवद्विगणी ने आगम पुस्तकाम्बु किए तब या उसके आस-पास हुआ होगा। अगस्त्यसिंह यदि देवद्विगणी के उत्तरवर्ती और जिनदाम के पूर्ववर्ती हों तो इनका समय विक्रम की ५-६ठी शताब्दी हो जाता है।

१—बृहत्कल्प भाष्य, भाग ६, आमुख पृष्ठ ४।

२—दशवैकालिक १।१ अगस्त्य चूर्ण

उक्वारणं सजमो—पोत्यएसु घेष्पतेसु असजमो महाघणमोल्लेसु वा हूमेसु,
वज्जणं तु संजमो, कालं पडुच्च चरणकरणद्वं अब्बोच्चित्तिनिमित्त गेप्पत्तम्म
संजमो भवति।

और पायचन्द्र सूरि तथा धर्मसिंह मुनि (विक्रम की १८वीं शताब्दी) ने गुजराती-राजस्थानी-मिश्रित भाषा में टब्का लिखा । किन्तु इनमें कोई उल्लेखनीय नया चिन्तन और स्पष्टीकरण नहीं है । ये सब सामयिक उपयोगिता की दृष्टि से रचे गए हैं । अतः इसकी महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ तीन ही हैं—(१) अगस्त्य चूर्ण, (२) जिनदास चूर्ण और (३) हारिभद्राय वृत्ति ।

अगस्त्यसिंह स्वविर का चूर्ण इन सबमें प्राचीनतम है, इसलिए यह सर्वाधिक मूल-सर्गो है । जिनदास महत्तर अगस्त्यसिंह स्वविर के आस-पास भी चलते हैं और कहीं-कहीं इनसे दूर भी चले जाते हैं । टीकाकार तो कहीं-कहीं बहुत दूर चले जाते हैं ।^१

लगता है चूर्ण के रचना-काल में भी दशवैकालिक की परम्परा अविच्छिन्न नहीं रही थी । अगस्त्यसिंह स्वविर ने अनेक स्थलों पर अर्थ के कई विकल्प किए हैं । उन्हें देखकर सहज ही जान पड़ता है कि वे मूल अर्थ के बारे में अज्ञान नहीं है ।

आर्य सुहृस्ती ने एक बार जो आचार-शैथिल्य की परम्परा का सूत्रपात किया वह आगे चल कर उग्र बन गया । ज्यो-ज्यो जैन आचार्य लोक-संग्रह की ओर अधिक भुके, त्यो-त्यो अपवादों की बाढ-सी आ गई । वीर-निर्वाण की नवी शताब्दी (८५०) में चैत्यवास का प्रारम्भ हुआ । इसके बाद शिथिलाचार की परम्परा बहुत ही उग्र हो गई । देवद्विगणी क्षमाश्रमण (वीर-निर्वाण की दसवीं शताब्दी) के बाद चैत्यवास का प्रभुत्व बढ़ा और वह जैन परम्परा पर छा गया । अभयदेव मूरि ने इस स्थिति का चित्रण इन शब्दों में किया है—“देवद्विगणी क्षमाश्रमण तक की परम्परा को मैं भाव-परम्परा मानता हूँ । इसके बाद शिथिलाधारियों ने अनेक द्रव्य-परम्पराओं का प्रवर्तन कर दिया ।”^२ आचार-शैथिल्य की परम्परा में जो ग्रन्थ लिखे गए, उनमें ऐसे अपवाद भी हैं जो आगम में प्राप्त नहीं हैं । प्रस्तुत आगम की चूर्ण और टीका तात्कालिक वातावरण में मुक्त नहीं हैं । इन्हें पढ़ते समय हम तथ्य को नहीं भूल जाना चाहिए ।

उत्सर्ग की भाँति अपवाद भी मान्य होते हैं । पर उनकी भी एक निश्चित सीमा है । जिनका बनाया हुआ आगम प्रमाण होता है, उन्हीं के लिए अपवाद मान्य हो सकते हैं । वर्तमान में जो व्याख्याएँ उपलब्ध हैं, वे चोदहपूर्वी या दमपूर्वी की नहीं हैं, इसलिए उन्हें आगम (अर्थागम) की कोटि में नहीं रखा जा सकता ।

१—उदाहरण के लिए देखे दशवैकालिक, भाग २, पृष्ठ २६६, टिप्पण १७७ ।

२—आगम अद्भुत्तरी, गाथा १४

देवद्विगणमात्तमणजा, परंपरं नावओ वियाणेमि ।

सितिलायारे ठविया, दब्बेण परंपरा वहुहा ॥

परम्परा मिटी नहीं। कुछ आगमों के पाठ-भेद केवल आगमों की व्याख्याओं में उपलब्ध है। व्याख्याकार—‘नागार्जुनीयास्तु एव पठन्ति’ लिखकर उसका निर्देश करते रहे हैं और कुछ आगमों के पाठ-भेद मूल से ही सम्बद्ध रहे, इस कारण से उनका परम्परा-भेद चलता ही रहा। दशवैकालिक सम्भवतः इसी दूसरी कोटि का आगम है। इसकी उपलब्ध व्याख्याओं में सबसे प्राचीन व्याख्या अगस्त्य चूर्ण है। उसमें अनेक स्थलों पर परम्परा-भेद का उल्लेख है।^१ इस सारी वस्तु-सामग्री को देखते हुए लगता है कि चूर्णिकार और टीकाकार के सामने भिन्न-भिन्न परम्परा के आदर्श रहे हैं और टीकाकार ने अपनी परम्परा के आदर्श और व्याख्या-पद्धति को महत्त्व दिया हो तथा सम्भव है कि परम्परा-भेद के कारण चूर्णियों की उपेक्षा की हो। कल्पना की इस भूमिका पर पहुँचने के बाद चूर्ण एवं टीका के पाठ और अर्थ के भेद की पहली सुलभ जाती है।

दशवैकालिक के रचना-काल, रचना-शैली, व्याकरण-विमर्श, छन्द-विमर्श आदि विषयों की विस्तृत चर्चा हम ‘दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन’ में कर चुके हैं। यहाँ हम उत्तराध्ययन के बारे में कुछ विस्तार से विचार करेंगे।

१४ : उत्तराध्ययन

आलोच्यमान आगम का नाम ‘उत्तराध्ययन’ है। इसमें दो शब्द हैं—‘उत्तर’ और ‘अध्ययन’। समवायाग के—‘छत्तीस उत्तरज्जयणा’^२—इस वाक्य में उत्तराध्ययन के ‘छत्तीस अध्ययन’ प्रतिपादित नहीं हुए हैं, किन्तु ‘छत्तीस उत्तर अध्ययन’ प्रतिपादित हुए हैं। नदी में भी ‘उत्तरज्जयणाणि’ यह बहुवचनात्मक नाम मिलता है।^३ उत्तराध्ययन के अंतिम श्लोक में भी—‘छत्तीम उत्तरज्जाए’—ऐसा बहुवचनात्मक नाम मिलता है।^४ निर्युक्तिकार ने ‘उत्तराध्ययन’ का बहुवचन में प्रयोग किया है।^५ चूर्णिकार ने ‘छत्तीम

१—देखिए—दशवैकालिक, भाग २, पृष्ठ २२१, टिप्पण २९ तथा पृष्ठ ३५२, टिप्पण ७८।

२—समवायाग, समवाय ३६।

३—नंदी, सूत्र ४३।

४—उत्तराध्ययन ३६।२६८।

५—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ४

देखिये पृ० २१, पा० टि० ४।

धवलाकार (वि० ६ वी गताब्दी) के मतानुसार 'उत्तराध्ययन' उत्तर-पदो का वर्णन करता है । यह 'उत्तर' शब्द समाधान सूचक है ।^१

अंगपण्णत्ति (वि० १६ वी गताब्दी) से 'उत्तर' शब्द के दो अर्थ फलित होते हैं—

(१) उत्तरकाल—किसी ग्रन्थ के पश्चात् पढ़े जाने वाले अध्ययन ।

(२) उत्तर—प्रश्नो का उत्तर देने वाले अध्ययन ।^२

ये अर्थ भी 'उत्तर' और 'अध्ययनो' के सम्बन्ध की वास्तविकता पर एकाग्र डालते हैं ।

उत्तराध्ययन में प्रश्नोत्तर-शैली से लिखित पाँच अध्ययन हैं—६, १६, २३, २५ और २६ । आंशिक रूप में कुछ प्रश्नोत्तर अन्य अध्ययनो में भी है । इस दृष्टि से 'उत्तर' का समाधान-सूचक अर्थ संगत होते हुए भी पूर्णतः व्याप्त नहीं है ।

'उत्तरकाल' वाची अर्थ संगत होने के साथ-साथ पूर्णतः व्याप्त भी है, इसलिए इस 'उत्तर' का मुख्य अर्थ यही प्रतीत होता है ।

१५ : उत्तराध्ययन : रचना-काल और कर्तृत्व

उत्तराध्ययन एक कृति है । कोई भी कृति आश्वत नहीं होती, इसलिए यह प्रश्न भी स्वाभाविक है कि इसका कर्ता कौन है ? इस प्रश्न पर सर्व प्रथम निर्युक्तिकार ने विचार किया है । चूर्णिकार ने भी इस प्रश्न को स्पष्ट शब्दों में उठाया है ।^३ निर्युक्तिकार की दृष्टि में उत्तराध्ययन एक-कर्तृक नहीं है । उनके मतानुसार उत्तराध्ययन के अध्ययन, कर्तृत्व की दृष्टि से, चार वर्गों में विभक्त होते हैं—

(१) अंगप्रभव

(२) जिन-भाषित

(३) प्रत्येकबुद्ध-भाषित

(४) सवाद-समुत्थित^४

१—धवला, पृष्ठ ९७ (सहारनपुर प्रति, लिखित)

उत्तरज्झयणं उत्तरपदाणि वण्णेइ ।

२—अंगपण्णत्ति ३।२५, २६

उत्तराणि अहिज्जंति, उत्तरज्झयण पदं जिणिदेहि ।

३—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ६

एयाणि पुण उत्तरज्झयणाणि कओ केण वा भासियाणित्ति ?

४—उत्तराध्ययन निर्युत्ति, गाथा ४

अंगप्यभवा जिणभासिया य पत्तेयवुद्धसवाया ।

बंधे मुक्खे य कया छत्तीम उत्तरज्झयणा ॥

निर्युक्ति मे दूसरे अध्ययन को कर्मप्रवाद-पूर्व से निर्यूढ माना गया है और इसके प्रारम्भिक वाक्य से यह फलित होता है कि वह जिन-भाषित है ।

निर्युक्तिकार के चार वर्गों से कर्तृत्व पर कोई प्रकाश नहीं पडता, किन्तु विषय-वस्तु पर प्रकाश पडता है । दसवें अध्ययन की विषय-वस्तु भगवान् महावीर द्वारा कथित है । किन्तु उस अध्ययन के कर्ता भगवान् महावीर नहीं हैं—यह उस अध्ययन के अतिम वाक्य—‘बुद्धस्स निसम्म भासिय’—से स्पष्ट है । इसी प्रकार दूसरे और उनतीसवें अध्ययन के प्रारम्भिक वाक्यों से भी यही तथ्य प्रकट होता है । छठे अध्ययन के अतिम श्लोक से भी यही सूचित होता है—

एवं से उदाहु अगुत्तरनाणी अगुत्तरदंसी अगुत्तरनाणदंसणधरे ।

अरहा नायपुत्ते मगवं वेसालिए वियाहिए ॥ (६।१७)

प्रत्येकबुद्ध-भाषित अध्ययन प्रत्येकबुद्ध-विरचित नहीं है । आठवें अध्ययन के अतिम श्लोक से इस अभिमत की पुष्टि होती है—

इइ एस धम्मे अक्खाए कचिकेणं च विसुद्धपन्नेणं ।

तरिहिनत्ति जे उ काहिनत्ति नेहि आराहिया दुवे लोगे ॥ (८।२०)

सवाद-समुत्थित अध्ययन, नवाँ और तेईसवाँ भी नमि तथा केशि-गौतम द्वारा विरचित नहीं है । इसका समर्थन भी उनके अन्तिम श्लोको से होता है—

एवं करेन्ति संबुद्धा पंडिया पवियक्खणा ।

विणियट्टन्ति मोगेसु जहा से नमी रायरिसि ॥ (९।६२)

तोसिया परिसा सव्वा सम्मगं समुवट्ठिया ।

संथुया ते पसीयन्तु भयवं केसिगोयमे ॥ (२३।८९)

इस प्रकार हम देखते हैं कि निर्युक्तिकार के चार वर्गों से इतना ही फलित होता कि भगवान् महावीर, कपिल, नमि और केशि-गौतम—इनके उपदेशों, उपदेश-गाथाओं या सवादों को आधार बनाकर ये अध्ययन रचे गए हैं । वे कब और किसके द्वारा रचे गए—इस प्रश्न का निर्युक्ति में कोई उत्तर प्राप्त नहीं है । चूर्णि और बृहद्वृत्ति में भी नहीं है । अन्य किसी साधन से भी प्रस्तुत सूत्र के कर्ता का नाम ज्ञात नहीं हो सका है । इनके रचना-काल की मीमासा मे हम इतना जान सकते हैं कि ये अध्ययन विभिन्न युगों में हुए अनेक ऋषियों द्वारा उद्गीत हैं ।

मात्स्य, न्याय, वैशेषिक आदि दर्शन ई० पू० ५ वी शताब्दी से लेकर ई० पू० पहली शताब्दी तक व्यवस्थित रूप धारण कर चुके थे । भगवद्गीता और उत्तरवर्ती उपनिषदों का निर्माण ई० पू० ५०० के लगभग हुआ था । आत्मा, पुनर्जन्म, मोक्ष, कर्म, ससार की धगभंगरस्ता, वैराग्य व मन्यास की चर्चा इन युग में विशेष विकसित हुई थी ।

आर्य रक्षित सूरि (वि० शती प्रथम) ने आगमो के चार वर्ग किए—

- | | |
|-------------------|------------------|
| (१) चरण-करणानुयोग | (३) गणितानुयोग |
| (२) धर्मकथानुयोग | (४) द्रव्यानुयोग |

इस वर्गीकरण में उत्तराध्ययन धर्मकथानुयोग के अन्तर्गत गृहीत है।^१ पर आचारात्मकअध्ययन चरण-करणानुयोग में तथा सैद्धान्तिक अध्ययन द्रव्यानुयोग में समाते हैं। इस प्रकार उत्तराध्ययन का वर्तमान स्वरूप अनेक अनुयोगो का सम्मिश्रण है। यह सम्मिश्रण देवर्द्धिगणी के सकलन-काल में हुआ, यह बहुत संभव है।

कुछ विद्वानो का अभिमत है कि उत्तराध्ययन के पहले अठारह अध्ययन प्राचीन हैं और उत्तरवर्ती अठारह अध्ययन अर्वाचीन। किन्तु इस अभिमत की पुष्टि के लिए उन्होने कोई निश्चित हेतु प्रस्तुत नहीं किया है। यह हो सकता है कि कुछ उत्तरवर्ती अध्ययन अर्वाचीन हो, किन्तु सारे उत्तरवर्ती अध्ययन अर्वाचीन हैं, ऐसा मानने के लिए कोई कारण प्राप्त नहीं है। इकतीसवें अध्ययन में आचाराग, सूत्रकृताग आदि प्राचीन आगमो के साथ-साथ दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहार और निशीथ जैसे अर्वाचीन आगमो के नाम भी उपलब्ध होते हैं।^२ ये श्रुतकेवली भद्रवाहु (वीर-निर्वाण दूसरी शती) द्वारा निर्यूढ या कृत हैं।^३ इसलिए प्रस्तुत अध्ययन भद्रवाहु के वाद की रचना है।

१—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ १ .

अत्र धम्माणुयोगेनाधिकार ।

२—उत्तराध्ययन, ३१।१६-१८ .

तेवीसइ सूयगडे, रूवाहिएसु सुरेसु अ ।

जे मिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥

पणवीसभावणाहि, उद्देसेसु दसाइणं ।

जे मिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥

अणगारगुणेहि च, पकप्पम्मि त्हेव य ।

जे मिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥

३—(क) दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति, गाथा १

वंदामि भद्वाहुं, पाईणं चरिस्सयल्लसुयणाणि ।

सुत्तस्स कारगमिस्सि, दसासु कप्पे य ववहारे ॥

(ख) पंचकल्प भाष्य, गाथा २३, चूर्णि .

तेण भगवत्ता भायारपकप्प दसाकप्प ववहारा य नवमपुब्बनीसंदभूता
निज्जूटा ।

उत्तराध्यायन में अग और अग-वाह्य—इन दो आगमिक विभागों के अति-
 न्त ग्याह अग प्रकीर्णक और दृष्टिवाद का उल्लेख भी मिलता है ।^१ प्राचीन आगमों
 में वाह्य अग ग्याह अगो या वारह अगो के अध्ययन का वर्णन मिलता है । किन्तु
 अग-वाह्य या प्रकीर्णक अग के अध्ययन का वर्णन नहीं मिलता, इसलिए यह अध्ययन
 भी उत्तराध्यायन जागम-व्यवस्था के आम-पाम की रचना प्रतीत होती है ।

उत्तराध्यायन में द्रव्य, गुण तथा पर्याय की परिभाषाएँ भी हैं । इनकी तुलना
 अगमों में द्रव्य, गुण और कर्म से की जा सकती है—

उत्तराध्यायन^२

वैशेषिक दर्शन^३

(१) द्रव्य—

(१) द्रव्य—

गुणानामानामा द्रव्य

क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम् ।

(२) गुण—

(२) गुण—

गुणान्वन्मिमा गुणा

द्रव्याश्रय्यगुणवान् सयोगविभागेष्वकारणमनपेक्ष
 इति गुणलक्षणम् ।

(३) कर्म—

(३) कर्म—

अतग पञ्जराण तु
 उभयो अस्मिदा भवे ।

एकद्रव्यमगुण सयोगविभागेष्वनपेक्षकारणमिति
 कर्म-लक्षणम् ।

उत्तराध्यायन में द्रव्य, गुण और पर्याय की परिभाषा प्रथम बार उत्तराध्यायन में
 आगमों में विवरणात्मक अर्थ ही अधिक मिलते हैं, सक्षिप्त परिभाषाएँ
 हैं । उनकी पूर्ति व्याख्या-ग्रन्थों से होती है । उत्तराध्यायन में ये परिभाषाएँ
 हैं । प्रामुख्य अध्ययन के कर्त्ता वैशेषिक दर्शन की उक्त परिभाषाओं से
 प्रतीत होता है । इसलिए यह अध्ययन भी अर्वाचीन संकलन में
 ही अतमान होता है । उत्तराध्यायन के प्राचीन सस्करण में कितने अध्ययन
 दर्शन सम्करण में कितने अध्ययन संकलित किए गये, यह निश्चय पूर्वक
 नहीं है । किन्तु मूल रूप में इतना कहा जा सकता है कि प्राचीन सस्करण
 में भाग था जो अर्वाचीन परिवर्द्धन का मुख्य भाग सैद्धान्तिक है ।

उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का उल्लेख श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनो परम्पराओ में मिलता है ।

‘जैन सिद्धान्त भवन’, आरा (बिहार) में प्राप्त धवला की प्रति (पत्र ५४५) में मिलता है—“उत्तराध्ययन में उद्गम, उत्पादन और एषणा से सम्बन्धित दोषो के प्रायश्चित्तो का विधान है ।”^१

अंगपण्णत्ति में लिखा है—“बाईस परीषहो और चार प्रकार के उपसर्गों के सहन का विधान, उसका फल तथा इस प्रश्न का यह उत्तर है—यह उत्तराध्ययन का प्रतिपाद्य विषय है ।”^२

धवला में यह भी लिखा है कि उत्तराध्ययन उत्तरपदो का वर्णन करता है ।^३

हरिवंश पुराण (वि० सं० ८४०) में लिखा है कि उत्तराध्ययन में वीर-निर्वाणगमन का वर्णन है ।^४

इस प्रकार दिगम्बर-साहित्य में उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का जो वर्णन मिलता है, उसकी संगति उत्तराध्ययन के वर्तमान स्वरूप से नहीं होती । अंगपण्णत्ति का विषय-वर्णन आशिक रूप से सगत होता है । जैसे—

(१) बाईस परीषहो के सहन का विधान, देखिए—दूसरा अध्ययन ।

(२) प्रश्नो के उत्तर, देखिए—उत्तीसवाँ अध्ययन ।

प्रायश्चित्त विधि के वर्णन तथा महावीर के निर्वाण-प्राप्ति के वर्णन की वर्तमान उत्तराध्ययन के साथ कोई संगति नहीं । मभव है इन लेखको के सामने उत्तराध्ययन का कोई दूसरा संस्करण रहा है या भ्रान्त अनुश्रुति के आधार पर ऐसा लिखा है ।

दिगम्बर-साहित्य से एक बात निश्चिन रूप से फलित होती है कि उत्तराध्ययन

१—उत्तरज्जयणं उगममुप्यायणेषणदोसगययायच्छिउत्तविहाण कालादि वित्तेसिद वण्णेदि ।

२—अंगपण्णत्ति, ३।२५, २६

उत्तराणि अहिज्जति, उत्तरज्जयण मदं जिणिदेहि ।

वावीसपरीसहाण, उवसगाण च सहणविहि ॥

वण्णेदि तप्फलमवि, एव पण्हे च उत्तर एवं ।

कहदि गुत्सीसयाण, पइग्गिय अट्टम तं खु ॥

३—धवला, पृष्ठ ९७ (सहारनपुर प्रति)

उत्तरज्जयण उत्तरपदाणि वण्णेइ ।

४—हरिवंश पुराण, १०।१३४ .

उत्तराध्ययनं वीर-निर्वाणगमन तथा ।

न गण प्रतीक है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह आरातीय आचार्यों (गणधरो के उत्तर-प्राचीन आचार्यों) की रचना है।^१

ऐनाम्बर-साहित्य में उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का वर्णन वही मिलता है, जो वर्तमान उत्तराध्ययन में प्राप्त है।^२

वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी की पूर्ति के साथ-साथ दशवैकालिक की रचना हो गई थी। उत्तराध्ययन उममें पूर्ववर्ती रचना है। वह आचाराग के बाद पढा जाने लगा था। उने क्षणी विशेषता के कारण थोड़े समय में ही महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो चुका था। उन स्थिति के मदर्भ में यह अनुमान किया जा सकता है कि उत्तराध्ययन के प्रारम्भिक सम्पन्न की सकलता वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही हो गई थी।

उत्तराध्ययन के प्रारम्भिक मस्करण की प्राचीनता असदिग्ध है। उसकी प्राचीनता मानत त म मानत है —

(१) भाषा-प्रयोग और

(२) मिथ्या ।

इतनी संप्राणता के साथ प्रतिपादन नहीं हो सकता। इमी तथ्य के आधार पर कहा जा सकता है कि ये अध्ययन महावीर-कालीन अथवा उनके परिपार्व-कालीन है। मभव है कुछ अध्ययन पूर्ववर्ती भी हो।

चिकित्सा का वर्जन (२१३२, ३३), परिकर्म का वर्जन (अध्ययन १९), अचेलकता का प्रतिपादन (२१३४, ३५ , २३१२६) तथा अचेलकता और सचेलकता की मामज्यपूर्ण स्थिति का स्वीकार (२११२, १३)—ये सभी जैन आचार की प्राचीनतम परम्परा के अवशेष है जो उत्तरवर्ती साहित्य में नवीन परम्पराओं की पृष्ठभूमि में प्रग्न-चिह्न बने हुए हैं।

उत्तराध्ययन अपने मूल रूप में धर्मकथानुयोग है। इसके कथा-भाग में भगवान् महावीर के उत्तरकालीन किसी भी राजा, मुनि या व्यक्ति का नाम नहीं है। इससे भी यह ज्ञात होता है कि इसका प्रारम्भिक संस्करण भगवान् महावीर के निर्वाण-काल के आस-पास ही सकलित हो गया था।

१६ : क्या उत्तराध्ययन भगवान् महावीर की अंतिम वाणी है ?

कल्पसूत्र में बताया गया है कि भगवान् महावीर कल्याणफल-विपाक वाले ५५ अध्ययनो, पाप-फल वाले ५५ अध्ययनो तथा ३६ अपृष्ट-व्याकरणो का व्याकरण कर 'प्रधान' नामक अध्ययन का निरूपण करते-करते सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गए।^१

उपर्युक्त उद्धरण के आधार पर यह माना जाता है कि छत्तीस अपृष्ट-व्याकरण वस्तुतः उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन ही है। उत्तराध्ययन के अंतिम श्लोक (३६।२६८) में इसकी पुष्टि की जाती है—

इड पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए।

छत्तीसं उत्तरज्जाए, भवसिद्धीयममाए ॥

चूर्णिकार ने इसका अर्थ निम्न प्रकार किया है—ज्ञातकुल में उत्पन्न वर्द्धमान स्वामी छत्तीस उत्तराध्ययनो का प्रकाशन या प्रज्ञापन कर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।^२

१-कल्पसूत्र, सूत्र १४६

पच्चूसकालसमयंसि सपलियकनिसन्ने पणपन्नं अज्झयणाइं कल्लाण-फलविवागाइं पणपन्नअज्झयणाइं पावफलविवागाइ छत्तीसं च अपृठ्ठवागरणाइं वागरित्ता पघाणं नाम अज्झयणं विभावेमाणे २ कालगए वित्तिक्कते समुज्जाए छिन्नजाइजरामरणवधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतकडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्कत्तप्पहीणे।

२-उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ २८३

इति परिसमाप्तौ उपप्रदर्शने च, प्रादु प्रकाशे, प्रकाशीकृत्य—प्रज्ञापयित्वा बुद्ध—अवगतार्य ज्ञातक—ज्ञातकुलसमुद्भव वर्द्धमानम्यामी, तन परिनिर्वाण गत, कि प्रज्ञापयित्वा ?, पट्टत्रिगडुत्तराध्ययनानि।

फल-विपाक वाले अध्ययनो तथा ५५ पाप-फल-विपाक वाले अध्ययनो का व्याकरण कर परिनिवृत्त हुए ।^१ समवायांग के छत्तीसवें समवाय में भी इसकी कोई चर्चा नहीं है ।

उत्तराध्ययन की रचना तथा 'इइ एस धम्मं अक्खाए, कविलेण च विसुद्धपत्तेण' जैसे उल्लेखों से यह प्रमाणित नहीं होता कि ये सब अध्ययन महावीर के द्वारा निरूपित हैं । निर्युक्ति के साक्ष्य से इसकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं । अठारहवें अध्ययन के चौबीसवें श्लोक के प्रथम दो चरण वे ही हैं, जो छत्तीसवें अध्ययन के अंतिम श्लोक के हैं—

१८।२४	३६।२६८
इइ पाउकरे बुद्धे	इइ पाउकरे बुद्धे
नायए परिनिव्वुडे ।	नायए परिनिव्वुए ।
विज्जाचरणसंपन्ने	छत्तीस उत्तरज्झाए
सच्चे सच्चपरक्कमे ॥	भवसिद्धीयसमए ॥

अठारहवें अध्ययन के चौबीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध का जो अर्थ वृत्तिकार ने किया है, वही अर्थ छत्तीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध का होना चाहिए । वृत्तिकार ने चौबीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध की व्याख्या इस प्रकार की है—बुद्ध (अवगत तत्त्व), परिनिवृत्त (शीतीभूत), ज्ञातपुत्र महावीर ने इस तत्त्व का प्रज्ञापन किया है ।^२ इस अर्थ के सदर्थ में जब हम छत्तीसवें अध्ययन के अंतिम श्लोक को पढ़ते हैं, तब उससे यह फलित नहीं होता कि ज्ञातपुत्र महावीर छत्तीस अध्ययनो का प्रज्ञापन कर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए ।

महावीर की परम्परा में जो अर्थ-प्रतिपादन होता है, वह उनकी धर्मदेगना के आधार पर होता है । इसी पारपरिक सत्य का उल्लेख उत्तराध्ययन के सकलनकर्त्ता ने अन्तिम श्लोक में किया है ।

१७ : महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र

अविकल उत्तराध्ययन भगवान् महावीर की प्रत्यक्ष वाणी भले न हों, किन्तु उसमें भगवान् महावीर की वाणी का जिस समीचीन पद्धति से सगुम्फन हुआ है, उसे देख कर सहज ही यह कहने को मन ललचा उठता है कि यह महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र है ।

अहिंसा, अपरिग्रह आदि तत्त्व नवीन नहीं हैं और भगवान् महावीर के समय में भी नवीन नहीं थे । उनसे पहले अनेक तीर्थङ्कर और धर्माचार्य उनका प्रयोग कर चुके थे ।

१-समवायांग, समवाय ५५ ।

२-उत्तराध्ययन बृहद्बृत्ति, पत्र ४४४

इत्येवंरूपं 'पाउकरे'ति प्रादुरकार्षीत्—प्रकटितवान् 'बुद्ध' अवगततत्त्व सन् ज्ञात एव ज्ञातकः—जगत्प्रतीत क्षत्रियो वा, स चेह प्रस्तावान्महावीर एव, 'परिनिवृत्त' कषायानलविध्यापनात्समन्ताच्छीतीसूत ।

१८ : उत्तराध्ययन : आकार और विषय-वस्तु

उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन हैं। यह सकलित सूत्र है। इसका प्रारम्भिक मंकलन वीर-निर्वाण की पहली गताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ। उत्तरकालीन सम्करण देवद्विगणी के समय में सम्पन्न हुआ। वर्तमान अध्ययनों के नाम समवायाग तथा उत्तराध्ययन निर्युक्ति में मिलते हैं। उनमें क्वचित् थोड़ा अन्तर भी है—

समवायाग ^१	उत्तराध्ययन निर्युक्ति ^२
१ विणयसुय	विणयसुय
२ परीसह	परीसह
३ चाउरगिज्ज	चउरगिज्ज
४ असखय	असखय
५ अकाममरणिज्ज	अकाममरण
६ पुरिसविज्जा	नियठ (खुड्ढागनियठ ^३)
७ उरन्निज्ज	ओरब्भ
८ काविलिज्ज	काविलिज्ज
९ नमिपव्वज्जा	णमिपव्वज्जा
१० दुमपत्तयं	दुमपत्तय
११ बहुसुयपूजा	बहुसुयपुज्ज
१२ हरिएसिज्ज	हरिएस
१३ चित्तसंभूय	चित्तसंभूड
१४ उमुकारिज्ज	उमुआरिज्ज

१—समवायाग, समवाय ३६ ।

२—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १३-१७ ।

३—वही, गाथा २४३

एसा खनु निज्जुत्ती खुड्ढागनियंठमुत्तस्स ।

१८ : उत्तराध्ययन : आकार और विषय-वस्तु

उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन हैं। यह सकलित सूत्र है। इसका प्रारम्भिक मकलन वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वाद्ध में हुआ। उत्तरकालीन सस्करण देवद्विगणी के समय में सम्पन्न हुआ। वर्तमान अध्ययनों के नाम समवायाग तथा उत्तराध्ययन निर्युक्ति में मिलते हैं। उनमें क्वचित् थोड़ा अन्तर भी है—

समवायाग ^१	उत्तराध्ययन निर्युक्ति ^२
१ विणयसुय	विणयसुय
२ परीसह	परीसह
३ चाउरगिज्जं	चउरगिज्ज
४ असखयं	असंखय
५ अकाममरणिज्ज	अकाममरणं
६ पुरिसविज्जा	नियंठ (खुड्डागनियंठ ^३)
७ उरब्भिज्ज	ओरब्भं
८ काविलिज्जं	काविलिज्जं
९ नमिपव्वज्जा	णमिपव्वज्जा
१० दुमपत्तयं	दुमपत्तयं
११ बहुसुयपूजा	बहुसुयपुज्जं
१२ हरिएसिज्ज	हरिएस
१३ चित्तसंभूय	चित्तसंभूइ
१४ उमुकारिज्जं	उसुआरिज्जं

१—समवायाग, समवाय ३६ ।

२—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १३-१७ ।

३—वही, गाथा २४३ ।

एसा खलु निज्जुत्ती खुड्डागनियंठसुत्तस्स ।

निर्युक्ति के अनुसार छत्तीस अध्ययनो का विषय-वर्णन इस प्रकार है^१

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
१	४८		विनय
२	४६	३	प्राप्त कष्ट-सहन का विधान ।
३	२०		चार दुर्लभ अगो का प्रतिपादन ।
४	१३		प्रमाद और अप्रमाद का प्रतिपादन ।
५	३२		मरण-विभक्ति—अकाम और सकाम मरण ।
६	१७		विद्या और आचरण ।

१—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १८-२७

पढमे विणओ वीए परिसहा दुल्लहंगया तइय ।
 अहिगारो य चउत्थे होइ पमायप्पमाएत्ति ॥
 मरणविभत्ती पुण पंचमम्मि विज्जा चरण च छट्ठअज्जयणे ।
 रसगेहिपरिच्चाओ सत्तमे अट्ठमि अलामे ॥
 निक्कपया य नवमे दसमे अणुसासणोवमा भणिया ।
 इक्कारसमे पूया तवरिद्धी चेव वारसमे ॥
 तेरसमे अ नियाण अनियाण चेव होइ चउदसमे ।
 भिक्खुगुणा पन्नरसे सोलसमे वंभगुत्तीओ ॥
 पावाण वज्जणा खलु सत्तरसे भोगिड्ढविजहणट्टारे ।
 एगुणि अप्परिकम्मे अणाहया चेव वीसइमे ॥
 चरिया य विचित्ता इक्कीसि वावीसिमे थिर चरण ।
 तेवीसइमे धम्मो चउवीसइमे य समिइओ ॥
 वंभगुण पन्नवीसे सामायारी य होइ छव्वीसे ।
 सत्तावीसे असट्ठया अट्ठावीसे य मुखगई ॥
 एगुणतीस आवस्सगप्पमाओ तवो अ होइ तीसइमे ।
 चरण च इक्कीसे वत्तीसि पमायठाणाइ ॥
 तेत्तीसइमे कम्मं चउतीसइमे य हुत्ति लेमाओ ।
 भिक्खुगुणा पणतीसे जीवाजीवा य छत्तीमे ॥
 उत्तरज्जयणाजेसो पिडत्यो वण्णियो समामेग ।
 इत्तो इक्किरु पुण अज्जयग कित्तइम्मामि ॥

निर्युक्तिकार ने उत्तराध्ययन के प्रतिपाद्य के मक्षित सकेत प्रस्तुत किए हैं। इनसे एक म्यूल सी रूपरेखा हमारे सामने आ जाती है। विस्तार में जाएँ तो उत्तराध्ययन का प्रतिपाद्य बहुत विगद है। भगवान् पार्व और भगवान् महावीर की धर्म-वेगनाओ का स्पष्ट चित्रण यहाँ मिलता है। वैदिक और श्रमण मस्कृति के मतवादों का मवादात्मक शैली में इतना व्यवस्थित प्रतिपादन अन्य आगमों में नहीं है। इसमें धर्म-कथाओं, आन्यात्मिक-उपदेशों तथा दार्शनिक-मिद्धान्तों का आकर्षक योग है। इसे भगवान् महावीर की विचार-धारा का प्रतिनिधि सूत्र कहा जा सकता है।

१६ : उत्तराध्ययन की कथाएँ : तुलनात्मक दृष्टिकोण

भारतीय धर्मों की अनेक साहित्यिक गाथाएँ हैं। उनमें अनेक कथाएँ एक जैसी हैं। प्रस्तुत सूत्र में चार कथाएँ ऐसी हैं, जो किञ्चित् स्फान्तर के नाथ महाभारत और बौद्ध-साहित्य में मिलती हैं। जैसे—

उत्तराध्ययन	महाभारत	जातक
१ हरिकेश बल (अ० १२)	×	मातंग (म० ४६७)
२ चित्त-मंभूत (अ० १३)	×	चित्तमभूत (म० ४६८)
३ इपुकारीय (अ० १४)	शान्तिपर्व, अ० १७५ शान्तिपर्व, अ० २७७	हस्तिपाल (म० ५०६)
४ नमि-प्रब्रज्या (अ० ६)	शान्तिपर्व, अ० १७८ तथा अ० २७६	महाजन (म० ५३६)

इनके सादृश्य का कारण पूर्व कालीन 'श्रमण-साहित्य' का स्वीकरण है। प्रत्येक-बुद्धों द्वारा रचित प्रकरण हजारों की संख्या में प्रचलित थे। उन्होंने भारतीय साहित्य की प्रत्येक धारा को प्रभावित किया था। मार्कण्डेय पुराण के पिता-पुत्र मवाद की तुलना उत्तराध्ययन के चौदहवें इपुकारीय अध्यायन गत पिता-पुत्र मवाद में करने पर दोनों का खोत एक ही परम्परा में प्राप्त होता है। इसकी विस्तृत चर्चा हमने 'उत्तराध्ययन एक समीक्षात्मक अध्ययन' में की है।

२० : उत्तराध्ययन : व्याकरण-विसर्ग

वर्तमान प्राकृत व्याकरण की अवेधा प्राचीन आगमों में कुछ विविष्ट प्रयोग उपलब्ध होते हैं। उत्तराध्ययन भी उसी कोटि का आगम है। उसके अनेक स्थानों में विभक्ति-विहीन शब्द प्रयोग हैं। अनेक स्थानों में ह्रस्व का दीर्घीकरण और दीर्घ का ह्रस्वीकरण है। मन्वृत तुल्य तथा प्राकृत व्याकरण में भिन्न भिन्न-प्रयोग प्राप्त होते हैं। विभक्ति, वचन आदि का व्यत्यय भी विस्तृत मात्रा में मिलता है। उसमें समालोच्य शब्द भी प्रयुक्त हैं।

वचन-व्यत्यय :

विह्लन्ड (२।६)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है ।

आहु (१२।२५)—यहाँ एकवचन के स्थान पर बहुवचन है ।

त (३६।४८)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है ।

परित्तससारी (३६।२६०)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है ।

अलाक्षणिक :

फरसु+आईर्हि = फरमुमाईर्हि १९।६६

मुट्टि+आईर्हि = मुट्टिमाईर्हि १९।६७

असजत् = सजए २१।२०

समालोच्य शब्द :

अप्यायके (३।१८)—यहाँ 'अप' का प्रचलित अर्थ 'अल्प' प्राप्त नहीं होता ।
यहाँ यह शब्द निपेधार्थ में प्रयुक्त है ।

मुदिट्ठं (१२।३८) , सुजट्ठ (१२।४०)—इन दोनों में ममान प्रयोग चाहिए ।
मभव है 'सुदिट्ठ' के स्थान में लिपि-दोष से 'सुजट्ठ' हो गया हो ।

भवताम् = भवयाण (१२।१०)

२१ : उत्तराध्ययन : भाषा की दृष्टि से

उत्तराध्ययन की भाषा प्राकृत है । भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में मात प्राकृतों का उल्लेख किया है—मागधी, आवन्ती, प्राच्या, शौरसेनी, अर्द्धमागधी, वाल्हीका और दाक्षिणात्या ।^१

१—नाट्यशास्त्र, १७।४८

मागध्यवन्तिजा प्राच्या शौरसेन्यट्ठमागधी ।

वाल्हीका दाक्षिणात्याश्च सप्तभाषाः प्रकीर्तिता ॥

क्षेत्र की दृष्टि से अर्द्धमागधी उस भाषा का नाम है, जो आवे मगध में जयात् मगध के पश्चिमी भाग में व्यवहृत थी। इसमें मागधी भाषा के लक्षण प्राप्त थे, इसलिये प्रवृत्ति की दृष्टि से भी संभव है इसे अर्द्धमागधी कहा गया। भाषा-शास्त्रियों के अनुसार मागधी की तीन मुख्य विशेषताएँ हैं—

(१) प्रथमा विभक्ति के एकवचन में 'ओकार' के स्थान पर 'एकार' होना।

(२) 'र' का 'ल' होना।

(३) 'प', 'स' के स्थान पर 'श' होना।

अर्द्धमागधी में प्रथम विशेषता बहुलता से मिलती है, दूसरी कही-कही मिलती है और तीसरी प्रायः नहीं मिलती।

जब जैन मुनि पूर्वी भारत से हट कर पश्चिमी भारत में विहार करने लगे तब उनकी मुख्य भाषा महाराष्ट्री-प्राकृत हो गई। अर्द्धमागधी और मागधी में लिखे हुए आगम भी उससे प्रभावित हुए। प्राकृत के सभी रूपों में महाराष्ट्री ने उत्कर्ष भी प्राप्त कर लिया। महाकवि दण्डी ने भी इसका उल्लेख किया है—“महाराष्ट्राश्रया, प्रकृष्टं प्राकृत विदुः”^१।

फिर भी जैन आचार्यों को आगमों की मूल भाषा की विस्मृति नहीं हुई। वे समय के विविध परिवर्तनों में भी इसी तथ्य की पुनरावृत्ति करते रहे हैं कि आगमों की मूल भाषा अर्द्धमागधी है। प्रज्ञापना में अर्द्धमागधी भाषा बोलने वाले को 'भाषा-आर्य' कहा गया है।^२ म्यानाग^३ और अनुयोगद्वार^४ में संस्कृत तथा प्राकृत को ऋषिभाषित कहा गया है। आचार्य हरिभद्र सूरि ने भाषा-आर्य की व्याख्या में संस्कृत और जोडा है।^५ कुछ आचार्य पूर्वो की भाषा भी संस्कृत मानते हैं।^६ इन सब तथ्यों के अध्ययन के उपरान्त भी हम इस तथ्य की विस्मृति नहीं कर सकते कि प्राचीन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी थी।

१—काव्यादर्श, १।३४।

२—प्रज्ञापना, पद १, सूत्र ३७. भासाऱिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासेति।

३—स्यानांग ७।३।५५३, गाथा २८.

सक्ता पागता चैव, दुहा भणितीओ आहिया।

सरमंडलंमि गिज्जंते, पसत्या इसिभासिता ॥

४—अनुयोगद्वार, सूत्र १२७ गाथा ५३ :

सक्या पायया चैव, भणिईओ होति दोण्णि वा।

सरमंडलस्मि गिज्जंते, पसत्या इसिभासिता ॥

५—तत्त्वार्थ सूत्र ३।१५, हारिभद्रीय वृत्ति पृष्ठ १८०

शिष्टा-सर्वातिशयसम्पन्ना गणवरादय तेषां भाषा संस्कृताऽर्धमागधिकादिका च।

६—प्रभावक चरित, पृष्ठ ५८, वृद्धवादिसूरि चरित, श्लोक ११३

चतुर्दशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन्।

अर्द्धमागधी और महाराष्ट्री

उत्तरजम्यण की भाषा महाराष्ट्री से प्रभावित अर्द्धमागधी है । अर्द्धमागधी और

महाराष्ट्री

'क' का प्राय लुक् होता है—

अज्झावयाण (१२।१६)

'ग' का प्राय लुक् होता है—

भोए (१४।३७)

'च' और 'ज' का प्राय लुक् होता है—

समुवाय (१४।३७)

बीयाइ (१२।१२)

'त' का प्राय लुक् होता है—

पुरोहिय (१४।३७)

'द' का प्राय लुक् होता है—

विइयाणि (१२।१३)

'प' का प्राय लुक् होता है—

तउय (३६।७३)

'य' का प्राय लुक् होता है—

काए (३६।८२)

आउ (७।१०)

'व' का प्राय लुक् होता है—

चेय (२४।१६)

प्रयमा के एकवचन में 'ओकार' होता है—

मणगुत्तो (१२।३)

शब्द-भेद—

अर्द्धमागधी	महाराष्ट्री
कम्मणा	कम्मेण
वेयसा (२५।१६)	वेयाण
विसालिसेहि (३।१४)	विसरिमेहिं
दुवालसग (२४।३)	वारसग (२३।७)
गेही (६।४)	गिद्धी
सोही (३।१२)	सुद्धी
तेगिच्छ (२।३३)	चीडच्छ
मिलेक्खुया (१०।१६)	मिलिच्छा, मिच्छा
माहणा (१२।१३)	वम्हणो (२५।१६)
पडुप्पन्न (२६।सू०१३)	पच्चुप्पन्न (७।६)

उत्तराध्ययन में अर्द्धमागधी के साथ-साथ महाराष्ट्री-प्राकृत के प्रयोग भी मिलते हैं। इसलिए भाषा की दृष्टि में इसे भाषा-द्वय की मिश्रित कृति कहा जा सकता है।

२२ : उत्तराध्ययन के व्याख्या-ग्रन्थ

जैन आगमों में उत्तराध्ययन सर्वाधिक प्रिय आगम है। उसकी प्रियता का कारण उसके मर्म कथानक, मर्म भवाद और सरम रचना-शैली है। उसकी सर्वाधिक प्रियता के साक्ष्य व्यापक अध्ययन-अध्यापन और विद्याल व्याख्या-ग्रन्थ हैं। जितने व्याख्या-ग्रन्थ उत्तराध्ययन के हैं, उतने अन्य किसी आगम के नहीं हैं।

१-निर्युक्ति :

यह उत्तराध्ययन के प्रात व्याख्या-ग्रन्थों में सर्वाधिक प्राचीन है। उनमें ११७ गाथाएँ हैं। यह लघु कृति है, किन्तु इसमें अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध हैं। उनलिय यह उत्त-वर्ती सभी व्याख्या-ग्रन्थों की आधार-भित्ति रही है। इसके वर्ना द्वितीय भद्रवाह (वि० छठी गनावी) है।

४-सुखबोधा :

यह बृहद्वृत्ति से समुद्धृत लघु वृत्ति है। इसके कर्ता नेमिचन्द्र सूरि है। सूरिपद-प्राप्ति से पूर्व इनका नाम देवेन्द्र था। इस वृत्ति का रचना-काल विक्रम सं० ११२६ है।

५-सर्वार्थसिद्धि :

इसके रचयिता भावविजय है। इसका रचना-काल विक्रम संवत् १६७६ है। इसमें कथाएँ पद्यबद्ध हैं।

इनके अतिरिक्त और भी व्याख्या-ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। वे सारे के सारे प्रायः इन्हीं मुख्य व्याख्या-ग्रन्थों के उपजीवी हैं। हम उनका संक्षिप्त परिचय—नाम, कर्ता और रचना-काल के विवरण-सहित—नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं।

६-अवचूरि	ज्ञानसागर	वि० सं० १६४१
७-वृत्ति	कमल संयम	„ १५५४
८-दीपिका	उदयसागर	„ १५४६
९-लघुवृत्ति	खरतर तपोरत्नवाचक	„ १५५०
१०-वृत्ति	कीर्तिवल्लभ	„ १५५२
११-वृत्ति	विनयहंस	„ १५६७-८१
१२-टीका	अजितदेव सूरि	„ १६२८
१३-दीपिका	हर्षकुल	१६ वी शताब्दी
१४-अवचूरि	अजितदेव सूरि	
१५-टीका दीपिका	माणिक्यशेखर सूरि	
१६-दीपिका	लक्ष्मीवल्लभ	१८ वी शताब्दी
१७-वृत्ति-टीका	हर्षनन्दन	वि० सं० १७११
१८-वृत्ति	शान्तिभद्राचार्य	
१९-टीका	मुनिचन्द्र सूरि	
२०-अवचूरि	ज्ञानशीलगणी	
२१-अवचूरि		वि० सं० १४६१
२२-त्रालावबोध	समरचन्द्र	
२३-त्रालावबोध	कमललाभ	१६ वी शताब्दी
२४-त्रालावबोध	मानविजय	वि० सं० १७४१

१-जैननारती (वर्ष ७, अंक ३३, पृ० ५६५-६८) में प्रकाशित श्री अजरचन्द्रजी नाहटा के उत्तराध्ययन सूत्र और उसकी टीकाएँ लेख पर आगम ।

भूमिका में प्रयुक्त ग्रन्थों की तालिका

- १ अनुयोगद्वार (वि० स० २०१६) ले० आर्यरक्षित सूरि
(प्र० देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार फण्ड, बम्बई)
- २ आगम अट्टुत्तरी ले० अभयदेव सूरि
- ३ आगम पुरुषणु रहस्य, श्री (वि०स० २०१०) ले० मुनि अभयमागर
(प्र० श्री गोडजी मित्र मडल, बम्बई)
- ४ आगमाधिकार ले० श्रीमज्जयाचार्य
(अप्रकाशित)
- ५ आचाराग सूत्रम् (वि० स० २००७) अनु० मुनि मौभाग्यमलजी
(प्र० श्री जैन साहित्य समिति, नयापुरा, उज्जैन)
- ६ आवश्यक निर्युक्ति (वि० स० १९८४) ले० भद्रवाहु स्वामी (द्वितीय)
(प्र० आगमोदय समिति, बम्बई)
- ७ आवश्यकवृत्ति (वि० स० १९८८) ले० मलयगिरि
(प्र० आगमोदय समिति, बम्बई)
- ८ उत्तराध्ययन चूर्णि (वि० स० १९८९) ले० जिनदामगणि महत्तर
(प्र० श्री ऋषभदेव केनरीमलजी
श्री श्वे० सन्या, डन्दौर)
- ९ उत्तराध्ययन निर्युक्ति भा० १-३ (वि०स० १९७०) ले० भद्रवाहु (द्वितीय)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भाटागार संस्था)
- १० उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति (वि०स० १९७०) ले० वेदान्तवादी मानि मूनि
(भा० १-३)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार भाटागार संस्था)
- ११ उत्तराध्ययन सूत्र एक समीक्षात्मक अध्ययन वाचना-प्रश्नोत्तर आच. प्र. तुर्गी
(अप्रकाशित)
- १२ उत्तराध्ययन सूत्र- दो (२ भाग) (सन् १९००) ले० जैन धर्मशास्त्र
(प्र० जैनशास्त्र विस्वविद्यालय)

- २७ तत्त्वार्थवार्त्तिक (राजवार्त्तिक) (वि०सं०२०००) ले० अकलकदेव
(प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी)
- २८ तत्त्वार्थवृत्ति (श्रुतसागरीय) (वि०सं०२०००) ले० श्रुतसागर
(प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी) स० प्रो० महेन्द्रकुमार जैन
- २९ तत्त्वार्थवृत्ति (हारिभद्रीय) (वि०सं०१९६२) ले० हरिभद्र
(प्र० ऋषभदेव केसरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम) स० आनन्दमागर मूर्ति
- ३० दशवेङ्कालिय (भाग २) (वि०सं०२०२०) वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(प्र० श्री जैन श्वे० तेरापथी महासभा, कलकत्ता)
- ३१ दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(यन्त्रस्य)
- ३२ दशवैकालिक चूर्णि (अगम्य) ले० स्यविर अगम्यमिह
(अप्रकाशित)
- ३३ दशवैकालिक चूर्णि (जिनदास) (वि०सं०१९८६) ले० जिनदाम महत्तर
(प्र० ऋषभदेव केसरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम)
- ३४ दशवैकालिक टीपिका (वि०सं०१९७५) ले० ममयमुन्दर उपाध्याय
(प्र० श्री जिनयश मूर्तिजी ग्रन्थमाला ममिति, खभात)
- ३५ दशवैकालिक निर्युक्ति (वि०सं०१९७४) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भण्डागार संस्था)
- ३६ दशवैकालिक वृत्ति (हारिभद्रीय) (वि०सं०१९७४) ले० हरिभद्र
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भण्डागार संस्था)
- ३७ दसवेयालिय सुत्त (नन् १९३०) ले० डॉ० वाल्यर शर्मा
(प्र० मेठ आनन्दजी कल्याणजी, जहमदाबाद)
- ३८ दशवैकालिक सूत्र, ए स्टडी, टी (नन् १९३३) ले० प्रो०पट्टवर्द्धन एम०ए०
(प्र० विल्किंगटन कालेज, मगर्ला)
- ३९ दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति (वि०सं०२०११) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० पन्याम मणिविजयजी गणि ग्रन्थमाला) स० विजय कुमुदमूर्तिशर्मा
- ४० देशीनाममाळा (द्वितीय संस्करण) (नन् १९३८) ले० आचार्य हेमचन्द्र
(प्र० बम्बई संस्कृत मीठीज)

- ५६ बृहत्कल्प सूत्रम् (भाष्य निर्द्युक्ति महित) (सन् १९३३ मे १९३८) ले० भद्रवाह
 (प्र० श्री जैन आत्मानन्द मभा, भावनगर, (सौराष्ट्र) म० पुण्यविजयजी
- ५७ महाभारत (प्रथम सम्स्करण) ले० महर्षि वेदव्यास
 (प्र० गीताप्रेस, गोरखपुर)
- ५८ मार्कण्डेय पुराण (वि०स०२०१८) ले० कृष्ण द्वं पायन
 (प्र० गुरुमडल ग्रन्थमाला, मनमुखराय मोर, कलकत्ता)
- ५९ मूलाचार (वि०स०२४८४) ले० वट्टकेर आचार्य
 (प्र० मूरत भाण्डागार ग्रन्थमाला समिति, अनु० जिनदास पार्वनाथ फुडकुले शान्धी
 फलटन, जि० उत्तरमतारा)
- ६० मूलाचार (वि०स०१९७७) ले० वट्टकेर आचार्य
 (प्र० जैन ग्रन्थमाला समिति) म० प० पन्नालाल न्याय-काव्यतीर्थ
 म० प० गजाधरग्लाउ
- ६१ मूलाराधना (टीका-विजयोदया) ले० अपगजित मूर्ति
- ६२ रत्नमुनि स्मृति ग्रन्थ (वि०स०२००१) म० विजय मूर्ति
 (प्र० गुरुदेव स्मृतिग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति,
 लोहामंडी, आगरा) डॉ० हरिश्चक्र शर्मा
- ६३ रिक्लीजियन ट जैन, ल अनु० डॉ० ग्यारीनो
- ६४ व्यवहारभाष्य (वि०स०१९६४) मशोधक मूर्ति माणन
 (प्र० वकील केशवलाल प्रेमचन्द, भावनगर)
- ६५ विचारलेस (विचारसार प्रकरण) ले० प्रद्युम्न मूर्ति
- ६६ वैशेषिक दर्शन (सन् १९५४, द्वितीय सम्स्करण) ले० दर्शनानन्द मन्स्वती
 (प्र० पुस्तक भण्डार, वरेली)
- ६७ स्थानाग (द्वितीय सम्स्करण, म० १९५४)
 (प्र० माणिकचन्द चुन्नीलाल, अहमदावाद)
- ६८ समवायाग सूत्रम् (वि०स०१९७४)
 (प्र० आनमोदय समिति)
- ६९ सामाचार्यगतक (वि०स०१९६९) ले० रामधनुन्दगर्गी
 (प्र० जवेनी मूलचन्द हीगचंद भगत, दम्बई)
- ७० सिद्धान्तस्तवज्ञोत ले० विनयप्रभ मूर्ति

५०

४१ धवला (प
(प्र० जैन स

४२ नन्दी चूर्ति
(प्र० ऋषभ

४३ नन्दी वृत्ति
(प्र० आगमो

४४ नन्दी वृत्ति
(प्र० ऋषभ

४५ नन्दी सुत्त
(प्र० मन्मति

४६ नन्दी सूत्र
(वि०स०१८
(प्र० श्रीमत्

४७ नाट्यशा
(प्र० गायक

४८ प्रथम द्वा

४९ प्रभावकच
(प्र० मिथी

५० प्रज्ञापना
(प्र० आगम

५१ पचकल्प

५२ पचकल्प

५३ प्राकृत भा
(प्र० विहार

५४ पातजल
(प्र० निर्णय

५५ पिण्ड नि
(प्र० शामन

- ५६ बृहत्कल्प सूत्रम् (भाष्य निर्युक्ति सहित) (सन् १९३३ ने १९३८) ले० भद्रबाहु
(प्र० श्री जैन आत्मानन्द मभा, भावनगर, (मौराष्ट्र) म० पुष्पविजयजी
- ५७ महाभारत (प्रथम मस्करण) ले० महर्षि वेदव्यास
(प्र० गीताप्रेस, गोरखपुर)
- ५८ मार्कण्डेय पुराण (वि०म०२०१८) ले० कृष्ण द्वंपायन
(प्र० गुरुमडल ग्रन्थमाला, मनसुखराय मोर, कलकत्ता)
- ५९ मूलाचार (वि०स०२४८४) ले० वट्टकेर आचार्य
(प्र० मूरत भाण्डागार ग्रन्थमाला समिति, अनु० जिनदाम पार्श्वनाथ फुडकुले शान्ती
फ्लटन, जि० उत्तरमतारा)
- ६० मूलाचार (वि०मं०१९७७) ले० वट्टकेर आचार्य
(प्र० जैन ग्रन्थमाला समिति) स०प०पन्नालाल न्याय-काव्यनीर्य
म०प०गजाधरलाल
- ६१ मूलाराधना (टीका-विजयोदया) ले० अपगजिन मूर्ति
- ६२ रत्नमुनि स्मृति ग्रन्थ (वि०मं०२००१) म० विजय मनि
(प्र० गुरुदेव स्मृतिग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति,
लोहामडी, आगरा) डॉ० हरिशंकर शर्मा
- ६३ रिंलीजियन द जैन, ल जन० डॉ० ग्यागीनो
- ६४ व्यवहारभाष्य (वि०म०१९९४) मशोधक मुनि भाणक
(प्र० वकील केशवलाल प्रेमचन्द, भावनगर)
- ६५ विचारलेस (विचारमार्ग प्रकरण) ले० प्रद्युम्न मूर्ति
- ६६ वैशेषिक दर्शन (सन् १९५४, द्वितीय मस्करण) ले० दर्शानन्द सरस्वती
(प्र० पुस्तक भण्डार, बंग्लेी)
- ६७ स्थानाग (द्वितीय मस्करण, मं०१९५४)
(प्र० माणिकचन्द चुद्धीशाल, अहमदावाद)
- ६८ समवायाग सूत्रम् (वि०मं०१९७४)
(प्र० आगमोदय समिति)
- ६९ मानाचारीशतक (वि०म०१९९६) ले० समयमुन्दरणी
(प्र० ज्वेगी नृचन्द हीराचद भगत, बम्बई)
- ७० सिद्धान्तस्तवज्ञोत ले० जिनप्रभ सूरि

५२

- ७१ सूत्रकृताग (सं०१९७३)
(प० आगमोदय समिति)
- ७२ षड्भाषाचन्द्रिका
- ७३ हरिवंश पुराण (दो भाग) (ग्रन्थाक ३२, ३३) ले० जिनसेन
(प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला) स० प० दरवारीलाल
- ७४ हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर (भाग-२) (सन् १९३३)
(प्र० कलकत्ता विश्वविद्यालय) ले० मोरी विन्टरनित्ज, पी-एच०डी०
- ७५ हिस्ट्री ऑफ दी केनोनिकल लिटरेचर
ऑफ दी जैन्स, २ (सन् १९४१) ले० एच०आर०कापडिया
(प्र० हीरालाल रसिकदास कापडिया, गोपीपुरा, सूरत)
- ७६ हेमशब्दानुशासन (स १९६२) ले० आचार्य हेमचन्द्र सूरि
(प्र० मेठ मनसुख भाई पोरवाड डायमड जुबली
प्रिन्टिंग प्रेस, सालापोस दरवाजा, अहमदाबाद)
- ७७ श्रमण भगवान् महावीर (वि०सं०१९६८) ले० प० कल्याणविजयजी गणी
(प्र० श्री क० वि० गास्त्रसग्रह समिति, जालोर)
- ७८ श्रावक विधि ले० धनपाल

*

दसवेआलियं : विषय-सूची

१ कुम्भपुष्पिका	•	•	••	पृ० १
घम्म-पद	१	भमर-चरिया-पदं		२-५
२ साम्मण्णपुव्वयं		•	•	२
काम-पद	१	राईमई-पदं		६-१०
चाई-पद	२-३	निकखेव-पद		११
मणो-निग्गह-पदं	४-५			
३ खुड्डियायारक्कहा	••	••	••	४
उक्खेव-पदं	१	उउचरिया-पदं		१२
अणायार-पदं	२-१०	निकखेव पदं		१३-१५
निग्गंथ-पदं	११			
४ छज्जीवणिया	•	•	•	६
उक्खेव-पद	सू०१-३	वणस्सइ-पद		सू०२२
जीव-पदं	सू०४-१०	तस-पदं		सू०२३
मह्व्वय-पद	सू०११-१७	सजम-पद		१-६
पुदवी-पद	सू०१८	नाण-पद		१०-१३
आउ-पद	सू०१९	आरोह-पद		१४-२५
तेउ-पद	सू०२०	निकखेव-पद		२६-२६
वाउ-पद	सू०२१			
५ पिड्डेसणा (उ० १)		••	••	१८
उक्खेव-पद	१	अणायतनं		६-११
गदेमणा-पद—		गमण		१२-२२
गमण	२-८	दिट्ठि-सजमो		२३

मित-भूमि	२४-२६
गहणेसणा-पदं	
छड्डिय	२७-२८
दायगो	२९
सहड	३०-३१
पुराकम्मं	३२-३४
पच्छाकम्म	३५-३६
अणिसट्ठ	३७-३८
गुन्विणी	३९
दायगा	४०-४३
संकिय	४४
उठ्ठिभन्न्	४५-४६
दाणट्ठ	४७-४८
पुण्णट्ठ	४९-५०
वणिमट्ठ	५१-५२
समणट्ठं	५३-५४

पिड्डेसणा (७०२) ..

उक्खेव-पदं	१
पुणो-गमण-पद	२-३
ममय-पद	४-६
पाण-पद	७
क्कहा-पद	८
अवल्लवण-पद	९
वणीमग-पद	१०-१३

गहणेसणा-पद—

सत्त-दोसा	५५-५६
उम्मीस	५७-५८
निकिक्खत्त	५९-६४
सकमो	६५-६६
मालोहड	६७-६९
सचित्त	७०-७२
बहु-उज्झिय	७३-७५
अपरिणंत	७६
अच्चबिल	७७-८१

परिभोगेसणा-पद—

बहि-भोयणं	८२-८६
ठाण-भोयण	८७
पडिक्कमण	८८-८९
आलोयण	९०-९१
विउसगो	९२-९४
भोयण	९५-९९
निकखेव-पद	१००

२९

अकप्प-पद	१४-२४
समुयाण-पद	२५
अदीण-पद	२६-२८
सथव-पद	२९-३०
माया-पद	३१-३५
सुरा-पद	३६-४५
तेण-पद	४६-४९
निकखेव-पद	५०

६ महायारकहा

३८५

उकखेव-पद	१-३	तेउ-पद	३३-३६
आयार-गोयर-पद	४-८	वाउ-पद	३७-४०
अहिंसा-पद	९-११	वणस्सड पद	४१-४३
सच्च-पद	१२-१३	तस-पद	४४-४६
अतेणग-पद	१४-१५	अकप्प-पद	४७-५०
वभवेर-पद	१६-१७	गिहि-भायण-पदं	५१-५३
अपग्गिगह-पद	१८-२२	आसन्दी-पद	५४-५६
एगभत्त-पद	२३	निमेजा-पद	५७-६०
भोयण-पद	२४-२६	सिणाण-पद	६१-६४
पुढवी-पद	२७-२९	विभूसा-पद	६५-६७
आउ पद	३०-३२	निकखेव-पदं	६८-६९

७ वक्कसुद्धि

४३

भासा-पदं	१-५	सावज्ज-अणवज्ज-पद	४०-४६
मकिय-पद	६-१०	आणम-पद	४७
फम्म-भासा-पद	११-१४	जहत्थ-पद	४८-४९
ममत्त-भासा-पद	१५-१८	आसमा-पद	५०
नाम-गोत्त-पद	१९-२०	जहत्थ-पद	५१-५३
जाड-पद	२१-३९	निकखेव-पद	५४-५७

८ आयारपणिही

८५०

उक्खेव-पद	१-२	पडण्ण-चगिया-पद	४०-४१
अहिंसा-पद	३-१२	भामा-पद	४९-५०
मुहुम-पद	१३-१६	त्थण-पद	५१-५२
पहिलेहण-पद	१७	इत्थी-पद	५३-५७
पग्गिवावणा पद	१८	विमय-पद	५८-५९
पडण्ण चगिया-पद	१९-३५	सत्ता-पद	६०
कमाय-पद	३६-३९	निरुवेव-पद	६१-६३

६ विणयसमाही (उ० १)

उक्खेव-पद	१
आसायण-पद	२-१०

आयरिय-पद	११-१६
निकखेव-पद	१७

विणयसमाही (उ० २)

दुम-पद	१-२
कट्ट-पद	३
कोव-पद	४

विणीयाविणीय-पद	५-११
सिक्खा-पद	१२-२१
निकखेव-पद	२२

विणयसमाही (उ० ३)

स-पुज्ज-पद	१-३
जवणट्टया-पद	४
अप्पिच्छा-पद	५
कटय-पद	६-८

अवत्तव्व-पद	९
गुण-पद	१०-१२
माणरिह-पद	१३-१४
निकखेव-पद	१५

विणयसमाही (उ० ४)

उक्खेव-पद	सू० १-३
विणय-पद	सू० ४
मुय-पद	सू० ५

तव-पद	सू० ६
आयार-पद	सू० ७
निकखेव-पद	६-७

१० स-भिव्वखु

उक्खेव-पद	१
अहिंसा-पद	२-४
सवर पद	५
धुव जोगी-पद	६
मम्महिंटी पद	७
असन्निहि-पद	८
छट्टणा-पद	९
कहा-पद	१०
भय-भेग्व-पद	११
पडिमा-पद	१२

वोसट्ट-चत्त-देह-पद	१३
परीसह-जय-पद	१४
सजय-पद	१५
असग-पद	१६
ठिअप्पा-पद	१७
समता-पद	१८
मत्त-पद	१९
अज्जपय-पद	२०
निकखेव-पद	२१

रइवक्क (पढमा चूलिया) पृ० ७६

गयकुस-पदं	१	घम्म-भट्ट-पद	१२-१४
पच्छा-परिताव-पद	१-६	थिरीकरण-पद	१५-१७
रतारत-पद	१०-११	निकखेव-पद	१८

विविचचरिया (विइया चूलिया) ८१

उक्खेव-पद	१	पडिसहरण-पद	१४
पडिसोय-पद	२-३	पडिवुद्ध-पद	१५
चरिया-पद	४-११	अप्परक्खा-पद	१६
सपेक्खा-पद	१२-१३		

उत्तरजभयणं : विषय-सूची

१. विणयसुय	पृ० ८७
उक्खेव-पद	१	अणुसासण-पद	२७-४६	
विणय-पद	२-१४	निकखेव-पद	४७-४८	
दत्त-पद	१५-२६			
२. परीसह पविभत्ती	९३
उक्खेव-पद	सू० १-३	अक्कोस-पद	२४-२५	
परीसह-पद	१	वह-पद	२६-२७	
दिगिच्छा-पद	२-३,	जायणा-पद	२८-२९	
पिवासा-पद	४-५	अलाभ-पद	३०-३१	
सीय-पद	६-७	रोग-पद	३२-३३	
उसिण-पद	८-९	तण-फास-पद	३४-३५	
दस-मसय-पद	१०-११	जल्ल-पद	३६-३७	
अचेल-पद	१२-१३	सक्कार-पद	३८-३९	
अरड-पद	१४-१५	पन्ना-पद	४०-४१	
इत्थी-पद	१६-१७	अन्नाण-पद	४२-४३	
चरिया-पद	१८-१९	दसण-पद	४४-४५	
निसीहिथा-पद	२०-२१	निकखेव-पद	४६	
सेज्जा-पद	२२-२३,	...	१००	
३. चाउरगिज्ज	
उक्खेव पद	१-६	वीरिय-पद	१०-११	
मागुमत्त-पद	७	धम्म-पद	१२-१६	
मड-पद	८	निकखेव-पद	२०	
मद्धा-पद	९			

४. असख्य	१०३
सच्च-पद	२-६	अप्पमाय-पद	८-१३
अणसण-पद	७		
५. अकाममरणिज्ज	१०६
उक्खेव-पद	१-३	सकाम-मरण-पद	१७-३२
अकाम-मरण-पद	४-१६		
६. खुड्डागनियण्ठिज्ज	११०
सच्च-पद	२-७	अप्पमाय-पद	१२-१७
नाण-वाय-पद	८-११		
७. उरुभिज्ज	११३
उरुभिज्ज-पद	१-१०	कुमग-जल-पद	२३-२७
कागिणि अम्वग-पद	११-१३	निकखेव-पद	२८-३०
वणिय-पद	१४-२२		
८. काविलीय	११७
दुक्ख-मुत्ति-पद	१-३	अभियोग-भावणा-पद	१३-१५
अमग-पद	४-६	लोभ-पद	१६-१७
अहिंसा-पद	७-१०	इत्थी-पद	१८-१९
आहार-पद	११-१२	निकखेव-पद	२०
९. नमिपव्वज्जा	१२०
उक्खेव-पद	१-६	दाण-पद	३७-४०
मिहिला-पद	७-१६	घोगमम-पद	४१-४४
पागाण-पद	१७-२२	त्रोम-पद	४५-४६
णमाय-पद	२३-२६	नाम-पद	४७-४८
दण्ड-पद	२७-३०	क्रमाय-पद	४९
सु-पद	३१-३६	निकखेव-पद	५०-५२

उत्तरञ्जयणं : विषय-सूची

१. त्रिणयसुय	पृ० ८७
उक्खेव-पद	१		अणुसासण-पद	२७-४६
विणय-पद	२-१४		निकखेव-पद	४७-४८
दत्त-पद	१५-२६			
२. परीसह पविभत्ती	९३
उक्खेव-पद	सू० १-३		अक्कोस-पद	२४-२५
परीसह-पद	१		वह-पद	२६-२७
दिगिच्छा-पद	२-३,		जायणा-पद	२८-२९
पिवासा-पद	४-५		अलाभ-पद	३०-३१
सीय-पद	६-७		रोग-पद	३२-३३
उसिण-पद	८-९		तण-फास-पद	३४-३५
दस-मसय-पद	१०-११		जल्ल-पद	३६-३७
अचेल-पद	१२-१३		सक्कार-पद	३८-३९
अरइ-पद	१४-१५		पन्ना-पद	४०-४१
इन्थी-पद	१६-१७		अन्नाण-पद	४२-४३
चरिया-पद	१८-१९		दसण-पद	४४-४५
निमीहिथा-पद	२०-२१		निकखेव-पद	४६
सेज्जा-पद	२२-२३,			
३. चाउरगिज्ज	१००
उक्खेव पद	१-६		वीरिय-पद	१०-११
मागुमत्त-पद	७		धम्म-पद	१२-१९
मुट्ट-पद	८		निकखेव-पद	२०
नद्धा-पद	९			

४. असखय	१०३
सख-पद	२-६	अप्पमाय-पद	५-१३
अणसण-पद	७		१
५. अकाममरणिज्ज	१०६
उक्खेव-पद	१-३	सकाम-मरण-पद	१७-३२
अकाम-मरण-पद	४-१६		२
६. खुट्टागनियण्ठिज्ज	११०
सख-पद	२-७	अप्पमाय-पद	१२-१७
नाण-वाय-पद	८-११		१
७. उरविभज्ज	११३
उरविभज्ज-पद	१-१०	कुसग्ग-जल-पद	२३-२७
कागिणि अम्वग-पद	११-१३	निक्खेव-पद	२८-३०
वणिय-पद	१४-२२		
८. काविलीय	११७
दुक्ख-मुत्ति-पद	१-३	अभियोग-भावणा-पद	१३-१५
अमग-पद	४-६	लोभ-पद	१६-१७
अहिमा-पद	७-१०	इत्थी-पद	१८-१९
आहार-पद	११-१२	निक्खेव-पद	२०
९. नमिपव्वज्जा	१२२
उक्खेव-पद	१-६	दाण-पद	३७-४०
मिहिला-पद	७-१६	घोरासम-पद	४१-४४
पागा-पद	१७-२२	कोस-पद	४५-४६
पत्ताय-पद	२३-२६	काम-पद	५०-५३
दण्ड-पद	२७-३०	कसाय-पद	५४
दुक्ख-पद	३१-३६	निक्खेव-पद	५५-६२

१०. दुमपत्तयं		...	१२९
मव-पद	१-४	हाण-पदं	२१-२७
ससार-पद	५-१५	उवदेस-पदं	२८-३६
दुल्लह-पद	१६-२०	निकखेव-पद	३७
११. बहुस्सुयपुज्जं		..	१३६
उकखेव-पद	१	अविणीय-पद	६-९
अवहुस्सुय-पद	२	सुविणीय-पदं	१०-१४
असिक्खा-पद	३	बहुस्सुय-पद	१५-३०
सिक्खा-सील-पद	४-५	निकखेव-पद	३१
१२. हरिएसिज्ज		...	१४०
उकखेव-पद	१-२	अहोदाण-पद	३५-३६
जन्नवाड-पद	३-११	जाइ-पद	३७
खेत-पद	१२-१५	सोहि-पदं	३८-३९
तालण-पद	१६-३०	जन्न-पद	४०-४४
पासा-पद	३१-३४	तित्थ-पद	४५-४७
१३. चित्तसम्भूइज्जं		.	१४९
उकखेव-पद	१-१२	सवोहि-पद	१७-३३
निमतण-पद	१३-१६	निकखेव-पद	३४-३५
१४. उमुयारिज्ज			१५५
निकखेव-पद	१-६	कमलावई-पद	३७-५०
भिग्-भुत-पद	७-२८	निकखेव-पद	५१-५३
भिग्-जमा-पद	२९-३६		
१५. सभक्कुय			१६४
पण्णा-पद	१	आय-गवेसय-पद	५
धमग-पद	२	निग्गह-पद	६
अट्टिणाम-पद	३-४	आणायार-पद	७

उत्तरजम्भयण : विषय-सूची

क्र

सथव-पद	१०	उवसत-पद	१५
पिण्ड-पद	११	निक्रवेव-पद	१६
भय-भेरव-पद	१४		

१६. ब्रम्भचेरसमाहिठाणं ... १६८

उक्खेव-पद	सू० १-३	पणीय-पद	सू० ६
इन्थी-कह-पद	सू० ४	अइमत्त-पद	सू० १०
सन्तिसेज्जा-पद	सू० ५	विभूसा-पद	सू० ११
चक्खु-सजम-पद	सू० ६	कामगुण-पद	सू० १२
सोय-सजम-पद	सू० ७	ब्रम्भचेर-गुत्ति-पद	सू० १७
मड-सजम-पद	सू० ८		

१७. पावसमणिज्जं ... १७५

उक्खेव-पद	१-२	विवाद-पदं	१२
निहासील-पद	३	निसीदण-पद	१३
अविणय-पद	४-५	सेज्जा-पदं	१४
मजय-मन्नया-पद	६	विगड-पद	१५
अप्यमज्जण-पद	७	अत्थन्त-आहार-पद	१६
दवदव-पद	८	गाणगणिय-पद	१७
पडिल्लेहा-पद	९	पर-गेह-पद	१८
पग्ग्भिभावय-पद	१०	सन्नाड-पिंड-पद	१९
अमविभागी-पद	११	निक्रवेव-पदं	२०-२१

१८. सजइज्जं ... १७८

उक्खेव-पद	१-११	गयरिसह-पद	१८-५०
सट्ठि-पदं	१२-१७	निक्रवेव-पद	५१-५३

१९. मियापुतिज्ज			१८५
उक्खेव-पद	१-१४	भव-दुक्ख-पद	४५-४६
दुक्ख-पद	१५-१७	नरय-दुक्ख-पद	४७-७४
धम्म-पद	१८-२१	मिग-चारिया-पद	७५-८५
मार-भण्ड-पद	२२-२३	पव्वज्जा-पद	८६-८७
महव्वय-पद	२४-३०	समता-पद	८८-९५
दुक्कर-पद	३१-४४	निक्खेव-पद	९६-९८
२०. महानियण्ठिज्ज			१९७
उक्खेव-पद	१-७	धम्म-लोव-पद	३८-५०
अणाह-पद	८-३५	निक्खेव-पद	५१-६०
अत्त-पद	३६-३७		
२१. समुद्दपालीय			२०६
उक्खेव-पद	१-११	चरिया-पद	१३-२३
महव्वय-पद	१२	निक्खेव-पद	२४
२२. रहनेमिज्ज			२११
उक्खेव-पद	१-५	भासीवाय-पद	२५-२७
निज्जाण-पद	६-१४	राईमई-पद	२८-४८
नवेग-पद	१५-२०	निक्खेव-पद	४९
अभिनिक्खमण-पद	२१-२४		
२३. केसिगोयमिज्ज			२१८
उक्खेव-पद	१-२२	पास-पद	४१-४४
नाउज्जाण-पद	२३-२८	लया-पद	४५-४९
अनेय-पद	२९-३४	अग्गी-पद	५०-५४
विन्द-पद	३५-४०	दुट्ठस्स-पद	५५-५९

उत्तरजम्भयण विषय-सूची

कुप्पह-पद	६०-६४	उज्जोय-पद	७५-७६
दीव-पद	६५-६६	ठाण-पद	६०-६७
नावा-पद	७०-७४	निकखेव-पद	६६-६६
२४. पवयण-माया	...		२२८
उकखेव-पद	१-३	वड-गुत्ति-पद	२२-२३
ममिड-पद	४-१६	काय-गुत्ति-पद	२४-२५
गुत्ति-पद	२०-२१	निकखेव-पद	२६-२७
२५. जन्तडज्ज	...		२३१
उकखेव-पद	१-१०	थुड-पद	३४-३७
मुग्-पद	११-१८	सबोहि-पद	३६-४१
माह-पद	१६-३३	निकखेव-पद	४२-४३
२६. सामायारी	...		२३७
मामायारी-पद	१-७	अणाहार-पद	३३-३४
चरिया-पद	८-१०	विहार-पद	३५
दिवस-चरिया-पद	११-१६	सज्जाय-पद	३६
रत्ति-चरिया-पद	१७-१९	सम्मा-पद	३७-३८
पडिल्लेहण-पद	२०-२२	पडिक्कमण-पद	३६-५१
पडिल्लेहण-विहि-पद	२३-३०	निकखेव-पद	५२
आहार-पद	३१-३२		
२७. खलुकिज्ज	...		२४४
२८. मोक्खमग्गार्ड	...		२४७
मग्ग-पद	२-३	सम्मत्त-रुइ-पद	१५-३१
नाण-पद	४-५	चरित्त-पदं	३२-३३
दब्ब-पद	६-१३	तव-पदं	३४
नव-चरित्त-पदं	१४	निकखेव-पद	३५-३६

परिणाम-पद	२०-३२	धम्म-लैसा-पदं	५७
ठाण-पद	३३	उववात्त-पद	५८-६०
ठिड-पद	३४-५५	निकखेव-पद	६१
अहम्म-लैसा-पद	५६		
३५. अणगारमग्गर्ई	३१७
उक्खेव-पद	१	कय-विक्कम-पदं	१४-१५
असग-पद	२	पिण्डत्ताय-पदं	१६
उवस्सय-पद	४-७	समता-पद	१८
गिह-समारभ-पद	८-९	वोसट्ठ-काय-पद	१९
पायण-पद	१०-११	सलेहणा-पद	२०
जोड-पद	१२	निकखेव-पद	२१
सम-लैद्ध-कचण-पद	१३		
३६. जीवाजीवविभत्ती			३२०
उक्खेव-पद	१	वेइदिय-पद	१२७-१३५
लोकालोक-पद	२-४	तेइदिय-पद	१३६-१४४
अरुवि-अजीव-पद	५-९	चउरिदिय-पद	१४५-१५४
रुवि-अजीव-पद	१०-४७	पच्चिदिय-पद	१५५
जीव-पद	४८	नेरइय-पद	१५६-१६६
मिद्ध-जीव-पद	४९-६७	तिरिक्ख-जोणिय-पद /	
मसाग्न्य-जीव-पद	६८-६९	मणुय-पद	
पुद्दवी-पद	७०-८३	देव-पद	
आउ-पद	८४-९१		
वाम्मड-पद	९२-१०७		
वेउ-पद	१०८-११९		
वाउ-पद	११७-१२९		

पदमं अञ्जयं

दुसपुष्पिया

वस्मो मंगलमुच्छ्रितं अहिंसा नजमो तत्रो ।
देवा त्रि तं नमसन्ति जस्य वस्मे मया मणो ॥ १ ॥

जहा दुसस्य पुष्पेसु भमरो आवियड र्मं ।
न य पुष्क किलामेड नो य पीमेड अय्य ॥ २ ॥

एमेण समणा मुजा जे लोण मति माहुरां ।
विहंगमा व पुष्पेसु वागभर्तमणे र्या ॥ ३ ॥

वयं च विजिल्लभामां न य कोड उव्वग्मडे ।
अहागडेसु रोयंति पुष्पेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥

सहकारममा वुद्धा जे भवति अणिसिया ।
नाप्राप्तिडर्या वंता तेग वुच्चति माहुरां ॥ ५ ॥

नि वेमि ॥

बीअ अज्भयण

सामण्णपुव्वयं

'कह नु कुज्जा'^१ सामंण जो कामे न निवारए ।
पए पए विसीयतो सकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ॥

वत्थगन्धमलकार इत्थीओ सयणाणि य ।
अच्छन्दा जे न भुजन्ति न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥

जे य^२ कन्ते पिए भोए लद्धे विपिट्ठिकुव्वई^३ ।
साहीणे चयइ भोए^४ से हु चाइ त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥

समाए^५ पेहाए परिव्वयतो

सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ।

न सा मह नोवि अह पि तीसे

इच्चेव ताओ विणएज्ज राग ॥ ४ ॥

आयावयाही चय सोउमल्ल

कामे कमाही कमिय खु दुक्खं ।

'द्धिन्दाहि दोस विणएज्ज राग'^६

एव सुही होहिसि संपराए ॥ ५ ॥

१—कह नु कुज्जा (आ, जा, हा) , कह ज्ज कुज्जा (आ, ज, हा) ,
कह न कुज्जा (जा) , कह स कुज्जा (आ) , कह णु कुज्जा (जा) ।

२—उ (अ) ।

३—विपिट्ठि^० (अ) विपिट्ठि^० (स) , विपिट्ठि^० (न) ।

४—भोए (अ) ।

५—समाए (अ) ।

६—वेदहि दोस विणएहि दोस (अ) ।

पक्खन्टे जलिय जोड धूमकेउ दुरासय ।
 नेच्छन्ति वन्तय भोत्तु^१ कुले जाया अगन्धणे ॥ ६ ॥
 धिरत्थु 'ति जसोकामी'^२ जो तं जीवियकारणा ।
 वन्त इच्छसि आवेउ सेय ते मरण भवे ॥ ७ ॥
 अह च भोयरायस्स^३ त चऽसि अन्धगवण्हिणो ।
 मा 'कुले गधणा' 'होमो सजम निहुओ चर ॥ ८ ॥
 जड त काहिसि भाव जा जा दच्छसि नारिओ ।
 वायाइहो व्व हडो' अट्टिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥
 तीसे सो वयण सोच्चा सजयाए सुभासियं ।
 अकुमेण जहा नागो धम्मे सपडिवाइओ ॥ १० ॥
 एव करेन्ति सवुद्धा^४ पण्डिया पवियवज्ञणा ।
 विणियट्टन्ति भोगंमु जहा मे पुग्गिओत्तमो' ॥ ११ ॥
 —त्ति वेमि ॥

बीअ अज्भयण

सामण्णपुव्वयं

'कह नु कुज्जा'^१ सामण्ण जो कामे न निवारए ।
 पए पए विसीयतो सकप्पस्स वस गओ ॥ १ ॥
 वत्थगन्धमलकार इत्थीओ सयणाणि य ।
 अच्छन्दा जे न भुजन्ति न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥
 जे य^२ कन्ते पिए भोए लद्धे विपिट्ठिकुव्वई^३ ।
 साहीणे चयइ भोए^४ से हु चाइ त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥
 समाए^५ पेहाए परिव्वयतो
 सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ।
 न सा महं नोवि अह पि तीसे
 इच्चेव ताओ विणएज्ज राग ॥ ४ ॥
 आयावयाही चय सोउमल्ल
 कामे कमाही कमिय खु दुक्ख ।
 'छिन्दाहि दोस विणएज्ज राग'^६
 एव सुही होहिसि सपराए ॥ ५ ॥

१—कह नु कुज्जा (आ, जा, हा), कह नु कुज्जा (आ, ज, हा),
 कह नु कुज्जा (ज) कह स कुज्जा (आ), कह णु कुज्जा (जा) ।

२—उ (उ) ।

३—विपिट्ठि^० (उ), विपिट्ठि^० (ल), विपिट्ठि^० (ग) ।

४—ओ (उ) ।

५—ए (ए) ।

६—उत्तरेण विणएज्ज दोस (उ) ।

तइय अज्भयण

खुड्डियायारकहा

सजमे सुट्टिअप्पाण विप्पमुक्काण ताइण ।
 तेसिमेयमणाइण्ण निग्गथाण महेसिण ॥ १ ॥
 उट्टेसिय कीयगड नियागमभिहडाणि य ।
 गडभत्ते सिणाणे य गधमल्ले य वीयणे ॥ २ ॥
 मन्निही गिहिमत्ते य रायपिंडे किमिच्छए ।
 सवाहणा दत्तपहोयणा य सपुच्छणा^१ देहपलोयणा य ॥ ३ ॥
 अट्टावए य^२ नालीय छत्तस्स य धारणट्टाए ।
 तेगिच्छ पाणहा पाए समारभ च जोइणो ॥ ४ ॥
 सेज्जायर्पिंड च 'आसदीपलियकए'^३ ।
 गिहनरनिसेज्जा य गायस्सुद्वट्टणाणि य ॥ ५ ॥
 गिहिणो वेयावडिय 'जायआजीववित्तिया'^४ ।
 तत्तानिव्वुडभोइत्त आउरस्सरणाणि^५ य ॥ ६ ॥
 मग्गा सिगवेरे य उच्छुखडे अनिव्वुडे ।
 नदे मूले य सच्चित्ते फले वीए य आसए ॥ ७ ॥

सोवच्चले सिंधवे लोणे रोमालोणे^१ य आमए ।
 सामुद्दे पसुखारे य कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
 धूवणेत्ति वमणे य वत्थीकम्म विरेयणे ।
 अजणे दत्तवणे य गायाभगविभूसणे ॥ ९ ॥
 सव्वमेयमणाइण्ण निग्गथाण महेसिण ।
 'सजमम्मि य^२ जुत्ताणं'^३ लहुभूयविहारिण^४ ॥ १० ॥
 पचासवपरिन्ताया तिगुत्ता छसु सजया ।
 पचनिग्गहणा धीरा^५ निग्गथा उज्जुदसिणो ॥ ११ ॥
 आयावयति गिम्हेसु हेमतेसु अवाउडा ।
 वासासु पडिसलीणा सजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
 परीसहरिऊदता धुयमोहा जिडदिया ।
 सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा 'पक्कमति महेसिणो'^६ ॥ १३ ॥
 दुक्कराइ करेत्ताण दुस्सहाइ सहेत्तु य ।
 केइत्थ देवलोएसु केई सिज्झति नीरया ॥ १४ ॥
 खवित्ता पुव्वकम्माइ सजमेण तवेण य ।
 सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता ताइणो परिनिव्वुडा^७ ॥ १५ ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—रुमा^० (अ, घ, ज) ।

२—उ (अ) ।

३—सजप अणुपालता (ज) ।

४—^० विहारिणो (ज) ।

५—वीरा (अ) ।

६—ते वदति सिवं गति (अ) , परक्कवंति महेसिणो (ज) ।

७—अगस्त्यचूर्णो में श्लोक १४ और १५ पाठान्तर रूप में स्वीकृत हैं ।

८—परिनिव्वुड (क, ख, घ, हा) , परिनिव्वुडे (ख) , परिनिव्वुए (ह) ।

तइय थज्भयणं

खुड्डियायारकहा

सजमे मुट्टिअप्पाण विप्पमुक्काण ताइणं ।
 तेसिमेयमणाडण्ण निग्गथाण महेसिण ॥ १ ॥
 उट्टेसिय कीयगडं नियागमभिहडाणि य ।
 गडभत्ते सिणाणे य गधमल्ले य वीयणे ॥ २ ॥
 मन्निही गिहिमत्ते य रायपिंडे किमिच्छए ।
 सवाहणा दंतपहोयणा य सपुच्छणा^१ देहपलोयणां य ॥ ३ ॥
 अट्टावए य^२ नालीय छत्तस्स य धारणट्टाए ।
 तेगिच्छ पाणहा पाए समारभ च जोइणो ॥ ४ ॥
 नेज्जायरपिंड च 'आसदीपलियकए'^३ ।
 गिहतरनिसेज्जा य गायस्सुद्धट्टणाणि य ॥ ५ ॥
 गिहिणां वेयावडिय 'जायआजीववित्तिया'' ।
 तत्तानिब्वुडभोइत्त आउरस्सरणाणि^६ य ॥ ६ ॥
 मल्लए सिंगवेरे य उच्छुखडे अनिब्वुडे ।
 कडे मूले य सच्चित्ते फले वीए य आमए ॥ ७ ॥

सोवचले सिधवे लोणे रोमालोणे^१ य आमए ।
 सामुद्दे पंमुखारे य कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
 धूवणेत्ति वमणे य वत्थीकम्म विरेयणे ।
 अजणे दत्तवणे य गायाभगविभूसणे ॥ ९ ॥
 सव्वमेयमणाइण्ण निग्गथाण महेसिण ।
 'सजमम्मि य^२ जुत्ताण'^३ लहुभूयविहारिणं ॥ १० ॥
 पचासवपरिन्नाया तिगुत्ता छसु सजया ।
 पचनिग्गहणा धीरा^४ निग्गंथा उज्जुदसिणो ॥ ११ ॥
 आयावयति गिम्हेसु हेमतेसु अवाउडा ।
 वासासु पडिसलीणा सजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
 परीसहरिऊदता धुयमाहा जिडदिया ।
 सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा 'पक्कमति महेसिणो'^५ ॥ १३ ॥
^६दुक्कराइ करेत्ताण दुस्सहाइ सहेत्तु य ।
 केइत्थ देवलोएसु केई सिज्झति नीरया ॥ १४ ॥
 खवित्ता पुव्वकम्माइ सजमेण तवेण य ।
 सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता ताइणो परिनिव्वुडा^७ ॥ १५ ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—रमा^० (अ, घ, ज) ।

२—उ (अ) ।

३—सजम अणुपालता (ज) ।

४—^० विहारिणो (ज) ।

५—वीरा (अ) ।

६—ते वदति सिव गति (अ) , परक्कपति महेसिणो (ज) ।

७—अगत्त्यचूर्णो में श्लोक १४ और १५ पाठान्तर रूप में स्वीकृत हैं ।

८—परिनिव्वुड (क, ख, घ, हा) , परिनिव्वुडे (ख) , परिनिव्वुए (ह) ।

चउत्थ अज्झयणं

छज्जीवणिया

मुय मे 'आउस। तेण'^१ भगवया एवमक्खाय—इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता । सेयं मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपन्नत्ती ॥ सू० १ ॥

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयण समणेणं भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता ? सेय मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपन्नत्ती ॥ सू० २ ॥

उमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता । सेय मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपन्नत्ती त जहा—पुढविकाइया आउकाइया पेडाउया वाउताइया वणस्सइकाइया तसकाइया ॥ सू० ३ ॥

पुट्टीं निन्मनमक्खाया' अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ मावणियाणा ॥ सू० ४ ॥

गउ निन्मनमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ मावणियाणा ॥ सू० ५ ॥

१८ निन्मनमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ

वाऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ
सत्थपरिणएणं ॥ सू० ७ ॥

वणस्सई चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ
सत्थपरिणएणं, त जहा—अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खध-
बीया बीयरुहा सम्मुच्छिमा तणलया वणस्सइकाइया सबीया
चित्तमतमक्खाया, अणेगजीवा, पुढोसत्ता अन्नत्थ
सत्थपरिणएणं ॥ सू० ८ ॥

से जे पुण इमे अणेगे बह्वे तसा पाणा त जहा—अडया
पोयया जराउया रसया ससेइमा^१ सम्मुच्छिमा उब्भिया उववाइया ।
जेसि केसिचि^२ पाणाणं अभिक्कत पडिक्कतं संकुचिय पसारियं
रुय भत तसिय पलाइयं आगइगइविन्नाया—जे य कीडपयगा जा
य कुथुपिवीलिया 'सव्वे बेइदिया सव्वे तेइदिया सव्वे चउरिदिया
सव्वे पचिदिया सव्वे तिरिक्खजोणिया सव्वे नेरइया सव्वे मणुया
सव्वे देवा सव्वे पाणा'^३ परमाहम्मिया^४ एसो^५ खलु छट्ठो जीव-
निकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चई ॥ सू० ९ ॥

इच्चेसि^६ छण्ह जीवनिकायाणं नेवसय दंड समारभेज्जा नेवन्नेहि
दड समारभावेज्जा दड समारभते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा^७

१—ससेयणा (जिचू) ।

२—केसि च (ख) ।

३—सव्वे नेरइया, सव्वे पचिदिया, सव्वे तिरिक्ख जोणिया, सव्वे मणुया, सव्वे देवा,
सव्वे पाणा (जिचू) ।

सव्वे देवा, सव्वे असुरा, सव्वे नेरइया, सव्वे पचिदियतिरिक्खजोणिया, सव्वे
मणुस्सा, सव्वे पाणा (अचू) ।

४—परधम्मिता (जिच् पा० , जिच् पा०) ।

५—× (अचू) ।

६—इच्चेतेहि (जिचू , अचू) ।

७—समणुजाणाणि (क, ख, ग, अचू , सू १० से २२ तक) ।

जावज्जीवाए तिविह तिविहेण 'मणेण वायाए काएणं'^१ न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्न न समणुजाणामि तस्स भते । पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ सू० १० ॥

पट्टमे भते । महव्वए^२ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्व भते ! पाणाइवाय पच्चक्वामि—से सुहुम वा बायर वा तस वा 'थावर वा' नेव नय पाणे अइवाएज्जा^३ नेवन्नेहि पाणे अइवायावेज्जा^४ पाणे अइवायते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भते । पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।

पट्टमे भते । महव्वए उवट्ठिओमि^५ सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण ॥ सू० ११ ॥

अत्रावरे दोच्चे भते । महव्वए मुसावायाओ वेरमण सव्वं भते । मुसावाय पच्चक्वामि—से कोहा वा लोहा वा भया वा तागा वा नेव नय मुस वाज्जा^६ नेवन्नेहि मुस वायावेज्जा^७ मुस वाया वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्न न

समणुजाणामि । तस्स भते । पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ।

दोच्चे भते । महव्वए उवट्टिओमि सव्वाओ मुसावायाओ
वेरमणं ॥ सू० १२ ॥

अहावरे तच्चे भते । महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमण सव्व
भते । अदिन्नादाण पच्चक्खामि से गामे वा नगरे वा रण्णे^१ वा
अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव
सयं अदिन्नं गेण्हेज्जा नेवन्नेहि अदिन्नं गेण्हावेज्जा अदिन्नं गेण्हते
वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतं पि अन्नं न समणु-
जाणामि । तस्स भते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण
वोसिरामि ।

तच्चे भते । महव्वए उवट्टिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ
वेरमणं ॥ सू० १३ ॥

अहावरे चउत्थे भते । महव्वए मेहुणाओ वेरमण सव्व भते ।
मेहुण पच्चक्खामि—से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणियं वा, नेव
सयं मेहुण सेवेज्जा नेवन्नेहिं मेहुण सेवावेज्जा मेहुण सेवते वि अन्ने
न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए
काएण न करेमि न कारवेमि करतं पि अन्नं न समणुजाणामि ।
तस्स भते । पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।

चउत्थे भते । महव्वए उवट्टिओमि सव्वाओ मेहुणाओ
वेरमणं ॥ सू० १४ ॥

१—अरण्णे (अचू) ।

समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए
काएणं न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि ।
तस्स भते । पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण
वोसिरामि ॥ सू० २१ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सजयविरय-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से वीएमु वा वीयपइट्टिएमु^१
वा रूढेमु वा रूढपइट्टिएमु वा जाएमु वा जायपइट्टिएमु वा हरिएमु
वा हरियपइट्टिएमु वा छिन्नेमु वा 'छिन्नपइट्टिएमु वा'^२
सच्चित्तकोलपडिनिस्सिएमु वा, न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न
निसीएज्जा न तुयट्टेज्जा अन्न न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा न
निसीयावेज्जा न तुयट्टावेज्जा अन्न गच्छत वा चिट्ठत वा
निसीयत वा तुयट्टत वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह
तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि
अन्न न समणुजाणामि । तस्स भते । पडिक्कमामि निंदामि
गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ सू० २२ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सजयविरय-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से कीड वा पयग वा
कुथु वा पिवीलिय वा हत्यसि वा पायसि वा "वाहुसि वा ऊरु सि
वा 'उदरसि वा मीससि वा वत्यसि वा 'पडिग्गहसि वा'^३
रयहरणसि वा'^४ गोच्छगंसि वा उडगसि वा डडगमि वा

१—वीयपइट्टेसु (क ख ग घ) ।

२—छिन्नपइट्टिएसु वा सच्चित्तेसु वा (क ख ग घ ह) ।

३—पडिग्गहसि वा कल्लसि वा पाय मुग्गसि वा (क ख ग) ।

४—उदरसि वा वत्यसि वा रयहरणसि वा (ह) ।

पीढगसि वा^१ फलगसि वा सेज्जंसि वा संधारगसि वा अन्नयरंसि
वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ सजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय
पमज्जिय पमज्जिय एगतमवणेज्जा नो ण सघायमावज्जेज्जा ॥ सू० २३ ॥

अजय चरमाणो उ^२ पाणभूयाड हिसई^३ ।
बधई^४ पावय कम्म त से होइ कडुय फल ॥ १ ॥
अजय चिद्धमाणो उ पाणभूयाड हिसई ।
बधई पावय कम्म त से होइ कडुय फल ॥ २ ॥
अजय आसमाणो उ पाणभूयाड हिसई ।
बधई पावय कम्म त से होइ कडुय फल ॥ ३ ॥
अजय सयमाणो उ पाणभूयाइं हिसई ।
बधई पावय कम्म त से होइ कडुय फल ॥ ४ ॥
अजय भुजमाणो उ पाणभूयाइ हिसई ।
बधई पावय कम त से होइ कडुय फल ॥ ५ ॥
अजय भासमाणो उ पाणभूयाइ हिसई ।
बधई पावय कम्म त से होइ कडुय फल ॥ ६ ॥
कह चरे ? कह चिट्ठे ? कहमासे ? कह सए ?
कह भुजन्तो भासन्तो पाव कम्म न बधई ? ॥ ७ ॥
जय चरे जय चिट्ठे जयमासे जय सए ।
जय भुजन्तो भासन्तो पाव कम्मं न बधई ॥ ८ ॥
सच्चभूयप्पभूयस्स सम्म भूयाइ पासओ ।
पिहियासवस्स दत्तस्स पाव कम्म न बधई ॥ ९ ॥

१—वाहंसि वा उदसीससि वा उरुसि वा उदरसि वा पातसि वा रयहरणसि वा

गोच्छगसि वा इडासि वा कवलसि वा उडुयंसि वा पीढासि वा (अ) ।

२—य (ख ग) । गाथा १ से ६ तक ।

३—हिसओ (अ, ज) । गाथा १ से ६ में ।

४—वज्झइ (अ) । गाथा १ से ६ व ९ में ।

पढम नाण तओ दया एव चिद्वड सव्वसजए ।
 अन्नाणी किं काही ? किं वानाहिड छेय पावग ? ॥१०॥
 सोच्चा जाणइ कल्लाण सोच्चा जाणइ पावग ? ।
 उभय पि जाणई सोच्चा ज छेय त समायरे ॥११॥
 जो जीवे वि न याणाइ अजीवे वि न याणई ।
 जीवाजीवे अयाणतो कह सो नाहिड सजम ? ॥१२॥
 जो जीवे वि वियाणाइ अजीवे वि वियाणई ।
 जीवाजीवे वियाणतो सो हु 'नाहिड सजम ॥१३॥
 जया 'जीवे अजीवे'^१ य दो वि एए वियाणई ।
 तया गइ बहुविह सव्वजोवाण जाणई ॥१४॥
 जया गइ बहुविह सव्वजोवाण जाणई ।
 तया पुण्ण च पाव च वध मोक्ख च जाणई ॥१५॥
 जया पुण्ण च पाव च वध मोक्ख च जाणई ।
 तया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥
 जया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ।
 तया चयइ^२ सजोग सदिभतरवाहिर ॥१७॥
 जया चयइ^२ सजोग सदिभतरवाहिर ।
 तया मुडे भवित्ताण पव्वडाण^३ अणगारिय ॥१८॥
 जया मुडे भवित्ताण पव्वडाण^३ अणगारिय ।
 तया सवरमुक्किट्ट धम्म फामे^४ अणुत्तर ॥१९॥
 जया सवरमुक्किट्ट धम्म फामे^४ अणुत्तर ।
 तया धुणइ कम्मरय अद्रोहिकनुस कड ॥२०॥

१—जीवमजीवे (क ख, ग, घ) ।

२—जहइ (अ ज) ।

३—पव्वए (ग) पव्वाति (अ) ।

४—फालेइ (अ ज) फालइ (घ) ।

जया धुणइ कम्मरय अबोहिकलुस कड ।
 तया सव्वत्तग^१ नाण दसण चाभिगच्छई ॥२१॥
 जया सव्वत्तग नाणं दसण चाभिगच्छई ।
 तया लोगमलोग च जिणो जाणइ केवली ॥२२॥
 जया लोगमलोग च जिणो जाणइ केवली ।
 तया जोगे निरु भित्ता सेलेसि पडिवज्जई ॥२३॥
 जया जोगे निरु भित्ता सेलेसि पडिवज्जई ।
 तया कम्म खवित्ताण सिद्धि गच्छइ नीरओ ॥२४॥
 जया कम्म खवित्ताण सिद्धि गच्छइ नीरओ ।
 तया लोग मत्थयत्थो सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥
 सुहसायगस्स^२ समणस्स

सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।

उच्छोलणापहोइस्स

दुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥२६॥

तवोगुणपहाणस्स

उज्जुमइ खतिसजमरयस्स ।

परीसहे जिणतस्स

सुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥२७॥

[पच्छा वि ते पयाया

खिप्प गच्छन्ति अमरभवणाइ ।

जेसि पिओ तवो सजमो य

खन्ती य बम्भचेर च ॥]^३

१—सव्वत्थग (ज) ।

२—सुहसीलगस्स (अ) , सुहसायगस्स (आ) ।

३—यह गाथा (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है किन्तु चूर्णोद्वय व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

इच्चयेयं

छज्जीवणिय

सम्मद्विट्ठी सया जए ।

दुलहं^१

लभित्तु सामण्ण

कम्मुणा न विराहेज्जासि ॥२८॥

—त्ति वेमिं ॥

*

१—दुलह (ज) . दुल्लभ (आ) ।

पचम अज्भयण

पिंडेसणा (पढमोद्देसो)

सपत्ते भिक्खकालम्मि^१ असभतो अमुच्छिओ ।
 डमेण कमजोगेण भत्तपाण गवेसए ॥ १ ॥
 से गामे वा नगरे वा गोयरग्गओ मुणी ।
 चरे मंदमणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण^२ चेयसा ॥ २ ॥
 पुरओ^३ जुगमायाए^४ पेहमाणो महि चरे ।
 वज्जतो वीयहरियाड पाणे य दगमट्टिय ॥ ३ ॥
 ओवायं विसम खाणु विज्जल परिवज्जए ।
 संकमेण न गच्छेज्जा विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥
 पवढन्ते व से तत्थ पक्खलन्ते व संजए ।
 हिसेज्ज पाणभूयाइं^५ तसे अट्टुव थावरे ॥ ५ ॥
 तम्हा तेण न गच्छेज्जा सजए सुसमाहिए ।
 सड अन्नेण मग्गेण जयमेव परक्कमे ॥ ६ ॥

१—भिक्खु ° (क, ग) ।

२—अवक्खित्तेण (अ), अव्विक्खित्तेण (ग) ।

३—सव्वतो (आ, जा) ।

४—° मायाय (जा), ° मादाय (आ) ।

५—° भूतेय (अ, ज) ।

६—श्लोक ६ के पश्चात् अगस्त्यचूणि में निम्न श्लोक का (जो कि कुछ परिवर्तन के साथ ६५वें, ६६वें श्लोक के प्रथम दो-दो चरण हैं) उल्लेख है (अयं केसिंचि सिलोगो उवरिं भण्णहिति)—

चल कट्टं स्सि वावि इट्ठाल वावि सकमो ।

न तोग भिक्खं दिट्ठो तत्थ असंजमो ।

इंगाल छारिय रासि तुसरासि च गोमयं ।
 'ससरक्खेहि पाएहि'^१ सजओ त 'न अक्कमे'^२ ॥ ७ ॥
 न चरेज्ज वासे वासते महियाए व^३ पडतीए ।
 महावाए व वायते तिरिच्छसपाइमेसु वा ॥ ८ ॥
 न चरेज्ज वेससामते बभचेरवसाणुए^४ ।
 बभयारिस्स दत्तस्स होज्जा तत्थ विसोत्तिया ॥ ९ ॥
 अणायणे चरत्तस्स ससग्गीए अभिक्खण ।
 होज्ज वयाण पीला सामणम्मि य ससओ ॥ १० ॥
 तम्हा एय वियाणित्ता दोस दुग्गइवड्ढण ।
 वज्जए वेससामत मुणी एगतमस्सिए ॥ ११ ॥
 साणं सूइय^५ गावि दित्त गोण ह्य गय ।
 सडिब्भ कलह जुद्ध दूरओ परिवज्जए ॥ १२ ॥
 अणुन्नए नावणए अप्पहिट्ठे अणाउले ।
 इदियाणि जहाभाग^६ दमइत्ता मुणी चरे ॥ १३ ॥
 दवदवस्स न गच्छेज्जा भासमाणो य^७ गोयरे ।
 हसतो नाभिगच्छेज्जा कुल उच्चावय सया ॥ १४ ॥
 आलोय थिग्गल दार सधि दग्गभवणाणि य ।
 चरतो न विणिज्जाए सकट्ठाणं विवज्जए ॥ १५ ॥
 रन्तो गिहवईण च 'रहस्सारक्खियाण'^८ य ।
 सकिलेसकर ठाण दूरओ परिवज्जए ॥ १६ ॥

१—ससरक्खेण पाएण (अ) ।

२—नुइक्कमे (क, ख, ग घ) ।

३—× (अ) ।

४—वभचागे^० (आ) ^० वत्ता ए (ह) ।

५—सूय (क, ख, ग, घ, ह) सूवेय (ज) ।

६—जहामाव (ज) ।

७—व (ह) ।

८—रहस्सारक्खियाणि (ख) ।

पडिकुट्टकुलं न पविसे मामगं परिवज्जए ।
 अचियत्तकुलं न पविसे चियत्तं पविसे कुलं ॥१७॥
 साणीपावारपिहिय अप्पणा नावपगुरे ।
 कवाड नो पणोल्लेज्जा ओग्गहसि अजाइया ॥१८॥
 गोयरग्गपविट्ठो उ वच्चमुत्त न धारए ।
 ओगास फासुय नच्चा अणुन्नविय वोसिरे ॥१९॥
 नीयदुवार तमस कोट्ठग परिवज्जए ।
 अचक्खुविसओ जत्थ पाणा दुप्पडिलेहगा ॥२०॥
 जत्थ पुप्फाइ बीयाइ विप्पइण्णाइ कोट्ठए ।
 अहुणोवलित्त उल्ल दट्ठूण परिवज्जए ॥२१॥
 एलग दारग साण वच्छग वावि कोट्ठए ।
 उल्लघिया न पविसे विऊहित्ताण व संजए ॥२२॥
 अससत्त पलोएज्जा नाइदूरावलोयए ।
 उप्फुल्ल न विणिज्जाए नियट्ठेज्ज अयपिरो ॥२३॥
 अइभूमिं न गच्छेज्जा गोयरग्गओ मुणी ।
 कुलस्स भूमिं जाणित्ता मिय भूमिं परक्कमे ॥२४॥
 तत्थेव पडिलेहेज्जा भूमिभाग वियक्खणो ।
 सिणाणस्स य वच्चस्स सलोग परिवज्जए ॥२५॥
 'द्वगमट्ठियआयाण'^१ बीयाणि हरियाणि य^२ ।
 परिवज्जतो चिट्ठेज्जा सन्विदियसमाहिए ॥२६॥
 तत्थ से चिट्ठमाणस्स आहरे पाणभोयणं ।
 अकप्पिय न इच्छेज्जा^३ पडिगाहेज्ज कप्पिय ॥२७॥

१—^० आयाणे (क ख, ग, घ) ।

२—या (उ) ।

३—गिन्हेज्जा (क घ, ह) ।

आहरंती सिया तत्थ परिसाडेज्ज भोयणं ।
देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥२८॥

सम्मद्दमाणी पाणाणि बीयाणि हरियाणि य ।
असजमकरिं नच्चा तारिस^१ परिवज्जए ॥२९॥

साहट्टु निक्खवित्ताण सच्चित्त घट्टियाण^२ य ।
तहेव समणट्टाए उदग सपणोल्लिया ॥३०॥

आगाहइत्ता^३ चलइत्ता आहरे पाणभोयणं ।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥३१॥

पुरेकग्गेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥३२॥

[एव उदओल्ले ससिणिद्धे ससरक्खे मट्टिया ऊसे ।
हरियाले हिंगुलए मणोसिला अजणे लोणे ॥३३॥
गेरुय वण्णिय सेडिय सोरट्टिय पिट्ट कुक्कुसकए य ।
उक्कट्टमससट्टे ससट्टे चेव वोधव्वे ॥३४॥]^४

१—तारिसि (ह) ।

२—घट्टियाणि (क, ख, ग) ।

३—ओगाहइत्ता (अ, ज, ह) ।

४—अगस्त्य चर्णि मे गाथा ३३-३४ के स्थान मे सतरह श्लोक हैं

१—उदउल्लेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।

देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥

२—ससिणिद्धेण हत्थेण

३—ससरक्खेण

४—मट्टियागतेण

५—उत्तगतेण

६—हारतालगतेण

७—हिंगुलएगतेण

८—मणोसिलागतेण

९—उक्कट्टगतेण

१०—लोणगतेण हत्थेण

११—गेरुयगतेण

१२—वण्णियगतेण

१३—सेडियगतेण

१४—सोरट्टियगतेण

१५—पिट्टगतेण

१६—कुक्कुसगतेण

१७—उक्कट्टगतेण

अससट्टेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
 दिज्जमाण न इच्छेज्जा पच्छाकम्मं जहिं भवे ॥३५॥
 ससट्टेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
 दिज्जमाण पडिच्छेज्जा ज तत्थेसणिय भवे ॥३६॥
 दोण्ह तु भुजमाणण एगो तत्थ निमतए ।
 दिज्जमाण न इच्छेज्जा छदं से पडिलेहए ॥३७॥
 दोण्ह तु भुजमाणण दोवि तत्थ निमतए ।
 दिज्जमाण पडिच्छेज्जा ज तत्थेसणियं भवे ॥३८॥
 गुव्विणीए उवन्नत्थ विविह पाणभोयण ।
 भुजमाण^१ विवज्जेज्जा भुत्तसेस पडिच्छए ॥३९॥
 सिया य समणट्टाए गुव्विणी कालमासिणी ।
 उट्टिया वा निसीएज्जा निसन्ना वा पुणुट्टए ॥४०॥
 'त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पियं'^२
 देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥४१॥
 'थणग पिज्जेमाणी दारग वा कुमारिय'^२
 त निक्खवित्तु रोयत आहरे पाणभोयण ॥४२॥
 त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पियं ।
 देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४३॥
 ज भवे भत्तपाण तु कप्पाकप्पम्मि सकियं ।
 देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥४४॥
 दगवारएण पिहिय नीसाए पीढएण वा ।
 लोढेण वा वि लेवेण सिलेसेण व केणई ॥४५॥

१—भुजण (क, ख, ग, घ, ज) ।

२—अगस्त्य चूर्णों में श्लोक ४१-४३ के प्रथम दो चरण नहीं हैं—पुव्व भणित्त सुत्त सिलोगद्ध वित्तीए अणुस्सरिज्जति "देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पति तारिसं" उ१३ दिवद्ध सिलोगो (अ) ।

त च उभिदिया देजा समणट्टाए व दावए ।
 देतिय पडियाडक्खे न मे कप्पड तारिसं ॥४६॥
 असण पाणग वा वि खाइम साइम तहा ।
 ज जाणेज्ज सुणेज्जा वा दाणट्टा पगड इम ॥४७॥
 'त भवे'^१ भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिय ।
 देतिय पडियाडक्खे न मे कप्पड तारिस ॥४८॥
 असण पाणग वा वि खाइम साइम तहा ।
 ज जाणेज्ज सुणेज्जा वा पुण्णट्टा पगड इम ॥४९॥
 त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिय ।
 देतिय पडियाडक्खे न मे कप्पड तारिस ॥५०॥
 असण पाणग वा वि खाइम साइम तहा ।
 ज जाणेज्ज सुणेज्जा वा वणिमट्टा पगड इम ॥५१॥
 त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पियं ।
 देतिय पडियाडक्खे न मे कप्पड तारिस ॥५२॥
 असण पाणग वा वि खाइम साइम तहा ।
 ज जाणेज्ज सुणेज्जा वा समणट्टा पगड इम ॥५३॥
 त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिय ।
 देतिय पडियाडक्खे न मे कप्पड तारिस ॥५४॥
 उट्टेसिय कीयगड पूईकम्म च आहड ।
 अज्झोयर पामिच्च मीसजायं 'च वज्जए'^२ ॥५५॥
 उगम से पुच्छेज्जा कस्सट्टा केण वा कडं ? ।
 सोच्चा निस्सकिय मुद्धं पडिगाहेज्ज सजए ॥५६॥

१—तारिस (अ, क ह) ।

२—विदज्जए (अ, ज) ।

ऋ-अद्रिय- पुगल अणिमिस-वा बहु-कंटय ।
 अत्थिम तिदुयं, विल्ल उच्छुखड- व^३ सिबलिं ॥७३॥
 अणे-सिमा भोयणजाए बहु-उज्झिय-धम्मिए ।
 देतियं- पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७४॥
 तहेवुच्चावयं- पाण^३ अदुवा वारधोयण^३ ।
 तसेइम चाउलोदगं, अहुणमधोय विवज्जए ॥७५॥
 ज जाणेज्ज चिराधेय मईए दसणेण वा ।
 पडिपुच्छिऊण सोच्चा-वा ज-च- निस्संकियं भवे ॥७६॥
 अजीव परिणय नच्चा, पडिगाहेज्ज सजए ।
 अह संकिय भवेज्जा आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥
 थोवमसायणट्टाए, हत्थगम्मि दलाहि मे ।
 मा मे- अच्चं बिलं पूइ, नल तण्ह विणित्तए ॥७८॥
 तं च- अच्चं बिलं पूइ, नालं तण्ह विणित्तए ।
 देतियं- पडियाइक्खे- न मे कप्पइ तारिसं ॥७९॥
 तं च- होज्ज अकामेणं विमणेण पडिच्छियं ।
 त- अप्पणा- न- पिबे^३ नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥
 एगंतमवकमित्ता, अचित्तं पडिलेहिया ।
 ज्मं- नी- परिट्टुवेज्जा परिट्टुप्प^३ पडिक्कमे ॥८१॥
 सिया य गोयरगगओ इच्छेज्जा परिभोत्तुय ।
 कोट्टा भित्तिमूल वा पडिलेहित्ताण फासुय ॥८२॥
 अणुल्लवेत्तुं- मा- मेहावी पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
 मपमज्जिता तत्थ भुजेज्ज सजए ॥८३॥

असण पाणग वा वि खाइमं साइम तथा ।
 पुप्फेसु होज्ज उम्मीस बीएसु हरिएसु वा ॥५७॥
 'त भवे'^१ भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिय ।
 देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥५८॥
 असण पाणग वा वि खाइम साइम तथा ।
 उदगम्मि होज्ज निक्खित्त उत्तिगपणगेसु वा ॥५९॥
 'त भवे'^१ भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिय ।
 देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६०॥
 असण पाणग वा वि खाइम साइम तथा ।
 'तेउम्मि'^२ होज्ज निक्खित्त त च संघट्टिया दए ॥६१॥
 त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पियं ।
 देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥६२॥

[एव उस्सक्किया ओसक्किया उज्जालिया पज्जालिया निव्वाविया ।
 उस्सिचिया निस्सिचिया ओवत्तिया ओयारिया दए ॥६३॥]^३

१—तारिसं (अ, क, ह) ।

२—अगणिम्मि (अ) ।

३—अगस्त्यचूणि में गाथा ६३ के स्थान पर निम्न अद्वारह श्लोक हैं—

१—असण पाणग वावि खाइप साइम तथा ।

ते उम्पि होज्ज निक्खित्त त च उस्सक्किया दए ॥

२—त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिय ।

देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥

३— त च ओसक्किया दए ॥

५— त च उज्जालिया ,, ॥

७— त च निव्वाविया ,, ॥

९— त च उस्सिचिया ,, ॥

११— त च उक्कट्टिया ,, ॥

१३— त च निस्सिचिया ,, ॥

१५— त च ओवत्तिया ,, ॥

१७— त च ओयारिया ,, ॥

श्लोक ४ ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८ ठीक दूसरे श्लोक की तरह हैं ।

तं भवे भत्तपाण तु संजयाण अकप्पिय ।
 देतियं पडियाडक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥६४॥
 'होज्ज कट्टं सिलं वा वि इट्टालं वा वि एगया ।
 ठविय सकमट्टाए त च होज्ज चलाचल ॥६५॥'^१
 'न तेण भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो ।'^२
 गंभीरं झुसिरं चेव सत्विदियसमाहिए ॥६६॥
 निस्सेणि फलगं पीढ उस्सवित्ताणमारुहे ।
 मचं कीलं च पासाय समणट्टाए व दावए ॥६७॥
 दुरुहमाणी^३ पवडेज्जा हत्थं पायं व लूसए ।
 पुढविजीवे^४ वि हिसेज्जा जे यं तन्निस्सिया जगा ॥६८॥
 'एयारिसे महादोसे जाणिऊण महेसिणो ।'^५
 तम्हा^६ मालोहड भिक्ख न 'पडिगेण्हति संजया'^७ ॥६९॥
 कदं मूलं पलव वा आम छिन्नं व सन्तिर ।
 तुवागं सिंगवेर च आमग परिवज्जए ॥७०॥
 तहेव सत्तुचुण्णाइं कोलचुण्णाइ आवणे ।
 सक्कुलि फाणियं पूयं अन्त वा वि तहाविह ॥७१॥
 विक्कायमाणं पसढ रणण परिफासिय ।
 देतियं पडियाडक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥७२॥

१—अगस्त्य चूणि में यह श्लोक यहाँ नहीं है । किन्तु इसी उद्देशक के छठे श्लोक के पश्चात् है ।

२—६६वें श्लोक के प्रथम दो चरण अगस्त्य चूणि में व्याख्यात नहीं हैं ।

३—दुरुहमाणे (अ) ।

४—पुढवि काय (अ ज,)

५—वा (अ) ।

६—६९वें श्लोक के प्रथम दो चरण अगस्त्य चूणि में व्याख्यात नहीं हैं ।

७—हदि (हा) ।

८—पडिगाहेज्ज सजए (अ) ।

बहु-अद्विय- पुग्गल अणिमिस-वा बहु-कटय ।
 अत्थिय तिदुय वित्तल उच्छुखड व^१ सिबलिं ॥७३॥
 अप्पे सिया भोयणजाए बहु-उज्झिय-धम्मिए ।
 देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७४॥
 तहेवुच्चावय पाण^२ अदुवा वारधोयण^३ ।
 ससेइम चाउलोदग अहुणाधोय विवज्जए ॥७५॥
 ज जाणेज्ज चिराधोय मईए दसणेण वा ।
 पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा ज-च- निस्सकियं भवे ॥७६॥
 अजीव परिणय नच्चा पडिगाहेज्ज संजए ।
 अह सकिय भवेज्जा आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥
 थोवमासायणट्टाए हत्थगम्मि दलाहिं मे ।
 मा मे अच्चविल पूइ नाल तण्ह विणित्तए ॥७८॥
 त च अच्चविल पूइ नाल तण्ह विणित्तए ।
 देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७९॥
 त च होज्ज अकामेण विमणेण पडिच्छियं ।
 त 'अप्पणा न पिवे'^१ नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥
 एगतमवक्कमित्ता अचित्त पडिलेहिया ।
 जय परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प^३ पडिक्कमे ॥८१॥
 सिया य गोयरग्गओ इच्छेज्जा परिभोत्तुयं ।
 कोट्टग भित्तिमूल वा पडिलेहित्ताण फासुयं ॥८२॥
 अणुन्नवेत्तु मेहावी पडिच्छन्नम्मि सवुडे ।
 हत्थग सपमज्जित्ता तत्थ भुजेज्ज संजए ॥८३॥

१—च (क न, घ) ।

२—अप्पणा वि न पिवे अ) ।

३—पडिट्ठप्प (ह) ।

तत्थ से भुजमाणस्स अट्ठियं कटओ सिया ।
 तण-कट्ट-सक्कर वा वि अन्न 'वा वि'^१ तहाविह ॥८४॥
 तं उक्खिवित्तु न निक्खिवे आसएण न छड्डुए ।
 हत्थेण त गहेऊणं एगतमवक्कमे ॥८५॥
 एगतमवक्कमित्ता अचित्त पडिलेहिया ।
 जय परिट्टवेज्जा परिट्टप्प^२ पडिक्कमे ॥८६॥
 सिया य भिक्खू इच्छेज्जा सेज्जमागम्म भोत्तुय ।
 सर्पिंडपायमागम्म उड्डुय^३ पडिलेहिया ॥८७॥
 विणएण पविसित्ता सगासे गुरुणो मुणी ।
 इरियावहियमायाय^४ आगओ य पडिक्कमे ॥८८॥
 आभोएत्ताण नीसेसं अइयार^५ जहक्कम ।
 गमणागमणे चेव भत्तपाणे व^६ सजए ॥८९॥
 उज्जुप्पन्तो अणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण चयेसा ।
 आलोए गुरुसगासे ज जहा गहिय भवे ॥९०॥
 न सम्ममालोइयं होज्जा पुव्वि पच्छा व ज कडं ।
 पुणो पडिक्कमे तस्स वोसट्ठो चित्तए इम ॥९१॥
 अहो जिणेहि असावज्जा वित्ती साहूण देसिया ।
 मोक्खसाहणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥९२॥
 नमोक्कारेण पारेत्ता करेत्ता जिणसथव ।
 सज्झायं पट्टवेत्ताण वीसमेज्ज खण मुणी ॥९३॥

१—चापि (ह) ।

२—पडिट्टप्प (ह) ।

३—उण्णयं (अ) ।

४—^० मायाए (स्त) ।

५—अइयारं च (क ग घ ह) ।

६—य (क. स्त ग घ ह) ।

वीसमतो इम चिते हियमइ - लाभमट्टिओ ।
 जइ मे अणुगह कुज्जा साहू होज्जामि तारिओ ॥१४॥
 साहवो तो चियत्तेण निमतेज्ज, - जहक्कम ।
 जइ तत्थ केइ^१ इच्छेज्जा तेहिं सद्धि तु भुजए ॥१५॥
 अह कोइ न इच्छेज्जा तओ भुजेज्ज एकओ ।
 आलोए^२ भायणे साहू जय 'अपरिसाडय'^३ ॥१६॥
 तित्तग व कडुय व कसाय

अबिल व^४ महर लवण वा ।

एय लद्धमन्नइ-पउत्त

महु-घय व भुजेज्ज सजए ॥१७॥

अरस विरस वा वि सूइय^५ वा असूइय ।

उल्ल वा जइ वा सुक्क मन्थु-कुम्मास-भोयण ॥१८॥

उप्पण्ण नाइहीलेज्जा अप्प पि^६ बहु फासुय ।

मुहालद्ध मुहाजीवी भुजेज्जा दोसवज्जिय ॥१९॥

दुल्लाहा उ^७ सुहादाई मुहाजीवी वि दुल्लाहा ।

मुहादाई मुहाजीवी दो वि गच्छति सोग्गइ ॥१००॥

—त्ति वेमि ॥

*

१—कोइ (अ) ।

२—आलोय (अ ज) ।

३—अपरिसाडिय (क ख, ग, घ, ज) ।

४— (ग घ) ।

५—सूइय (उ) ।

६—पि (क ख ग घ, ह) ।

७—इ (उ) ।

पचम अज्भयण

पिंडेसणा (बीओ उद्देशो)

पडिग्गह सलिहत्ताण लेव-मायाए^१ संजए ।
 दुग्ध वा सुग्ध वा सव्व भुजे न छड्डुए^२ ॥ १ ॥
 सेज्जा निसीहियाए समावन्नो व^३ गोयरे ।
 अयावयट्ठा भोच्चाण जइ तेण न सथरे ॥ २ ॥
 तओ कारणमुप्पन्ने भत्तपाण गवेसए ।
 विहिणा पुव्व-उत्तेण इमेण उत्तरेण य ॥ ३ ॥
 कालेण निक्खमे भिक्खू 'कालेण य'^४ पडिक्कमे ।
 अकाल च विवज्जेत्ता काले कालं समायरे ॥ ४ ॥
 अकाले चरसि भिक्खू काल न पडिलेहसि ।
 अप्पाण च किलामेसि सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ५ ॥
 सइ काले चरे भिक्खू कुज्जा पुरिसकारिय ।
 अलाभोत्ति न सोएज्जा तवो त्ति अहियासए ॥ ६ ॥
 तहेवुच्चावया पाणा भत्तट्ठाए समागया ।
 त-उज्जुय न गच्छेज्जा जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥
 गोयरग्ग-पविट्ठो उ^५ न निसीएज्ज कत्थई ।
 कह च न पबधेज्जा चिद्धित्ताण व संजए ॥ ८ ॥
 अग्गल फलिह दार कवाडं वा वि सजए ।
 अवलविया न चिद्धेज्जा गोयरग्गओ मुणी ॥ ९ ॥

१—^० मायाय (ग), मादाय (आ), मायाइ (ख) ।

२—उज्जए (ह) ।

३—य (क, ख, ग) ।

४—कालेण व (अ) ।

५—य (ग) ।

समण माहण वा वि किविणं वा वणीमगं ।
 'उवसकमत भत्तट्ठा पाणट्ठाए व सजए'^१ ॥१०॥
 त अडक्कमित्तु^२ न पविसे न चिट्ठे 'चक्खु-गोयरे'^३ ।
 'एगतमवक्कमित्ता तत्थ चिट्ठेज्ज सजए'^४ ॥११॥
 वणीमगस्स वा तस्स दायगस्सुभयस्स वा ।
 अप्पत्तिय सिया होज्जा लहुत्त^५ पवयणस्स वा ॥१२॥
 पडिसेहिए व दिन्ने^६ वा तओ तम्मि नियत्तिए ।
 उवसकमेज्ज भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए ॥१३॥
 उप्पल पउम वा वि कुमुय वा मगदतिय ।
 अन्न वा पुप्फ सच्चित्त त च सलुचिया दए ॥१४॥
 'त भवे'^७ भत्तपाण तु सजयाण अकप्पियं ।
 देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१५॥
 उप्पल पउम वा वि कुमुय वा मगदतिय ।
 अन्न वा पुप्फ सच्चित्त त च सम्मद्विया दए ॥१६॥
 'त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिय'^८ ।
 देतिय पडियाइक्खे न मे -कप्पइ तारिस ॥१७॥
 सालुय वा विरालिय कुमुदुप्पलनालिय^९ ।
 मुणालिय सासवनालिय उच्छुखड अनिक्खुड ॥१८॥

१—अगस्त्य चृणि में दस और ग्यारह श्लोक के अन्तिम दो दो चरण व्याख्यात नहीं हैं ।

२—उडक्कम्म (अ) ।

३—चक्खु फःसओ (अ) ।

४—लहुत्त (घ) ।

५—दिन्ने (अ) ।

६—जानि (ह) , एतस्स सिलोगस्स प्रागेण पच्चहूध पटंति (अ) ।

७—अगस्त्य चृणि में ये दो चरण व्याख्यात नहीं हैं ।

८—कुमुय उप्पल^० (क, ख, ग, घ) ।

तरुणगः वा पवालं रुक्खस्स तणगस्स वा ।
 अन्नस्स वा वि हरियस्स आमगं परिवज्जए ॥१९॥
 तरुणियं व छिवाडिं आमियं भज्जियं सइं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥
 तहा कोलमणुस्सिन्न वेलुय कासवनालियं ।
 तिलपप्पडग नीमं आमगं परिवज्जए ॥२१॥
 तहेव चाउलं पिट्ट वियडं वा तत्तनिव्वुडं ।
 तिलपिट्ट पूइ पिन्नाग आमगं परिवज्जए ॥२२॥
 कविट्ट माउलिगं च मूलगं 'मूलगतिय'^१ ।
 आम असत्थपरिणय मणसा वि न पत्थए ॥२३॥
 तहेव फलमथूणि बीयमथूणि जाणिया ।
 बिहेलग पियाल च आमगं परिवज्जए ॥२४॥
 समुयाण चरे भिक्खू कुलं उच्चावय सया ।
 नीय कुलमइक्कम्म ऊसढ नाभिधारए ॥२५॥
 अदीणो वित्तिमेसेज्जा न विसीएज्ज पडिए ।
 अमुच्छिओ भोयणम्मि मायन्ते एसणारए ॥२६॥
 वहुं परघरे अत्थि विविह खाइमसाइमं ।
 न तत्थ पंडिओ कुप्पे इच्छा देज्ज परो न वा ॥२७॥
 सयणासण वत्थ वा भत्तपाण व संजए ।
 अदेत्तस्स न कुप्पेज्जा पच्चक्खे वि य दीसओ ॥२८॥
 इत्थियं पुरिसं वा वि डहरं वा महल्लं ।
 वंदमाणो^२ न जाएज्जा नो य णं फरुस वए ॥२९॥

१—मूलगतिय (घ, ह) ।

२—वदमाण (अ, क, ख, ग, घ, ज, ह) , वदमाणो (आ, जा, ह) ।

जे न वदे न से कुप्पे वदिओ न समुक्खसे ।
 एवमन्नेसमाणस्स सामणमणुचिद्धई ॥३०॥
 सिया एगइओ लद्धु^१ लोभेण विणिगूहई ।
 मा मेय दाइय सत दट्टूण सयमायए ॥३१॥
 अत्तट्टगुरूओ लुद्धो बहु पाव पकुव्वई ।
 दुत्तोसओ य से होइ निव्वाण च न गच्छई ॥३२॥
 सिया एगइओ लद्धु विविह पाणभोयण ।
 भद्दग भद्दग भोच्चा विवण्ण विरसमाहरे ॥३३॥
 जाणतु ता इमे समणा आययट्ठी अय मुणी ।
 सतुट्ठो सेवई पत लूहवित्ती सुतोसओ ॥३४॥
 पूयणट्ठी^२ जसोकामी माणसम्माणकामए ।
 वहं पसवई पाव मायासल्ल 'च कुव्वई'^३ ॥३५॥
 सुर वा मेरग वा वि अन्न वा मज्जग रस ।
 ससक्ख न पिवे भिक्खू जस सारक्खमप्पणो ॥३६॥
 पिया एगइओ तेणो न मे कोइ वियाणई ।
 तस्स पस्सह दोसाइ नियडिं च सुणेह मे ॥३७॥
 वड्ढई सोडिया तस्स मायमोस च भिक्खुणो ।
 अयसो य अनिव्वाण^४ सयय च असाहुया ॥३८॥
 निच्चुव्विग्गो जहा तेणो अत्तकम्मेहि दुम्मई ।
 तारिसो मरणते वि नाराहेड सवर ॥३९॥
 आयरिए नाराहेड समणे यावि तारिसो ।
 गिहत्था वि णगरहति जेण जाणति तारिसं ॥४०॥

१—लद्ध (ल) ।

२—पूयणट्ठा (क न, ग घ, ह) ।

३—कुव्वई (ल) वि कुव्वई (ज) ;

४—अनिव्वाणे (ल) ।

पंचमं अज्भयण (बीओ उद्देशो)

‘एव तु अगुणप्पेही गुणाण च विवज्जओ^१
तारिस्सो मरणते वि नाराहेइ संवरं ॥४१॥’^२

तवं कुव्वइ मेहावी पणीयं वज्जए रसं ।
मज्जप्पमायविरओ तवस्सी अइउक्कसो ॥४२॥

तस्स पस्सह कल्लाण अणेगसाहुपूइय^३ ।
विउल अत्थसंजुत्तं कित्तइस्सं सुणेह मे ॥४३॥

एव ‘तु गुणप्पेही’^३ अगुणाण ‘च विवज्जओ’^४ ।
तारिस्सो मरणते वि आराहेइ संवर ॥४४॥

आयरिए आराहेइ समणे यावि तारिस्सो ।
गिहत्था वि ण पूयंति जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥

तवतेणे वयतेणे रूवतेणे य जे नरे ।
आयारभावतेणे य कुव्वइ देवकिब्बिसं ॥४६॥

लद्धूण वि देवत्त उववन्नो देवकिब्बिसे ।
तत्था वि से न याणाइ किंमेकिच्चा ईम फल ? ॥४७॥

तत्तो वि से चइत्ताण लब्धिही एलमूयय ।
नरय तिरिक्खजोणिं वा बोही जत्थ सुदुल्लहा ॥४८॥

एय च दोस दट्टूण नायपुत्तेण भासिय ।
अणुमाय पि मेहावी मायामोसं विवज्जए ॥४९॥

१—यह श्लोक चूर्णित्तय में व्याख्यात नहीं है ।

२—उपेगो (ज) ।

३—स गुणप्पेही (ह) , अगुणप्पेही (जा) ।

४—विवज्जए (अ क. जा) ।

सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहि
 सजयाण बुद्धाण सगासे ।
 तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिदिए
 तिव्वलज्ज गुणवं विहरेज्जासि ॥५०॥
 —त्ति बेमि ॥

छट्टमज्जयणं -

महायारकहा

नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
 गणिमागमसंपन्न उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥
 रायाणो रायमच्चा य माहणा अदुव खत्तिया ।
 पुच्छति निहुअप्पाणो कहं भे आयारगोयरो ? ॥ २ ॥
 तेसि सो निहुओ दतो सव्वभूयसुहावहो ।
 सिक्खाए सुसमाउत्तो आइक्खइ वियक्खणो ॥ ३ ॥
 हंदि धम्मत्थकामाण निग्गंथाण सुणेह मे ।
 आयारगोयर भीमं सयल दुरहिद्विय ॥ ४ ॥
 नन्तथ एरिस वुत्त ज लोए परमदुच्चरं ।
 विउलट्टाणभाइस्स^१ न भूय न भविस्सई ॥ ५ ॥
 सखुड्डुगवियत्ताण वाहियाण च जे गुणा ।
 अखडफुडिया^२ कायव्वा त सुणेह जहा तथा ॥ ६ ॥
 दस अट्ट य ठाणाइं जाइ बालोऽवरज्झई ।
 तथ अन्नयरे ठाणे निग्गंथत्ताओ भस्सई ॥ ७ ॥
 [वयच्छक्कं कायच्छक्कं अकप्पो गिहिभायण ।
 पलियंक्क निसेज्जा य सिणाण सोहवज्जणं ॥]^३

१-० भा.विस्स (अ) ।

२-० फुडा (ज) ० फुला (अ) ।

३-यह श्लोक (क, ल, ग, घ) प्रतियों में है किन्तु चूणिद्वय व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

तम्हा एय वियाणित्ता दोस दुग्गइवड्ढणं ।
 पुढविकायसमारभ जावज्जीवाए वज्जए ॥२८॥
 आउकाय न हिंसति मणसा वयसा कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण सजया सुसमाहिया ॥२९॥
 आउकाय विहिसतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥३०॥
 तम्हा एय वियाणित्ता दोस दुग्गइवड्ढण ।
 आउकायसमारभ जावज्जीवाए वज्जए ॥३१॥
 जायतेय न इच्छति पावग जलइत्तए ।
 तिक्खमन्नयर सत्थ सच्चओ वि दुरासय ॥३२॥
 पाईण पडिण वा वि उड्ढ अणुदिसामवि ।
 अहे दाहिणओ वा वि दहे उत्तरओ वि य ॥३३॥
 भूयाणमेसमाघाओ हव्ववाहो न ससओ ।
 न पईवपयावट्ठा^१ सजया किंचि नारभे ॥३४॥
 तम्हा एय वियाणित्ता दोस दुग्गइवड्ढण ।
 तेउकायसमारभ^२ जावज्जीवाए वज्जए ॥३५॥
 अनिलम्म समारभ बुद्धा मन्नति तारिस ।
 तावज्वहुल चेय नेय ताईहिं सेविय ॥३६॥
 तालियट्टेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
 न ने वीउउमिच्छन्ति 'वीयावेऊण वा परं'^३ ॥३७॥
 जपि वन्थ व पाय वा कवल पायपुच्छण ।
 न ने वायमुईरति^४ जय परिहरति य ॥३८॥

१—० विद्वयुः (८) ।

२—० विद्वयुः (८) ।

३—० विद्वयुः पर (क) ।

४—० विद्वयुः (८) ।

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३९॥
 वणस्सइं न हिंसति मणसा वयसा कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण सजया सुसमाहिया ॥४०॥
 वणस्सइं विहिंसतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४१॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 वणस्सइसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४२॥
 तसकाय न हिंसति मणसा वयसा कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥४३॥
 तसकाय विहिंसतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४४॥
 तम्हा एय वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 तसकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४५॥
 जाइ चत्तारिऽभोज्जाइ इसिणाहारमाईणि^१ ।
 ताइ तु विवज्जतो सजम अणुपालए ॥४६॥
 पिंड सेज्जं च वत्थ च चउत्थ पायमेव य ।
 अकप्पिय न इच्छेज्जा पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥४७॥
 जे नियाग ममायंति कीयमुद्देसियाहड ।
 वह ते समणुजाणंति इइ वुत्त महेसिणा ॥४८॥
 तम्हा असणपाणाइ कीयमुद्देसियाहड ।
 वज्जयति ठियप्पाणो निग्गंथा धम्मजीविणो ॥४९॥

कमेमु कसपाएसु 'कुडमोएसु'^१ वा पुणो ।
 भुजतो असणपाणाड आयारा परिभस्सइ ॥५०॥
 मीओदगममारभे मत्तधोयणछड्डुणे ।
 जाड छन्नति^२ भूयाड दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥५१॥
 पच्छाकम्म पुरेकम्म सिया तत्थ न कप्पई ।
 एयमट्ट न भुजति निग्गथा गिहिभायणे ॥५२॥
 आसदीपलियकेसु मचमासालएसु वा ।
 अणायरियमज्जाण आसइत्तु सइत्तु वा ॥५३॥
 'नासदीपलियकेसु न निसेज्जा न पीढए ।
 निग्गथाऽपडिलेहाए बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥५४॥'^३
 गभीरविजया एए पाणा दुप्पडिलेहगा ।
 आसदीपलियका^४ य एयमट्ट विवज्जिया ॥५५॥
 गोयग्गपविट्ठस्स निसेज्जा जस्स कप्पई ।
 ट्ठमेग्गिमणायार आवज्जइ अबोहिय ॥५६॥
 विवत्ती वभचेरस्स पाणाण अवहे^५ वहो ।
 वणीमगपडिग्वाओ पडिकोहो अगारिण ॥५७॥
 जगुत्तो वभचेरस्स इत्थीओ यावि^६ संकणं ।
 तुमील्लवड्ढण ठाण दूरओ परिवज्जए ॥५८॥

१—कुडमोएसु (अ, जा) ।

२—छन्नति (क न, ग) छिप्पंति (ह) ।

३—नासदीपलियकेसु एत मिलोगो केसिचि णेव अत्थि (अ), जिनदास चूणि में भी यह श्लोक व्याख्यात नहीं है ।

४—^०पलियके (क न), ^०पलियके (ख) ।

५—वहे (क ख, ग घ, ह) ।

६—यावि (क ख न ग ल) ।

तिण्हमन्नयरागस्स निसेज्जा जस्स कप्पई ।
 जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥५९॥
 वाहिओ वा अरोगी वा सिणाण जो उ पत्थए ।
 वोक्कंतो होइ आयारो जढो हवड सजमो ॥६०॥
 सतिमे सुहुमा पाणा घसासु भिलुगासु य ।
 जे उ^१ भिक्खू सिणायंतो वियडेणुप्पिलावए ॥६१॥
 तम्हा ते न सिणायति सीएण उसिणेण वा ।
 जावज्जीव वय घोर असिणाणमहिट्ठगा ॥६२॥
 सिणाण अदुवा कक्क लोद्ध पउमगाणि य ।
 गायस्सुव्वट्टणट्ठाए नायरति कयाइ वि ॥६३॥
 नगिणस्स वा वि मुडस्स दीहरोमनहसिणो ।
 मेहुणा उवसतस्स किंविभूसाए कारियं ? ॥६४॥
 विभूसावत्तिय भिक्खू कम्मं वधड चिक्कण ।
 ससारसायरे घोरे जेण पडड^२ दुरुत्तरे ॥६५॥
 विभूसावत्तिय चेय वुद्धा मन्नति तारिस ।
 सावज्जवहुल चेय नेयं तार्ईहि मेविय ॥६६॥
 खवेति अप्पाणममोहदसिणो
 तवे रया सजम अज्जवे गुणे ।
 धुणाति पावाडं पुरेकडाड
 नवाइ पावाडं न ते क्केति ॥६७॥

१—उ (उ) ।

२—उ (उ) ।

सओवसंता अममा अर्किचणा
 सविज्जविज्जाणुगया जससिणो ।
 उउप्पसन्ने विमले व चदिमा
 'सिद्धि विमाणाड उवेति' ताडणो ॥६८॥
 —त्ति वेमि ॥

*

सत्तमज्जभयण

वक्कसुद्धि

वउण्ह खलु भासाण परिसखाय पन्नवं १ ।
 दोण्ह तु विणय^१ सिक्खे दो न भासेज्ज सव्वसो ॥ १ ॥
 जा य^२ सच्चा अवत्तव्वा सच्चामोसा य जा मुसा ।
 जा य बुद्धेहिण्णाइन्ना न त भासेज्ज पन्नवं ॥ २ ॥
 असच्चमोस सच्च च अणवज्जमकक्कस ।
 समुप्पेहमसदिद्ध गिर भासेज्ज पन्नव ॥ ३ ॥
 एय च अट्टमन्न वा ज तु नामेइ सासय ।
 स भास सच्चमोस पि^३ त पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
 वितह पि तहामुत्ति ज गिर भासए नरो ।
 तम्हा सो पुट्ठो पावेण किंपुण जो मुस वए ? ॥ ५ ॥
 तम्हा गच्छामो वक्खामो अमुग वा णे भविस्सई ।
 अह वा ण करिस्सामि एसो वा ण करिस्सई ॥ ६ ॥
 एवमाई उ जा भासा एसकालम्मि सकिया ।
 सपयाईयमट्ठे वा त पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥
 'अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागाए ।
 जमट्ट तु न जाणेज्जा एवमेय ति नो वए ॥ ८ ॥
 अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागाए ।
 जन्थ नका भवे तं तु एवमेय ति नो वए ॥ ९ ॥

१—दिच्च (३) विन्द (७) ।

२—ज (३) ।

३—च (४) ।

अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए ।
 निस्सकिय भवे ज तु 'एवमेय ति निद्दिसे' ॥१०॥^१
 तहेव फरुसा भासा गुरुभूओवघाडणी ।
 सच्चा वि सा न वत्तव्वा जओ पावस्स आगमो ॥११॥
 तहेव काण काणे त्ति पंडग पडगे त्ति वा ।
 वाहिय वा वि रोगि त्ति तेण चोरे त्ति नो वए ॥१२॥
 एएणन्नेण वट्टेण^३ परो जेणुवहम्मई ।
 आयारभावदोसन्नु^४ न त भासेज्ज पन्नव ॥१३॥
 तहेव होले गोले त्ति साणे वा वसुले त्ति य ।
 दमए दुहए वा^५ वि नेवं^६ भासेज्ज पन्नवं ॥१४॥
 अज्जिए पज्जिए वा वि अम्मो माउस्सिय त्ति य ।
 पिउस्सिए भाइणेज्ज त्ति धूए नत्तुणिए त्ति य ॥१५॥
 हले हले त्ति अन्ने त्ति भट्टे सामिणि गोमिणि ।
 होले गोले वसुले त्ति इत्थिय नेवमालवे ॥१६॥

१—थोव-थोवं तु निद्दिसे (हा) ।

२—श्लोक ८, ९ व १० के स्थान पर चूणिद्वय में निम्न श्लोक हैं —

तहेवुणागत अट्ट ज वुण्ण मणु(ण) व धारियं ।

संकिंत पडुपण्ण वा 'एवमेय' ति णो वदे ॥ ८ ॥

तहेवुणागत अट्ट ज वण्ण मु(म) व धारियं ।

नीसंकिंतं पडुपण्णं थाव थावाए णिद्दिसे ॥ ९ ॥ (अ) ।

त तहेव अइयंमि कालमिणुणवधारियं ।

ज चण्णं सकिय वावि 'एवमेय' ति नो वए ॥ ८ ॥

तहेवाणागय अट्ट ज होइ उवहारियं ।

निस्सकियं पडुप्पन्ने 'एवमेय' ति निद्दिसे ॥ ९ ॥ (ज) ।

३—अट्टे ण (क, ख, ग, घ) ।

४—० दोसेण (अ) ।

५—चा (ह) ।

६—नेय (ख) ।

नामधिज्जेण णं ब्रूया इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।

जहारिहमभिगिज्झ अलवेज्ज लवेज्ज वा ॥१७॥

अज्जाए पज्जाए वा वि बप्पो चुल्लपिड त्ति य ।

माउला भाइणेज्ज त्ति पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥१८॥

हे हो हले-त्ति अन्ने त्ति भट्टा सामिय गोमिए ।

होल गोल वसुले त्ति पुरिसं नेवमालवे ॥१९॥

नामवेज्जेण ण ब्रूया पुरिसगोत्तेण वा पुणो ।

जहारिहमभिगिज्झ अलवेज्ज लवेज्ज वा ॥२०॥

पचिदियाण पाणाण एस इत्थी अय पुमं ।

जाव ण न विजाणेज्जा ताव जाइ त्ति आलवे ॥२१॥

तहेव मणुस्स पसु पक्खि वा विसरीसिवं ।

थूले पमेइले वज्जे पाइमे त्ति य नो वए ॥२२॥

परिवुड्ढे त्ति ण ब्रूया ब्रूया उवचिए त्ति य ।

सजाए पीणिए वा वि महाकाए त्ति आलवे ॥२३॥

तहेव गाओ दुज्झाओ दम्मा गोरहग त्ति य ।

वाहिमा रहजोग त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२४॥

जुव गवे त्ति ण ब्रूया धेणु रसदय त्ति य ।

रहस्से महल्लए वा वि वए संवहणे त्ति य ॥२५॥

तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य ।

त्क्खा महल्ल पेहाए नेव भासेज्ज पन्नव ॥२६॥

अलं पासायखमाण तोरणण गिहाण य ।

फलिहगलनावाण अल उदगदोणिण ॥२७॥

- प्रीढेणु चगबेरे य नगले मडय सिया ।
 १६ ० जतलट्टी व नाभो वा गंडिया^१ व अल सिया ॥२८॥
 धासण सयण जाण होजा वा 'किंचुवस्सए'^२ ।
 १७ ० भूओवघोइणि भास नेव भासेज्ज पन्नव ॥२९॥
 तहेव गंतुमुज्जाण पव्वयाणि वणाणि य ।
 १८ ० रुक्खा महल्ल पेहाए एव भासेज्ज पन्नव ॥३०॥
 जाइमता इमे रुक्खा दीहवट्टा महालया ।
 १९ ० पयायसाला विडिमा^३ वए दरिसणि त्ति य ॥३१॥
 तहा फलाइ पक्काइ पायखज्जाड नो वए ।
 २० ० व्हेलोइयाइ टालाइ वेहिमाइ त्ति नो वए ॥३२॥
 असथंडा इमे अवा बहुनिवट्टिमा फला ।
 २१ ० वएज्ज बहुसभूया भूयरूव त्ति वा पुणो ॥३३॥
 तहेवोसहीओ पक्काओ नीलियाओ छवीइये ।
 २२ ० लाइमा भज्जिमाओ त्ति पिहुखज्ज त्ति नो वए ॥३४॥
 रूढा^४ बहुसभूया थिरा ऊसढा^५ वि य ।
 २३ ० गंभिभयाओ पसूयाओ ससाराओ^६ त्ति आलवे ॥३५॥
 'तहेव सखडिं नच्चा 'किच्चं कज्जं'^७ त्ति नो वए ।
 २४ ० तेणग वा वि वज्जे त्ति सुतित्थ त्ति य आवगा ॥३६॥

१—दंडिया (क, ख, ग) ।

२—किं तुवस्सए (ख) ।

३—पडिपा (ख) ।

४—विरूढा (ज) ।

५—उस्सिडां (अ), उस्सिया (ज) ।

६—ससाराओ (ह) ।

७—करणिजति (घ) ।

सखडिं सखडिं ब्रूया 'पणियट्टं ति'^१ तेणम-।
 बहुसमाणि तित्थाणि आवगाण वियागरे-॥३७॥
 तथा नईओ पुण्णाओ 'कायतिज्जं ति'^२ नो वए ।
 नावाहिं तारिमाओ ति पाणिपेज्जं ति-नो वए ॥३८॥
 बहुवाहडा अगाहा बहुसलिलुप्पिलोदगा ।
 बहुवित्थडोदगा यावि एवं भासेज्जं पन्नव ॥३९॥^३
 तहेव सावज्जं जोग परस्सट्ठाए निट्ठियं ।
 कीरमाणं ति वा नच्चा सावज्जं न लवे मुणी ॥४०॥
 सुकडे ति सुपक्के ति सुच्छिन्ते सुहडे मडे-।
 सुनिट्ठिए सुलट्ठे ति सावज्जं वज्जे मुणी ॥४१॥
 पयत्तपक्के ति व पक्कमालवे ।
 पयत्तच्छिन्नं ति व छिन्नमालवे ।
 पयत्तलट्ठं ति व कम्महेउय,
 'पहारगाढं'^४ ति व गाढमालवे ॥४२॥
 सव्वुकस परग्घ वा अउल नत्थि एरिसं ।
 अवक्कियमवत्तव्वं^५ अचियत्तं चेव नो वए ॥४३॥
 सव्वमेय वडस्सामि सव्वमेयं ति नो वए ।
 अणुवीडं सव्वं सव्वत्थं एव भासेज्जं पन्नव ॥४४॥
 मुक्कीयं वा मुविकीयं अकेज्जं केज्जमेव वा ।
 इमं गेण्हं इमं मुचं पणियं नो वियागरे ॥४५॥

१—पणियट्टं ति (स ग घ) ।

२—काय पेज्जति (अ) काय तेज्जति (आ) काय पेज्जति (जा) ।

३—अगत्यं चूनि मे श्लोक ३६ ३७ के स्थान में ३८ ३९ और ३८, ३९ के स्थान में ३६ ३७ इत प्रकार दो श्लोकों का व्यत्यय है ।

४—गढप्पर (अ ल ह) ।

५—अवक्कियं (स ग) - अवक्कियं (अ) ।

अप्पग्घे वा महग्घे वा कए वा विकए वि वा ।
 पणियट्ठे समुपन्ते अणवज्ज वियागरे ॥४६॥
 तहेवासजय धीरो आस एहि करेहि वा ।
 सय चिट्ठ वयाहि त्ति नेव भासेज्ज पन्नव ॥४७॥
 बहवे इमे असाहू लोए वुच्चति साहुणो ।
 न लवे असाहुं साहु त्ति साहु साहु त्ति आलवे ॥४८॥
 नाणदसणसपन्न सजमे य तवे रयं ।
 एव गुणसमाउत्तं सजय साहुमालवे ॥४९॥
 देवाण मणुयाण च तिरियाण च वुग्गहे^१ ।
 अमुयाण जओ होउ मावा होउ त्ति नो वए ॥५०॥
 वाओ वुट्ठ व सीउण्हं खेमं धायसिव त्ति वा ।
 क्या णु होज्ज एयाणि मावा होउ त्ति नो वए ॥५१॥
 तहेव मेह व नह व माणव

न देव देव त्ति गिर वएज्जा ।

समुच्छिण्ण उन्नए वा पओए

वएज्ज वा वुट्ठ बलाहए त्ति ॥५२॥

अतलक्खे त्ति ण ब्रूया गुज्झाणुचरिय त्ति य ।

रिद्धिमत्त नर दिस्स रिद्धिमत्त त्ति आलवे ॥५३॥

तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा

ओहारिणी जा य परोवघाइणी ।

से कोह लोह भयसा^२ व माणवो^३

न हासमाणो वि गिर वएज्जा ॥५४॥

१—विग्गहे (ह) ।

२—भय-हास (ख, ज, ह) ।

३—माणवा (ख) ।

सवक्कसुद्धिं^१ समुपेहिया मुणी
 गिरं च दुट्ठ परिवज्जए सया ।
 मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासाए
 सयाण मज्जे लहई पसंसण ॥५५॥
 भासाए दोसे य गुणे य जाणिया
 तीसे य दुट्ठे परिवज्जए^२ सया ।
 छसु संजए सामणिए सया जए
 वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ॥५६॥
 परिक्वभासी सुसमाहिइंदिए
 चउक्कसायावगए अणिस्सिए ।
 स निद्धुणे धुत्तमल पुरेकडं
 आराहए लोगमिणं तहा पर ॥५७॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—सुद्धिं^० (र, घ), सुव्वक्क^० (र, ग) ।

२—विज्जणो (र) ।

अट्टमज्जमयण

आथारपणिही

अथारप्पणिहिं लद्धु जहा कायव्व भिक्खुणा ।
 त भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥ १ ॥
 पुढवि दगअगणि मारुय तणरुक्ख सवीयगा ।
 तसा य पाणा जीव त्ति इइ वुत्त महेसिणा ॥ २ ॥
 तेसिं अच्छणजोएण निच्च होयव्वय सिया ।
 मणसा कायवक्केण एव भवइ सजए ॥ ३ ॥
 पुढविं भित्तिं सिल लेलु नेव भिंदे न सलिहे ।
 तिविहेण करणजोएण सजए सुसमाहिए ॥ ४ ॥
 सुद्धपुढवीए^१ न निसिए ससरक्खम्मि य आसणे ।
 पमज्जित्तु निसीएज्जा जाइत्ता जस्स ओग्गह ॥ ५ ॥
 सीओदग न सेवेज्जा सिलावुट्ठ^२ हिमाणि य ।
 उसिणोदग तत्तफासुय पडिगाहेज्ज सजए ॥ ६ ॥
 उदउल्ल अप्पणो काय नेव पुछे न सलिहे ।
 समुप्पेह^३ तहाभूयं नो ण सघट्टए मुणी ॥ ७ ॥
 इगाल अगणिं अच्चि अलाय व सजोइय ।
 न उजेज्जा न घट्टेज्जा नो णं निव्वावए मुणी ॥ ८ ॥
 तालियट्टेण पत्तेण साहाविट्ठयणेण वा ।
 न वीएज्ज अप्पणो काय बाहिर वा विपोग्गल ॥ ९ ॥

१—० पुढवी (ख) ।

२—० वुट्ठि (क, ख) ।

३—समुप्पेहे (अ, ज) ।

तणरुक्ख^१ न छिदेज्जा फल मूलं व कस्सई ।
 आमग विविह बीय मणसा वि न पत्थए ॥१०॥
 गहणेसु^२ न चिद्वेज्जा बीएसु हरिएसु वा ।
 उदगम्मि तहा निच्चं उत्तिगपणगेसु वा ॥११॥
 तसे पाणे न हिंसेज्जा वाया अदुव कम्मणा ।
 उवरओ सव्वभूएसु पासेज्ज विविह जग ॥१२॥
 अट्ट सुहुमाइं 'पेहाए'^३ 'जाइं जाणित्तु संजए'^४ ।
 दयाहिगारी भूएसु आस चिद्व सएहि वा ॥१३॥
 कयराइ अट्ट सुहुमाइ जाइ पुच्छेज्ज संजए ।
 इमाइ ताइ मेहावी आइक्खेज्ज वियक्खणो ॥१४॥
 सिणेह पुप्फसुहुम च पाणुत्तिग तहेव य ।
 पणग बीय हरिय च अंडसुहुमं च अट्टमं ॥१५॥
 एवमेयाणि जाणित्ता सव्वभावेण संजए ।
 अप्पमतो जए निच्च सव्विदियसमाहिए ॥१६॥
 धुव च पडिलेहेज्जा जोगसा पायकंबलं ।
 सेज्जमुच्चारभूमि च सथार अदुवासणं ॥१७॥
 उच्चार पासवण खेलं सिंघाणजल्लियं ।
 फामुय पडिलेहिता परिद्ववेज्ज संजए ॥१८॥
 पविसित्तु परागारं पाणट्टा भोयणस्स वा ।
 जय चिद्वे मियं भासे ण^५ य रूवेसु मण करे ॥१९॥

१-० रूक्खे (अ) ।

२-हानि (अ) ।

३-पेहाए (अ) ।

४-चिद्वेहिंत्तु सजए (अ) ।

५- (अ) ।

वहुं सुणेइ कण्णेहिं वहु अच्छीहिं पेच्छइ^१ ।
 न य दिट्ठ सुय सव्व भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥२०॥
 सुय वा जइ वा दिट्ठं न लवेज्जोवघाइय ।
 न य केणइ^२ उवाएण गिहिजोग समायरे ॥२१॥
 निट्ठाणं रसनिज्जूढ भद्दग पावग ति वा ।
 पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा लाभालाभ न निट्ठिसे ॥२२॥
 न य भोयणम्मि गिट्ठो चरे उछ अयपिरो ।
 अफासुयं न भुजेज्जा कीयमुट्ठेसियाहइ ॥२३॥
 सन्निहिं च न कुव्वेज्जा अणुमाय पि सजए ।
 मुहाजीवी असव्वट्ठे हवेज्ज जगनिस्सिए ॥२४॥
 लूहवित्ती सुसतुट्ठे अप्पिच्छे सुहरे सिया ।
 आसुरत्त न गच्छेज्जा सोच्चाण जिणसासण ॥२५॥
 कण्णसोक्खेहिं सट्ठेहि पेम नाभिनिवेसए ।
 दाहण कक्कस फास काएण अहियासए ॥२६॥
 खुह पिवास दुस्सेज्ज सीउण्ह अरई भय ।
 अहियासे अव्वहिओ देहे^३ दुक्ख महाफल ॥२७॥
 अत्थगयम्मि आइच्चे पुरत्था य अणुग्गए ।
 आहारमइय^४ सव्व मणसा वि न पत्थए ॥२८॥
 अत्तित्तिणे अचवले अप्पभासी^५ मियासणे ।
 हवेज्ज उयरे दते थोवं लद्धु न खिसए ॥२९॥

१—पासति (अ) ।

२—कोइ (ज), केण (ख, घ) ।

३—देह (क, ख, घ) ।

४—^० माइयं (क) ।

५—^० वादी (अ, ज) ।

न वाहिरं परिभवे अत्ताण न समुक्खसे ।
 सुयलाभे न मज्जेज्जा जच्चा तवसिवुद्धिए ॥३०॥
 से जाणमजाण वा कट्टु आहम्मिय पय ।
 संवरे खिप्पमप्पाण वीय तं न समायरे ॥३१॥
 अणायार परक्कम्म नेव गूहे न निण्हवे ।
 सुई सया वियडभावे अससत्ते जिडदिए ॥३२॥
 अमोह वयण कुज्जा आयरियस्स महप्पणो ।
 तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ॥३३॥
 अधुव जीविय नच्चा सिद्धिमग्ग वियाणिया ।
 विणियट्टेज्ज' भोगेमु आउ परिमियमप्पणो ॥३४॥
 [बल थामं च पेहाए सद्धामारोगमप्पणो ।
 खेत्त काल च विन्नाय तहप्पाण निजुजए ॥]
 जरा जाव न पीलेड वाही जाव न वड्डई ।
 जाविंदिया न हायति ताव धम्म समायरे ॥३५॥
 कोह माण च माय च लोभ च पापवड्डण ।
 वमे चत्तारि दोसे उ इच्छतो हियमप्पणो ॥३६॥
 कोहो पीड पणामेड माणो विणयनामणो ।
 भाया मित्ताणि नामेड लोहो सब्बविणानणो ॥३७॥
 उवसमेण हणे कोह माणं मट्टवया जिणे ।
 मायं चज्जवभावेण लोभ नतोसओ' जिणे ॥३८॥

दिद्वं मियं असदिद्वं पडिपुन्न वियजिय ।
 अयपिरमणुव्विग्गं भास निसिर अत्तवं ॥४८॥
 आयारपन्नत्तिधर दिद्विवायमहिज्जग ।
 वडविक्खलियं नच्चा न तं उवहसे मुणी ॥४९॥
 नक्खत्त मुमिण जोग निमित्तं मत भेसजं ।
 गिहिणो त न आडक्खे भूयाहिगरण पय ॥५०॥
 अन्नदृ पगड लयणं भएज्ज सयणासणं ।
 उच्चारभूमिसपन्नं इत्थीपसुविवज्जियं ॥५१॥
 विवित्ता य भवे सेज्जा नारीणं न लवे कह ।
 गिहिसंथव न कुज्जा कुज्जा साहूहि सथव ॥५२॥
 जहा कुक्कुडपोयस्स निच्चं कुललओ भयं ।
 एव खु वभयारिस्स इत्थीविग्गहओ भय ॥५३॥
 चित्तभित्ति न निज्झाए नारि वा सुअलंकियं ।
 भक्खर पिव दद्वृण दिद्वि पडिसमाहरे ॥५४॥
 हत्थपायपडिच्छिन्न कण्णनासविगप्पिय ।
 अवि वाससइं नारि 'वभयारी विवज्जए' ॥५५॥
 विभूसा इत्थिससग्गी पणीयरसभोयणं ।
 नरस्सत्तगवेसिस्स विस तालउड जहा ॥५६॥
 अगपच्चगसठाण चारुल्लवियपेहियं ३ ।
 इत्थीण त न निज्झाए कामरागविवड्ढण ॥५७॥
 विमाग्गु मणुन्नेमु पेम नाभिनिवेसए ।
 अणिच्च तेसि विन्नाय परिणामपोग्गलाणउ ४ ॥५८॥

१—पुञ्जो परिवज्ज (ल) ।

२—उत्तं रत्त (क र, ग) ।

३—उत्तं रत्त (ल ल) ।

४—उ (क र, ग, ङ) ।

नवम अज्भयण

विणयसमाही (पदमो उद्देशो)

थभा व कोहा व मयप्पमाया

गुरुस्सगासे विणय न सिक्ख^१ ।

सो चैव उ तस्स अभूडभावो

फलं व कीयस्स वहाय होड ॥ १ ॥

जे यावि मंदि त्ति गुरुं विडत्ता

डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा ।

हीलति मिच्छ पडिवज्जमाणा

करेति आसायण ते गुरुण ॥ २ ॥

पगईए मदा वि भवति एगे

डहरा वि य जे मुयवुद्धोववेया ।

आयारमता गुण मुट्ठिअप्पा

जे हीलिया मिहिग्वि भास कुजा ॥३॥

जे यावि नाग डहर ति नच्चा

आसायए मे अहियाय होड ।

एवायगिय पि हु हीलयतो

नियच्छई जाडपह न्नु मदे ॥ ४ ॥

आसीविसो यावि^२ पर मुन्दो

किं जीवनासाओ^३ पर नुकुजा ।

आयगियपाया पुण अप्पतन्ना

अवोहिआमायण नन्थि मोक्खो ॥ ५ ॥

१-सिद्धे (ड ल हा) ।

२-पडे (व ल र ल) ।

३-उडि० (घ) लीटि० (ड) ।

पोगलाण परीणाम तेसि नच्चा जहा तथा ।
 विणीयतण्हो विहरे सीईभूएण अप्पणा ॥५९॥
 जाए सट्टाए निक्खतो परियायट्ठाणमुत्तम ।
 तमेव अणुपालेज्जा गुणे आयरियसम्मए ॥६०॥
 तव चिम सजमजोगय^१ च

सज्झायजोगं च सया अहिट्टए ।

सूरे व सेणाए समत्तमाउहे
 अलसप्पणो होड अल परेसि ॥६१॥

सज्झायनज्झाणरयस्स ताडणो
 अपावभावस्स तवे रयस्स ।

विमुज्झई ज सि मल^२ पुरेकड
 समीरिय रूपमलं व जोड्डणा ॥६२॥

ने तारिने दुक्खसहे जिड्डिए
 मुएण जुत्ते अमसे अकिंचणे ।

विगायई^३ कम्मवणम्मि^४ अवगाए
 कसिणवभपुडावगमे व चंढिमा ॥६३॥

—त्ति वेमि ॥

नवम अज्भयणं

विणयसमाही (पढमो उद्देशो)

थंभा व कोहा व मयप्पमाया

गुरुस्सगासे विणय न सिक्ख^१ ।

सो चेव उ तस्स अभूइभावो

फलं व कीयस्स वहाय होइ ॥ १ ॥

जे यावि मदि त्ति गुरुं विइत्ता

इहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा ।

हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा

करेति आसायण ते गुरूणं ॥ २ ॥

पगईए मदा वि भवति एगे

इहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया ।

आयारमंता गुण सुट्ठिअप्पा

जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ॥३॥

जे यावि नाग इहर त्ति नच्चा

आसायए से अहियाय होइ ।

एवायरिय पि हु हीलयतो

नियच्छई जाइपह खु मदे ॥ ४ ॥

आसीविसो यावि^२ पर सुरुद्धो

किं जीवनासाओ^३ परं नुकुज्जा ।

आयरियपाया पुण अप्पसन्ना

अवोहिआसायण नत्थि मोक्खो ॥ ५ ॥

१-विइ (उ उ हा) ।

२-यावि (इ उ न ज) ।

३-साओ (घ) जीवित^० (उ) ।

जो पावग जलियमवक्कमेज्जा
 आसीविस वा वि हु कोवएज्जा ।
 जो वा विसं खायइ जीवियट्टी
 एसोवमासायणया गुरुण ॥ ६ ॥
 मिया हु से पावय नो डहेज्जा
 आसीविसो वा कुविओ न भक्खे ।
 मिया विस हालहल न मारे
 न यावि मोकखो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥
 जो पव्वयं सिरसा भेतुमिच्छे
 मुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा ।
 जो वा दए सत्तिअग्गे पहार
 एसोवमासायणया गुरुणं ॥ ८ ॥
 मिया हु सीमेण गिरिं पि भिंदे
 सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
 मिया न भिदेज्ज व सत्तिअग्ग
 न यावि मोकखो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥
 आयग्गिपाया पुण अप्पसन्ना
 अवोहिआसायण नत्थि मोकखो ।
 तग्गा अणावाह मुहाभिकखी
 गुरुप्पमायाभिमुहो रमेज्जा ॥ १० ॥
 जहात्थियग्गी जळण नमसे
 नाणाहुईमतपयाभिमित्त ।
 एवायग्गियं उवचिट्टएज्जा
 अणंतनाणोवगओ वि संतो ॥ ११ ॥

जस्तंतिए धम्मपयाइ सिक्खे
 तस्सतिए वेणइय पउंजे ।
 सक्कारए सिरसां पंजलीओ
 कायगिरा भो मणसा य^१ निच्चं ॥१२॥

लज्जा दया सजम बभच्चेरं
 कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
 जे मे गुरू सययमणुसासयति
 ते ह गुरू सयय पूययामि ॥१३॥

जहा निसते तवणच्चिमाली
 पभासई केवलभारह तु ।
 एवायरिओ सुयसीलबुद्धिए
 विरायई सुरमज्जे व इंदो ॥१४॥

जहा ससी कोमुडजोगजुत्तो
 नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
 वे सोहई विमले अब्भमुक्के
 एव गणी सोहइ भिक्खुमज्जे ॥१५॥

महागरा आयरिया महेसी
 'समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए'^२ ।
 सपाविउकामे अणुत्तराड
 आराहाए^३ तोसए धम्मकामी ॥१६॥

सोच्चाण मैहावी सुभासियाइ
 सुस्सूसए आयरियप्पमत्तो ।
 आराहट्ताण गुणे अणेगे
 से पावई सिद्धिमणुत्तर ॥१७॥
 —त्ति बेमि ॥

*

नवम अज्मयण

विणयसमाही (वीथो उद्देसो)

मूलाओ खधप्पभवो दुमग्ग
खधाओ पच्छा समुवेति साहा ।
साहप्पसाहा विरुहति पत्ता
तओ से पुप्फ च फल रसो य ॥ १ ॥
एव धम्मस्स विणथो मूल परमो मे मोक्खो ।
जंण कित्ति सुय सिग्घ निस्सेस चाभिगच्छई' ॥ २ ॥
जे य चडे मिग्ग थद्धे दुब्बाई नियडी नटे ।
वुज्झइ मे अविणीयप्पा कट्ट मोयग्ग जहा ॥ ३ ॥
विणय पि जां उवाण्ण चोडओ कुप्पई नरो ।
दिव्व सो सिग्गिमेज्जति दडेण परिग्गहाण ॥ ४ ॥
तद्देव अविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
दीमति दुहमेहता आभिओग्गमुवट्ठिया ॥ ५ ॥
तद्देव सुविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
दीमति सुहमेहता उट्ट पत्ता महायना ॥ ६ ॥
तद्देव अविणीयप्पा लोग्गि नग्गान्निओ ।
दीमति दुहमेहता हाया विग्गद्धिनेद्विया ॥ ७ ॥
दण्णवपरिजुग्गा अमवभ वयण्णि य ।
ज्जुणा विवन्तच्छा सुप्पिवाणाण' परिग्ग ॥ ८ ॥

[आलवन्ते लवते वा न निसेज्जाए पडिस्मुणे ।
 मोत्तूण आसण धीरो मुस्सूसाए पडिस्मुणे ॥]'
 कालं छदोवयार च पडिलेहिताण हेउहिं ।
 तेण तेण उवाएण त त मपडिवायए ॥२०॥
 विवत्ती अविणीयस्म सपत्ती विणियस्म ग ।
 जस्सेयं दुहओ नाय सिक्ख से अभिगच्छडं ॥२१॥
 जे यावि चडे मड्डडिढगारवे
 पिसुणे नरे साहम हीणपेसणे ।
 अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए
 असविभागीनहु तस्स मोक्खो ॥२२॥
 निहेसवत्ती पुण जे गुहण
 मुयत्थधम्मा विणयग्गिमकोत्रिया ।
 तग्गिन्त्ते ते ओहमिण दुरुत्तर
 त्वविन्त्तु कम्म गडमुत्तम गय ॥२३॥
 - न्ति वेमि ॥

संधारसेजासणभत्तपाणे

अप्पिच्छया अडलाभे वि सते ।

जो एवमप्पाणभितोसएज्जा

सतोसपाहन्त्त ए स पुज्जो ॥ ५ ॥

सक्का सहेउ आसाए^१ कटया

अओमया उच्छहया नरेण ।

अणासाए जो उ सहेज्ज कटए

वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥

मुहुत्तदुवखा हु^२ हवति कटया

अओमया ते वि तओ मुउद्धरा^३ ।

वायादुरुत्ताणि

दुरुद्धराणि

वेराणुवधीणि

महत्तभयाणि ॥ ७ ॥

नमावयता

वयणाभिघाया

कण्णगया दृम्मणिय जणति ।

धम्मो त्ति विच्चा परमगगनुरे

जिडडिण जो महत्त न पुज्जो ॥ ८ ॥

अवण्णवाय च परम्मुहम्म

पत्ताइओ पत्तिणीय च भाग ।

ओत्तान्नि अप्पियत्तान्नि च

भाग न भाणेत्त मया न पुज्जो ॥ ९ ॥

नवम अज्भयण

विणयसमाही (तइओ उद्देसो)

आयरिय^१ अग्गिमिवाहियग्गी
 सुस्सूसमाणो पडिजागरेज्जा ।
 आलोइय^२ इगियमेव नच्चा
 जो छन्दमाराहयइ स पुज्जो ॥ १ ॥
 आयारमट्ठा विणय पउजे
 सुस्सूसमाणो परिगिज्भ वक्कं ।
 जहोवड्ढ अभिकखमाणो^३
 'गुरु तु नासाययई'^४ स पुज्जो ॥ २ ॥
 राडणिएसु विणय पउजे
 डहरा वि य जे परियायजेट्ठा ।
 नियत्तणे वट्ठइ सच्चवाई
 ओवायव वक्ककरे स पुज्जो ॥ ३ ॥
 अन्गायउछ चरई विसुद्ध
 जवणट्ठया समुयाण च निच्च ।
 अलद्धुय नो परिदेवएज्जा
 लद्धु न विकत्थयई^५ स पुज्जो ॥ ४ ॥

१—आयरियग्गि (अ, क, ख, ग) ।

२—आलोइय (क, ख) ।

३—अभिकपणागो (अ, ज) ।

४—जो घन्दमाराहयइ (अ, ज) ।

५—विकत्थयई (ग) विकत्थयई (क, ख, घ) ।

सथारसेज्जासणभत्तपाणे

अप्पिच्छया अइलाभे वि सते ।

जो एवमप्पाणभित्तोसएज्जा

सतोसपाहन्न ए स पुज्जो ॥ ५ ॥

सध्म सहेउं आसाए^१ कंटया

अओमया उच्छहया नरेणं ।

अणासए जो उ सहेज्ज कंटए

वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥

मुहुत्तदुक्खा हु^२ हवंति कटया

अओमया ते वि तओ सुउद्धरा^३ ।

वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि

वेराणुवधीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥

तमावयता वयणाभिघाया

कण्णगया दुम्मणिय जणत्ति ।

धम्मो त्ति किच्चा परमग्गमूरे

जिड्ढिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥

अवग्गवाय च परम्मुहस्स

पच्चक्खओ पडिणीय च भासं ।

अंहाग्गिणि अप्पियक्काग्गिणि च

भान न भानेज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥

अलोत्तुए अक्कुहए अमाई
 अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।
 नो भावए नो वि य भावियप्पा
 अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥१०॥

गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू
 गिण्हाहि साहूगुण मुचऽसाहू ।
 वियाणिया अप्पगमप्पएणं
 जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥११॥

तहेव उहर व महल्लग वा
 इत्थीपुम पव्वइयं गिहिं वा ।
 नो हीलए नो वि य खिसएज्जा
 थभ च कोहं च चए स पुज्जो ॥१२॥

जे माणिया सयय माणयति
 जत्तेण कन्न व निवेसयति ।
 ते माणए माणरिहे तवस्सी
 जिडदिए सच्चरए स पुज्जो ॥१३॥

तेमि गुण्ण गुणसागराण
 सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं ।
 जं मुणी पचरए तिगुत्तो
 चउक्सायावगए स पुज्जो ॥१४॥

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी
जिणमयनिउणे^३ अभिगमकुसले ।
धुणिय रयमलं पुरेकडं
भासुरमउल गइ गय^३ ॥१५॥
—त्ति वेमि ॥

*

नवम अज्भयण

विणयसमाही (चउत्थो उद्देसो)

गुय मे आउस । तेण भगवया एवमक्खाय—इह खलु थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ॥ सू० १ ॥

क्यरे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ? ॥ सू० २ ॥

उमे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता, तजहा-- (१) विणयसमाही (२) सुयसमाही (३) तवसमाही (४) आयारसमाही ।

विणयं मुणं अ तवे आयारे निच्च पडिया ।

अभिरामयति अप्पाण जे भवति जिडदिया ॥ १ ॥

॥ सू० ३ ॥

चउद्विहा खलु विणयसमाही भवइ, तजहा—(१) अणु-
नागिज्जतो मुम्मूसड (२) सम्म सपडिवज्जड (३) वेयमाराहयड'
(४) न य भवउ अत्तसपग्गहिण । चउत्थ पय भवइ ।

भवउ य इत्थ सिलोगो—

पेट्ठे हियाणुसासण

मुम्मूसड त च पुणो अहिट्ठए ।

न य माणमाण्ण मज्जड

विणयसमाही आययट्ठिए ॥ २ ॥

॥ सू० ४ ॥

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ, तजहा—(१) गुय मे भविस्सइ त्ति अज्झाडयव्व भवइ (२) एगगचित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाडयव्व भवइ (३) अप्पाण ठावइस्सामि त्ति अज्झाडयव्व भवइ (४) ठिओ पर ठावइस्सामि त्ति अज्झाडयव्व भवइ । चउत्थ पय भवइ ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

नाणमेगगचित्तो य' ठिओ ठावयई पर ।

भुयाणि य अहिज्जित्ता रओ सुयसमाहिए ॥ ३ ॥

॥ सू० ५ ॥

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ, तजहा—(१) नो ऱ्हलोगइयाए तवमहिइेज्जा (२) नो परलोगइयाए तवमहिइेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसइसिलोगइयाए तवमहिइेज्जा (४) नन्नत्थ निज्जरइयाए तवमहिइेज्जा । चउत्थ पय भवइ ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

विविहगुणतवारए य निच्च

भवइ निरासए निज्जरइिए ।

तवसा धुणइ पुराणपावग

जुत्तो सया तवसमाहिए ॥ ४ ॥

॥ सू० ६ ॥

चउव्विहा खलु आयाग्गसमाही भवइ, तजहा—(१) नो आयाग्गइयाए आयाग्गमहिइेज्जा (२) नो परलोगइयाए आयाग्गमहिइेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसइसिलोगइयाए आयाग्गमहिइेज्जा (४) नन्नत्थ आग्गहेहि हेज्जहि आयाग्गमहिइेज्जा । चउत्थ पय भवइ ।

भवऽ य ऽत्य सिल्लोगो --

जिणवयणरा

अतितिणे

पडिपुण्णाययमाययट्टिए ।

आयान्तमाहिसवुडे

भवऽ य दत्ते भावसंधए ॥ ५ ॥

॥ सू० ७ ॥

अभिगम^३ नउरो समाहिओ^३

मुविमुद्धो मुसमाहियप्पओ ।

विउल्लहियगुहावह

पुणो

कुव्वड

सो पयखेममप्पणो ॥ ६ ॥

जाऽमग्णाओ

मुच्चई

ऽत्यथ^४ च चयड^५ सव्वसो ।

गिन्द

वा

भवऽ

सासए

देवे वा अप्परए महिडिडए ॥ ७ ॥

—त्ति वेमि ॥

दममज्जयण
स-भिव्वु

निकखम्ममाणाए' वुद्धवयणे'
 निच्चं चित्तसमाहिओ हवेजा ।
 इत्थीण वस न यावि गच्छे,
 वत नो पडियायई जे स भिव्वु ॥१॥
 पुट्ठवि^३ न खणे न खणावाए,
 सीओदग न पिए' न पियावाए' ।
 अगणिसत्य जहा मुनिमिय
 त न जले न जलावाए जे स भिव्वु ॥२॥
 अनिलेण न 'वीए न वीयावाए'
 हन्धियाणि न 'छिद्रे न छिद्रावाए' ।
 वीयाणि सया विवजयनो
 सजित्त नाहाराए जे स भिव्वु ॥३॥
 वहण तसथावराण होए
 पुट्ठवितणक्कट्टनिम्मियाण ।
 तम्हा उट्टेमिय न भजे
 नो विणा' न पयावाए जे स भिव्वु ॥४॥

गोत्रय नायपुत्तवयणे

अत्तममे मन्नेज्ज छप्पि काए ।

पत्त य फामे महव्वयाड

पचासवसवरे^१ जे स भिक्खू ॥५॥

उत्तारि वसे सया कसाए

धुवजोगी य^२ हवेज्ज बुद्धवयणे ।

अहणे निजायन्वरया^३

गिहिजोग परिवज्जए जे स भिक्खू ॥६॥

नग्गद्विटी सया असूढे

अत्थि हु नाणे तवे सजमे य ।

तवगा बुण्ड पुराणपावग

मणव्वयकायमुसवुडे जे स भिक्खू ॥७॥

तत्तेय उगण पाणग वा

विविह ग्वाडमसाडम लभित्ता ।

तारी अट्टो नुण परे वा

त न निहे न निहावण जे स भिक्खू ॥८॥

तत्तेय उगण पाणग वा

विविह ग्वाडमसाडम लभित्ता ।

उत्तिय गार्हम्मियाण भुजे

भोच्चा मज्झायग य^४ जे स भिक्खू ॥९॥

न य वुग्गहिय^१ कह कहेज्जा
 न य^२ कुप्पे निहुडंदिए पसते ।
 सजमधुवजोगजुत्ते
 उवसते अविहेडए^३ जे स भिक्खू ॥१०॥

जो सहड हु^४ गामकटए
 अक्कोसपहारतज्जणाओ य ।
 भयभेरवसद्दसंपहासे^५
 सममुहदुक्खसहे य जे स भिक्खू ॥११॥

पडिमं पडिवज्जिया मसाणे
 नो भायए भयभेरवाइ दिस्स^६ ।
 विविहगुणतवोरए य निच्च
 न सरीरं चाभिकंखई जे स भिक्खू ॥१२॥

असड वोसद्वत्तदेहे
 अक्कुट्टे व हए व लूसिए वा ।
 पृडवि समे मुणी हवेज्जा
 अनियाणे अकोउहल्ले^७ य जे स भिक्खू ॥१३॥

^१—वुग्गहिय (उ ह) ।

^२—कुप्पे (क ल, ग) ।

^३—अविहेडए (उ ग) ।

^४—सहड (उ) ।

^५—सममुहदुक्खे (क ल, ग घ उ ह) ।

^६—दिस्स (उ) ।

^७—अकोउहल्ले (उ) ।

अभिभूय काण्ण परीसहाड

समुद्धरे जाइपहाओ' अप्पय ।

विन्तु जाईमरण महवभय

तवे' रए सामणिए जे स भिक्खू ॥१४॥

तव्वगज्जाए

पायसजए

वायसजए

सजइदिए ।

अज्झण्णरा

मुसमाहियप्पा

मुत्तत्थ च वियाणई जे स भिक्खू ॥१५॥

उवटिग्गिअमुच्छिण्ण अगिद्धे^३

अन्नायउछ

पुलनिप्पुलाए ।

तपविण्णयसन्निहिओ' विरए

सव्वसंगावगएय जे स भिक्खू ॥१६॥

अल्लोल भिक्खू न रसेमु गिद्धे

उछ चरे जीविएनाभिकखे" ।

उट्टि च सकारण पूयण च

चाण' ठियप्पा अणिहे' जे स भिक्खू ॥१७॥

न एए वाण्णजानि अय कुसीले

जेणऽन्तो कुप्पेज्ज न त वाण्णा ।

उत्तम

पन्नेय पुण्णपाव

अन्नाण न समुक्खे जे स भिक्खू ॥१८॥

न जाडमत्ते न य ख्वमत्ते
 न लाभमत्ते न सुएणमत्ते ।
 मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता^१
 धम्मज्झाणरणे जे^२ स भिक्खू ॥१९॥
 पवेयए अज्जपय^३ महामुणी
 धम्मे ठिओ ठावयई परं पि ।
 निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिङ्ग
 न यावि हस्सकुहए^४ जे स भिक्खू ॥२०॥
 त देहवास असुड असासयं
 सया चए^५ तिच्च हियट्ठियप्पा ।
 छिदित्तु जाईमरणस्स वधण
 उवेड भिक्खू अपुणागम गइं ॥२१॥
 —त्ति वेमि ॥

*

भुजित्तु भोगाड पसज्भ चयसा
 तथाविहं कट्टु असजम बह ।
 गड च गच्छे अणभिज्भय^१ दुह
 वोही य से तो मुलभा पुणो पुणो ॥१॥ ॥

इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो
 दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो ।
 पल्लिओवम भिज्जड सागरोवम
 किमग पुण मज्भ इम मणोदुह ? ॥१॥ ॥

न मे चिरं दुक्खमिण भविस्सई
 असासया भोगपिवास जतुणो ।
 न चे^२ सरीरेण इमेणवेस्सई
 अविस्सई^३ जीवियपज्जवेण मे ॥१॥ ॥

जन्नेवमप्पा उ ह्वेज निच्छिओ^४
 चाणज^५ देह न उ^६ धम्मनानग ।
 न ताग्नि नो पयत्तेनि इदिया
 उवेनवाया^७ व मुदंसन गिणि ॥१॥ ॥

पुत्तदारपरिकिण्णो मोहसंताणसंतओ ।
 पकोसन्नो जहा नागो स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥
 'अज्ज आह'^१ गणी हुंतो भावियप्पा बहुस्सुओ ।
 जइ ह रमतो परियाए सामण्णे जिणदेसिए ॥ ९ ॥
 देवलोगसमाणो उ^२ परियाओ महेसिण ।
 रयाण अरयाणं तु^३ महानिरयसारिसो ॥१०॥
 अमरोवम जाणिय सोक्खमुत्तम
 रयाण परिघाए तहारयाण ।
 निरओवम जाणिय दुक्खमुत्तम
 रमेज्ज तम्हा परियाय पडिए ॥११॥
 धम्माउ भट्ट सिरिओ ववेय^४
 जन्नग्गि विज्झायमिव प्पतेय ।
 हीलंति ण दुव्विहिय कुसीला^५
 दाढुद्धिय^६ घोरविस व नाग ॥१२॥
 इहेवधम्मो अयसो अकित्ती
 दुन्नामधेज्ज^७ च पिहुज्जणम्मि ।
 चुयस्स धम्माउ अहम्मसेविणो
 सभिन्नवित्तस्स य^८ हेट्ठओ गई ॥१३॥

१—अज्जत्तेह (जा) ।

२—य (ख) ।

३—च (क, ख, ग, घ, ह) ।

४—अवेय (क, ग, घ, ह) ।

५—कुसील (अ, ज,) ।

६—दाढुद्धिय (क, ज, ह) ।

७—^० गोत्त (अ, ज) ।

८—उ (क, घ) ।

भृजित्तु भोगाड पसज्भ चयसा
 तहाविह कट्टु असंजम बहुं ।
 गड च गच्छे अणभिज्भय^१ दुह
 वोही य से नो सुलभा पुणो पुणो ॥१४॥

उमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो
 दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो ।
 पल्लिओवम भिज्जड सागरोवम
 किमंग पुण मज्भ इम मणोदुह ? ॥१५॥

न से चिर दुक्खमिणं भविस्सई
 असासया भोगपिवास जतुणो ।
 न चे^२ सगीरेण इमेणवेस्सई
 अविस्सई^३ जीवियपज्जवेण मे ॥१६॥

जन्नेवमप्पा उ ह्वेज्ज निच्छिओ'
 चाण्ज^४ देहं न उ^५ धम्मसासण ।
 न नाग्नि नो पयलेति इदिया
 उवेतवाया^६ व मुदसण गिरिं ॥१७॥

इच्चेव सपस्सिय बुद्धिम नरो

आय उवाय विविहं वियाणिया ।

काएण वाया अट्टु माणसेण

तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिद्विज्जासि^१ ॥१८॥

—त्ति वेमि ॥

*

विविक्तचरिया (विड्या चूलिया)

चूलियं तु पवक्खामि मुय केवलिभासिय ।
ज सुणित्तु सपुत्ताणं^१ धम्मो उप्पज्जाए मई ॥ १ ॥
अणुसोयपट्टिएवहुजणम्मि पडिसोयलद्धलक्खेण ।
पडिसोयमेव अप्पा दायव्वो होउकामेण ॥ २ ॥
अणुसोयसुहोलोगो

पडिसोओ आसवो^२ मुविहियाण ।

अणुसोओ ससारो

पडिसोओ तस्स उत्तारो^३ ॥ ३ ॥

तम्हा^४ आयारपरक्कमेण सवरसमाहिबहुलेण ।

चरिया गुणा य नियमा य होति साहूण दट्टव्वा ॥ ४ ॥

अणिएयवासो समुयाणचरिया

अन्नायउछ पइरिक्कया य ।

अप्पोवही कलहविवज्जणा य^५

विहारचरिया इसिण पसत्था ॥ ५ ॥

आण्णओमाणविवज्जणा य

ओसन्नद्विद्वाहडभत्तपाणे^६ ।

समट्ठात्थेण चरेज भिकवू

तत्तायममट्ट जई जग्जा ॥ ६ ॥

अमज्जमसासि अमच्छरीया
 'अभिकखण निव्विगइ^१ गया य'^२ ।
 अभिकखण काउस्सगकारी
 सज्झायजोगे पयओ ह्वेज्जा ॥ ७ ॥
 न पडिन्नवेज्जा सयणासणाइ
 सेज्ज निसेज्ज तह भत्तपाण ।
 गामे कुले वा नगरे व देसे
 ममत्तभाव^३ न 'कहिं चि'^४ कुज्जा ॥ ८ ॥
 गिहिणो वेयावडिय न कुज्जा
 अभिवायण वदण पूयणं च^५ ।
 असकिलिट्ठेहिं सम वसेज्जा
 मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥
 न या लभेज्जा निउण सहाय
 गुणाहिय वा गुणओ समं वा ।
 एक्को वि पावाइ विवज्जयतो
 विहरेज्ज^६ कामेसु असज्जमाणो ॥१०॥
 सवच्छर चावि परं पमाण
 बीय च वास न तहिं वसेज्जा ।
 सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू
 सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥११॥

१—निव्विगइ (अ, घ) ।

२—अभिकखणि व्वितियजोगया य (आ, जा) ।

३—ममत्ति^० (अ) ।

४—कहिं पि (ख) ।

५—वा (क, ख, ग, घ, ह) ।

६—चरेज्ज (अ) ।

जो पुञ्चरत्तावररत्तकाले
 सपिक्वर्ड^१ अप्पगमप्पएणं ।
 किं मे कड ? किं च मे किच्चसेस ?
 किं सक्कणिज्ज न समायरामि ? ॥१२॥

किं मे पगे पासड ? किं व^२ अप्पा ?
 किं वाह^३ 'खलिय न विवज्जयामि'^४ ?
 उच्चैव सम्म अणुपासमाणो
 अणागय नो पडिवंध कुज्जा ॥१३॥

जत्थेव पामे कड दुप्पउत्त'
 काएण वाया अट्टु माणसेण ।
 तत्थेव धीगे पडिसाहरेज्जा
 आइन्नओ^५ खिप्पमिव^६ क्खलीण ॥१४॥

जग्गेरिन्ना जोग जिड्दियम्स
 धिड्मओ सप्पुरिसस्स निच्च ।
 तमाह^७ गोग पडिवुट्टजीवी
 नो जीवड सजमजीविण ॥१५॥

अप्पा^१ खलु सययं रक्खियव्वो
 सव्विदिएहि सुसमाहिएहि ।
 अरक्खओ जाइपह^२ उवेइ
 सुरक्खओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥१६॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—अप्पा ह (क, ख, ग, घ) ।

२—^० वह (जा, आ) ।

पद्म अञ्जयण

विणयसुर्य

- १-नेजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणय पाउकरिस्सामि आणुपुब्बि सुणेह मे ॥
 - २-आणानिहेसकरे गुरुणमुववायकारए ।
उंगियागारसपन्ने से विणीए त्ति वुच्चई ॥
 - ३-आणाऽनिहेसकरे' गुरुणमणुववायकारए ।
पट्ठिणीअ असवुद्धे अविणीए त्ति वुच्चई ॥
 - ४-जहा गुणी पूडकणी निक्कसिज्जइ सव्वसो ।
अअ दुस्सीलपट्ठिणीए मुहरी निक्कसिज्जई ॥
 - ५-अणगुग्ग चउत्ताण' विट्ठं भुज्जइ मूयरे ।
अअ मीळ चउत्ताण दुस्सीले रमई मिए^३ ॥
 - ६-गुणिणउभाअ नाणम्म मूयरस्स नरस्स य ।
निक्कसिज्जइ अण्णाण इच्छन्तो हियमप्पणो ॥
 - ७-अण विणयसेसज्जा मीळ 'पडिलभे जओ'^४ ।
पुण्णुअ^५ निवागट्ठी न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥
-

- ८—निसन्ते सियाऽमुहरी^१ बुद्धाण अन्तिए सया ।
अट्टजुत्ताणि सिक्खेज्जा निरट्टाणि उ वज्जए ॥
- ९—अणुसासिओ न कुप्पेज्जा खतिं सेविज्ज पण्डिए ।
खुड्ढेहि सह ससग्गि हास कीड च वज्जए ॥
- १०—माय चण्डालिय कासी^२ बहुय मा य आलवे ।
कालेण य अहिज्जिता तओ भाएज्ज एगगो^३ ॥
- ११—आहच्च चण्डालिय कट्टु न निण्हविज्ज कयाइ वि ।
कड कडे त्ति भासेज्जा अकड नो कडे त्ति य ॥
- १२—मा 'गलियस्सेव'^४ कस वयणमिच्छे पुणो पुणो ।
कस व दट्ठुमाइण्णे पावग परिवज्जए^५ ॥
- १३—अणासवा^६ थूलवया कुसीला
मिउ पि चण्ड पकरेति सीसा ।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया
पसायए ते हु दुरासय पि ॥
- १४—नापुट्ठो वागरे किञ्चि पुट्ठो वा नालिय वए ।
कोह असच्च कुव्वेज्जा धारेज्जा पियमप्पियं ॥
- १५—'अप्पा चेव दमेयव्वो^७ अप्पा हु खलु दुद्दमो ।
अप्पा दन्तो सुही होइ अस्सि लोए परत्थ य ॥

१—सियाअमुहरी (अ) ।

२—कुज्जा (उ) ।

३—एक्कओ (अ) ।

४—गलियस्सुव्व (उ, ऋ), गलियस्सेव्व (अ) ।

५—पडिवज्जए (अ, वृ० पा०) ।

६—अणासुणा (वृ० पा०) ।

७—अप्पाणमेव दमए (वृ०, चू०) ।

- १६—वर^१ मे अप्पादन्तो सजमेण तवेण य ।
 माह परेहि दम्मन्तो बन्धणेहि वहेहि य ॥
- १७—पडिणीय च बुद्धाण वाया अदुव कम्मणा ।
 आवी वा जइ वारहस्से नेव कुज्जा कयाइ वि ॥
- १८—न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
 न जुजे ऊरुणा ऊरु सयणे नो पडिस्सुणे ॥
- १९—नेव पल्हत्थियं कुज्जा पक्खपिण्ड व सजए ।
 पाए पसारिए^२ वावि न चिट्ठे गुरुणन्तिए ॥
- २०—आयरिएहिं वाहित्तो^३ तुसिणीओ न कयाइ वि ।
 पसायपेही^४ नियागट्ठी उवचिट्ठे गुरुं सया ॥
- २१—आलवन्ते लवन्ते वा न निसीएज्ज कयाइ वि ।
 चइऊणमासणं धीरो जओ जत्त^५ पडिस्सुणे ॥
- २२—आसणगओ न पुच्छेज्जा नेव 'सेज्जागओ कया'^६ ।
 आगम्मुककुट्टुओ सन्तो पुच्छेज्जा पंजलीउडो^७ ॥
- २३—एव विणयजुत्तस्स सुत्त अत्थ च तद्भय ।
 पुच्छमाणस्स सीसस्स वागरेज्ज जहासुय ॥
- २४—मुसं परिहरे भिक्खू न य ओहारिणि वए ।
 भासादोसं परिहरे मायं च वज्जए सया ॥
- २५—न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं न निरट्ठं न मम्मय ।
 अप्पणट्ठा परट्ठा वा उभयस्सन्तरेण वा ॥

१—वर (अ, उ, म) ।

२—पसारे नो (वृ०), पसारिए (वृ० पा०) ।

३—वाहित्तो (अ, आ, इ, उ) ।

४—पसायट्ठी (वृ० पा०) ।

५—जुत्त (अ, उ) ।

६—णिसिज्जागओ कयाइ (चू०) ।

७—पंजलीगडे (वृ०), पजलीउडो (वृ० पा०) ।

- २६—समरेसु अगारेसु 'सन्धीसु य महापहे'^१ ।
 एगो एगित्थिए सद्धि नेव चिट्ठे न सलवे ॥
- २७—जं मे बुद्धाणुसासन्ति सीएण^२ फरुसेण वा ।
 मम लाभो त्ति पेहाए पयओ तं पडिस्सुणे ॥
- २८—अणुसासणमोवायं दुक्कडस्स य चोयणं^३ ।
 हियं तं मन्नए पण्णो वेसं होइ असाहुणो ॥
- २९—हियं विगयभया बुद्धा फरुसं पि अणुसासणं ।
 वेसं तं होइ मूढाण खन्तिसोहिकर^४ पयं ॥
- ३०—आसणे उवचिट्ठेज्जा 'अणुच्चे अकुए'^५ थिरे ।
 अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥
- ३१—कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे ।
 अकालं च विवज्जित्ता काले कालं समायरे ॥
- ३२—परिवाडीए न चिट्ठेज्जा भिक्खू दत्तेसण चरे ।
 पडिरुवेण एसित्ता मिय कालेण भक्खए ॥
- ३३—नाइदूरमणासन्ने^६ नन्नेसिं चक्खुफासओ ।
 एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा लघिया त नइक्कमे^७ ॥
- ३४—नाइउच्चे व नीए वा नासन्ने नाइदूरओ ।
 फासुय परकडं पिण्ड पडिगाहेज्ज संजए ॥

१—गिहसन्धीसु महापहे (सु), गिहसधिसु अ महापहेसु (वृ०) ।

२—सीतेण (अ), सीलेण (वृ० पा०, चू० पा०) ।

३—पेरण (वृ०), चोयणा (चू०) ।

४—^० सुद्धिकर (वृ०) ।

५—अणुच्चे)कुक्कुए (वृ०) ।

६—णाइ दूरे अणासण्णे (चू०) ।

७—न अइक्कमे (अ) ।

- ३५—अप्पपाणेऽप्पवीयंमि^१ पडिच्छन्तंमि संवुडे ।
 समय सजए भुजे जयं अपरिसाडिय^२ ॥
- ३६—सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुच्छिने सुहडे मडे ।
 सुणिट्टिए सुलट्टे त्ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥
- ३७—रमए पण्डिए सासं हयं भद्द व वाहए ।
 बाल सम्मइ सासन्तो गलियस्सं व वाहए ॥
- ३८—‘खड्डुया मे चवेडा मे अक्कोसा यवहाय मे’^३ ।
 कल्लाणमणुसासन्तो^४ पावदिट्ठि त्ति मन्नेइ ॥
- ३९—पुत्तो मे भाय नाइ त्ति साहू कल्लाण मन्नेइ ।
 पावदिट्ठी उ अप्पाणं सासं ‘दासं व’^५ मन्नेइ ॥
- ४०—न कोवए आयरियं अप्पाणं पि न कोवए ।
 बुद्धोवघाई न सिया न सिया तोत्तगवेसए ॥
- ४१—आयरिय कुविय नच्चा पत्तिएण पसायए ।
 विज्झवेज्ज पंजलिउडो वएज्ज न पुणो त्ति य ॥
- ४२—धम्मज्जियं च ववहारं बुद्धेहायरियं सया ।
 तमायरन्तो ववहारं^६ गरहं नाभिगच्छई ॥
- ४३—‘मणोगय वक्कगयं’^७ जाणित्तायरियस्स उ ।
 तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ॥

१—अप्पपाणुप्पमं (अ, उ, ऋ) ।

२—अप्परि^० (उ, ऋ, वृ०) ।

३—खड्डुयाहिं चवेडाहिं, अक्कोसेहि वहेहि य (वृ०, चू०) । खड्डुया मे चवेडा मे अक्कोसा य वहा य मे (चू० पा०, वृ० पा०) ।

४—^० सासन्त (वृ०, चू०) ।

५—दासे त्ति (अ, आ, इ, उ, सु) ।

६—मेहावी (वृ० पा०) ।

७—मणोरुइ वक्करुइ (वृ० पा०, चू० पा०) ।

४४—वित्ते अचोइए^१ निच्चं^२ 'खिप्प हवइ सुचोइए'^३ ।

जहोवइइह सुकय किच्चाइं कुव्वई सया ॥

४५—नच्चा नमइ मेहावी लोए 'कित्ती से'^३ जायए ।

हवई किच्चाण सरण भूयाण जगई जहा ॥

४६—पुज्जा जस्स पसीयन्ति संबुद्धा पुव्वसंथुया ।

पसन्ना^४ लाभइस्सन्ति विउल अट्टिय सुयं ॥

४७—स पुज्जसत्थे सुविणीयससए

'मणोरुई'^५ चिद्धइ कम्मसपया ।'^६

तवोसमायारिसमाहिसवुडे

महज्जुई पच्चवयाइ पालिया ॥

४८—स देवगन्धव्वमणुस्सपूइए

चइत्तु देह मलपकपुव्वय ।

सिद्धे वा हवइ सासए

देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—खिप्प (वृ० पा०, चू० पा०) ।

२—पसन्ने थाप्प करे (वृ० पा०, चू० पा०) ।

३—कित्तीय (अ, उ, ऋ), कित्ती सि (ऋ) ।

४—सपन्ना (वृ० पा०) ।

५—मणोरुई (वृ० पा०) ।

६—मणोरुई चिद्धइ कम्मसपय (वृ० पा०), मणिच्छिय संपयमुत्तमं गया (नागार्जुनीया) ।

वीर्यं अज्भयण
परीसहपविभत्ती

सू० १—सुय मे, आउस ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु बावीस परीसहा समणेणं भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए^१ परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा^२ ।

सू० २—क्यरे ते खलु बावीसं परीसहा समणेण भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ?

सू० ३—इमे ते खलु बावीसं परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा, त जहा—

१. दिगिच्छापरीसहे, २. पिवासापरीसहे, ३. सीयपरीसहे, ४. उसिणपरीसहे, ५. दसमसयपरीसहे, ६. अचेलपरीसहे, ७. अरइ-परीसहे, ८. इत्थीपरीसहे, ९. चरियापरीसहे, १०. निसीहिया-परीसहे, ११. सेज्जापरीसहे, १२. अक्कोसपरीसहे,^३ १३. वहपरीसहे, १४. जायणापरीसहे, १५. अलाभपरीसहे, १६. रोगपरीसहे, १७. तणफासपरीसहे, १८. जल्लपरीसहे, १९. सक्कारपुरक्कारपरीसहे, २०. पन्नापरीसहे, २१. अन्नाणपरीसहे, २२. दंसणपरीसहे ।

१—परीसहाण पविभत्ती कासवेण पवेइया ।

तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुर्व्वि सुणेह मे ॥

१—भिक्खुचरियाए (वृ०), भिक्खायरियाए (वृ० पा०) ।

२—विनिहन्नेज्जा (वृ०) ।

३—उक्कोस ° (अ, ऋ) ।

(१) दिगिच्छापरीसहे

२—दिगिच्छापारिण^१ देहे तवस्सी भिक्खु थामव ।

न छिन्दे न छिन्दावए न पए न पयावए ॥

३—कालीपव्वगसकासे किसे धमणिसतए ।

मायन्ने असणपाणस्स अदीणमणसो चरे ॥

(२) पिवासापरीसहे

४—तओ पुट्ठो पिवासाए दोगुच्छी लज्जसंजए^२ ।

सीओदग न सेविज्जा वियडस्सेसणं चरे ॥

५—छिन्नावाएसु पन्थेसु आउरे सुपिवासिए^३ ।

परिसुक्कमुहेऽदीणे^४ 'तं तित्तिक्खे परीसह'^५ ॥

(३) सीयपरीसहे

६—चरन्त विरय लूह सीय फुसइ एगया ।

'नाइवेलं मुणी गच्छे सोच्चाण जिणसासण'^६ ॥

७—न मे निवारण अत्थि छवित्ताण न विज्जई ।

अह तु अग्गि सेवामि इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

(४) उसिणपरीसहे

८—उसिणपरियावेण परिदाहेण तज्जिए ।

घिसु वा परियावेण साय नो परिदेवए ॥

१—^०परियावेण (वृ०) ; ^०परितापेण (चू०) , ^०परिगते (वृ० पा०) ।

२—लद्धसजमे (वृ० चू०) , लज्जासंजए, लज्जसंजमे (वृ० पा०) , लज्जसजते (चू० पा०) ।

३—सुप्पिवासिए (अ) , सुपिवासए (ऋ) ।

४—^०मुहदीणे (अ, सु) , ^०मुहोदीणे (ऋ) ।

५—सच्चतो य परिव्वए (वृ० पा०) ।

६—नाइवेल विहन्निज्जा पावदिट्ठी विहन्नइ (चू०, वृ०) , नाइवेल मुणी गच्छे सोच्चाण जिणसासण (चू० पा०, वृ० पा०) ।

९—उण्हाहितत्ते मेहावी सिणाण 'नो वि पत्थए'^१ ।
गायं नो परिसिचेज्जा^२ न वीएज्जा य अप्पयं ॥

(५) दसमसयपरीमहे

१०—पुट्ठो य दंसमसएहि समरेव^३ महामुणी ।
नागो सगामसीसे वा मूरो अभिहणे पर ॥

११—न सत्तसे न वारेज्जा मण पि न पओसाए ।
उवेहे^४ न हणे पाणे भुंजन्ते मससोणिय ॥

(६) अचेलपणीमहे

१२—परिजुण्णेहि वत्थेहि होक्खामि त्ति अचेल्लए ।
अदुवा सचेलए होक्ख इड भिक्खू न चिन्ताए ॥

१३—'एगयाऽचेलए होइ'^५ सचेल्ले यावि णगवा ।
एय धम्महिय नच्चा नाणी नो पग्गिदेवाए ॥

(७) अण्डपणीमहे

१४—गामाणुगाम रीयन्त अणगार अकिंचय ।
अरई अणुप्पविसे तं तिनिक्खे पणीसह ॥

१५—अरइ पिट्ठओ किच्चा विराए आयग्गिणाए ।
धम्मारासे निरारम्भे उवमन्ते मुग्गा चरे ॥

(८) इन्धोपणीमहे

१६—संगो एस मणुस्साणं जाओ लोणमि इन्धोओ ।
जस्स एया परिन्नाया सुकडं^६ तस्स सामाणं ॥

१—नामिपत्थए (चू०, वृ०), णोऽवि पत्थए (वृ० पा०) ।

२—परिसिचेज्जा (उ, ऋ) ।

३—सम एव (अ) ।

४—उवेहे (उ, चू०, ऋ) ।

५—एगता अचेल्लो मवत्ति (चू०), अचेल्लए सयं होइ (वृ० पा०, चू० पा०) ।

६—सुकर (वृ० पा०) ।

१७—एवमादाय^१ मेहावी 'पकभूया उ इत्थिओ'^२ ।
नो ताहि विणिहन्नेज्जा^३ चरेज्जत्तगवेसए ॥

(६) चरियापरीसहे

१८—एग एव^४ चरे लाढे अभिभूय परीसहे ।
गामे वा नगरे वावि निगमे वा रायहाणिए ॥

१९—असमाणो चरे भिक्खू नेव^५ कुज्जा परिग्गह ।
अससत्तो गिहत्येहिं अणिएओ परिव्वए ॥

(१०) निसीहियापरीसहे

२०—सुसाणे सुन्नगारे वा ख्खमूले व एगओ ।
अकुक्कुओ निसीएज्जा न य वित्तासए पर ॥

२१—तत्थ से चिट्ठमाणस्स^६ 'उवसग्गाभिधारए'^७ ।
सकाभीओ न गच्छेज्जा उट्ठित्ता^८ अन्नमासणं ॥

(११) सेज्जापरीसहे

२२—उच्चावयाहिं सेज्जाहि तवस्सी भिक्खु थामव ।
नाइवेल विहन्नेज्जा पावदिट्ठी विहन्नेई ॥

२३—पइरिक्कुवस्सय लद्धु कल्लाण अदु पावगं ।
'किमेगरायं करिस्सइ'^९ एव तत्थऽहियासए ॥

१—एवमाणाय (चू०, वृ०), एवमादाय (चू० पा०, वृ० पा०) ।

२—जहा एया लहस्सगा (चू० पा०, वृ० पा०) ।

३—विहन्नेज्जा (अ, सु) ।

४—एगो (चू० पा०), एगे (वृ० पा०) ।

५—नेय (अ) ।

६—अच्छमाणस्स (वृ० पा०, चू०) ।

७—उवसग्गभय भवे (वृ० पा०, चू० पा०) ।

८—उवट्ठित्ता (उ) ।

९—किं मज्झ एग रायाए (चू०) ।

(१२) अक्कोसपरीसहे

- २४—अक्कोसेज्ज परो भिक्खु न तेसि पडिसजले ।
सरिसो होइ बालाण तम्हा भिक्खू न सजले ॥
२५—सोच्चाणं फरुसा भासा दारुणा गामकण्टगा ।
तुसिणीओ उवेहेज्जा न ताओ मणसीकरे ॥

(१३) वहपरीसहे

- २६—हओ न सजले भिक्खू मण पि न पओसए ।
तितिक्खं परम नच्चा 'भिक्खुधम्म विचित्तए'^१ ॥
२७—समण सजय दन्त हणेज्जा कोइ कत्थई ।
नत्थि जीवस्स नासु त्ति 'एव पेहेज्ज सजए'^२ ॥

(१४) जायणापरीसहे

- २८—डुक्कर खलु भो निच्चं अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वं से जाइय होइ नत्थि किंचि अजाइय ॥
२९—नोयरग्गपविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए ।
सेओ अगारवासु त्ति इइ भिक्खू न चित्तए ॥

(१५) अलाभपरीसहे

- ३०—परेसु घासमेसेज्जा भोयणे परिणिट्ठिए ।
लद्धे पिण्डे अलद्धे वा नाणुत्तप्पेज्ज सजए^३ ॥
३१—अज्जेवाह न लब्भामि अवि लाभो सुए सिया ।
जो एव पडिसविक्खे^४ अलाभो तं न तज्जए ॥

१—^० धम्ममि चित्तए (वृ०), ^० धम्म व चित्तए (वृ० पा०) ।

२—ग तं पेहे असाध्व (वृ०), न ता पेहे असाध्व (चू०), एव पीहेज्ज सजए (चू० पा०); न य पेहे असाध्व, पठन्ति च—एवं पेहिज्ज सजतो (वृ० पा०) ।

३—पडिए (अ) ।

४—पडिसंचिक्खे (सु) ।

(१६) रोगपरीसहे

- ३२—नच्चा उप्पइय दुक्ख वेयणाए दुहट्टिए ।
 अदीणो थावए पन्न पुट्ठो तत्थहियासए ॥
- ३३—तेगिच्छ नाभिनन्देज्जा सच्चिक्खत्तगवेसए ।
 एव^१ खु तस्स सामण्ण ज न कुज्जा न कारवे ॥

(१७) तण्णफासपरीसहे

- ३४—अचेलगस्स लूहस्स संजयस्स तवस्सिणो ।
 तण्णेषु सयमाणस्स हुज्जा गायविराहणा ॥
- ३५—आयवस्स निवाएण अउला^२ हवइ वेयणा ।
 एव^३ नच्चा न सेवन्ति तन्तुज^४ तण्णतज्जिया ॥

(१८) जल्लपरीसहे

- ३६—किलिन्तगाए^५ मेहावी पंकेण व रएण वा ।
 धिसु वा परितावेण साय नो परिदेवए ॥
- ३७—वेएज्ज^६ निज्जरापेही 'आरिय धम्मणुत्तर'^७ ।
 जाव सरीरभेउ त्ति जल्ल काएण धारए^८ ।

(१९) सक्कारपुरक्कारपरीसहे

- ३८—अभिवायणमव्भुट्ठाण सामी कुज्जा निमन्तणं ।
 जे ताइ पडिसेवन्ति न तेसि पीहए मुणी ॥

१—एय (अ, उ, ऋ, वृ०) ; एव (वृ० पा०) ।

२—तिउला (चू०, वृ०) ; अतुला, विपुला वा (वृ० पा०) ।

३—एय (अ, उ, ऋ, वृ०) ; एव (वृ० पा०) ।

४—तन्तय (चू० पा०, वृ० पा०) ।

५—किलिद्धगाए (चू० पा०, वृ०, पा०) ।

६—वेयज्ज (अ) वेइत्तो, वेइज्ज, वेयत्तो (वृ० पा०) ।

७—आरिय धम्मणुत्तर (स०), आरिय धम्मणुत्तर (अ) ।

८—उज्जटे (चू० वृ० पा०) धारए (चू० पा०) ।

३९—अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए ।
 'रसेसु' नाणुगिज्जेज्जा' 'नाणुतप्पेज्ज पन्नव' ॥

(२०) पन्नापरीसहे

४०—से नूण मए पुव्व कम्माणणफला कडा ।
 जेणाह नाभिजाणामि पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥

४१—अह पच्छा उइज्जन्ति कम्माणणफला कडा ।
 एवमस्सासि अप्पाण नच्चा कम्मविवागय ॥

(२१) अन्नाणपरीसहे

४२—निरट्ठगम्मि विरओ मेहुणाओ सुसवुडो ।
 जोसक्ख' नाभिजाणामि धम्म कल्लाण पावग ॥

४३—तवोवहाणमादाय पडिम पडिवज्जओ' ।
 एव पि विहरओ मे छउम न नियट्ठई ॥

(२२) दसणपरीसहे

४४—नत्थि नूण परे लोए इड्ढी वावितवस्सिणो ।
 अदुवा वच्चिओ मि त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

४५—अभू जिणा अत्थि जिणा अदुवावि भविस्सई ।
 भुंस ते एवमाहसु इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

४६—एए परीसहा सव्वे कासवेण पवेइया ।
 जे भिक्खू न विहन्नेज्जा पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥

—त्ति वेमि ॥

*

१—सरसेसु० (वृ०) ।

२—रसिणसु णालिगिज्जेज्जा (चू०), रसेसु नाणु० (वृ० पा०, चू० पा०) ।

३—न तेसि पीहए मु णी (चू०, वृ०), नाणुतप्पेज्ज पण्णव (वृ० पा०, चू० पा०) ।

४—सपक्खं (चू०) ।

५—पडिवज्जिअ (वृ०), पडिवज्जओ (वृ० पा०) ।

तइय अज्भयणं

चाउरंगिज्जं

- १-चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो^१ ।
माणुसत्त सुई सद्धा सजममि य वीरियं ॥
- २-समावन्नाण ससारे नाणागोत्तासु जाइसु ।
कम्मा नाणाविहा कट्टु पुढो^२ विस्सभिया पया ॥
- ३-एगया देवलोएसु नरएसु वि एगया ।
एगया आसुर काय आहाकम्मेहिं गच्छई ॥
- ४-एगया खत्तिओ होइ तओ चण्डालवोक्कसो ।
तओ कीडपयगो य तओ कुन्थुपिवीलिया ॥
- ५-एवमावट्टजोणीसु पाणिणो कम्मकिब्बिसा ।
न निविज्जन्ति ससारे 'सव्वट्टेसु व^३'^४ खत्तिया ॥
- ६-कम्मसगेहि सम्मूढा दुक्खिया बहुवेयणा ।
अमाणुसामु जोणीसु विणिहम्मन्ति पाणिणो ॥
- ७-कम्माण तु पहाणाए आणुपुव्वी कयाइ उ ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता 'आययन्ति मणुस्सय'^५ ॥
- ८-माणुस्स विग्गह लद्धु सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
ज सोच्चा पडिवज्जन्ति तव खन्तिमहिंसय ॥

१-देहिणो (वृ० पा०, चू०) ।

२-पुणो (चू० पा०) ।

३-य (अ) वि (ऋ) ।

४-सव्वट्ट इव (वृ० पा०, चू० पा०) ।

५-जायन्ते ऋणुसत्तय (वृ० पा०) ।

- ९-आहच्च सवण लद्धु सद्धा परमदुल्लहा ।
 सोच्चा नेआउयं मगं बहवे परिभस्सई ॥
- १०-सुइं च लद्धु सद्धं च वीरियं पुण दुल्लहं ।
 बहवे रोयमाणा वि 'नो एण' पडिवज्जाए ॥
- ११-माणुसत्तंमि आयाओ जो धम्म सोच्च सद्धे ।
 तवस्सी वीरिय लद्धु सवुडे निद्धुणे रयं ॥
- १२-"सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई ।
 निव्वाण परम जाइ 'घयसित्त व्व' पावए ॥"^३
- १३-विर्किच^४ कम्मणो^५ हेउ जस सच्चिणु खन्तिए ।
 पाढव सरीर हिच्चा उड्ढ पक्कमई दिस ॥
- १४-विसालिसेहिं सीलेहिं जक्खा उत्तरउत्तरा ।
 महासुक्का व दिप्पन्ता मन्नन्ता अपुणच्चव ॥
- १५-अप्पिया देवकामाण कामरूवविउव्विणो ।
 उड्ढ कप्पेसु चिट्ठन्ति पुव्वा वाससया व्ह ॥
- १६-तत्थ ठिच्चा जहाठाण जक्खा आउक्खए चुया ।
 उवेन्ति माणुसं जोणिं से दसगेऽभिजायई ॥
- १७-खेत्तं वत्थु हिरण्ण च पसवो दासपोरुसं ।
 चत्तारि कामखन्धाणि तत्थ से उववज्जई ॥

१-नो य ण (स, सु, वृ०) ।

२-घयसित्तिव्व (उ), घयसित्तिव्व (ऋ, सु,), घयसित्ते व (वृ०) ।

३-चउद्धा संपय लद्धु इहेव ताव भायते ।

तेयते तेजसंपन्ने घयसित्ते व पावए ॥ (नागार्जुनीयाः) ।

४-विर्किचि (अ, आ), विर्किच (चू०), विर्किच (चू० पा०) ।

५-कम्मणो (उ, ऋ) ।

- १८—मित्तव नायव^१ होइ उच्चागोए य वण्णव ।
 अप्पायके महापन्ने अभिजाए जसोबले ॥
- १९—भोच्चा मागुस्सए भोए अप्पाडिळ्वे अहाउय ।
 पुव्व विसुद्धसद्धम्मे केवल बोहि बुज्झिया ॥
- २०—चउरग दुल्लह मत्ता^२ सजम पडिवज्जिया ।
 तवसा धुयकम्मसे सिद्धे हवइ सासए ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—नाइव (ञ) नाइव (उ) ।

२—नत्ता (उ) ।

चउत्थ अज्भयण

असंखयं

- १—असंखयं जीविय मा पमायए
जरोवणीयस्स हु नत्थि ताण ।
एवं^१ वियाणाहि जणे पमत्ते
कण्णू विहिंसा अजया गहिनत्ति ॥
- २—जे पावकम्मेहि धण मणूसा
समाययन्ती अमड^२ गहाय ।
पहाय ते 'पास पयट्टिए'^३ नरे
वेराणुवद्धा नरयं उवेन्ति ॥
- ३—तेणे जहा सन्धिमुहे गहीए
सकम्मणा किच्चड पावकारी ।
एव पया पेच्च^४ इहं च^५ लोए
'कडाण कम्माण न मोक्ख^६ अत्थि'^७ ॥
- ४—ससारमावन्त परस्स अट्टा
साहारण ज च करेड कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले
न बन्धवा बन्धवयं उवेन्ति ॥

१—एण (वृ० पा०) ।

२—अमय (वृ० पा०, चू० पा०) ।

३—पासपयट्टिए (ऋ), पासपइट्टिए (उ) ।

४—पेच्च (वृ०), पेच्च (वृ० पा०) ।

५—पि (चू०, वृ० पा०) ।

६—ओक्खो (वृ०, चू०) ।

७—ण कम्मणो पीहात्ति तो कयाती (वृ० पा०, चू० पा०) ।

- ५—वित्तेण ताण न लभे पमत्ते
इममि लोए अदुवा परत्था ।
दीवप्पण्टे व अणन्तमोहे
नेयाउय दट्टुमदट्टुमेव ॥
- ६—सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी
न वीससे पण्डिए आसुपन्ते ।
घोरा मुहुत्ता अबल सरीर
भारुण्डपक्खी व चरप्पमत्तो ॥
- ७—चरे पयाइं परिसकमाणो
ज किंचि पास इह मण्णमाणो ।
लाभन्तरे जीविय वूहइत्ता
पच्छा परिन्नाय मलावधसी ॥
- ८—छन्द निरोहेण उवेइ मोकखं
आसे जहा सिक्खियवम्मधारी ।
पुव्वाड वासाड चरप्पमत्तो
तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोकख ॥
- ९—स पुव्वमेव न लभेज्ज पच्छा
एसोवमा सासयवाइयाण ।
विसीयई सिढिले आउयमि^१
कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥
- १०—खिप्प न सक्केड विवेगमेउ
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच्च लोय समया महेसी
अप्पाणरक्खी चरमप्पमत्तो^२ ॥

१—उत्तमि (उ) ।

२—इ चरप्पमत्तो (च) चरप्पमत्तो (उ) ।

- ११—मुहुं मुहुं मोहगुणे जयन्तं
 अणेगरूवा समण चरन्त ।
 फासा फुसन्ती असमजस च
 न तेमु भिक्खू मणसा पउस्से ॥
- १२—‘मन्दा य फासा बहुलोहणिज्जा’^१
 तहप्पगारेसु मण न कुज्जा ।
 रक्खेज्ज कोह विणएज्ज माण
 माय न सेवे पयहेज्ज लोह ॥
- १३—जे सखया तुच्छ परप्पवाई
 ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
 एए ‘अहम्मे’त्ति दुगुछमाणो
 कखे गुणे जाव सरीरभेओ ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—मदास तथा हियस्स बहुलोमणेज्जा (चू० पा०) ।

- ९—हिंसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे ।
 भुजमाणे सुर मस सेयमेय ति मन्नई ॥
- १०—कायसा वयसा मत्ते वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
 दुहओ मल सचिणइ सिसुणागु व्व मट्टिय ॥
- ११—तओ पुट्टो आयकेण गिलाणो परितप्पई ।
 पभीओ परलोगस्स कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥
- १२—सुया मे नरए ठाणा असीलाण च जा गई ।
 बालाण कूरकम्माण पगाढा जत्थ वेयणा ॥
- १३—तत्थोववाइय ठाण जहा मेयमणुस्सुय ।
 आहाकम्मेहि गच्छन्तो सो पच्छा परितप्पई ॥
- १४—जहा सागडिओ जाण सम हिच्चा महापह ।
 विसम मग्गमोइण्णो^१ 'अक्खे भग्गमि'^२ सोयई ॥
- १५—एव धम्म विउक्कम्म अहम्म पडिवज्जिया ।
 बाले मच्चुमुह पत्ते अक्खे भग्गे व सोयई ॥
- १६—तओ से मरणन्तमि बाले सन्तस्सई^३ भया ।
 अकाममरण मरई धुत्ते व कलिना जिए ॥
- १७—एय अकाममरण बालाण तु पवेइयं ।
 एत्तो सकाममरण पण्डियाण सुणेह मे ॥
- १८—मरण पि सपुण्णाण^४ जहा मेयमणुस्सुय ।
 विप्पसण्णमणाघाय^५ सजयाण वुसीमओ ॥—

१—मग्गमोगाढा (चू०), मग्गमोगाढो (वृ० पा०) ।

२—अक्खेभग्गमि (वृ०), अक्खस्स भग्गे (चू०), अक्खे भग्गमि (वृ० पा०) ।

३—संतसई (चू०) ।

४—सुपुण्णाण (अ) ।

५—सुपसन्नेहि अक्खाय (वृ० पा०, चू०), सुप्पसन्नमणक्खाय (वृ०) ;
 विप्पसण्णमणाघाय (चू० पा०) ।

- २८—ताणि ठाणाणि गच्छन्ति सिक्खित्ता संजमं तवं ।
 भिक्खाए वा गिहत्थे वा जे सन्ति परिनिव्वुडा ॥
- २९—तेसिं सोच्चा सपुज्जाण^१ सजयाण वुसीमओ ।
 न सतसन्ति मरणन्ते सीलवन्ता बहुस्सुया ॥
- ३०—तुलिया विसेसमादाय दयाधम्मस्स खन्तिए ।
 विप्पसीएज्ज मेहावी तहाभूएण अप्पणा ॥
- ३१—तओ काले अभिप्पेए सड्ढी तालिसमन्तिए ।
 विणएज्ज लोमहरिस भेयं देहस्स कंखए ॥
- ३२—अह कालमि संपत्ते 'आघायाय समुस्सयं ।'^२
 सकाममरण मरई तिण्हमन्नयरं मुणी ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—सुपुज्जाण (चू०) ।

२—सुत्तक्खाल समाहितो (चू०), आघायाए समुच्छयं (चू० पा०) ।

१९—न इम 'सर्वेण

नाणा

३—माया ।

नाल ते भ

४—अयमद्रु न

द्विन्द्र गेहि गिणह न

५—नवाग मणिहज्ज पग

सव्वमेय नउत्ताण तामणा

| थावर जगम चव सण पणा

पच्चमाणम्म कम्महि नाउ सुत्ताउ मोगणे

६—अज्झत्थ सव्वजा सव्व दिग्ग पाणे पिमापण ।

'न हणे पाणिणो पाण भवनीना उतरण ॥

७—आयाण नरय दिग्ग नायाण तणामनि ।

'दोगुच्छी' अप्पणो पाण' दिन्त भुज्ज भोगण ॥

१—ते सर्वे दुक्खम ज्ञया (न ग.र्जनीया) ।

२—तम्हा समिक्ख मेहावी (च०, सू० पा०), समिक्ख प.उर तम्हा (चू० पा०) ।

३—अत्तद्धा (वृ० पा०) ।

४—भूएहि (चू०) ।

५—गेह (उ) ।

६—यह श्लोक चूर्णि व टीका मे व्याख्यात नही है ।

७—नो हिंसेज्ज पाणिण पाणे (चू०), नो हणे पाणिण पाणे (यू० पा०) ।

८—दोग्घी (ऋ) ।

९—अप्पणो पाणिपाले (चू० पा०) ।

- ८—इहमेगे उ मन्तन्ति अप्पच्चक्खाय पावगं ।
आयरिय^१ विदित्ताण सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥
- ९—भणन्ता अकरेन्ता य बन्धमोक्खपइण्णिणो ।
वायाविरियमेत्तेण समासासेन्ति अप्पय ॥
- १०—न चित्ता तायए भासा कओ विज्जाणुसासण ? ।
विसन्ता पावकम्महिं^२ बाला पडियमाण्णिणो ॥
- ११—जे केइ सरीरे सत्ता वण्णे रूवे य सव्वसो ।
'मणसा कायवक्केण'^३ सव्वे ते दुक्खसभवा ॥
- १२—आवन्ता दीहमद्वाण ससारमि अणत्तए ।
तम्हा सव्वदिस पस्स अप्पमत्तो परिव्वए ॥
- १३—बहिया उड्ढमादाय नावकखे कयाइ वि ।
पुव्वकम्मखयट्ठाए इम देह समुद्धरे ॥
- १४—विविच्च^४ कम्मणो हेउ कालकखी परिव्वए ।
मायं पिडस्स पाणस्स कड लद्धूण भक्खए ॥
- १५—सन्निहि च न कुव्वेज्जा लेवमायाए संजए ।
पक्खी पत्त समादाय निरवेक्खो^५ परिव्वए ॥
- १६—एसणासमिओ लज्जू गामे अणियओ चरे ।
अप्पमत्तो पमत्तेहि पिडवाय गवेसए ॥

१—आयरिय (वृ० पा०, उ, सु) ।

२—पावकिच्चैहिं (वृ० पा०) ।

३—मणसा वयसा चैव (चू०, वृ०) , मणसा कायवक्केण (वृ० पा०) ।

४—विगिंच (अ, आ, इ, उ, वृ० पा०) ।

५—निरवेक्खी (चू०) ।

- ८—इहमेगे उ मन्नन्ति अप्पच्चक्खाय पावगं ।
आयरिय^१ विदित्ताण सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥
- ९—भणन्ता अकरेन्ता य बन्धमोक्खपइण्णिणो ।
वायाविरियमेत्तेण समासासेन्ति अप्पय ॥
- १०—न चित्ता तायए भासा कओ विज्जाणुसासण ? ।
विसन्ता पावकम्मेहिं^२ बाला पडियमाणिणो ॥
- ११—जे केइ सरीरे सत्ता वण्णे रूवे य सव्वसो ।
'मणसा कायवक्केण'^३ सव्वे ते दुक्खसभवा ॥
- १२—आवन्ता दीहमद्धाणं ससारमि अणतए ।
तम्हा सव्वदिस पस्स अप्पमत्तो परिव्वए ॥
- १३—बहिया उड्ढमादाय नावकखे कयाइ वि ।
पुव्वकम्मखयट्ठाए इम देहं समुद्धरे ॥
- १४—विविच्च^४ कम्मणो हेउ कालकखी परिव्वए ।
मायं पिडस्स पाणस्स कड लद्धूण भक्खए ॥
- १५—सन्निहिं च न कुव्वेज्जा लेवमायाए सजए ।
पक्खी पत्त समादाय निरवेक्खो^५ परिव्वए ॥
- १६—एसणासमिओ लज्जू गामे अणियओ चरे ।
अप्पमत्तो पमत्तेहि पिडवाय गवेसए ॥

१—आयरिय (वृ० पा०, उ, सु) ।

२—पावकिच्चेहिं (वृ० पा०) ।

३—मणसा वयसा चैव (चू०, वृ०) , मणसा कायवक्केण (वृ० पा०) ।

४—विविच्च (अ, आ, इ, उ, वृ० पा०) ।

५—निरवेक्खी (चू०) ।

१८- 'एव मे उवाह, अणुत्तरनाणी

अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे ।

अग्हा

नायपुत्ते

भगव वेसालिए वियाहिए ॥^३

—त्ति वेमि ।'

*

सत्तम अज्भयण

उरब्भिज्जं

- १—जहाएसं समुद्दिस्स कोइ पोसेज्ज एलय ।
 ओयण 'जवसं देज्जा'^१ पोसेज्जा 'वि सयंगणे'^२ ॥
- २—तओ से पुट्टे परिवूढे जायमेए महोदरे ।
 पीणिए विउले देहे आएस परिकखए^३ ॥
- ३—जाव न एइ^४ आएसे ताव जीवइ से दुही ।
 अह पत्तमि आएसे सीसं छेत्तूण भुज्जई ॥
- ४—जहा खलु से उरब्भे आएसाए समीहिए ।
 एव बाले अहम्मिद्वे ईहई नरयाउयं ॥
- ५—हिंसे बाले^५ मुसावाई अद्धानंमि विलोवए ।
 अन्नदत्तहरे तेणे^६ माई कण्हुहरे^७ सढे ॥
- ६—इत्थीविसयगिद्धे य महारभपरिग्गहे ।
 भुजमाणे सुरं मसं परिवूढे परदमे ॥
- ७—अयककरभोई य तुदिल्ले चियलोहिए^८ ।
 आउय नरए कंखे जहाएसं व एलए ॥
- ८—आसण सयण जाण वित्त कामे य भुजिया ।
 दुस्साहड धण हिच्चा बहं सच्चिणिया रय ॥

१—जवसे देति (चू०) ।

२—विसयगणे (वृ० पा०, चू०) ।

३—पडिं (वृ०), परिं (वृ० पा०) ।

४—एज्जति (चू०) ।

५—कोही (वृ० पा०) ।

६—त्राले (वृ०), तेणे (वृ० पा०) ।

७—किन्नुहरे (चू०) - कन्नुहरे (सु) ।

८—० सोणिए (उ, ऋ) ।

- १८-तओ जिए सइ होइ दुविहं दोग्गइं गए ।
दुल्लहा तस्स उम्मज्जा अद्दाए सुइरादवि ॥
- १९-एव जिय^१ सपेहाए तुलिया बाल च पडिये ।
मूलिय ते पवेसन्ति माणुस जोणिमेन्ति^२ जे ॥
- २०-वेमायाहिं सिक्खाहि जे नरा गिहिसुव्वया ।
उवेन्ति माणुस जोणि कम्मसच्चा^३ हु पाणिणो ॥
- २१-जेसितु विउला सिक्खा मूलिय ते अइच्छिया^४ ।
सीलवन्ता सवीसेसा अदीणा जन्ति देवय ॥
- २२-एवमदीणव^५ भिक्खु अगारिं^६ च वियाणिया ।
कहण्णु जिच्चमेलिक्ख 'जिच्चमाणे न'^७ सविदे ? ॥
- २३-जहा कुसग्गे उदग समुद्वेण सम मिणे ।
एव माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए ॥
- २४-कुसग्गमेत्ता इमे कामा सन्निरुद्धमि आउए ।
कस्स हेउ पुराकाउ^८ जोगक्खेम न सविदे ? ॥
- २५-इह कामाणियट्टस्स अत्तट्ठे अवरज्झई ।
'सोच्चा^९ नेयाउय मग्ग ज भुज्जो परिभस्सई'^{१०} ॥

१-जिए (वृ०) ।

२-जोणिमिन्ति (उ, चू०) ।

३-कम्मसत्ता (वृ० पा०, चू० पा०) ।

४-तिउच्छिया (अ), ते उड्डिया (चू०), ते अइच्छिया (चू० पा०),
विउड्डिया, अतिड्डिया, अतिच्छिया (वृ०) ।

५-एव अदीणव (चू०, वृ०) ।

६-आगारिं (उ, ऋ) ।

७-जिच्चपाण व (चू०) ।

८-पुरोकाउ (चू०) ।

९-पत्तो (वृ० पा०, चू० पा०) ।

१०-पूइदेह निरोहेण भवे देवे त्ति मे सुय (चू० पा०) ।

अट्टमं अज्भयणं

काविलीयं

१—अधुवे असासयमि^१
ससारमि दुक्खपउराए ।

किं नाम होज्ज त कम्मय
'जेणाह दोग्गइ न गच्छेज्जा'^२ ॥

२—विजहित्तु पुव्वसजोग
न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा ।
असिणेह सिणेहकरेहि
दोसपओसेहि^३ मुच्चए भिक्खू ॥

३—तो नाणदसणसमग्गो
हियनिस्सेसाए^४ सव्वजीवाण ।
तेसि विमोक्खणट्ठाए
भासई मुणिवरो विगयमोहो ॥

४—सव्व गन्थ कलह च
विप्पजहे तहाविह^५ भिक्खू ।
'सव्वेसु कामजाएसु'^६
पासमाणो न लिप्पई ताई ॥

१—अधुवमि मोहाहणए (नागार्जुनीया) ।

२—जेणाहं (ध) दुग्गइतो मुच्चेज्जा (चू०, वृ० पा०) ।

३—दोसपएहिं (वृ०) ; दोसपउसेहिं (वृ० पा०) ।

४—हियनिस्सेसाय (चू०, सु) ।

५—तहाविहो (वृ० पा०, चू० पा०) ।

६—सव्वेहिं कामजाएहिं (चू०) ।

१०—'जगनिस्सिएहि भूएहि
तसनामेहि थावरेहि च ।^१
नो तेसिमारभे दंड
मणसा वयसा कायसा चेव ॥

११—सुद्धेसणाओ नच्चाण
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाण ।
जायाए घासमेसेज्जा
रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥

१२—पत्ताणि चेव सेवेज्जा
सीयपिड पुराणकुम्मासं ।
अदु वुक्कस पुलाग वा
'जवणट्ठाए निसेवए'^२ मथु ॥

१३—जे लक्खण च सुविण च
अगविज्ज च जे पउजन्ति ।
न हु ते समणा वुच्चन्ति
एवं आयरिएहि^३ अक्खाय ॥

१४—इहजीविय अणियमेत्ता
पब्भट्ठा समाहिजोएहि ।
ते कामभोगरसगिद्धा
उववज्जन्ति आसुरे काए ॥

१—जगनिस्सियाण भूयाण तसाण थावराण य । (वृ० पा०) ,
जगणिसित भूताण तसणामाणं च थावराण च । (चू०) ,
जगनिस्सितेसु थावरणामेसु भूतेसु तसणामेसु वा । (चू० पा०) ,
जगनिस्सिएहि भूएहि तसनामेहि थावरे हिं वा । (चू०) ।

२—जवणट्ठा वा सेवए (वृ०) , जवणट्ठाए निसेवए (वृ० पा०) ।

३—आरिएहि—अ, वृ० ।

१०—'जगनिस्सिएहिं भूएहिं
तसनामेहिं थावरेहिं च ।'^१

नो तेसिमारभे दड
मणसा वयसा कायसा चेव ॥

११—सुद्धेसणाओ नच्चाण
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाण ।
जायाए वासमेसेज्जा
रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥

१२—पन्ताणि चेव सेवेज्जा
सीयपिंड पुराणकुम्मास ।
अदु वुक्कस पुलाग वा
'जवणट्टाए निसेवए'^२ मथु ॥

१३—जे लक्खण च सुविण च
अगविज्ज च जे पउजन्ति ।
न हु ते समणा वुच्चन्ति
एव आयरिएहिं^३ अक्खाय ॥

१४—इहजीविय अणियमेत्ता
पब्भट्टा समाहिजोएहि ।
ते कामभोगरसगिद्धा
उववज्जन्ति आसुरे काए ॥

१—जगनिस्सियाण भूयाण तसाण थावराण य । (वृ० पा०) ,
जगणिसित भूताण तसणामाण च थावराण च । (चू०) ,
जगनिस्सित्तैसु थावराणामेसु भूतेसु तसणामेसु वा । (चू० पा०) ,
जगनिस्सिएहिं भूएहिं तसनामेहिं थावरे हिं वा । (चू०) ।

२—जवणट्टा वा सेवए (वृ०) , जवणट्टाए निसेवए (वृ० पा०) ।

३—आरिएहिं (अ. वृ०) ।

२०—इइ एस धम्मे अक्खाए
कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं ।
तरिहन्ति जे उ काहन्ति
तेहि आराहिया दुवे लोग ॥ -
—त्ति बेमि ॥

*

नवम अज्जयण

नसिपव्वज्जा

- १—चइऊण देवलोगाओ
 उववन्नो माणुगमि नोगमि ।
 उवसन्तमोहणिज्जो
 सरई पांगणिय जाउ ॥
- २—जाड सरित्तु भयव
 सहमवुद्धो अणत्तरे धम्मे ।
 पुत्त ठवेत्तु रज्जे
 अभिणिक्वमई नमी राया ॥
- ३—से देवलोगसरिमे
 अन्तेउग्गग्गओ वरे भोग्ग ।
 भुजित्तु नमी राया
 बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥
- ४—मिहिल सपुग्गणवय
 वलमोरोह च पग्गियण सव्व ।
 चिच्चा अभिनिक्खन्तो
 एगन्तमहिट्ठिओ भयव ॥
- ५—कोलाहलगभूय आसी मिहिलाए पव्वयन्तमि ।
 तइया रायरिसिमि
 नमिमि अभिणिक्वमन्तमि ॥
- ६—अब्भुट्ठिय रायरिसि पव्वज्जाठाणमुत्तम ।
 सक्को माहणरूवेण इम वयणमव्ववी ॥

- ७—किण्णु भो । अज्ज मिहिलाए कोलाहलगसंकुला ।
सुव्वन्ति दारुणा सद्दा -पासाएसु गिहेसु य ? ॥
- ८—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमव्ववी ॥
- ९—मिहिलाए चेइए वच्छे -सीयच्छाए मणोरमे ।
पत्तपुप्फफलोवेए वहूण । बहुगुणे सया ॥
- १०—वाएण हीरमाणमि चेइयमि मणोरमे ।
दुहिया असरणा अत्ता एए कन्दन्ति भो । खगा ॥
- ११—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमव्ववी ॥
- १२—एस अग्गी य वाऊ य एय डज्भइ मन्दिर ।
भयव । अन्तेउर तेण कीस ण नावपेक्खसि ? ॥
- १३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- १४—सुह वसामो जीवामो जेसि मो नत्थि किंचण ।
मिहिलाए डज्भमाणीए न मे डज्भइ किंचण ॥
- १५—चत्तपुत्तकलत्तस्स निव्वावारस्स भिक्खुणो ।
पियं न विज्जई किंचि अप्पिय पि न विज्जाए ॥
- १६—बहुं खु मुणिणो भइ अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स एगन्तमणुपस्सओ ॥
- १७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमव्ववी ॥

- १८—पागार कारइत्ताणं गोपुरद्वालगाणि च ।
उस्सूलगसयग्धीओ^१ तओ गच्छसि खत्तिया ॥
- १९—एयमट्टं निसामित्ता हेऊकारणचोडओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमव्ववी ॥
- २०—सद्ध नगर^२ किच्चा तवसंवरमगल ।
'खन्ति निउणपागारं तिगुत्त दुप्पधसय'^३ ॥
- २१—धणु परक्कम किच्चा जीव च उरिय सया ।
धिइं च केयण किच्चा सच्चवेण पल्लिमन्थए^४ ॥
- २२—तवनारायजुत्तेण भेत्तुण कम्मकच्चुयं ।
मुणी विगयसगामो भवाओ परिमुच्चए ॥
- २३—एयमट्टं निसामित्ता हेऊकारणचोडओ ।
तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमव्ववी ॥
- २४—पासाए^५ कारइत्ताण वद्धमाणगिहाणि य ।
बालगपोड्याओ य तओ गच्छसि खत्तिया ॥
- २५—एयमट्टं निसामित्ता हेऊकारणचोडओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमव्ववी ॥
- २६—संसय खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घर ।
जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा तत्थ कुव्वेज्ज सासय ॥
- २७—एयमट्टं निसामित्ता हेऊकारणचोडओ ।
तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमव्ववी ॥

१—उच्छूलग ° (स) ।

२—नगरीं (बु०) ।

३—खन्ति निउणं पागारं तिगुत्ति दुप्पधसय (बु० पा०) ।

४—पल्लिकथए (चू०) ।

५—पासाय (ऋ) ।

- २८—आमोसे लोमहारे य गंठिभेए य तक्करे ।
नगरस्स खेमं काऊणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- २९—एयमट्ट निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमब्बवी ॥
- ३०—असइ तु मणुस्सेहिं मिच्छा दण्डो पजुजई ।
अकारिणोऽत्थ बज्भन्ति मुच्चई कारओ जणो ॥
- ३१—एयमट्ट निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥
- ३२—जे केइ पत्थिवा तुब्भ^१ नानमन्ति नराहिवा । ।
वसे ते ठावइत्ताण तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- ३३—एयमट्ट निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमब्बवी ॥
- ३४—जो सहस्स सहस्साण सगामे दुज्जए जिणे ।
एग जिणेज्ज अप्पाण एस से परमो जओ ॥
- ३५—अप्पाणमेव जुज्झाहि किं ते जुज्जेण बज्भओ ।
अप्पाणमेव^२ अप्पाण जइत्ता सुहमेहए ॥
- ३६—पच्चिन्दियाणि कोह माणं माय तहेव लोह च ।
दुज्जय चेव अप्पाण सव्वं अप्पे जिए जिय ॥
- ३७—एयमट्ट निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥
- ३८—जइत्ता विउले जन्ते भोइत्ता समणमाहणे ।
दच्चा भोच्चा य जट्टा य तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

१—तुज्झ (वृ० पा०) ।

२—अप्पणा चेव (अ) ।

- ३९—एयमद्व निसामित्ता हेऊकारणचोडओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमच्चवी ॥
- ४०—जो सहस्स सहस्साण मामे मागे गव दण ।
तस्सावि सजमो मेओ अदिन्तरस वि किच्चण ॥
- ४१—एयमद्व निसामित्ता हेऊकारणचोडओ ।
तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमच्चवी ॥
- ४२—घोरासम चडत्ताण' अन्न पत्थेमि आसम ।
इहेव पोसहरओ भवाहि मणुयाहिवा । ॥
- ४३—एयमद्व निसामित्ता हेऊकारणचोडओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमच्चवी ॥
- ४४—मासे मासे तु जो वालो कुसग्गेण तु भुजाण ।
न सो सुयक्खायधम्मस्स कल अग्घड सोलमि ॥
- ४५—एयमद्व निसामित्ता हेऊकारणचोडओ ।
तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमच्चवी ॥
- ४६—हिरण सुवण्णमणिमुत्त कस दूस 'च वाहण'^३ ।
कोस वड्ढावडत्ताण तओ गच्छसि खत्तिया । ॥
- ४७—एयमद्व निसामित्ता हेऊकारणचोडओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमच्चवी ॥
- ४८—मुवण्णरूपस्स उ' पव्वया भवे
सिया हु केलाससमा असखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहि" किच्चि
इच्छा उ आगाससमा अणन्तिया ॥

१—जहित्ताणं (वृ० पा०) ।

२—व (अ) ।

३—सवाहण (वृ० पा०, चू०) ।

४—य (अ) ।

५—तेणं (वृ० पा०) ।

- ४९—पुढवी साली जवा चव हिरण्ण पसुभिस्सह ।
पडिपुण्ण^१ नालमेगस्स इइ विज्जा तव चरे ॥
- ५०—एयमट्ट निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसिं देविन्दो इणमव्ववी ॥
- ५१—अच्छेरगमब्भुदए भोए चयसि^२ पत्थिवा^३ ।।
असन्ते कामे पत्थेसि सकप्पेण विहन्तसि ॥
- ५२—एयमट्ट निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमव्ववी ॥
- ५३—सल्ल कामा विस कामा कामा आसीविसोवमा ।
कामे पत्थेमाणा अकामा जन्ति दोग्गइ ॥
- ५४—अहे वयइ कोहेण माणेण अहमा गई ।
माया गईपडिग्घाओ लोभाओ दुहओ भय ॥
- ५५—अवउज्झिऊण माहणरूव विउव्विऊण इन्दत्त ।
वन्दइ अभित्थुणन्तो इमाहि महराहिं वग्गूहिं ॥
- ५६—अहो ते निज्जिओ कोहो अहो ते माणो पराजिओ ।
अहो ते निरक्किया माया अहो ते लोभो वसीकओ ॥
- ५७—अहो ते अज्जव साहु अहो ते साहु मट्टव ।
अहो ते उत्तमा खन्ती अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥
- ५८—इह सि उत्तमो भन्ते पेच्चा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्तमुत्तम^४ ठाण सिद्धि गच्छसि नीरओ ॥

१—सव्वत्त (वृ० पा०) ।

२—जहासि (वृ०) , चयसि (वृ० पा०) ।

३—खत्तिया (वृ० पा०) ।

४—लोगुत्तम मुत्तम (वृ० पा०) ।

दसमं अज्जयण

दुमपत्तयं

- १—दुमपत्तए षण्डुयए जहा
निवडइ राइगणाण अच्चए ।
एव मणुयाण जीविय
समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- २—कुसग्गे जह ओसबिन्दुए
थोव चिद्वइ लम्बमाणए ।
एवं मणुयाण जीविय
समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- ३—'इइ इत्तरियम्मि आउए
जीवियए बहुपच्चवायए'^१ ।
विहुणाहि रय पुरे कड
समय गोयम ! मा पमायए ॥
- ४—दुलहे खलु माणुसे भवे
चिरकालेण वि सव्वपाणिण ।
गाढा य विवाग कम्मणो
समय गोयम ! मा पमायए ॥
- ५—पुढविकायमइगओ
उक्कोस जीवो उ सवसे ।
काल सखाईय
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१—एव मणुयाण जीविए
एत्तिए बहुपच्चवायए । (वृ० पा०) ।

६—आउषायमङ्गलौ

उषाम् जीवो उ सवमे ।
 कालं नगार्श्वे
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

७—तेउषायमङ्गलौ

उषाम् जीवो उ सवमे ।
 कालं नगार्श्वे
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

८—वाउषायमङ्गलौ

उषाम् जीवो उ सवमे ।
 कालं नगार्श्वे
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

९—वणस्सइकायमङ्गलौ

उषाम् जीवो उ सवमे ।
 कालमणन्तदुग्न्त
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१०—वेइन्द्रियकायमङ्गलौ

उषोत जीवो उ सवमे ।
 कालं सखिज्जसन्निय
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

११—तेइन्द्रियकायमङ्गलौ

उषोस जीवो उ सवमे ।
 कालं सखिज्जसन्निय
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१२—चउरिन्द्रियकायमद्गओ

उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालं संखिज्जसन्निय
 समय गोयम । मा पमायए ॥

१३—पचिन्द्रियकायमद्गओ

उक्कोस जीवो उ सवसे ।
 सत्तट्ठभवग्गहणे
 समय गोयम ! मा पमायए ॥

१४—देवे नेरइए य अद्गओ

उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 इक्किक्कभवग्गहणे
 समय गोयम ! मा पमायए ॥

१५—एव

भवससारे
 जीवो संसरइ सुहासुहेहि कम्मोहि ।
 पमायबहुलो
 समय गोयम । मा पमायए ॥

१६—लद्धूण

वि माणुसत्तण
 बहवे दसुया मिलेक्कुया
 आरिअत्त पुणरावि दुल्लह ।
 समय गोयम । मा पमायए ॥

१७—लद्धूण

वि आरियत्तणं
 विगलिन्द्रियया हु दीसई
 अहीणपचिन्द्रियया हु दुल्लहा ।
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

६—आउक्कायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालं सखाईय
 समय गोयम । मा पमायए ॥

७—तेउक्कायमइगओ

उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालं संखाईयं
 समय गोयम । मा पमायए ॥

८—वाउक्कायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालं संखाईयं
 समयं गोयम । मा पमायए ॥

९—वणस्सइक्कायमइगओ

उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 कालमणन्तदुरन्तं
 समयं गोयम । मा पमायए ॥

१०—बेइन्दियकायमइगओ

उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 काल सखिज्जसन्नियं
 समयं गोयम । मा पमायए ॥

११—तेइन्दियकायमइगओ

उक्कोस जीवो उ संवसे ।
 काल सखिज्जसन्निय
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१२—चउरिन्दियकायमङ्गलः

उद्योमं उद्योमं - - -

ते ।

काल

सदिन्दिय

समयं उद्योमं - - -

ए ॥

१३—पचिन्दियकायमङ्गलः

उद्योमं उद्योमं - - -

ते ।

सत्तद्वभवग्गहणे

समयं उद्योमं - - -

ए ॥

१४—देवे नेरइए

य उद्योमं

ते ।

इक्किक्कभवग्गहणे

उद्योमं उद्योमं - - -

॥

समयं गोयमं! मा - - -

१५—एव

भवसंसारं

जीवो

संसारं सुहायुत्तं - - -

पमायवहणे

समयं गोयमं! मा - - -

१६—लद्धृण

वि

माणुसत्तं

वहवे

दसुया

आरिञ्जितं उद्योमं उद्योमं

मिलेत्तुत्तं

१७—लद्धृण

वि

समयं गोयमं! मा पमायए ॥

आरिञ्जितं

विगन्दिन्दियया

वहोपचिन्दियया उद्योमं उद्योमं

उद्योमं

समयं गोयमं! मा - - -

१८—अहीणपंचिन्द्रियत्त पि से लहे
 उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा ।
 कुतित्थिनिसेवए^१ जणे
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१९—लद्धूण वि उत्तम सुइ
 सदहणा पुणरावि दुल्लहा ।
 मिच्छत्तनिसेवए जणे
 समय गोयम ! मा पमायए ॥

२०—धम्म पि हु सदहन्तया
 दुल्लहया^२ काएण फासया ।
 इह कामगुणेहि^३ मुच्छिया
 समय गोयम ! मा पमायए ॥

२१—परिजूरइ ते सरीरय
 केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
 से सोयबले य हायई
 समय गोयम ! मा पमायए ॥

२२—परिजूरइ ते सरीरय
 केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
 से चक्खुबले य हायई
 समय गोयम ! मा पमायए ॥

१—कुतित्थ ° (वृ० पा०, चू०) ।

२—दुल्लहा (उ) ।

३—कामगुणेषु (उ, म, वृ०) , काम गुणेहि (वृ० पा०) ।

- २३—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से घाणबले य हायई
समय गोयम । मा पमायए ॥
- २४—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से जिब्बबले य हायई
समयं गोयम । मा पमायए ॥
- २५—परिजूरइ ते सरीरय
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से फासबले य हायई
समय गोयम । मा पमायए ॥
- २६—परिजूरइ ते सरीरय
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सव्वबले य हायई
समय गोयम । मा पमायए ॥
- २७—अरई गण्ड विसूइया
आयका विविहा फुसन्ति ते ।
विवडइ विद्धसइ ते सरीरय
समय गोयम । मा पमायए ॥
- २८—वोच्चिन्द सिणेहमप्पणो
कुमुय सारइय व^{रि} पाणिय ।
से सव्वसिणेहवज्जिए
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

२९—चिञ्चाण धण च भारियं
 पव्वइओ हि सि अणगारियं ।
 मा वन्तं पुणो वि आइए
 समयं गोयम । मा पमायए ॥

३०—अवउज्झिय मित्तबन्धवं
 विउलं चैव धणोहसंचय ।
 मा तं बिइयं गवेसए
 समय गोयम । मा पमायए ॥

३१—न हु जिणे अज्ज दिस्सई
 बहुमए दिस्सई मग्गदेसिए ।
 सपइ नेयाउए पहे
 समय गोयम । मा पमायए ॥

३२—अवसोहिय कण्टगापह
 ओइण्णो सि पह महालयं ।
 गच्छसि मग्गं विसोहिया
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३३—अबले जह भारवाहए
 मा मग्गे विसमे वगाहिया ।
 पच्छा पच्छाणुतावए
 समय गोयम । मा पमायए ॥

३४—तिण्णो हु सि अण्णव मह
 किं पुण चिइसि तीरमागओ ।
 अभितुर पार गमित्तए
 समय गोयम । मा पमायए ॥

३५—अकलेवरसेणिमुस्सिया

सिद्धिं गोयम लोयं गच्छसि ।

खेम च सिवं अणुत्तरं

समयं गोयम । मा पमायए ॥

३६—बुद्धे परिनिव्वुडे चरे

गामगए नगरे व सजए ।

सन्तिमगं च बूहए

समयं गोयम । मा पमायए ॥

३७—बुद्धस्स निसम्म भासियं

सुकहियमद्वपओवसोहियं ।

रागं दोसं च छिन्दिया

सिद्धिगइं गए गोयमे ॥

—त्ति बेमि ॥

इकारसम अज्जयणं

बहुस्सुयपुज्जा

- १—संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
आयारं पाउकरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥
- २—जे यावि होइ निव्विज्जे थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
अभिक्खण उल्लवई अविणीए अबहुस्सुए ॥
- ३—अह पंचहिं ठाणेहि जेहिं सिक्खा न लब्भई ।
थम्भा कोहा पमाएण रोगेणाऽलस्सएण य ॥
- ४—अह अट्टहिं ठाणेहिं सिक्खासीले त्ति वुच्चई ।
अहस्सिरे सया दन्ते न य मम्ममुदाहरे ॥
- ५—नासीले न विसीले न सिया अइलोलुए ।
अकोहणे सच्चरए सिक्खासीले त्ति वुच्चई ॥
- ६—अह चउदसहिं ठाणेहिं वट्टमाणे उ सजए ।
अविणीए वुच्चई सो उ निव्वाण च न गच्छइ ॥
- ७—अभिक्खण कोही हवइ पबन्धं च पकुव्वई ।
मेत्तिज्जमाणो वमइ सुय लद्धूण मज्जई ॥
- ८—अवि पावपरिक्खेवी अवि मित्तेसु कुप्पई ।
मुप्पियस्सावि मित्तस्स रहे भासइ पावगं ॥
- ९—पइण्णवाई दुहिले थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
असविभागी अचियत्ते अविणीए त्ति वुच्चई ॥
- १०—अह पन्नरसहिं ठाणेहिं सुविणीए त्ति वुच्चई ।
नीयावत्ती अचवले अमाई अकुऊहले ॥

११—अप्प चाऽहिक्खवई^१ पबन्धं च न कुव्वई ।
मेत्तिज्जमाणो भयई सुय लद्धु न मज्जई ॥

१२—न य पावपरिक्खेवी न य मित्तेसु कुप्पई ।
अप्पियस्सावि मित्तस्स रहे कल्लाण भासई ॥

१३—कलहडमरवज्जए बुद्धे अभिजाइए ।
हिरिमं पडिसलीणे सुविणीए त्ति वुच्चई ॥

१४—वसे गुरुकुले निच्च जोगव उवहाणवं ।
पियंकरे पियंवाई से सिक्ख लद्धुमरिहई ॥

१५—जहा सखम्मि पयं
'निहियं दुहओ'^२ वि विरायइ ।

एव बहुस्सुए भिक्खू
धम्मो कित्ती तथा सुयं ॥

१६—जहा से कम्बोयाणं आइण्णे कन्थए सिया ।
आसे जवेण पवरे एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१७—जहाइण्णसमारूढे सूरे दढपरक्कमे ।
उभओ नन्दिघोसेणं एव हवइ बहुस्सुए ॥

१८—जहा करेणुपरिक्किण्णे कुजरे सट्ठिहायणे ।
वलवन्ते अप्पडिहए एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१९—जहा से तिक्खसिंगे जायखन्धे विरायई ।
वसहे जूहाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२०—जहा से तिक्खदाढे उदग्गे दुप्पहंसए ।
सीहे मियाण पवरे एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१—वाऽहिक्खवइ (अ) चऽहिक्खवइ (उ) ।

२—मित्त उभयतो (चू०) ।

- २१—जहा से वामुदेवे संखन्नकगयाधरे ।
अप्पडिहयबले जोहे एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २२—जहा से चाउरन्ते चक्कवट्टी महिडिहए ।
चउदसरयणाहिवई एव हवइ बहुस्सुए ॥
- २३—जहा से सहस्सकखे वज्जपाणी पुस्सदरे ।
सकके देवाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २४—जहा से तिमिरविद्धसे उत्तिट्ठन्ते दिवायरे ।
जलन्ते इव तेएण एव हवइ बहुस्सुए ॥
- २५—जहा से उड्डुवई चन्दे नक्खत्तपरिवारिए ।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २६—जहा से सामाइयाण^१ कोट्टागारे सुरक्खिए ।
नाणाधन्तपडिपुण्णे एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २७—जहा सा दुमाण पवरा जम्बू नाम सुदसणा ।
अणाडियस्स देवस्स एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २८—जहा सा नईण पवरा सलिला सागरगमा ।
सीया नीलवन्तपवहा^२ एव हवइ बहुस्सुए ॥
- २९—जहा से नगाण पवरे सुमह मन्दरे गिरी ।
नाणोसहिपज्जलिए एव हवइ बहुस्सुए ॥
- ३०—जहा से सयभूरमणे उदही अक्खओदए ।
नाणारयणपडिपुण्णे^३ एव हवइ बहुस्सुए ॥

१—सामाइयाण (वृ० पा०) ।

२—^०पमवा (वृ०), ^०पवहा (वृ० पा०) ।

३—^०सपुण्णे (अ) ।

- ३१—समुद्गम्भीरसमा दुरासया
 अचक्रिया^१ केणइ दुप्पहंसया^२ ।
 सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो
 खवित्तु कम्म गइमुत्तमं गया ॥
- ३२—तम्हा सुयमहिद्वेज्जा उत्तमद्वगवेसए^३ ।
 जेणऽप्पाण पर चेव सिद्धि संपाउणेज्जासि ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—दुप्पहसिया (चू०) ।

२—उत्तमिद्व^० (अ) ।

बारसमं अज्भयणं

हरिएसिज्जं

१-सोवागकुलसभूओ

गुणुत्तरधरो^१ मुणी ।

हरिएसवलो

नाम

आसि भिक्खू जिइन्दिओ ॥

२-इरिएसणभासाए

उच्चारसमिईसु य ।

जओ

आयाणनिकखेवे

सजओ सुसमाहिओ ॥

३-मणगुत्तो

वयगुत्तो

कायगुत्तो जिइन्दिओ ।

भिक्खट्ठा

वम्भइज्जम्मि

जन्नवाड उवट्ठिओ ॥

४-तं पासिऊणमेज्जन्त तवेण परिसोसिय ।

पन्तोवहिउवगरण उवहसन्ति अणारिया ॥

५-जाईमयपडिथद्धा^२ हिसगा अजिइन्दिया ।

अवम्भचारिणो बाला इम वयणमब्बवी ॥

६-'कयरे आगच्छइ'^३ दित्तरूवे

काले विगराले फोक्कनासे ।

ओमचेलए

पसुपिसायभूए

सकरद्दसं परिहरिय कण्ठे ॥

१-अणुत्तरधरो (अ, वृ०पा०, चू०) ।

२-^० पडिथद्धा (उ, वृ०पा०) ।

३-कयरे तुम एत्तिध (चू०), कयरे आगच्छति (चू० पा०),
को रे आगच्छइ (वृ० पा०) ।

७-कयरे^१ तुमं इय अदंसणिज्जे
 काए व आसाइ हमागओ सि ।
 ओमचेलगा पंसुपिसायभूया
 गच्छ कखलाहि किमिहं ठिओसि ? ॥

८-जक्खो तर्हि तिन्दुयरुक्खवासी
 अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स ।
 पच्छायइत्ता नियग सरीरं
 इमाइ वयणाइमुदाहरित्था ॥

९-समणो अहं सजओ बम्भयारी
 विरओ धणपयणपरिग्गहाओ ।
 परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले
 अन्नस्स अट्ठा इहमागओ मि ॥

१०-वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ य
 अन्न पभूय भवयाणमेय ।
 जाणाहि मे जायणजीविणु^२ त्ति
 सेसावसेस लभऊ तवस्सी ॥

११-उवक्खडभोयण माहणाण
 अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
 न ऊ वय एरिसमन्नपाण
 दाहामु तुज्झ किमिह ठिओ सि ? ॥

१-को रे (सु० पा०, वृ० पा०) ।

२-^० जीवणो त्ति (वृ० पा०) ।

१२-थलेसु वीयाइ ववन्ति कासगा
 तहेव तिन्नेसु य आससाए ।
 एयाए सद्दाए दलाह मज्झ
 'आराहए पुण्णमिण खु खेत्त'^१ ॥

१३-खेत्ताणि अम्ह विइयाणि लोए
 जर्हि पकिण्णा विरुहन्ति पुण्णा ।
 जे माहणा जाइविज्जोववेया
 ताइ तु खेत्ताइ सुपेसलाइ ॥

१४-कोहो य माणो य वहो य जेसि
 मोसं अदत्त च परिग्गह च ।
 ते माहणा जाइविज्जाविहूणा
 ताइ तु खेत्ताइ सुपावयाइ ॥

१५-तुम्भेत्य भो भावधरा^२ गिराण
 अट्ट न जाणाह अहिज्ज वेए ।
 उच्चावयाइ मुणिणो चरन्ति
 ताइ तु खेत्ताइ सुपेसलाइ ॥

१६-अज्झावयाण पडिकूलभासी
 पभाससे किं तु सगासि अम्ह ।
 अवि एय विणस्सउ अन्नपाण^३
 न य ण दहामु तुम नियण्ठा । ॥

१-आराहगा होहिप पुण्ण खेत्त (वृ० पा०) ।

२-भाक्वहा (वृ० पा०) ।

३-भत्तपाण (क) ।

१७-समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स
 गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स ।
 जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्ज
 किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ? ॥

१८-के एत्थ खत्ता उवजोइया वा
 अज्झावया वा सह खण्डिएहि ।
 एय^१ दण्डेण फलेण हत्ता
 कण्ठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ? ॥

१९-अज्झावयाण वयणं सुणेत्ता
 उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
 दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव
 समागया तं 'इसि तालयन्ति'^२ ॥

२०-रत्तो तर्हि कोसलियस्स धूया
 भद्दत्ति नामेण अणिन्दियंगी ।
 त पासिया सजय हम्ममाण
 कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥

२१-देवाभिओगेण तिओइएणं
 दिन्ना मु रत्ता मणसा न भाया ।
 नरिन्ददेविन्दऽभिवन्दिएण
 जेणमिह वन्ता इसिणा स एसो ॥

१-एय तु (अ उ), एय तु (आ) ।

२-इसि ताड्यति (उ, ऋ) ।

२२-एसो हु सो उग्गतवो महप्पा
जिइन्दिओ संजओ बम्भयारी ।
'जो मे' तया नेच्छइ दिज्जमाणिं
पिउणा सय कोसलिएण रन्ता ॥

२३-महाजसो एस महाणुभागो^१
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एय हीलह अहीलणिज्ज
मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥

२४-एयाइ तीसे वयणाइ सोच्चा
पत्तीइ भद्दाइ सुहासियाइं ।
इसिस्स वेयावडियट्टयाए
जक्खा कुमारे विणिवाडयन्ति^२ ॥

२५-ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्खे
असुरा तहिं त जण तालयन्ति ।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते
पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥

२६-गिरिं नहेहिं खणह
अय दन्तेहिं खायह ।
जायतेय पाएहि हणह
जे भिक्खु अवमन्नह ॥

१-जो न (अ आ०) ।

२-महनुभावो (वृ० पा०, चू०) ।

३-त्रिगिरारयति (वृ० पा०) ।

२७-आसीविसो उगतवो महेसी
 घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
 अगणिं व पक्खन्द पयगसेणा
 जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह^१ ॥

२८-सीसेण एय सरणं उवेह
 समागया सव्वजणेण तुब्भे ।
 जइ इच्छह जीविय वा धण वा
 लोग पि एसो कुविओ डहेज्जा ॥

२९-अवहेडिय^२ पिट्ठिसउत्तमगे
 पसारियाबाहु अकम्मचेट्ठे ।
 निब्भेरियच्छे रुहिरं वमन्ते
 उड्ढंमुहे निग्गयजीहनेत्ते ॥

३०-ते पासिया खण्डिय कट्ठभूए
 विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
 इसिं पसाएइ सभारियाओ
 हील च निन्दं च खमाह भन्ते ! ॥

३१-वालेहि मूढेहि अयाणएहि
 ज हीलिया तस्स खमाह भन्ते ! ।
 महप्पसाया इसिणो हवन्ति
 न हु मुणी कोवपरा हवन्ति ॥

१-हणेह (ऋ) ।

२-आवड्डिय (वृ० पा०) ।

३२-‘पुर्व्वि च इण्हि च अणागय च’^१

मणप्पदोसो न मे अत्थि कोइ ।

जक्खा हु वेयावड्डिय करेन्ति,

तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥

३३-अत्थ च धम्म च वियाणमाणा

तुब्भे न वि कुप्पह भूइपत्ता ।

तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो

समागया सब्वजणेण अम्हे ॥

३४-अच्चेमु ते महाभाग ।^२ न ते किञ्चि न अच्चिमो ।

भुजाहि सालिम कूर नाणावजणसंजुयं ॥

३५-इम च मे अत्थि पभूयमन्न

त भुजसू अम्ह अणुग्गहट्टा ।

वाढ ति पडिच्छइ भत्तपाण

मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥

३६-तहिय गन्धोदयपुप्फवास

दिव्वा तर्हि वसुहारा य वुट्ठा ।

पहयाओ^३ दुन्दुहीओ सुरेहि

आगासे अहो दाणं च घुट्ठ ॥

३७-सक्ख खु दीसइ तवोविसेसो

न दीसई जाइविसेस कोई ।

‘मोवागपुत्ते हरिएससाहू’^४

जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा ॥

१-पुर्व्वि च पच्छा व तहेव मज्झे (वृ० पा०) , पुर्व्वि च पच्छा व अणागय च (चू०) ।

२-महाभाग । (अ, उ, ऋ) ।

३-पहया (उ, ऋ) ।

४-मोवागपुत्त हरिएससाहू (वृ० पा०) ।

३८-किं माहणा । जोइसमारभन्ता
उदण सोहि वहिया विमग्गहा ? ।

ज मग्गहा वाहिरिय विसोहिं
न तं सुदिट्ठं कुसला वयन्ति ॥

३९-कुस च जूव तणकट्टमग्गि
साय च पाय उदग फुसन्ता ।

पाणाइ भूयाइ विहेडयन्ता
भुज्जो वि मन्दा । पगरेह पावं ॥

४०-कह चरे ? भिक्खु । वय जयामो ?
पावाइ कम्माइ पणोल्लयामो ? ।

अक्खाहि णे सजय । जक्खपूइया ।
कहं सुजट्ठ कुसला वयन्ति ? ॥

४१-छज्जीवकाए असमारभन्ता
मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।

परिग्गह इत्थिओ माणमाय
एयं परिन्नाय चरन्ति^१ दन्ता ॥

४२-मुसवुडो^२ पचहिं सवरेहिं
इह जीवियं अणवकखमाणो^३ ।

वोसट्ठकाओ^४ मुइचत्तदेहो^५
महाजयं जयई जन्तसिट्ठं ॥

१-चरेज्ज (वृ०) चरन्ति (वृ० पा०) ।

२-सुसवुडा (उ, सु) ।

३-अणवकखमाणा (उ, सु) ।

४-वोसट्ठकाया (उ, सु) ।

५-सुइचत्तदेहा (उ सु) ।

४३—के ते जोई ? के व ते जोइठाणे ?

का ते सुया ? कि व^१ ते कारिसंगं ? ।

एहा य ते कयरा सन्ति ? भिक्खू ।

कयरेण होमेण हुणासि जोइं ? ॥

४४—तवो जोई जीवो जोइठाण

जोगा सुया सरीर कारिसग ।

कम्म एहा सजमजोगसन्ती

होम हुणामी इसिण पसत्थ ॥

४५—के ते हरए ? के य ते सन्तितित्थे ?

कहिंसि ण्हाओ व रय जहासि ? ।

आइक्ख णे सजय । जक्खपूइया ।

इच्छामो नाउ भवओ सगासे ॥

४६—धम्मे हरए वम्भे सन्तितित्थे

अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।

जहिसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो

सुसीडभूओ^२ पजहामि दोस ॥

४७—एय सिणाण कुसलेहि दिट्ठ

महासिणाण इसिण पसत्थ ।

'जहिसि ण्हाया'^३ विमला विसुद्धा

महारिसी उत्तम ठाण पत्त ॥

—त्ति वेमि ॥

१—च (उ व्र) ।

२—सुसीडभूओ (वृ० पा०) ।

३—जहिं सिणाया (अ, उ, व्र) ।

नेत्रं अक्षरं

चित्तमम्भुजं

१-जडि-राजिओ

दधु

कामि नियाणं तु हृत्विणपुग्मि ।

दुवगो

वन्मन्तो

उव्वत्तो

पउमगुम्माओ ॥

७-कम्मिल्ले

संभूओ

चित्तो युण जाओ पुग्गिताळमि ।

मेड्डिदुळमि

विमाले

वन्मं सोळम

पव्वइओ ॥

३-कम्मिदम्मि

अ

नगरे

मनापया दो वि चित्तमम्भुया ।

मुह्हुकज कळविदाणं

कहेन्ति

ते

गळमंअम्भ ॥

६-वड्डवट्टी

महिड्डिओ

वन्मन्तो

महायसो ।

भायरं

वहुमाणेणं

इमं

वयणमव्ववी ॥

५-आसिमो भायग दो वि

अन्नमन्नवमाणुगा ।

अन्नमन्नमणूरत्ता

अन्नमन्नहिणुसिणो ॥

६-असा वसणे आसी

मिया कालिजरे नगे ।

हमा

सयंगतीरे^१

नोवागा^२ कासिभूमिए ॥

^१ नयणीए (अ, उ, अ) ।

^२ वट्टा (उ अ) ।

७—देवा य^१ देवलोगम्मि आसि अम्हे महिड्ढिया ।

‘इमानो’^२ छट्ठिया जाई अन्नमन्नेण जा विणा ॥

८—कम्मा नियाणप्पगडा तुमे राय विचिन्तिया ।

तेसि फलविवागेण विप्पओगमुवागया ॥

९—सच्चसोयप्पगडा कम्मा मए पुरा कडा ।

ने अज्ज परिभुजामो किनुचित्ते विसेतहा ? ॥

१०—सव्व सुचिण्ण सफल नराण

कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।

अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहि

आया मम पुण्णफलोववेए ॥

११—जाणासि सभूय । महाणुभाग

महिड्ढिय पुण्णफलोववेय ।

चित्त पि जाणाहि तहेव राय ।

इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया ॥

१२—महत्थरूवा

वयणप्पभूया

गाहाणुगीया नरसघमज्जे ।

ज भिक्खुणो सीलगुणोववेया

‘इहज्जयन्ते समणो’^३ म्हि जाओ ॥

१३—उच्चोयाण महु कक्के य वम्भे

पवेइया आवसहा ‘य रम्मा’^४ ।

इम गिह् चित्तधणप्पभूय^१

पसाहि पच्चालगुणोववेय ॥

१—इ (उ) ।

२—इमने (वृ०) इमाना, (वृ० पा०) ।

३—इहज्जयन्ते समणो (चू० पा०) , इहज्जयन्ते सुमणो (वृ० पा०) ।

४—इत्थि रम्मा सुत्थि रम्मा व (वृ० पा०) ।

५—चित्तधणप्पभूय (वृ०) धनचित्तोववेय (चू०) , चित्तधणप्पभूय (वृ० पा०) ।

१४—नट्टेहि गीएहि य वाइएहि
नारीजणाइ परिवारयन्तो^१ ।

भुजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू ।
मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥

१५—त पुव्वनेहेण कयाणुराणं
नराहिवं कामगुणेषु गिद्ध ।

धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही
चित्तो इम वयणमुदाहरित्था^२ ॥

१६—सव्व विलविय गीय सव्व नट्टु विडम्बिय^३ ।
सव्वे आभरणा भारा सव्वे कामा दुहावहा ॥

१७—'वालाभिरामेषु दुहावहेसु
न त सुहं कामगुणेषु रायं ।

विरत्तकामाण तवोधणाणं
ज भिक्खुण सीलगुणे रयाणं ॥^४

१८—नरिद । जाई अहमा नराणं
सोवागजाई दुहओ गयाणं ।

जहि वय सव्वजणस्स वेस्सा
वसीय सोवागनिवेसणेषु ॥

१९—तीसे य जाईइ उ पावियाए
वुच्छामु सोवागनिवेसणेषु ।

सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा
इहं तु कम्माइं पुरेकडाइ ॥

१—परियारियतो (वृ० पा०) , परियारयतो (अ, उ, ऋ) ।

२—इहं (वृ०) , वयणं (वृ० पा०) ।

३—विडम्बा (उ, चू०) ।

४—इहं श्लोक चूमि में व्याख्यात नहीं है ।

२०—सो दाणि सिं राय । महाणुभागे
 महिड्ढिओ पुण्णफलोववेओ ।
 च्चइत्तु भोगाइ असासयाइं
 'आयाणहेउ अभिणिव्वमाहि'^१ ॥

२१—इह जीविए राय । असासयम्मि
 धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो ।
 मे सोयई मच्चुमुहोवणीए
 धम्म अकाऊण परसि लोए ॥

२२—जहेह सीहो व मिय गहाय
 मच्चू नरं नेइ हु अन्तकाले ।
 न तस्स माया 'व पिया व भाया'^२
 कालम्मि तम्मिसहरा^३ भवति ॥

२३—न तस्स दुक्ख विभयन्ति नाइओ
 न मित्तवग्गा न सुया न बन्धवा ।
 ण्णो सय पच्चणुहोड दुक्ख
 कत्तारमेव अणुजाइ कम्म ॥

२४—वेजा दूपय च चउप्पय च
 खेत्त गिहं धणधन्न च सव्व ।
 कम्मपवीओ^४ अवसो पयाड
 पर भव सुदर पावग वा ॥

१—आदाणमेउ अणुचितयाहि (च०) आदाण हेउ अभिणिव्वमाहि (चू० पा०) ;
 अदाणमेउ अणुचितयाहि (वृ० पा०) ।

२—न विद्य न भया (उ) ।

३—कम्ममत्त (उ) ।

४—कम्मपवीओ (उ) , कम्मपवीओ (ऋ) - कम्मपवीओ (अ) ।

२५—त इक्का तुच्छसरीग्ग से
चिईगय डहिय उ पावगेण ।
भज्जा य पुत्ता^१ वि य नायओ य
दायारमन्त अणुसकमन्ति ॥

२६—उवणिज्जई जीवियमप्पमाय
वण्ण जरा हरड नग्गस्स राय ।
पंचालराया । वयण मुणाहि
मा कासि कम्माड महालयाइ ॥

२७—अह पि जाणामि 'जहेह साहू'^२
ज मे तुम साहसि वक्कमेय ।
भोगा इमे सगकरा हवन्ति
जे दुज्जया अज्जो अम्हारिमेहि ॥

२८—हत्थिणपुरम्मि चित्ता दट्टूण नरवड महिड्ढिय ।
कामभोगेसु गिद्धेण नियाणममुह कड ॥

२९—तस्स मे अपडिकन्तस्स इम एयारिस फलं ।
जाणमाणो वि ज धम्म कामभोगेसु मुच्छिओ ॥

३०—नागो जहा पकजलावसन्नो
दट्ठु थल्ल नाभिससेड तीर ।
एव वय कामगुणेसु गिद्धा
न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥

१—दुत्तं (६०) ।

२—लो एत्थं साणे (६० पा० ३०) ।

- ३१—अच्चेड कालो तूरन्ति राडओ
 न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।
 उविच्च भोगा पुरिस चयन्ति^१
 दुम जहा खीणफल व पक्खी ॥
- ३२—‘जइ ता सि’^२ भोगे चडउ असत्तो
 अज्जाड कम्माड करेहि रायं । ।
 धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकम्पी
 तो होहिसि देवो टओ विउव्वी ॥
- ३३—न तुज्झ भोगे चडऊण बुद्धी
 गिद्धो सि आरम्भपरिग्गहेसु ।
 मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो
 गच्छामि राय । आमन्तिओ सि ॥
- ३४—पंचालराया वि य वम्भदत्तो
 साहुस्स तस्स^३ वयण अकाउ ।
 अणुत्तरे भुजिय कामभोगे
 अणुत्तरे सो नराए पविट्ठो ॥
- ३५—चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो
 उदग्गचारित्ततवो^४ महेसी ।
 अणुत्तर सजम पालइत्ता
 अणुत्तर सिद्धिगइं गओ ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—जहंति (चू०) ।

२—जइ तंसि (उ, वृ० पा०, ऋ), जइंसि (चू०) ।

३—तस्सा (अ, आ, इ, स) ।

४—उदत्त^० (चू०, वृ०, सु) ।

चउदसम अज्भयणं

उसुयारिज्जं

- १—देवा भवित्ताण पुरे भवम्मी
केई चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे
खाए समिद्धे मुरलोगरम्मे ॥
- २—सकम्मसेसेण पुराकएणं
कुलेसु दग्गेसु^१ य ते पसूया ।
निव्विण्णससारभया जहाय
जिणिन्दमगं सरण पवन्ता ॥
- ३—पुमत्तमागम्म कुमार दो वी
पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहोसुयारो
रायत्थ देवी कमलावई य ॥
- ४—जाईजरामच्चुभयाभिभूया^२
वहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
ससारचक्खस्स विमोक्खणट्ठा
दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥
- ५—पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स
सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइ
तहा मुचिण्ण तवसंजम च ॥

१—दग्गेसु (दू० दू०) ; उग्गेसु (उ) ।

२—^० भया निभूए (दू० पा०) ।

६—ते कामभोगेसु असज्जमाणा
 माणुम्सएसु जे यावि दिव्वा ।
 मोक्खाभिकर्खा अभिजायसड्ढा
 ताय उवागम्म इम उदाहु ॥

७—असासयं दट्ठु इम विहार
 बहुअन्नगय न य दीहमाउ ।
 तम्हा गिहसि न रउ ल्हामो
 आमन्तयामो चरिस्सामु माण ॥

८—अह तायगो तत्थ मुणीण तेसि
 तवस्स वाघायकर वयासी ।
 इम वय वेयविओ वयन्ति
 जहा न होई अमुयाण लोगो ॥

९—अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे
 पुत्ते पडिद्वप्प^१ गिहसि जाया । ।
 भोच्चाण भोए सह इत्थियाहि
 'आरण्णगा होह मुणी पसत्था'^२ ॥

१०—सोयग्गिणा आयगुणिन्धणेणं
 मोहाणिला पज्जलणाहिएण ।
 सतत्तभाव परित्तप्पमाण
 लोलुप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥

१—परिद्वप्प (वृ० पा०) ।

२—पच्छा वणप्पवेस पसत्थ (चू०) ।

११—पुरोहित्य त कमसोऽणुणन्त^१
 निमतयन्तं च मुए धणेणं ।
 जहक्कम कामगुणेहि^२ चैव
 कुमारगा ते पसमिक्ख वक्क ॥

१२—वेया अहीया न भवन्ति ताण
 भुत्ता दिया निन्ति तम तमण ।
 जाया य पुत्ता न हवन्ति ताण
 को णाम ते अणुमन्तेज्ज^३ गयं ॥

१३—खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा
 पणामदुक्खा अणियामनोक्खा ।
 ससारमोक्खम्य विपक्खमय्या
 न्वाणी अणन्याण उ कामभांगा ॥

- १६—धण पभूय सह इत्थियाहि
 सयणा तथा कामगुणा पगामा ।
 तव कए तप्पइ जस्स लोगो
 त सव्व साहीणमिहेव तुव्व ॥
- १७—धणेण कि धम्मधुराहिगारे
 सयणेण वा कामगुणेहि चैव ।
 समणा भविस्सामु गुणोहधारी
 वहिंविहारा अभिगम्म भिक्ख ॥
- १८—जहा य अग्गी अरणीउऽसन्तो
 खीरे घय तेल्लामहा तिल्लेसु ।
 एमेव जाया । सरीरसि सत्ता
 समुच्छई नासइ नावचिट्ठे ॥
- १९—नो इन्दियग्गेज्ज अमुत्तभावा
 अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
 अज्जत्थहेउ निययऽस्स वन्धो
 ससारहेउ च वयन्ति वन्ध ॥
- २०—जहा वय धम्ममजाणमाणा
 पाव पुरा कम्ममकासि मोहा ।
 ओरुज्जमाणा परिरक्खियन्ता
 त नेव भुज्जो वि समायरामो ॥
- २१—अब्भाहयमि लोगमि सव्वओ परिवारिए ।
 'अमोहाहि पडन्तीहि'^१ गिहसि न रइ लभे ॥
- २२—केण अब्भाहओ लोगो ? केण वा परिवारिओ ? ।
 का वा अमोहा वुत्ता ? जाया । चिंतावरो हुमि ॥

१—अमोहायए पत्तीहिं (उ) ।

- २३-मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो जराए परिवारिओ ।
 अमोहा रयणी वुत्ता एव ताय । वियाणह ॥
- २४-जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।
 अहम्मं कुणमाणस्स अफला जन्ति राइओ ॥
- २५-जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।
 धम्मं च कुणमाणस्स सफला जन्ति राइओ ॥
- २६-एगओ संवसित्ताणं दुहओ सम्मत्तसजुया ।
 पच्छाजाया ! गमिस्सामो भिक्खमाणा कुले कुले ॥
- २७-जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं जस्स वऽत्थि^१ पलायण ।
 जो जाणे न मरिस्सामि सो हु कखे मुए सिया ॥
- २८-अज्जेव धम्म पडिवज्जयामो
 जहि पवन्ना न पुणवभवामो ।
 अणागयं नेव य अत्थि किञ्चि
 सद्धाखम णे विणइत्तु गग ॥
- २९-पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो
 वासिट्ठि । भिक्खायरियाइ कालो ।
 साहाहि ख्खो ल्हए समाहि
 छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणु ॥
- ३०-पखाविहूणो व्व^३ जहेह^२ पक्खी
 भिच्चाविहूणो^४ व्व^३ ग्णे नग्गिन्दो ।
 विवन्नसारो वणिओ व्व पोए
 पहीणपुत्तो मि तथा अह पि ॥

१-च्युत्थि (ऋ) ।

२-इ (उ, ऋ) ।

३-जहेह (उ, उ, ऋ) ।

४-भिच्चविहीणु (ऋ) , भिच्चविहीणु (उ)

३६-नहेव कुचा समइकमन्ता
 तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।
 पलेन्ति पुत्ता य पई य मज्ज
 'ते ह'^१ कह नाणुगमिस्समेक्का ? ॥

३७-पुरोहिय त समुय सदार
 सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
 कुडुम्बसार विउलुत्तम त
 राय अभिक्ख समुवाय देवी ॥

३८-वन्तासी पुरिसो राय । न सो होइ पसंमिओ ।
 माहणेण परिच्चत्त धण आदाउमिच्छसि ॥

३९-सव्व जग जइ तुहं सव्व वावि धणं भवे ।
 सव्व पि ते अपज्जत्त नेव ताणाय त तव ॥

४०-मरिहिसि राय । जया तया वा
 मणोरमे कामगुणे पहाय^२ ।
 एषो हु धम्मो नरदेव । ताण
 न विज्जई अन्नमिहेह किच्चि ॥

४१-नाह रमे पक्खणि पजरे वा
 सताणद्धिन्ता चरिस्सामि मोण ।
 अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा
 परिग्गहारम्भनियत्तदोसा ॥

४२-द्वग्गिणा जहा रणे डज्जमाणेनु जन्तुनु ।
 अन्ने सत्ता पमोयन्ति रागद्वोसवन्न गया ॥

१-स (उ, चू०) तोह (उ) ।

२-स (चू०) ।

५२-सासणे विगयमोहाणं पुव्वि भावणभाविया ।

अचिरेणेव कालेण दुक्खस्सन्तमुवागया ॥

५३-राया सह देवीए माहणो य पुरोहिओ ।

माहणी दारगा चेव सव्वे ते परिनिव्वुड' ॥

—त्ति वेमि ॥

पनरसमं अज्मयणं

सभिक्खुयं

- १-मोण चरिस्सामि^१ समिच्च धम्म
सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ते ।
संथवं जहिज्ज अकामकामे
अन्नायएसी परिव्वए जे स भिक्खू ॥
- २-राओवरय^२ चरेज्ज लाढे
विग्ग वेयवियाऽऽयरक्खिए ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी
जे कम्महिचि^३ न मूच्छिए स भिक्खू ॥
- ३-अओसवह विट्ठु धीरे
मुणो चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
अव्वग्गमणे असपहिट्ठे
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥
- ४-पन्नं सयणासण भइत्ता
सीउण्ह विविह च ढसमसगं ।
अव्वग्गमणे असपहिट्ठे
जे कसिण अहियासए स भिक्खू ॥
- ५-नो सक्खियमिच्छई न पूयं
नो वि य वन्दणगं कुओ पसंसं ।
से सजए मुव्वए तवस्सी
नहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥

१-चरिस्सामो (वृ०) ।

२-राओवरय (वृ०) राओवरय (वृ० पा०) ।

३-कम्महि वि (अ, उ, ऋ) ।

६—जेण पुण जहाइ जीविय
 मोहं वा कसिण नियच्छई ।
 नरनारिं पजहे सया तवस्सी
 न य कोऊहल उवेड स भिक्खू ॥

७—छिन्न सरं भोम अन्तलिक्व
 सुमिणं लक्खणदण्डवत्थुविज्ज ।
 अगवियार सरस्स विजय
 जो विज्जाहि न जीवड स भिक्खू ॥

८—मन्त मूल विविह वेज्जचिन्त
 वमणविरेयणधूमणेत्तसिणाण ।
 आउरे सरण तिगिच्छिय च
 त पग्गिन्नाय पग्गिच्चाण स भिक्खू ॥

९—खत्तियगणउग्गरायपुत्ता
 माहणभोउय विविहा 'य निप्पिणो' ।
 नो तेसि वयड' मिलोगपूय
 त पग्गिन्नाय पग्गिच्चाण स भिक्खू ॥

१०—गिहिणो जे पव्वउण विट्ठा
 अण्णव्वउण व मय्या त्रियण ।

११—सयणासणपाणभोयणं

विविहं खाइमसाइम परेसि ।

अदए पडिसेहिए नियण्ठे

जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू ॥

१२—ज किच्चि आहारपाणं विविह

खाइमसाइम परेसि लद्धु ।

जो त तिविहेण नाणुकम्पे

मणवयकायसुसवुडे स भिक्खू ॥

१३—आयामग चेव जवोदण च

‘सीय च सोवीरजवोदगं च’^१ ।

नो हीलए पिण्ड नीरस तु

पन्तकुलाइ परिव्वए स भिक्खू ॥

१४—सदा विविहा भवन्ति लोए

दिव्वा ‘माणुस्सगा तथा तिरिच्छा’^२ ।

भीमा भयभेरवा उराला

जो सोच्चा न वहिज्जई^४ स भिक्खू ॥

१५—वाद विविह समिच्च लोए

सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।

पन्ने अभिभूय सव्वदसी

उवसन्ते अविहेडए^५ स भिक्खू ॥

१—वाहार^० (अ) ।

२—सीय सुवीर च जवोदग च (स, सु) ।

३—माणुस्सया तिरिच्छा य (चू०) ।

४—वहिए (उ) ।

५—उविहेडए (उ) ।

१६-असिप्पजीवी^१ अगिहे अमित्ते
जिइन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहुअप्पभक्खी
चेच्चा गिह एगचरे स भिक्खू ॥
—त्ति वेमि ॥

*

सोलसम अज्जम्भयण

बम्भचेरसमाहिठाणं

सू० १—सुय मे, आउस । तेण भगवया एवमक्खायं—

इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, सजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

सू० २—कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ? जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, सजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ?

सू० ३—इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमबहुले, सवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा, त जहा—‘वित्ताइ सयणासणाइ सेविज्जा^१, से निग्गन्थे ।’^२ नो इत्थीपसुपण्डगससत्ताइ सयणासणाइ सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

त कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीपमुपण्डगससत्ताइ सयणासणाइ सेवमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा, कखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ ‘वा धम्माओ’^३ भमेज्जा । तम्हा नो इत्थीपसुपण्डगससत्ताइ सयणासणाइ सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

१—सेविज्जा हवइ (उ) ।

२—“वित्ताइ सयणासणाइ सेविज्जा से निग्गन्थे” इतना पाठ चूर्णि में नहीं है ।

३—धम्माओ (उ, इ) ।

सू० ८-नो इत्थीण कह कहित्ता हवइ, से निगन्थे ।

त कहमिति चे ?

आयगियाह-निगन्थस्स खलु इत्थीण कह कहेमाणस्स, वम्भयारिस्स वम्भचेरे सका वा, कखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्यज्जिजा, भेय वा लभेजा, उम्मायं वा पाउणिजा, दीहकालिय वा गोगायक हवेजा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेजा । 'तम्हा नो इत्थीण' कह कहेजा ।

सू० ५-नो इत्थीहिं सद्धि सन्निसेजागए विहरित्ता हवइ, से निगन्थे ।

त कहमिति चे ?

आयगियाह-निगन्थस्स खलु इत्थीहिं सद्धि सन्निसेजागयस्स, वम्भयारिस्स वम्भचेरे संका वा, कखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्यज्जिजा, भेय वा लभेजा, उम्माय वा पाउणिजा, दीहकालिय वा गोगायक हवेजा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेजा । तम्हा पट्टं नो निगन्थे इत्थीहिं सद्धि सन्निसेजागए विहरेजा ।

सू० ६-नो इत्थीण इन्दियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोइत्ता, निग्गात्ता हवट, से निगन्थे ।

त कहमिति चे ?

आयगियाह -- निगन्थस्स खलु इत्थीण इन्दियाइ मणोहराइ, मणोरमाइ आलोइत्ताणस्स निग्गायमाणस्स वम्भयारिस्स वम्भचेरे सजा वा कम्म वा वित्तिगिच्छा वा समुप्यज्जिजा, भेयं वा लभेजा उम्मायं वा पाउणिजा दीहकालिय वा गोगायक हवेजा केवलि-

पन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु 'निगन्थे नो'^१ इत्थीण
इन्दियाइ मणोहराइ, मणोरमाइ आलोएज्जा, निज्भाएज्जा ।

सू० ७—नो इत्थीणं कुडुन्तरंसि वा, दूसन्तरसि वा, भित्तन्तरसि
वा, कुइयसद्दं वा, रुइयसद्दं वा, गीयसद्द वा, हसियसद्द वा,
थणियसद्द वा, कन्दियसद्द वा, विलवियसद्द वा, सुणेत्ता हवइ से
निगन्थे ।

त कहमिति चे ?

आयरियाह—निगन्थस्स खलु इत्थीण 'कुडुन्तंसि वा,
दूसन्तरसि वा, भित्तन्तरसि^२ वा'^३, कुइयसद्द वा, रुइयसद्दं वा,
गीयसद्द वा, हसियसद्द वा, थणियसद्दं वा, कन्दियसद्द वा,
विलवियसद्द वा, सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा,
कखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय
वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ
वा धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु निगन्थे नो इत्थीण कुडुन्तरसि
वा, दूसन्तरसि वा, भित्तन्तरसि वा, कुइयसद्दं वा, रुइयसद्द वा,
गीयसद्द वा, हसियसद्दं वा, थणियसद्द वा, कन्दियसद्दं वा,
विलवियसद्द वा सुणेमाणे विहरेज्जा ।

सू० ८—नो निगन्थे पुव्वरय, पुव्वकीलिय अणुसरित्ता हवइ, से
निगन्थे ।

त कहमिति चे ?

आयरियाह—निगन्थस्स खलु पुव्वरय^४, पुव्वकीलिय
अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा, कंखा वा,

१—नो निगन्थे (अ) ।

२—भित्ति अतरसि वा (अ, ऋ), भित्तितरसि (उ) ।

३—कुडुन्तरसि वा भित्तन्तरसि वा दूसन्तरसि वा (चू०, स) , कडुतरसि वा^० (अ) ।

४—इत्थीण पुव्वरय (उ, ऋ) ।

वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक ह्वेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे पुव्वरय पुव्वकीलियं अणसरेज्जा ।

सू० ९-नो पणीय आहार आहारित्ता ह्वइ, से निग्गन्थे ।

त कहमिति चे ?

आयग्गियाह-निग्गन्थस्स खलु पणीय पाणभोयणं आहारेमाणस्स व्रम्भयारिस्स व्रम्भचेरे संका वा, कखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक ह्वेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे पणीय आहार आहारेज्जा ।

सू० १०-नो अइमायाए पाणभोयण आहारेत्ता ह्वइ, से निग्गन्थे ।

त कहमिति चे ?

आयग्गियाह-निग्गन्थस्स खलु अइमायाए पाणभोयण आहारे-माणस्स व्रम्भयारिस्स व्रम्भचेरे संका वा, कखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक ह्वेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे अइमायाए पाणभोयण भुजिज्जा ।

सू० ११-नो विभूसाणुवाडि ह्वइ, से निग्गन्थे ।

त कहमिति चे ?

आयग्गियाह-विभूसावत्तिए^१, विभूसियसरीरे इत्थिज्जणस्स अणिससिज्जे ह्वइ । तओ णं तस्म इत्थिज्जणेणं अभिलसिज्जमाणस्स

वम्भचेरे सका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे विभूसाणुवाई सिया ।

सू० १२—नो सद्वररसगन्धफासाणुवाई हवइ, से निग्गन्थे ।

त कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु सद्वररसगन्धफासाणुवाइस्स वम्भयारिस्स वम्भचेरे सका वा, कखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे सद्वररसगन्धफासाणुवाई हविज्जा । दसमे वम्भचेरसमाहिठाणे हवइ ।

भवन्ति इत्थं सिलोगा, तं जहा—

- १—ज विवित्तमणाइण्ण रहिय थीजणेण य ।
वम्भचेरस्स रक्खट्ठा आलय तु निसेवए ॥
- २—मणपल्हायजणणि कामरागविवड्ढणि ।
वम्भचेरओ भिक्खू थीकह तु विवज्जए ॥
- ३—समं च सथव थीहिं सकह च अभिक्खण ।
वम्भचेरओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥
- ४—अगपच्चगसठाण चारुह्वियपेहिय ।
वम्भचेरओ थीण^१ चक्खुमिज्झ विवज्जए ॥
- ५—कुडय रुडय गीय हसिय थणियकन्दिय ।
वम्भचेरओ थीण सोयगिज्झं विवज्जए ॥

- ६-‘हास किड्ड रइ दप्पं सहसाऽवत्तासियाणि^१ य’^२।
 वम्भचेररओ थीण नाणुचिन्ते कयाइ वि ॥
- ७-पणीय भत्तपाण तु^३ खिप्प मयविवड्डण ।
 वम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥
- ८-धम्मलद्ध^४ मिय काले जत्तत्थ पणिहाणव ।
 नाइमत्त तु भुजेज्जा वम्भचेररओ सया ॥
- ९-विभूस परिवज्जेज्जा सरीरपरिमण्डण ।
 वम्भचेररओ भिक्खू सिगारत्थ न धारए ॥
- १०-सट्टे ह्वे य गन्धे य रसे फासे तहेव य ।
 पच्चविहे कामगुणे निच्चसो परिवज्जए ॥
- ११-आलओ थीजणाइण्णो थीकहा य मणोरमा ।
 मथवो चेव नारीण तासिं इन्द्रियदरिसण ॥
- १२-कुडय रुइय गीय हसिय^५ भुत्तासियाणि य ।
 पणीय भत्तपाण च अइमाय^६ पाणभोयणं ॥
- १३-गतभूमणमिट्ट च कामभोगा य दुज्जया ।
 नरम्मऽनगवेमिस्स विस तालउड जहा ॥
- १४-दुज्जण कामभोगे य निच्चसो परिवज्जए ।
 मरुट्टाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा^७ पणिहाणवं ॥

१-सहसाऽवत्ता^० (क्र) सहभुत्ता^० (अ) ।

२-हास दप्पं रइ किड्ड सहभुत्ता^० (वृ० पा०) ।

३-च । ३

- १५—धम्मारामे चरे भिक्खू धिइम धम्मसारही ।
 धम्मारामरए दन्ते बम्भचेरसमाहिए ॥
- १६—देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा ।
 बम्भयारिं नमसन्ति दुक्कर जे करन्ति त^१ ॥
- १७—एस धम्मे धुवे निअए सासए जिणदेसिए ।
 सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण सिज्झिस्सन्ति तहापरे ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

सनरसम अज्भयण

पावसमणिज्जं

- १-जे 'के इमे'^१ पव्वडए नियण्ठे
 धम्म मुणिता विणओववन्ते ।
 सुदुल्लह लहिउ वोहिलाभ ।
 विहरेज्ज पंच्छा य जहामुह तु ॥
- २-सेज्जा दढा पाउरण मे अत्थि
 उप्पज्जई भोत्तु^२ तहेव पाउ ।
 जाणामि जं वट्टइ आउमु । त्ति
 किं नाम काहामि मुण्ण भन्ते । ॥
- ३-जे के इमे पव्वडए निदासीले पगामनो ।
 भोच्चा पेच्चा मुह मुवड^३ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ४-आयरियउवज्जाएहिं मुय विणय च गाहिण ।
 ते चेव ग्विसई वाले पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ५-आयरियउवज्जायाणं सम्म नो पट्ठिप्पड ।
 अप्पट्ठिप्पयाग थट्ठे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ६-सम्मद्वमाणं पाणाणि वीयाणि हुरियाणि य ।
 असज्जा सजयमत्तमाणं पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ७-सयार फल्लग पीट निमेज्ज पायकन्धर ।
 अप्पमज्जियमारुहड पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

- ८—दवदवस्स चरई पमत्ते य अभिक्खण ।
उल्लघणे य चण्डे य पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ९—पडिलेहेइ पमत्ते अवउज्झइ पायकम्बल ।
पडिलेहणाअणाउत्ते^१ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १०—पडिलेहेइ पमत्ते से किञ्चि हु निसामिया ।
गुरुपरिभावए^२ निच्च पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ११—बहुमाई पमुहरे^३ थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
असविभागी अचियत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १२—विवाद च उदीरेइ अहम्मे अत्तपन्नहा^४ ।
वुग्गहे कलहे रत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १३—अथिरासणे कुक्कुईए जत्थ तत्थ निसीयई ।
आसणम्मि अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १४—ससग्क्वपाए मुवई सेज्ज न पडिलेहेइ ।
सथाग्ग अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १५—दुइदहीविगईओ आहारेइ अभिक्खण ।
अग्ग य तवोकम्मे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १६—अत्थन्नम्मि य मूरम्मि आहारेइ अभिक्खण ।
चोटओ पडिचोएइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १७—आयग्गियपग्गिचोई पग्पासण्डसेवए ।
गाणगणिए दुवभूए पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१—पडिलेहेइ (८) ।

२—गुरुपरिभावए (७) गुरुपरिभासए (वृ०) , गुरुपरिभावए (वृ० पा०) ।

३—बहुमाई (६ वृ ७) ।

४—अत्तपन्नहा (वृ०) अत्तपन्नहा (वृ० पा०) ।

५—अत्तपन्नम्मि (वृ० पा०) ।

१८-सद्य गेह परिचज्ज पग्गेहसि वावडे' ।

निमित्तेण य ववहरई पावसमणि त्ति वृन्दे ॥

१९-सन्नाडपिण्ड जेमेड नेच्छई सामुदाणिय ।

गिहिनिसेज्ज च वाहेड पावसमणि त्ति वृन्दे ॥

२०-एयारिसे पचकुसीलसवुडे

ह्वधरे मुणिपवराण हेडिमे ।

अयसि लोए विसमेव गरहाण

त मे उह नेव परत्थ लोए ॥

२१-जे वज्जए एण सया उ द्रोमे

मे मुब्बए होड मुणीण मज्जे ।

अयसि लोए असय व पूण

आगहाण 'दुहओ लोगमिण' ॥

—नि वेमि ॥

अट्टारसम अज्भयण

संजइज्जं

उक्खेव-पद

- १—कम्पिल्ले नयरे राया उदिण्णबलवाहणे ।
नामेण सजए नाम मिगव्व उवणिग्गए ॥
- २—हयाणीए गयाणीए रहाणीए तहेव य ।
पायत्ताणीए महया सव्वओ परिवारिए^१ ॥
- ३—मिए छुभित्ता ह्यगओ कम्पिल्लुज्जाणकेसरे ।
भीए सन्ते मिए तत्थ वहेइ रसमुच्छिए ॥
- ४—अह केसरम्मि उज्जाणे अणगारे तवोधणे ।
सज्झायज्झाणजुत्ते धम्मज्झाणं भियायई ॥
- ५—अफोवमण्डवम्मि फायई भवियासवे^२ ।
तम्मागए मिए पास वहेई से नराहिवे ॥
- ६—अह आसगओ गया खिप्पमागम्म सो तहि ।
हए मिए उ पासित्ता अणगार तत्थ पासई ॥
- ७—अह राया तत्थ सभन्तो अणगारो मणाऽऽहओ ।
माए उ मन्दपुण्णेण रसगिट्ठेण वन्तुणा^३ ॥
- ८—आन विमज्जत्ताण अणगारस्स सो निवो ।
विणण्ण वन्दाए पाए भगव । एत्थ मे खमे ॥
- ९—अह मोण्णेण नो भगव अणगारे फाणमस्सिए ।
नायाण न पटिमन्नेड तओ गया भयट्ठओ ॥

- १०-सजओ अहमम्मीति भगव । वाहराहि मे ।
 कुट्टे त्तेण अणगारे डहेज्ज नरकोडिओ ॥
 ११-अभओ 'पत्थिवा । तुवभ अभयदाया भवाहि य ।
 अणिच्चे जीवलोगम्मि कि हिंसाए पसज्जसि ? ॥

मवोहि-पद

- १२-जया सव्व परिच्चज्ज गन्तव्वमवसस्स ते ।
 अणिच्चे जीवलोगम्मि कि रज्जम्मि^१ पसज्जसि ? ॥
 १३-जीविय चेव इवं च विज्जुसपायचचल ।
 जत्य त मुज्झसी राय पेच्चत्थ नाववुज्झसे ॥
 १४-'दागणि य सुया चेव मित्ता य तह वन्धवा ।
 जीवन्तमणुजीवन्ति मय नाणुव्वयन्ति य ॥^३
 १५-नीहरन्ति मय पुत्ता पियर परमदुक्खिया ।
 पियरो वि तहा पुत्ते वन्धू राय । तव चरे ॥
 १६-तओ तेणऽज्जिए डव्वे दारे य परिरक्खिए ।
 कीरन्तऽन्ते नरा राय । हट्टतुट्टमलकिया ॥
 १७-तेगावि ज कय कम्म मुह वा जड वा दुह ।
 तम्मुगा तेण सजुत्तो गच्छई उ पर भव ॥

नयन्मि-पद

- १८-सोऽज्जा तन्ना नो धम्मं अणगाग्गम् अन्तिए ।
 नराय नयंनित्थंय समावन्नो नराद्विओ ॥

- १९-सजओ चइउ रज्ज निक्खन्तो जिणसासणे ।
 गद्दभालिस्स भगवओ अणगारस्स अन्तिए ॥
- २०-चिच्चा रट्ट पव्वइए खत्तिए परिभासइ ।
 जहा ते दीसई ख्व पसन्न ते तहा मणो ॥
- २१-किनामे ? किंगोत्ते ? कस्सट्टाए व माहणे ? ।
 कह पडियरसी बुद्धे ? कह विणीए त्ति बुच्चसि' ? ॥
- २२-सजओ नाम नामेण तहा गोत्तेण गोयमे ।
 गद्दभाली ममायरिया विज्जाचरणपारगा ॥
- २३-किरिय अकिरिय विणय
 अन्नाण च महामुणी ! ।
 एएहि चउहि ठाणेहि
 मेयन्ने' कि पभासई ? ॥
- २४-उड पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुडे ।
 विज्जाचरणसपन्ने सच्चे सच्चपरक्कमे ॥
- २५-पडन्ति नरए घोरे जे नरा पावकारिणो ।
 दिव्व च गइ गच्छन्ति चरित्ता धम्ममारिय ॥
- २६-मायावुडयमेय तु मुसाभासा निरत्थिया ।
 नजममाणो वि अह वसामि इरियामि य ॥^३
- २७-सच्चे ते विडया मज्झ मिच्छादिट्ठी अणारिया ।
 विज्जमाणे परे लोए सम्मं जाणामि अप्पग ॥
- २८-अहमासी महापाणे जुडम वरिससओवमे ।
 जा ना पाळो महापाली दिव्वा वरिससओवमा ॥

- २०.—ने चुए' वम्भलोगाओ माणुस्स भवमागए ।
अप्पणो य परेसिं च आउ जाणे जहा तथा ॥
- २०.—नाणारुड च छन्द च परिवज्जेज्ज सजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था इड विज्जामणुसचरे ॥
- २१.—पडिक्कमामि पसिणाण परमन्तेहिं वा पुणो ।
अहो उट्टिए अहोराय इइ विज्जा तव चरे ॥
- २२.—ज च मे पुच्छसी काले सम्म सुद्धेण^२ चेयसा ।
ताड पाउकरे बुद्धे त नाण जिणसासणे ॥
- २३.—किरिय च रोयए धीरे अकिरिय परिवज्जए ।
दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने धम्म चर सुट्ठुच्चर ॥
- २४.—एय पुण्णपय सोच्चा अत्थधम्मोवसोहिय ।
भरहो वि भारह वास चेच्चा कामाइ पव्वए ॥
- २५.—सगरो वि सागरन्त भरहवास तराहिवो ।
उत्तरिय केवल हिच्चा दयाए परिनिव्वुडे^३ ॥
- २६.—चइत्ता भारह वासं चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
पव्वज्जमन्नुवगओ मघव नाम महाजसो ॥
- २७.—मणकुमानो मणुस्सिन्दो चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
पुन ग्जे ठवित्ताण' तो वि गया तव चरे ॥
- २८.—चइत्ता भारह वास चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
गन्ती मन्निक्करे कोण पनो गइमणुत्तर ॥

- ३९—इक्खागरायवसभो कुन्थू नाम नराहिवो ।
 विक्खायकित्तो धिडम' 'मोक्ख गओ अणुत्तर' ॥
- ४०—सागरन्त जहित्ताण' 'भरह वास नरीसरो' ५ ।
 अरो य अरय' पत्तो पत्तो गइमणुत्तर ॥
- ४१—चइत्ता भारह वास चक्कवट्टी नराहियो ६ ।
 चइत्ता उत्तमे भोए महापउमे तव चरे ॥
- ४२—एगच्छत्त पसाहित्ता महि माणनिसूरणो ।
 हरिसेणो मणुस्सिन्दो पत्तो ७ गइमणुत्तर ॥
- ४३—अग्निओ रायसहस्सेहि सुपरिच्चाई दम चरे ।
 जयनामो जिणक्खाय पत्तो ८ गइमणुत्तर ॥
- ४४—दसण्णग्ज्ज मुइय चइत्ताण मुणी चरे ।
 दमण्णग्दो निक्खन्तो सक्ख सक्केण चोइओ ॥
 | नमी नमेट अप्पाण सक्ख सक्केण चोइओ ।
 चइऊण गेह वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥] ९
- ४५—तग्गण्णु कलिगेमु पचालेसु य दुम्महो १० ।
 नमी राया विदेहेमु गन्धारेसु य नग्गई ॥

१६-पापं तस्मिन्वसभा निकवन्ता जिणत्तानणे ।

पुत्ते रज्जे ठवित्ताणं गामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥

१७-सवीरगायवसभो चेच्चा रज्ज मृणो चरे ।

उदायणो पव्वडओ पत्तो गम्मणत्तर ॥

१८-तहेव कासीराया मेओरच्चपरम्ममे ।

कामभोगे पग्गिच्चज पहणे कम्ममहावण ॥

१९-तहेव विजओ गया 'अणट्ठाकिन्ति पव्वण' ।

रज्ज तु गुणम्मिट्ठ पयहित्तु महाजत्तो ॥

२०-तहेवृग्गं तव किच्चा अव्वक्खित्तेण चयत्ता ।

महावत्तो गयस्सि अहाय निग्गानिग्ग ॥

निग्गवेव पट्ठ

२१-इह धीरो अट्ठेइहि उम्मत्तो च्च माहि चरे ॥

पापं विनेत्तमादाय सुगं दट्ठपरम्ममा ॥

२२-अच्चन्तित्तिराणव्वमा नच्चा मे भानिग्ग वट्ठे ।

अत्तग्गिनु तस्सिणे तस्सिन्तत्ति अयापया ।

१-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१-२२-२३-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१-३२-३३-३४-३५-३६-३७-३८-३९-४०-४१-४२-४३-४४-४५-४६-४७-४८-४९-५०-५१-५२-५३-५४-५५-५६-५७-५८-५९-६०-६१-६२-६३-६४-६५-६६-६७-६८-६९-७०-७१-७२-७३-७४-७५-७६-७७-७८-७९-८०-८१-८२-८३-८४-८५-८६-८७-८८-८९-९०-९१-९२-९३-९४-९५-९६-९७-९८-९९-१००

५३—कहं धीरे अहेऊहि अत्ताण^१ परियावसे ? ।
 सव्वसगविनिम्मुक्के सिद्धे हवइ नीरणे ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

मृगुणविसडम अज्भयण

मियापुतिज्जं

उक्खेव-पद

- १—युगीत्रे नयरे रस्मे काणणुज्जाणसोहिए ।
गया वलभदो त्ति मिया तस्सग्गमाहिसी ॥
- २—तेमि पुत्ते वलसिरी मियापुत्ते त्ति विस्सुए ।
अम्मापिऊण दडए जुवराया दमीसरे ॥
- ३—नन्दणे सो उ पासाए कीलए^१ सह इत्थिहि ।
देवां दोगुन्दगो चेव निच्च मुइयमाणसो ॥
- ४—मणिरयणकुट्टिमतले पासायालयणट्टिओ ।
आलाण्ड नगरस्स चउककतियचच्चरे ॥
- ५—अह तत्थ अडच्छत्त पासई समणसजय ।
तव नियमनजमधर सीलड्ढ गुणआगर ॥
- ६—न देहई मियापुत्ते दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
ग्घि मन्नेग्गिं स्सं दिट्ठपुच्च मए पुरा ॥
- ७—सात्तत्त दग्गिणं नम्म अज्भवसाणम्मि सोहणे ।
सोत्तगयम्म मन्तम्म जाईनग्गण समुप्पन्तं ॥
| उक्खेव च्चुआं नतो माणुन भवमाणओ ।
सत्तिसाणं सम्मुत्तये जाउ मरड पुगणय ॥]^२
- ८—जाईनग्गणे सम्मुत्तये मियापुत्ते महिड्ढिण ।
सत्तिसाणं च्चुआं नतो माणुन भवमाणओ ॥

- ९-विसएहि अरज्जन्तो रज्जन्तो सजमम्मि य ।
अम्मापियर उवागम्म इमं वयणमब्बवी ॥
- १०-सुयाणि मे पच्च महव्वयाणि
तरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।
निव्विण्णकामो मि^१ महण्णवाओ
अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो । ॥
- ११-अम्मताय । मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा ।
पच्छा कडुयविवागा अणुबन्धदुहावहा ॥
- १२-इम सरीर अणिच्च असुइ असुइसभव ।
असासयावासमिणं दुक्खकेसाण भायण ॥
- १३-असासए^२ सरीरम्मि रइ नोवलभामह ।
पच्छा पुरा व चइयव्वे फेणबुब्बुयसन्निभे ॥
- १४-माणुसत्ते असारम्मि वाहीरोगाण आलए ।
जरामरणघत्थम्मि खणं पि न रमामऽह ॥

दुक्ख-पद

- १५-जम्म दुक्ख जरा दुक्ख रोगा य मरणाणि य ।
अहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसन्ति जन्तवो^३ ॥
- १६-खेत्त वत्थु हिरण्णं च पुत्तदार च बन्धवा^४ ।
चइत्ताण इमं देह गन्तव्वमवसस्स मे ॥
- १७-जहा किम्पागफलाण परिणामो न सुन्दरो ।
एव भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुन्दरो ॥

१-हि (स) ।

२-असासए (अ, उ) ।

३-जन्तुणो (आ, ऋ) पाणिणो (उ, स) ।

४-उधव (उ) ।

- २८-विरई अबम्भचेरस्स कामभोगरसन्नुणा ।
 उग महव्वय बम्भ धारेयव्व सुदुक्कर ॥
- २९ धणधन्नपेसवग्गेसु परिग्गहविवज्जणं^१ ।
 सव्वारम्भपरिच्चाओ निम्ममत्त सुदुक्कर ॥
- ३०-चउव्विहे वि आहारे राईभोयणवज्जणा ।
 सन्निहीसंचओ चेव वज्जेयव्वो सुदुक्करो^२ ॥

दुक्कर-पद

- ३१-छुहा तण्हा य सीउण्ह दसमसगवेयणा ।
 अक्कोसा दुक्खसेज्जा य तणफासा जल्लमेव य ॥
- ३२-तालणा तज्जणा चेव वह्वन्धपरीसहा ।
 दुक्ख भिक्खायरिया जायणा य अलाभया ॥
- ३३-कावोया जा इमा वित्ती केसलोओ य दारुणो ।
 दुक्ख बम्भवय घोर धारेउ अ महप्पणो ॥
- ३४-सुहोइओ तुमं पुत्ता । सुकुमालो सुमज्जिओ ।
 न हुसी पभू तुम पुत्ता । सामणमणुपालिउ ॥
- ३५-जावज्जीवमविस्सामो गुणाण तु महाभरो ।
 गुरुओ लोहभारो व्व जो पुत्ता । होइ दुक्वहो ॥
- ३६-आगासे गगसोउ व्व पडिसोओ व्व दुत्तरो ।
 वाहाहिं सागरो चेव तरियव्वो गुणोयही ॥
- ३७-वालुयाकवले^३ चेव निरस्साए उ^४ संजमे ।
 असिधारागमण चेव दुक्कर चरिउं तवो ॥

१-^० विवज्जणा (आ, इ, ऋ) ।

२-सुदुक्कर (उ) ।

३-^० कवला (अ) ।

४-व (उ) ।

- ३८—अहीवेगन्तदिट्ठीए चरित्ते पुत्त दुच्चरे ।
जवा लोहमया चेव चावेयव्वा सुदुक्कर ॥
- ३९—जहा अग्गिसिहा दित्ता पाउ होइ सुदुक्करं^१ ।
तह दुक्कर करेउ जे तारुण्णे समणत्तण ॥
- ४०—जहा दुक्ख भरेउ जे होइ वायस्स कोत्थलो ।
तहा दुक्ख करेउं जे कीवेण समणत्तण ॥
- ४१—जहा तुलाए तोलेउं दुक्कर मन्दरो गिरी ।
तहा निहुय नीसंक दुक्कर समणत्तण ॥
- ४२—जहा भुयाहिं तरिउ दुक्कर रयणागरो ।
तहा अणुवसन्तेण दुक्करं^२ दमसागरो ॥
- ४३—भुज माणुस्सए भोगे पचलक्खणए तुम ।
भुत्तभोगी तओ जाया । पच्छा धम्म चरिस्ससि ॥
- ४४—‘त वित्तं ऽम्मापियरो’^३ एवमेय जहा फुड ।
इह लोए निप्पिवासस्स नत्थि किच्चि वि दुक्कर ॥

भवदुक्ख-पद

- ४५—सारीरमाणसा चेव वेयणाओ अणन्तसो ।
मए सोढाओ भीमाओ असइ दुक्खभयाणि य ॥
- ४६—जरामरणकन्तारे चाउरन्ते भयागरे ।
मए सोढाणि भीमाणि जम्माणि मरणाणि य ॥

नरयदुक्ख-पदं

- ४७—जहा इह अगणी उण्हो ‘एत्तोऽणन्तगुणे नहि’^४ ।
नरएमु वेयणा उण्हा अन्माया वेइया मा ॥

- ४८—जहा 'इम इह'^१ सीय 'एत्तोऽणन्तगुण तहि'^२ ।
 नरएसु वेयणा सीया अस्साया वेइया मए ॥
- ४९—कन्दन्तो कदुकुम्भीसु उड्ढपाओ अहोसिरो ।
 हुयासणे जलन्तम्मि पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥
- ५०—महादवग्गिसकासे मरम्मि वइरवालुए ।
 कलम्बवालुयाए य दड्ढपुव्वो अणन्तसो ॥
- ५१—रसन्तो कदुकुम्भीसु उड्ढ बद्धो अबन्धवो ।
 करवत्तकरकयाईहिं छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥
- ५२—अइतिक्खकण्टगाइण्णे तुगे सिम्बलिपायवे ।
 खेविय^३ पासबद्धेण कड्ढोकड्ढाहिं दुक्कर ॥
- ५३—महाजन्तेसु उच्छू वा आरसन्तो सुभेरव ।
 पीलिओ मि सकम्मेहि पावकम्मो अणन्तसो ॥
- ५४—कूवन्तो कोलसुणाएहिं
 सामेहिं सबलेहि य ।
 पाडिओ फालिओ छिन्नो
 विप्फुरन्तो^४ अणेगसो ॥
- ५५—असीहि^५ अयसिवण्णाहिं
 भल्लीहि पट्टिसेहि य ।
 छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य
 ओडण्णो^६ पावकम्मुणा ॥

१—इह इम (उ, ऋ) ।

२—एत्तो ऽणन्तगुणा तहिं (वृ० पा०) ।

३—खेदिय (वृ०) ।

४—विप्फरतो (अ, ऋ) ।

५—अरसाहिं (वृ०) असीहि (वृ० पा०) ।

६—उववण्णो (ऋ) ।

- ५६—अवसो लोहरहे जुत्तो जलन्ते^१ समिलाजुए ।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं रोज्भो वा जहपाडिओ ॥
- ५७—हुयासणे जलन्तम्मि चियासु महिसो विव ।
दड्ढो पक्को य अवसो पावकम्मेहि पाविओ ॥
- ५८—बला सडासतुण्डेहिं लोहतुण्डेहि पक्खिंहि ।
विलुत्तो विलवन्तो ह ढकगिद्धेहिणन्तसो ॥
- ५९—तण्हाकिलन्तो धावन्तो पत्तो वेयरणिं नदिं ।
जल 'पाहिं ति'^२ चिन्तन्तो खुरधाराहिं विवाइओ^३ ॥
- ६०—उण्हाभितत्तो सपत्तो असिपत्त महावण ।
असिपत्तेहिं पडन्तेहिं छिन्नपुव्वो अणेगसो^४ ॥
- ६१—मुगरेहि मुसढीहि सूलेहिं मुसलेहि य ।
गयास भग्गत्तेहिं पत्त दुक्ख अणन्तसो ॥
- ६२—खुरेहिं तिक्खधारेहिं छुरियाहिं कप्पणीहिय ।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो उक्कत्तो^५ य अणेगसो^६ ॥
- ६३—पासेहिं कूडजालेहिं मिओ वा अवसो अह ।
वाहिओ^७ वद्धरुद्धो अ 'बहुसो'^८ चेव विवाइओ ॥

१—जलन (वृ० पा०) ।

२—पाहं ति (वृ०) ।

३—विपाडिओ (वृ०) विवाइओ (वृ० पा०) ।

४—अणत्तसो (उ ऋ) ।

५—तिक्ख दाढेहिं (उ) ।

६—पुरीहिं (ऋ) ।

७—उक्कित्तो (वृ० पा० सु) ।

८—गहिसो (वृ० पा०) ।

९—दिसो (उ ऋ) ।

- ६४-गलेहिं मगरजालेहि
मच्छो वा अवसो अहं ।
उल्लिओ^१ फालिओ गहिओ
मारिओ य अणन्तसो ॥
- ६५-वीदसएहि^२ जालेहि
लेप्पाहि सउणो विव ।
गहिओ लगो^३ बद्धो य
मारिओ य अणन्तसो ॥
- ६६-कुहाडफरसुमाईहि
वड्ढईहि दुमो विव ।
कुट्टिओ फालिओ छिन्तो
तच्छिओ य अणन्तसो ॥
- ६७-चवेडमुट्टिमाईहि
कुमारेहि अय पिव ।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्तो
चुण्णिओ य अणन्तसो ॥
- ६८-तत्ताइ तम्बलोहाइ तउयाइं सीसयाणि य ।
पाडओ कलकलन्ताइ आरसन्तो सुभेरव ॥
- ६९-तुहं पियाइ मसाइ खण्डाइ सोल्लाणाणि य ।
खाविओ मि^४ समसाइ अग्गिवण्णाइं णेगसो ॥
- ७०-तुह पिया मुरा सीहू मेरओ य महूणि य ।
पाडओ^५ मि जलन्तीओ वसाओ रुहिराणि य ॥

१-अल्लिओ (उ, ऋ) ।

२-वीदसएहिं (ऋ), वीस देहिप (उ) ।

३-भगो (अ) ।

४-वि (ऋ) ।

५-पज्जितो (वृ०) ।

- ७१—निच्चं^१ भीएण तत्थेण दुहिएण वहिएण य ।
 परमा दुहसंबद्धा वेयणा वेइया मए ॥
- ७२—तिव्वचण्डप्पगाढाओ घोराओ अइदुस्सहा ।
 महव्वभयाओ^२ भीमाओ नरएसु वेइया मए ॥
- ७३—जारिसा माणुसे लोए ताया ! दीसन्ति वेयणा ।
 एत्तो^३ अणन्तगुणिया नरएसु दुक्खवेयणा ॥
- ७४—सव्वभवेसु अस्साया वेयणा वेइया मए ।
 निमेसन्तरमित्तं पि जं साया नत्थि वेयणा ॥

मिगचारिया-पद

- ७५—तं वित्तंममापियरो छन्देणं पुत्त ! पव्वया ।
 नवरं पुण सामण्णे दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥
- ७६—सो वित्तंममापियरो । एवमेयं जहाफुड ।
 पडिकम्म को कुणई अरण्णे मियपक्खिणं ? ॥
- ७७—एगभूओ अरण्णे वा जहा उ चरई मिगे ।
 एवं धम्म चरिस्सामि संजमेण तवेण य ॥
- ७८—जया मिगस्स आयको महारण्णम्मि जायई ।
 अच्छन्तं रुक्खमूलम्मि कोणं ताहे तिगिच्छई^४ ? ॥
- ७९—को वा से ओसह देई ? को वा से पुच्छई सुहं ? ।
 को से भत्त च 'पाणच'^५ आहरित्तु पणामए ? ॥
- ८०—जया य से सुही होइ तया गच्छइ गोयरं ।
 भत्तपाणस्स अट्टाए वल्लराणि सराणि य ॥

१—निच (उ, ऋ) ।

२—महालया (दृ० पा०) ।

३—ततो (अ) ; इतो (उ, ऋ) ।

४—दिगिच्छई (उ) . चिगिच्छई (ऋ) ।

५—पाणं वा (ऋ) ।

८१—खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहिं वा ।
मिगचारियं चरित्ताणं गच्छईं मिगचारियं ॥

८२—एवं समुट्ठिओ भिक्खू एवमेव अणेगओ^१ ।
मिगचारियं चरित्ताणं उड्ढं पक्कमईं दिसं ॥

८३—जहा मिगे एग अणेगचारी
अणेगवासे धुवगोयरे य ।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे

नो हीलए नो वि य खिसएज्जा ॥

८४—मिगचारियं चरिस्सामि एवं पुत्ता ! जहासुहं ।
अम्मापिऊहिंणुत्ताओ जहाइ उवहिं तओ ॥

८५—मियचारियं चरिस्सामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
तुव्भेहिं अम्म ! ऽणुत्ताओ गच्छ पुत्त ! जहासुहं ॥

पव्वज्जा-पद

८६—एवं सो अम्मापियरो अणुमाणित्ताण बहुविहं ।
ममत्त छिन्दईं ताहे महानागो व्व कंचुयं ॥

८७—इड्ढि^२ वित्तं च मित्ते य पुत्तदारं च नायओ ।
रेणुयं व पडे लग्ग निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥

समता-पद

८८—पच्चमहव्वयजुत्तो

पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।

सन्निन्तरवाहिरओ

तवोकम्मंसि

उज्जुओ ॥

१—अणेगत्तो (अ, ऋ), अणिएयणे (वृ० पा०) ।

२—इड्ढी (उ, ऋ) ।

८९-निम्ममो निरहंकारो निस्संगो चत्तगारवो ।

समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य ॥

९०-लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा ।

समो निन्दापसंसासु तहा माणावमाणओ ॥

९१-गारवेमु कसाएसु दण्डसल्लभएसु य ।

नियत्तो हाससोगाओ अनियाणो अबन्धणो ॥

९२-अणिस्सिओ इहं लोए परलोए अणिस्सिओ ।

वासीचन्दणकप्पो य असणे अणसणे तहा ॥

९३-अप्पसत्येहिं दारेहिं सव्वओ पिहियासवे ।

अज्भप्पज्झाणजोगेहिं पसत्थदमसासणे ।

९४-एव नाणेण चरणेण दंसणेण तवेण य ।

भावणाहिं 'य मुद्धाहिं'^१ सम्मं भावेत्तु अप्पयं ॥

९५-बहुयाणि उ^२ वासाणि सामण्णमणुपालिया ।

मासिएण उ^३ भत्तेण सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥

निक्खेव-पदं

९६-एव करन्ति संबुद्धा^४ पण्डिया पवियक्खणा ।

विणियट्ठन्ति भोगेमु मियापुत्ते जहारिसी^५ ॥

९७-महापभावस्स महाजसस्स

मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासिय ।

तवप्पहाण चरिय^६ च उत्तमं

गइप्पहाण च तिलोगविस्सुयं ॥

१-विद्धाहिं (वृ०, चु) ।

२-ओ (उ) · अ (त्र) ।

३-अ (अ) ।

४-संयन्ता (उ, वृ०) ।

५-ज्जन्ति (वृ०, चु) ।

६-चरित्त (अ) ।

९८—वियाणिया दुक्खविदद्धणं धणं
 ममत्तबंधं च महब्भयावहं ।
 सुहावह धम्मधुरं अणुत्तरं
 धारेह निब्बाणगुणावहं^१ महं ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

विसङ्गं अज्भयणं
महानियण्ठिज्जं

उक्खेव-पद

- १-सिद्धाणं नमो किच्चा संजयाणं च भावओ ।
अत्यधम्मगइं^१ तच्चं अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥
- २-पभूयरयणो राया सेणिओ मगहाहिवो ।
विहारजत्तं निज्जाओ मण्डिकुच्छिसि चेइए ॥
- ३-नाणादुमलयाइण्णं नाणापक्खिनिसेवियं ।
नाणाकुमुमसंछन्नं उज्जाणं नन्दणोवमं ॥
- ४-तत्थ सो पासई साहुं संजयं सुसमाहियं ।
निसन्नं ख्वमूलम्मि सुकुमालं सुहोइयं ॥
- ५-तस्स ख्वं तु पासित्ता राइणो तम्मि संजए ।
अच्चन्तपरमो आसी अउलो ख्वविम्हओ ॥
- ६-अहो ! वण्णो अहो ! ख्व अहो ! अज्जस्स सोमया ।
अहो ! खन्ती अहो ! मुत्ती अहो ! भोगे असंगया ॥
- ७-तस्स पाए उ वन्दित्ता काळण य पयाहिणं ।
नाइदूरमणासन्ने^२ पंजली पडिपुच्छई ॥

अणाह-पद

- ८-तरुणो सि अज्जो ! पच्चइओ
भोगकालम्मि संजया ! ।
उवट्ठिओ^३ सि सामण्णे
एयमट्ठं सुणेमि ता ॥

१-० गत (उ) ० दइ (दू० पा०) ।

२-निम्णो नाइदूरणि (उ) ।

३-उवट्ठितो (दू० पा०) ।

- ९—अणाहो मि महाराय ! नाहो मज्झ न विज्जई ।
अणुकम्पगं सुहि दावि 'कंचि नाभिसमेमऽहं'^१ ॥
- १०—तओ सो पहसिओ राया सेणिओ मगहाहिवा ।
एव ते इड्ढिमन्तस्स कह नाहो न विज्जई ? ॥
- ११—होमि नाहो भयन्ताणं ! भोगे भुजाहि सजया । ।
मित्तनाईपरिवुडो माणुस्स खु सुदुल्लहं ॥
- १२—अप्पणा वि अणाहो सि सेणिया । मगहाहिवा ! ।
अप्पणा अणाहो सन्तो कहं^२ नाहो भविस्ससि ? ॥
- १३—एव वुत्तो नरिन्दो सो सुसंभन्तो सुविम्हिओ ।
वयण अस्सुयपुव्व साहुणा विम्हयन्निओ^३ ॥
- १४—अस्सा हत्थी मणुस्सा मे पुर अन्तेउर च मे ।
भुजामि माणुसे भोगे^४ आणाइस्सरिय च मे ॥
- १५—एरिसे सम्पयग्गम्मि^५ सव्वकामसमप्पिए ।
कह अणाहो भवइ ? 'मा हु भन्ते ! मुसं वए'^६ ॥
- १६—न तुम जाणे अणाहस्स अत्थ 'पोत्थं व'^७ पत्थिवा । ।
जहा अणाहो भवई सणाहो वा नराहिवा ? ॥
- १७—सुणेह मे महाराय । अव्वक्खित्तेण^८ चयेसा ।
जहा अणाहो भवई जहा मे य पवत्तियं ॥

१—कचीनाहि तुमे मह (वृ०, सु), कची नाभिसमेमऽह (वृ० पा०) ।

२—कत्त (अ) ।

३—विम्हियन्निओ (अ, उ, ऋ) ।

४—लोए (ऋ) ।

५—सपयायम्मि (वृ० पा०) ।

६—भते ! माह नुत्त वए (वृ० पा०) ।

७—उत्थ व (वृ०), पोत्थ च (अ), पोत्थ व (वृ० पा०) ।

८—अव्विक्खित्तेण (ऋ) ।

- १८—कोसम्बी नाम नयरी पुराणपुरभेयणी^१ ।
 तत्थ आसी पिया मज्झ पभूयधणसंचओ ॥
- १९—पढमे वए महाराय । अउला मे अच्छिवेयणा ।
 अहोत्था विउलो^२ दाहो 'सव्वंगेसुय'^३ पत्थिवा ! ॥
- २०—सत्थं जहा परमतिक्वं सरीरविवरन्तरे^४ ।
 पवेसेज्ज^५ अरी कुद्धो एवं मे अच्छिवेयणा ॥
- २१—तियं मे अन्तरिच्छ च उत्तमंगं च पीडई ।
 इन्दासणिसमा घोरा वेयणा परमदारुणा ॥
- २२—उवट्टिया मे आयरिया विज्जामन्ततिगिच्छगा^६ ।
 'अधीया सत्थकुसला'^७ मन्तमूलविसारया ॥
- २३—ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति चाउप्पाय जहाहियं ।
 न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥
- २४—पिया मे सव्वसारं पि दिज्जाहि मम कारणा ।
 न य दुक्खा^८ विमोएइ^९ एसा मज्झ अणाहया ॥
- २५—माया य^{१०} मे महाराय !
 पुत्तसोगदुहट्टिया^{११} ।
 न य दुक्खा^{१२} विमोएइ
 एसा मज्झ अणाहया ॥

१—नगराण पुडभेयण (वृ० पा०) ।

२—तिउलो (वृ०), विउलो (वृ० पा०) ।

३—सव्वगत्तेसु (वृ); सव्वंगेसु य (वृ० पा) ।

४—सरीर वीय अंतरे (वृ० पा०) ।

५—आविलिज्ज (उ, वृ० पा०, ऋ) ।

६—^० विगिच्छगा (ऋ) ।

७—नाना सत्थत्थ कुसला (वृ० पा०), अधीया (अ) ।

८—दुक्खाओ (ऋ); दुक्खाउ (उ) ।

९—विमोयति (वृ०), एव सर्वत्र ।

११—^० दुहट्टिया (वृ० पा०) ।

१०—वि (उ) ।

१२—पा० टि० ७

- २६—भायरो^१ मे महाराय ! सगा जेद्वकणिद्वगा ।
 न य दुक्खा^२ विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥
- २७—भइणीओ मे महाराय । सगा जेद्वकणिद्वगा ।
 न य दुक्खा^३ विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥
- २८—भारिया मे महाराय । 'अणुरत्ता अणुव्वया'^४ ।
 अंसुपुण्णेहि नयणेहि उरं मे परिसिचई ॥
- २९—अन्न पाण च ष्हाण च गन्धमल्लविलेवणं ।
 'मए नायमणाय वा'^५ सा बाला नोवभुंजई ॥
- ३०—खणं पि मे महाराय ! पासाओ वि^६ न फिट्टई ।
 न य दुक्खा विमोएइ एसा मज्झ अणाहया ॥
- ३१—तओ ह एवमाहसु दुक्खमा हु पुणो पुणो ।
 वेयणा अणुभवित्त जे ससारम्मि अणन्तए ॥
- ३२—सइं^७ च जइ मुच्चेज्जा वेयणा विउला इओ ।
 खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वए^८ अणगारियं ॥
- ३३—एवं च चिन्तइत्ताण पसुत्तो मि नराहिवा ! ।
 परियद्वन्तीए राईए वेयणा मे खय गया ॥
- ३४—तओ कल्ले पभायम्मि आपुच्छित्ताण बन्धवे ।
 खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वइओऽणगारिय ॥
- ३५—ततो हं नाहो जाओ अप्पणो य परस्स य ।
 सव्वेसिं चैव भूयाणं तसाण थावराण य ॥

१—भाया (उ) ।

२, ३—दुक्खाओ (ऋ), दुक्खाउ (उ) ।

४—अणुरत्तामणुव्वया (उ, ऋ, वृ० पा०) ।

५—त्तरिसं रोगनावणे (वृ० पा०) ।

६—य (उ, आ, उ) ।

७—सइं (उ, वृ०) ; सइय (अ) ।

८—पव्वइए (उ) ।

अत्त-पद

३६—अप्पा नई वेयरणी अप्पा मे कूडसामली ।

अप्पा कामदुहा धेणू अप्पा मे नन्दणं वणं ॥

३७—अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य ।

अप्पा मित्तममित्त च दुप्पट्टियसुपट्टिओ ॥

धम्मलोक-पद

३८—इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा !

तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।

नियण्ठधम्म लहियाण वी जहा

सीयन्ति एगे बहुकायरा नरा ॥

३९—जो पव्वइत्ताण महव्वयाइ

सम्म नो फासयई^१ पमाया ।

अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे

न मूलओ छिन्दइ बन्धण से ॥

४०—आउत्तया जस्स न अत्थि काड

इरियाए भासाए तहेसणाए ।

आयाणनिकखेवदुगुच्छणाए

न वीरजाय^२ अणुजाइ मग्गं ॥

४१—चिर पि से मुण्डरुई भवित्ता

अथिरव्वए तवनियमेहि भट्टे ।

चिर पि अप्पाण किलेसइत्ता

न पारए होइ हु सपराए ॥

१—अत्तइ (उ क) ।

२—धीत्तय (स) ।

- ४२-‘पोल्ले व’^१ मुट्टी जह से असारे
 अयन्तिए कूडकहावणे वा ।
 राढामणी वेरुलियप्पगासे
 अमहग्घए होइ य जाणएसु ॥
- ४३-कुसीलर्लिंग इह धारइत्ता
 इसिज्भय जीविय वूहइत्ता ।
 असजए सजयलप्पमाणे^२
 विणिघायमागच्छइ से चिरं पि ॥
- ४४-‘विस तु पीयं’^३ जह कालकूडं
 हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।
 ‘एसे व’^४ धम्मो विसओववन्नो
 हणाइ वेयाल इवाविवन्नो^५ ॥
- ४५-जे लक्खण सुविण पउजमाणे
 निमित्तकोऊहलसंपगाढे ।
 कुहेडविज्जासवदारजीवी
 न गच्छई सरण तम्मि काले ॥
- ४६-तमतमेणेव उ से असीले
 सया दुही विप्परियासुवेइ^६ ।
 नधावई नग्गतिरिक्खजोणिं
 मोण विराहेत्तु असाहुरूवे ॥

१-प लार (वृ० पा०) ।

२-सजयलप्पमाणे (वृ० पा०) ।

३-‘विस पिवन्ती’ (अ, आ) , विस पिवन्ती (वृ०) ।

४-एसे वि (उ) एसे व (उ) ।

५-इह विज्जया (वृ० पा०) ।

६-० मनेइ (उ) ।

४७—उद्वेसिय कीयगडं नियागं
 न मुचई किंचि अणेसणिज्जं ।
 अग्गी विवा सच्चभक्खी भवित्ता
 डओ चुओ गच्छइ कट्टु पाव ॥

४८—न त अरी कण्ठछेत्ता करेइ
 ज से करे अप्पणिया दुरप्पा^१ ।
 से नाहिई मच्चुमुह तु पत्ते
 पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥

४९—निरट्टिया नगरुई उ तस्स
 जे उत्तमट्ट विवज्जासमेई ।
 इमे वि से नत्थि परे वि लोए
 दुहओ वि से भिज्जइ तत्थ लोए ॥

५०—एमेवऽहाछन्दकुसीलरूवे
 मग्ग विराहेत्तु जिणुत्तमाण ।
 कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा
 निरट्टसोया परियावमेइ ॥

निक्खेव-पद

५१—सोच्चाण मेहावि सुभासिय डम
 अणुसासणं नाणगुणोववेय ।
 मग्ग कुसीलाण जहाय सच्च
 महानियण्ठाण वए पहेण ॥

- ५२-चरित्तमायास्गुणन्नि^१ तओ
 अणुत्तरं सजम पालियाण ।
 निरासवे सखवियाण कम्म
 उवेइ ठाण विउलुत्तम धुवं ॥
- ५३-एवुग्गदन्ते वि महात्तवोधणे
 महामुणी महापइन्ते महायसे ।
 महानियण्ठिज्जमिण महासुय
 से काहए महया वित्थरेण ॥
- ५४-तुट्ठो य सेणिओ राया इणमुदाहु कयजली ।
 अणाहत्त जहाभूय सुट्ठु मे उवदसिय ॥
- ५५-तुज्झ सुलद्ध खु मणुस्सजम्म
 लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ! ।
 तुम्भे सणाहा य सवन्धवा य
 ज भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाण ॥
- ५६-त मि नाहो अणाहाण सव्वभूयाण सजया । ।
 नाममि तं महाभाग । इच्छामि अणुसासिउ ॥
- ५७-पुच्छिऊण मण तुवभ भाणविग्घो उ^२जो कओ ।
 निमन्निओ^३ य भोगेहि त सव्व मरिसेहि मे ॥
- ५८-एव धुणित्ताण स गयसीहो
 अणगारसीह परमाइ भत्तिए ।
 तओगेहो य सपरियणो य^४
 धम्माणुरत्तो विमलेण चयसा ॥

१-० तुत्तर (३) ।

२-उ (त्र) ।

३-निमन्नि (३ अ २, ३) ।

४-एव हि सपरियणो य (० अ. ३) ।

५९-ऊससियरोमकूवो काऊण य पयाहिण ।

अभिवन्दिऊण सिरसा अइयाओ^१ नराहिवो ॥

६०-इयरो वि गुणसमिद्धो

तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।

विहग इव विप्पमुक्को

विहरइ वसुह विगयमोहो ॥

—त्ति वेमि ॥

*

एगविसडम अज्भयण

समुद्पालीयं

उक्खेव-पद

- १-चम्पाए पालिए नाम सावए आसि वाणिए ।
महावीरस्स भगवओ सीसे सो उ महप्पणो ॥
- २-निगन्थे पावयणे सावए से विकोविए ।
पोण्ण ववहरन्ते पिहुण्ड नगरमागए ॥
- ३-पिहुण्ठे ववहरन्तस्स वाणिओ देइ धूयर ।
न ससत्त पडगिज्झ सदेसमह पत्थिओ ॥
- ४-अह पालियस्स धरणी समुद्दमि पसवई ।
अह 'दागए तहि'^१ जाए समुद्दपालि त्ति नामए ॥
- ५-वेमंण आगए चम्प सावए वाणिए घर ।
नवट्टट्टे घरे तस्स दारए से सुहोइए ॥
- ६-प्रावत्तए कल्लओ य सिक्खए^२ नीइकोविए ।
जाव्वणण य सपन्ने^३ मुह्वे पियदसणे ॥
- ७-नग्ग न्ववज्ज भज्ज पिया आणेइ रूविणि ।
पानाए कीदाए रम्मं देवो दोगुन्दओ जहा ॥
- ८-अह अन्तप्रा कयाई पासायालयणे ठिओ ।
वज्जमग्गामोभाग वज्ज पासड वज्जमग्ग ॥

९-त पासिऊण संविग्गो^१ समुद्दपालो इणमब्बवी ।

अहोऽसुभाण कम्माणं निज्जाण पावग इम ॥

१०-संबुद्धो सो तर्हि भगवं 'पर संवेगमागओ'^२ ।

आपुच्छऽस्मापियरो पव्वए^३ अणगारियं ॥

११-'जहित्तु सगं च'^४ महाकिलेसं

महन्तमोह कसिणं भयावहं^५ ।

परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा

वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥

महव्वय-पद

१२-अहिस सच्च च अतेणगं च

तत्तो य 'बम्भ अपरिग्गहं च'^६ ।

पडिवज्जिया पच महव्वयाणि

चरिज्ज धम्म जिणदेसिय विऊ ॥

चरिया-पद

१३-सव्वेहिं भूएहि दयाणुकम्पी^७

खन्तिक्वमे संजयवम्भयारी ।

सावज्जजोग परिवज्जयन्तो

चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए ॥

१-सवेग (उ ऋ, वृ०) ।

२-परम० (उ) ।

३-पव्वए (उ) ।

४-जहित्तु सगथ (वृ०), जहित्तुऽसगथ (चू०), जहित्तु सगथ० (सु);
जहित्तु सग च, जहय सग च (वृ० पा०) ।

५-भयावहं (वृ०, चू०) ।

६-बम्भ अपरिग्गहं च (वृ० पा०) ।

७-दयाणुकम्पी (वृ० पा०) ।

- १४-कालेण काल विहरेज्ज रट्टे^१
 वलावल जाणिय अप्पणो य^२ ।
 नीहो व सट्टेण न सतसेज्जा
 वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥
- १५-उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा
 पियमप्पिय सब्ब तित्तिक्खएज्जा ।
 न सब्ब सब्बत्थऽभिरोयएज्जा
 न यावि पूय गरह च सजए ॥
- १६-अणेगच्छन्दाडह^३ माणवेहिं
 जे भावओ सपगरेइ^४ भिक्खू ।
 भयभेग्वा तत्थ उइन्ति^५ भीमा
 दिव्वा मणुस्सा अदुवा त्तिरिच्छा ॥
- १७-पग्गिमहा दुच्चिसहा अणेगे
 सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा ।
 ने तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू
 सगामसीसे इव नागराया ॥
- १८-नीअंनिणा दम्ममसा य फासा
 आयका विविहा फुसन्ति देह ।
 अमुगुओ^६ तत्थऽहियासएज्जा
 ग्याड^७ खेवेज्ज पुरेकडाड ॥

१९-पहाय राग च तहेव दोस
 मोह च भिक्खू सयय वियक्खणो ।
 मेरु व्व वाएण अकम्पमाणो
 परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥

२०-अणुन्नए नावणए महेसी
 न यावि पूय गरहं च सजए ।
 स उज्जुभावं पडिवज्ज संजए
 निव्वाणमग्ग विरए उवेड ॥

२१-अरडरइसहे पहीणसथवे
 विरए आयहिए पहाणवं ।
 परमट्टपएहि चिट्ठई
 छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥

२२-विवित्तलयणाड भएज्ज ताई^१
 निरोवलेवाइ असथडाड ।
 इसीहि चिण्णाड महायसेहि
 काएण फासेज्ज परीसहाड ॥

२३-सन्नाणनाणोवगए^२ महेसी
 अणुत्तरं चरिड धम्मसच्चयं ।
 अणुत्तरेनाणधरे^३ जससी
 ओभासई मूरिए वन्तन्दिकवे^४ ॥

१-तया (त्र) ।

२-सन्नाईण^० (त्र) ; सन्नाण^० (दृ० पा०) सन्नाण^० (दृ०) ।

३-अणुत्तरे^० (दृ० पा०) ।

४-वन्तन्दिकवे (उ) ।

- १८-कालेण काल विहरेज्ज रट्ठे^१
 वलावल जाणिय अप्पणो य^२ ।
 नीहो व सट्ठेण न सतसेज्जा
 वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥
- १९-उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा
 पियमप्पिय सब्ब तित्तिक्खएज्जा ।
 न सब्ब सब्बत्थऽभिरोयएज्जा
 न यावि पूय गरह च सजए ॥
- २०-अणेगच्छत्ताडह^३ माणवेहिं
 जे भावओ सपगरेइ^४ भिक्खू ।
 भयभेग्वा तत्थ उडन्ति^५ भीमा
 दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥
- २१-पणीमहा वृत्तिसहा अणेगे
 सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा ।
 ने तन्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू
 सगामसीसे इव नागराया ॥
- २२-नीओनिणा द्धममा य फासा
 आयका विविहा फुसन्ति देह ।
 अट्ठुओ^६ तन्थऽहियासएज्जा
 र्याड^७ खेवेज्ज पुरेकडाड ॥

वाङ्मयं अज्मयणं

रहनेमिज्जं

उक्खेव-पद

- १-सोरियपुरंमि नयरे आसि राया महिड्डिहए ।
 वसुदेवे त्ति नामेण रायलक्खणसजुए ॥
- २-तस्स भज्जा दुवे आसी रोहिणी देवई तहा ।
 तासि दोण्ह पि दो पुत्ता इट्ठा रामकेसवा ॥
- ३-सोरियपुरमि नयरे आसी राया महिड्डिहए ।
 समुद्विजए नामं रायलक्खणसंजुए ॥
- ४-तस्स भज्जा सिवा नाम तीसे पुत्तो महायसो ।
 भगव अरिद्वनेमि त्ति लोगनाहे दमीसरे ॥
- ५-सोऽरिद्वनेमिनामो उ लक्खणस्सरसजुओ^१ ।
 अट्टसहस्सलक्खणधरो गोयमो काल्गच्छवी ॥

निज्जाण-पद

- ६-वज्जरिसहसंघयणो समचउरसो भसोयणे ।
 तस्स राईमडं कन्न् भज्ज जायड केसवो ॥
- ७-अह सा रायवरकन्ना मुसीला चाट्ठपेहिणी ।
 तव्वलक्खणसपुन्ना^२ विज्जुसोयामणिप्पभा ॥
- ८-अहाह जणओ तीसे वामुदेवं महिड्डियं ।
 इहागच्छऊ कुमारो जा से कन्न् दलाम हं ॥

१-उत्तरा ० (उ, दू० पा०) ।

२-० उत्तरा (उ अ) ।

वाइसम अज्मयण

रहनेमिज्जं

उक्खेव-पद

- १-सोरियपुरमि नयरे आसि राया महिडिडए ।
वसुदेवे त्ति नामेणं रायलक्खणसंजुए ॥
- २-तस्स भज्जा दुवे आसी रोहिणी देवई तहा ।
तासिं दोण्हं पि दो पुत्ता इट्ठा रामकेसवा ॥
- ३-सोरियपुरमि नयरे आसी राया महिडिडए ।
समुद्दिजए नामं रायलक्खणसंजुए ॥
- ४-तस्स भज्जा सिवा नाम तीसे पुत्तो महायसो ।
भगव अरिद्वेनेमि त्ति लोगनाहे दमीसरे ॥
- ५-सोऽरिद्वेनेमिनामो उ लक्खणस्सरसंजुओ^१ ।
अट्टसहस्सलक्खणधरो गोयमो कालगच्छवी ॥

निज्जाण-पदं

- ६-वज्जरिसहसघयणो समचउरसो भसोयरो ।
तस्स राईमइं कन्त भज्ज जायइ केसवो ॥
- ७-अह सा रायवरकन्ता सुसीला चारुपेहिणी ।
सव्वलक्खणसंपुन्ना^२ विज्जुसोयामणिप्पभा ॥
- ८-अहाह जणओ तीसे वामुदेवं महिडिडयं ।
इहागच्छऊ कुमारो जा से कन्तं दलाम हं ॥

१-इल्लस्स (उ, ६० पा०) ।

२-इल्लस्स (उ ३) ।

- ९—सव्वोसहीहि ण्हविओ कयकोउयमगलो ।
दिव्वजुयलपरिहिओ आभरणेहि विभूसिओ^१ ॥
- १०—मत्त च गन्धहत्थिं^२ वासुदेवस्स जेद्वगं ।
आख्खो सोहए अहियं सिरे चूडामणी जहा ॥
- ११—‘अह ऊसिएण’^३ छत्तेण चामराहि य सोहिए ।
दसारचक्केण य सो सव्वओ परिवारिओ ॥
- १२—चउरगिणीए सेनाए रइयाए जहक्कमं ।
तुरियाणं सन्निनाएण दिव्वेण गगणं फुत्से ॥
- १३—एयारिसीए इड्ढीए जुईए उत्तिमाए य ।
नियगाओ भवणाओ निज्जाओ वण्हिपुगवी ॥
- १४—अह सो तत्थ निज्जन्तो दिस्स पाणे भयद्दुए ।
वाडेहि पजरेहि च सन्निरुद्धे^४ सुदुक्खिए ॥

सवेग-पद

- १५—जीवियन्त तु सपत्ते मंसट्ठा भक्खियव्वेए ।
पासेत्ता से महापन्ने सारहि , इण्णव्वी ॥
- १६—कस्स अट्ठा ‘इमे पाणा’^५ एए
वाडेहि पंजरेहि =
- १७—अह सारही तओ^५
तुज्जं ।ववाहक०

१—विभूसई (ऋ) ।

२—^० हत्थि च (अ, आ, इ,

३—से ओसिएण (वृ० पा० ,

४—वद्धरुद्धे (वृ० पा०) ।

५—ब्रह्मपाणे (वृ० पा०) ।

१८-सोऽण तस्स^१ वयण बहुपाणिविणासण^२ ।

चिन्तेड से महापन्ने साणुक्कोसे जिएहि उ ॥

१९-जइ मज्झ कारणा एए 'हम्मिहिंति बहू'^३ जिया ।

न मे एय तु निस्सेस परलोगे भविस्सई ॥

२०-सो कुण्डलाण जुयल

सुत्तग च महायसो ।

आभरणाणि य सव्वाणि^४

सारहिस्स पणामए ॥

अभिनिक्खमण-पट्ट

२१-मणपरिणामे य कए

देवा य जहोइय समोडण्णा^५ ।

सव्वड्ढीए सपरिसा

निक्खमण तस्स काउ जे ॥

२२-देवमणुस्सपरिवुडो

सीयारयण^६ तओ. समाट्ठो ।

निक्खमिय वारगाओ

रेवययमि ट्ठिओ भगव ॥

२३-उज्जाण सपत्तो

ओडण्णो उत्तिमाओ नीयाओ^७ ।

साहम्सीए पग्गिबुडो

अह निक्खमई उ चित्ताहि ॥

१-तस्स सो (उ, ऋ) ।

२-बहुपाण^० (६०)

३-हम्मिहिंति बहू (उ, ऋ ६०) हम्मिहिंति बहू (६० पं०)

४-सव्वाणि (उ, ऋ) ।

५-समोडण्णा (६० पं०) ।

६-सीयारण^० (ऋ)

२४—अह से सुगन्धगन्धि^१ तुरियं मउयकुंचि^२ ।
सयमेव लुचई केसे पंचमुट्टीहिं^३ समाहिओ ॥

आसीवाय-पद

२५—वासुदेवो य ण भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
इच्छियमणोरहे तुरिय पावेसू^४ तं दमीसरा ॥

२६—नाणेण दसणेण च चरित्तेण तहेव^५ य ।
खन्तीए मुत्तीए^६ वड्डमाणो भवाहि य ॥

२७—एव ते रामकेसवा दसारा य बहू जणा ।
अरिइणेमि वन्दित्ता अइगया बारगापुरिं ॥

राईमई-पद

२८—सोऊण रायकन्ना पव्वज्ज सा जिणस्स उ ।
नीहासा य निराणन्दा सोगेण उ समुत्थया^७ ॥

२९—राईमई विचिन्तेइ धिरत्थु मम जीविय ।
जा ह तेण परिच्चत्ता 'सेय पव्वइउं'^८ मम ॥

३०—अह सा भमरसन्निभे^९ कुच्चफणगपसाहि^{१०} ।
सयमेव लुचई केसे धिइमन्ता ववस्सिया^{११} ॥

१—सुगधि^० (ऋ, वृ०) ।

२—मओए^० (अ) ।

३—पच्युट्टाहिं (वृ०) ।

४—पावसु (वृ०) ।

५—तवेण (सु) ।

६—मुत्तीए चैव (उ) ।

७—समुत्थिया (अ), समुच्छया (आ) ।

८—सेउ पव्वइउ (ऋ) . से ओ पव्वइओ (उ) सेउ पव्वइय (अ) ।

९—^० सकासे (अ) ।

१०—^० फल्ला^० (अ) ।

११—वि तवस्सिया (अ) ।

- ३१-वामुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दिय ।
संसारसागर घोर तर कन्ते! लहुं लहुं ॥
- ३२-सा पव्वइया सन्ती पव्वावेसी' तहिं बहं ।
सयण परियण चेव सीलवन्ता बहुस्सुया ॥
- ३३-गिरि रेवयय' जन्ती वासेणुल्ला उ अन्तरा ।
वासन्ते अन्धयारंमि अन्तो लयणस्स सा ठिया ॥
- ३४-चीवराइ विसारन्ती जहा जाय त्ति पासिया ।
रहनेमी भग्गचित्तो पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥
- ३५-भीया य सा तहिं दट्ठु एगन्ते सजयं तयं ।
वाहाहिं काउ संगोफं वेवमाणी निसीयई ॥
- ३६-अह सो वि रायपुत्तो समुट्ठविजयगओ ।
भीय पवेविय दट्ठु इम वक्कं उदाहरे ॥
- ३७-रहनेमी अहं भट्टे। मुह्वे। चारुभासिणि। ।
मम^३ भयाहिं मुयणू। न ते पीला भविस्सई ॥
- ३८-एहि ता भुजिमो भोए माणुस्स खु सुदुल्लह ।
'भुत्तभोगा तओ' पच्छा जिणमग्ग चरिस्सिमो ॥
- ३९-दट्ठूण रहनेमिं त भग्गुज्जोयपराइयं ।
राईमई असम्भन्ता अण्णाण सवरे तहिं ॥
- ४०-अह सा रायवरकन्ना मुट्ठिया नियमव्वए ।
जाई कुल च सीलं च रक्खमाणी तय वए ॥
- ४१-जइ सि ह्वेण वेत्तमणो लल्लिएण नल्लकूवरो ।
तहा वि ते न इच्छामि जइ सि सक्कवं पुरन्दगे ॥

१-वामुदेवी (७) ।

२-वेइ (७) ।

३- (६० पृ०) ।

४-मुह्वेण तइ (८ ३) मुत्तमेण पुत्ते (६०) ।

[पक्खदे जलियं जोइ धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छन्ति वतय भोत्तु कुले जाया अगंधणे ॥]^१

४२—धिरत्थु ते जसोकामी । जो त जीवियकारणा ।
वन्तं इच्छसि आवेउ सेयं ते मरणं भवे ॥

४३—अह च भोयरायस्स त च सि अन्धगवण्हिणो ।
मा कुले गन्धणा होमो सजम निहुओ चर ॥

४४—जइ तं काहिसि भावं जा जा दिच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हढो अट्टिअप्पा भविस्ससि ॥

४५—गोवालो भण्डवालो^२ वा
जहा तद्दव्वणिससरो ।
एव अणिससरो तं पि
सामण्णस्स भविस्ससि ॥

[कोह माण निगिण्हिता माय लोभ च सव्वसो ।
इन्दियाइ वसे काउ अप्पाण उवसहरे ॥]^३

४६—तीसे सो वयण सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
अकुसेण जहा नागो धम्मे सपडिवाइओ ॥

४७—मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
सामण्ण निच्चल फासे जावज्जीव दढव्वओ ॥

४८—उग्ग तव चरित्ताण जाया दोण्णि वि केवली ।
सव्व कम्म खवित्ताण सिद्धि पत्ता अणुत्तर ॥

१—यह श्लोक चूर्णि और बृहद् वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

२—दंडपात्रो (वृ० पा०) ।

३—यह श्लोक चूर्णि और बृहद् वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

निकलेव-पद

४९-एवं करेन्ति संबुद्धा पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा सो पुरिसोत्तमो ॥
—त्ति वेमि ॥

*

तेर्विसइम अज्जमयण
केसिगोयमिज्जं

उक्खेव-पद

- १—जिणे पासे त्ति नामेण 'अरहा लोगपूइओ ।
सबुद्धप्पा य सव्वन्नू धम्मतित्थयरे जिणे'^१ ॥
- २—तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे ।
केसीकुमारसमणे विज्जाचरणपारगे ॥
- ३—ओहिनाणसुए बुद्धे सीससघसमाउले ।
गामाणुगाम रीयन्ते सावत्थि नगरिमागए ॥
- ४—तिन्दुय नाम उज्जाण तम्मी नगरमण्डले ।
फासुए सिज्जसथारे तत्थ वासमुवागए ॥
- ५—अह तेणेव कालेण धम्मतित्थयरे जिणे ।
भगवं वद्धमाणो त्ति सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥
- ६—तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे^२ ।
भगव गोयमे नाम विज्जाचरणपारगे ॥
- ७—बारसगविऊ बुद्धे सीससघसमाउले ।
गामाणुगाम रीयन्ते से वि सावत्थिमागए ॥
- ८—कोट्टग नाम उज्जाण तम्मी नगरमण्डले ।
फासुए सिज्जसथारे तत्थ वासमुवागए ॥
- ९—केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ वि तत्थ विहरिसु अहोणा^३ सुसमाहिया ॥

१— अरिहा लोगविस्सुए ।
सव्वन्नू सव्वटस्सी य धम्मतित्थस्स देसए ॥ (वृ० पा०) ।

२—महिद्धिदए (अ) ।

३—अलीणा (वृ० पा०) ।

- १०-उभओ सीससंघाणं संजयाणं तवस्सिणं ।
 तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना गुणवन्ताण ताइणं ॥
- ११-केरिसो वा इमो धम्मो ? इमो धम्मो व केरिसो ? ।
 आयारधम्मपणिही इमा वा सा व केरिसी ? ॥
- १२-चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ ।
 देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥
- १३-अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
 एगकज्जपवन्ताणं विसेसे किं नु कारण ? ॥
- १४-अह ते तत्थ सीसाणं विन्नाय पवितक्किय ।
 समागमे कयमई उभओ केसिगोयमा ॥
- १५-गोयमे पडिरुवन्तू सीससघसमाउले ।
 जेट्ट कुलमवेक्खन्तो तिन्दुय वणमागओ ॥
- १६-केसीकुमारसमणे गोयम दिस्समागय ।
 पडिरुव पडिवत्ति सम्म सपडिवज्जई ॥
- १७-पलाल फानुय तत्थ पचम कुसतणाणि य ।
 निमेत्ताण खिण्य सपणामए ॥

२२—पुंच्छ भन्ते ! जहिच्छं ते केसिं गोयममब्बवी ।
तओ केसी अणुन्नाए गोयमं इणमब्बवी ॥

चाउज्जाम-पद

२३—चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खओ ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥

२४—एगकज्जपवन्नाण विसेसे कि नु कारणं ? ।
धम्मे दुविहे मेहावि । कह^१ विप्पच्चओ न ते ? ॥

२५—तओ केसि बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ।
पन्ना समिक्खए धम्म तत्त तत्तविणिच्छयं^२ ॥

२६—पुरिमा उज्जुजडा^३ उ वकजडा य पच्छिमा ।
मज्झिमा 'उज्जुपन्नाय'^४ तेण धम्मे दुहा कए ॥

२७—पुरिमाण दुव्विसोज्झो उ
चरिमाणं दुरणुपालओ ।
कप्पो मज्झिमगाण तु
सुविसोज्झो सुपालओ ॥

२८—साहु गोयम । 'पन्ना ते'^५
छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि ससओ मज्झ
त मे कहसु गोयमा ! ॥

१—कहि (अ) ।

२—^० विणिच्छय (उ, ऋ) ।

३—उज्जुकडा (अ) ।

४—उज्जुपन्नाओ (उ, ऋ) ।

५—पन्नाए (वृ० पा०) ।

अचेलग-पद

- २९-अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
 देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महाजसा^१ ॥
- ३०-एगकज्जपवन्नाण विसेसे किं नु कारण ? ।
 लिंगे दुविहे मेहावि । कह विप्पच्चओ न ते ? ॥
- ३१-केसिमेव बुवाण तु गोयमो इणमव्ववी ।
 विन्नाणेण समागम्म धम्मसाहणमिच्छियं ॥
- ३२-पच्चयत्थ च लोगस्स नाणाविहविगप्पण ।
 जत्तत्थ गहणत्थं च लोगे लिंगप्पओयण ॥
- ३३-अह भवे पइन्ना उ मोक्खसव्भूयसाहणे^३ ।
 नाण च दसण चेव चरित्त चेव निच्छए ॥
- ३४-साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे ससओ इमो ।
 अन्नो वि ससओ मज्झ त मे कहमु गोयमा । ॥

- ३९—साहु गोयम। पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो विसंसओ मज्झ तं मे कहसु गोयमा ! ॥
- ४०—दीसन्ति बहवे लोए पासबद्धा सरीरिणो ।
 मुक्कपासो लहुब्भूओ कह त विहरसी ? मुणी ! ॥

पास-पद

- ४१—ते पासे सव्वसो छित्ता निहन्तूण उवायओ ।
 मुक्कपासो लहुब्भूओ विहरामि अहं मुणी ! ॥
- ४२—पासा य इइ के वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवत तु गोयमो इणमब्बवी ॥
- ४३—रागद्दोसादओ तिग्वा नेहपासा भयंकरा ।
 ते छिन्दित्तु जहानाय विहरामि जहक्कम ॥
- ४४—साहु गोयम। पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि ससओ मज्झ त मे कहसु गोयमा ! ॥

लया-पद

- ४५—अन्तोहिययसभूया लया चिट्ठइ गोयमा ! ।
 फलेइ विसभक्खीणि^१ सा उ उद्धरिया कह ? ॥
- ४६—त लय सव्वसो छित्ता उद्धरित्ता समूलियं ।
 विहरामि जहानाय मुक्को मि विसभक्खणं ॥
- ४७—लया य इइ का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेव बुवत तु गोयमो इणमब्बवी ॥
- ४८—भवतण्हा लया वुत्ता भीमा भीमफलोदया ।
 तमुद्धरित्तु^२ जहानाय विहरामि महामुणी ! ॥

१—विसमक्खीण (वृ०) ।

२—तमुच्चित्तु (उ, ऋ), तमुद्धरित्ता (आ) ।

४९-साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे ससओ उमो ।
अन्नो वि ससओ मज्झ त मे कहमु गोयमा । ॥

अग्गी-पद

५०-सपज्जलिया धोग अग्गी चिद्वड गोयमा । ।

जे उहन्ति सरीरत्या^१ कह विज्जाविया तुमे ? ॥

५१-महामेहप्पमूयाओ गिज्झ वारि जन्दुत्तम ।

'सिंचामि सयय देह'^२ सित्ता नो व उहन्ति मे ॥

५२-अग्गी य इड के वुत्ता केसी गोयममव्ववी ।

केसिमेव वुवंत तु गोयमो उणमव्ववी ॥

५३-कसाया अग्गिणो वुत्ता नुयसील्लवो जदं ।

मुयधाराभिहया सन्ता भिन्ना हु न उहन्ति मे ॥

५४-साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे ससओ उमो ।

अन्नो वि ससओ मज्झ तं मे कहमु गोयमा । ॥

उहन्ति-पद

५९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे ससओ इमो ।
अन्तो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ॥

कुप्पह-पद

६०—कुप्पहा बहवो लोए जेहिं नासन्ति जंतवो ।
अद्धाणे कह वट्टन्ते त न नस्ससि ? गोयमा ॥

६१—जे य मग्गेण गच्छन्ति 'जे य उम्मग्गपट्टिया'^१ ।
ते सब्बे विइया मज्झ तो न नस्सामहं^२ मुणी ॥

६२—मग्गे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेव बुवत तु गोयमो इणमब्बवी ॥

६३—कुप्पवयणपासण्डी सब्बे उम्मग्गपट्टिया ।
सम्मग्ग तु जिणक्खाय एस मग्गे हि^३ उत्तमे ॥

६४—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे ससओ इमो ।
अन्तो वि ससओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ॥

दीव-पद

६५—महाउदगवेगेण वुज्झमाणाण पाणिण ।
सरण गई पडट्ठा य दीव 'क मन्तसी ?'^४ मुणी ॥

६६—अत्थि एगो महादीवो वारिमज्झे महालओ ।
महाउदगवेगस्स गई तत्थ न विज्जई ॥

६७—दीवे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेव बुवत तु गोयमो इणमब्बवी ॥

१—जे उम्मग्ग पट्टिया (अ) ।

२—नत्तामिह (अ) ।

३—हे (अ) ।

४—कम्मगसी (अ) ।

- ६८—जरामरणवेगेण वुज्झमाणेण पाणिणं ।
 धम्मो दीवो 'पडट्टा य'^१ गई सरणमुत्तमं ॥
 ६९—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं त मे कहसु गोयमा! ॥

नावा-पद

- ७०—अण्णवसि महोहंसि नावा विपरिधावई ।
 जंसि गोयममारूढो कह पार गमिस्ससि? ॥
 ७१—जा उ अस्साविणी^२ नावा
 न सा पारस्स गामिणी ।
 जा निरस्साविणी नावा
 सा उ पारस्स गामिणी ॥
 ७२—नावाय इइ का वुत्ता? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेव वुवतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
 ७३—सरीरमाहु नाव त्ति जीवो वुच्चइ नाविओ ।
 सत्तारो अण्णवो वुत्तो जं तरन्ति महेसिणो ॥
 ७४—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं त मे कहसु गोयमा! ॥

उज्जोय-पदं

- ७५—अन्धकारे तमे घोरे त्तिट्ठन्ति पाणिणो बहू ।
 पो वग्गिन्तइ उज्जोय सव्वलोगंमि पाणिणं? ॥
 ७६—उज्जोयो विमदो भाणू सव्वलोगप्पभंकारो ।
 पो वग्गिन्तइ उज्जोय सव्वलोगंमि पाणिणं ॥

१—पडट्टा य (उ)

२—अस्साविणी (६=७०) ।

- ७७—भाणू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेव बुवतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
- ७८—उगओ खीणसंसारो सब्वन्नू जिणभक्खरो ।
 सो करिस्सइ उज्जोयं सब्वलोयंमि पाणिण ॥
- ७९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्तो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि ससओ मज्झ त मे कहसु गोयमा ! ॥

ठाण-पद

- ८०—सारीरमाणसे दुक्खे बज्झमाणाणं^१ पाणिणं ।
 खेम सिवमणाबाहं ठाण कि मन्नसी मुणी ? ॥
- ८१—अत्थि एग धुव ठाणं लोगगमि दुरारुहं ।
 जत्थ नत्थि जरा मच्चू वाहिणो वेयणा तहा ॥
- ८२—ठाणे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेव बुवत तु गोयमो इणमब्बवी ॥
- ८३—निव्वाण ति अवाह ति सिद्धी लोगगमेव य ।
 खेमं सिवं अणावाह ज चरन्ति महेसिणो ॥
- ८४—त ठाण सासयवास लोगगंमि दुरारुह ।
 ज सपत्ता न सोयन्ति भवोहन्तकरा मुणी ॥
- ८५—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्तो मे ससओ इमो ।
 नमो ते ससयाईय ! सब्वसुत्तमहोयही । ॥
- ८६—एवं तु संसए छिन्ने केसी घोरपरक्कमे ।
 'अभिवन्दिता सिरसा गोयमं तु महायसं'^२ ॥

१—वज्जनागण (वृ० पा०) ।

२—वदित, घञ्जिउडो गोतम तु महामुणी (चू०) ।

८७—‘पंचमहव्वयधम्मं पडिवज्जइ भावओ ।
पुरिमस्स पच्छिमसी^१ मग्गे तत्थ सुहावहे ॥’^२

निवत्तेव-पद

८८—केसिगोयमओ निच्च तम्मि आसि समागमे ।
सुयसीलसमुक्करिसो महत्थइत्थविणिच्छओ ॥
८९—तोसिया परिसा सव्वा ‘सम्मगं^३समुवट्ठिया’^४ ।
‘संथुया ते पसीयन्तु’^५ भयव केसिगोयमे ॥
—त्ति वेमि ॥

५

१—पच्छिमस्सी (अ) ।

२—पंच महव्वय जुत्त भावतो पडिवज्जिया ।

धम्म पुरिमस्स पच्छिममि मग्गे सुहावहे ॥ (चू०) ।

३—पज्जुवट्ठिया (वू० पा०) ।

४—सम्मत्ते पज्जुवट्ठिया (चू०) ।

५—संजुता ते पदीसत्तु (चू०) ।

चउविसइमं अर्जभयणं

पवयण-माया

उक्खेव-पद

- १-अट्ट पवयणमायाओ समिई गुत्ती तहेव य ।
 पचेव य समिईओ तओ गुत्तीओ आहिया ॥
- २-इरियाभासेसणादाणे उच्चारे समिई इय ।
 मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती य^१ अट्टमा ॥
- ३-एयाओ अट्ट समिईओ समासेण वियाहिया ।
 दुवालसग जिणक्खाय माय जत्थ उ पवयणं ॥

समिइ-पद

- ४-आलम्बणेण कालेण मग्गेण जयणाइ य ।
 चउकारणपरिसुद्ध सजए इरियं रिए ॥
- ५-तत्थ आलवण नाणं दसण चरण तथा ।
 काले य दिवसे वुत्ते मग्गे उप्पहवज्जिए^२ ॥
- ६-दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तथा ।
 जयणा^३ चउव्विहावुत्ता त मे कित्तयओ सुण ॥
- ७-दव्वओ चक्खुसा पेहे जुगमित्त च खेत्तओ ।
 कालओ जाव रीएज्जा उवउत्ते य भावओ ॥
- ८-इन्दियत्थे विवज्जित्ता सज्जाय चेव पचहा ।
 तम्मुत्ती तप्पुरकारे उवउत्ते इरियं^४ रिए ॥

१-उ (अ) ।

२-दुप्पह वज्जिए (अ) ।

३-जयणा (अ) ।

४-रियं (अ) ।

- ९—'कोहे माणे य मायाए लोभे य उवउत्तया' ।
हासे भए मोहरिए विगहानु तहेव न ॥^१
- १०—एयाइ अट्ट ठाणाइं परिवज्जिन्नु नज्जग ।
असावज्ज मियं काले भानं भानेज्ज पग्गयं ॥
- ११—'गवेसणाए गहणे य परिभोगेसणा य जा ।
आहारोवहिसेज्जाए एए तिन्नि विगोहाए ॥'^२
- १२—उग्गमुप्पायणं पढमे वीए रांहेज्ज पग्गण ।
परिभोयमि चउक्क विसोहेज्ज जय जई ॥
- १३—ओहोवहोवग्गहिय भण्डग द्दुविह गुणी ।
गिण्हन्तो निक्खवन्तो य पउजेज्ज उम विहि ॥
- १४—चक्खुसा पडिलेहिता पमज्जेज्ज जयं जई ।
आइए निक्खवेज्जा वा दुहओ वि समिए सया ॥
- १५—उच्चार पासवण खेल सिंघाणजट्टियं ।
आहार उवहिं देह अन्नं वावि तहाविह ॥
- १६—अणावायमसलोए अणावाए चेव होउ सलोए ।
आवायमसलोए आवाए चेय सलोए ॥
- १७—अणावायमसलोए परस्सऽणुवघाइए ।
समे अज्जुसिरे यावि अचिरकालकयमि य ॥
- १८—विट्थिण्णे दूरमोगाढे नासन्ने विलवज्जिए ।
तसपाणवीयरहिए उच्चारईणि वोसिरे ॥

१—उवउत्तओ (अ) ।

२—कोहे य माणे य माया य लोभे य तहेव य ।

हास भय मोहरीए विकहा य तहेव य ॥ (वृ० पा०) ।

३—गवेसणाए गहणेणं परिभोगेसणाणि य ।

आहारमुवहिं सेज्ज एए तिन्नि विसोहिय ॥ (वृ० पा०) ।

१९—एयाओ पच समिईओ समासेण वियाहिया ।
एतो य तओ गुत्तीओ वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥

गुत्ति-पद

२०—सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा मणगुत्ती चउव्विहा ॥

२१—सरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
मण पवत्तमाण तु नियत्तेज्ज जय जई ॥

२२—सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा वइगुत्ती चउव्विहा ॥

२३—सरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
वय पवत्तमाण तु नियत्तेज्ज जय जई ॥

२४—ठाणे निसीयणे चव तहेव य तुयट्टणे ।
उल्लघणपल्लघणे इन्दियाण य जुजणे ॥

२५—सरम्भसमारम्भे आरम्भम्मि तहेव य ।
काय पवत्तमाण तु नियत्तेज्ज जय जई ॥

निकखेव-पद

२६—एयाओ पच समिईओ चरणस्स य पवत्तणे ।
गुत्ती नियत्तणे वृत्ता अमुभत्थेसु सव्वसो ॥

२७—एया पवयणमाया जे सम्मं आयरे मुणी ।
ने निप्प सव्वससारा विप्पमुच्चइ पण्डिए ॥

—त्ति वेमि ॥

पञ्चविंशत्तम अज्भयण

जन्तडज्जं

उत्तमडज्जं

- १—माहणकुलसभूओ आनि विण्णो महायणो ।
जायाई जमजन्तमि जयघोणे त्ति नामओ ॥
- २—इन्द्रियग्गामनिग्गाही मग्गगामी महामुणी ।
गामाणुगाम रीयन्ते पत्ते द्वाणारग्गि पुत्ति ॥
- ३—वाणारसीए' वहिया उज्जाणमि मणोग्गे ।
फामुए सैज्जसथारे तत्थ वागमुत्तागण ॥
- ४—अह तेणेव कालेण पुगीए तन्थ माहणे ।
विजयघोसे त्ति नामेण जन्त जयउ वेयवी ॥
- ५—अह से तत्थ अणगारे माराक्खमणपारणं ।
विजयघोसस्स जन्तमि भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ॥
- ६—समुवट्ठिय तहि सन्त जायगो पट्ठिमहाण ।
न हु दाहामि ते भिक्ख भिक्खू जायाहि अन्तओ ॥
- ७—जे य वेयविळु विप्पा जन्तट्ठा य 'जं द्विया' ।
जोडसगविळु जे य जे य धग्गमाण पाग्गा ॥
- ८—जे समत्था समुद्धत्तु पर अप्पाणमेव य ।
तेसि अन्तमिण देयं भो भिक्खू सव्वकामिय ॥
- ९—सो 'एव तत्थ'^४ पडिसिट्ठो जायगेण महामुणी ।
न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो उत्तमट्ठगवेसओ ॥

१—वाणारसीय (अ, वृ०) ।

२—भिक्खस्स अट्ठा (वृ० पा०) ।

३—जिह्वदिया (आ) ।

४—तत्थ एव (वृ०) ।

१०—नऽन्नदृं पाणहेउं वा न वि निव्वाहणाय वा ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए इम वयणमब्बवी ॥

मुख-पदं

- ११—नवि जाणसि वेयमुह नवि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं जं च ज च धम्माण वा मुहं ।
- १२—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
न ते तुमं वियाणासि अह जाणासि तो भण ॥
- १३—तस्सऽक्खेवपमोक्खं च अचयन्तो तर्हि दिओ ।
सपरिसो पंजली होउं पुच्छई त महानुणि ॥
- १४—वेयाणं च मुह बूहि बूहि जन्नाण जं मुह ।
नक्खत्ताण मुह बूहि बूहि धम्माण वा मुहं ॥
- १५—जे समत्था समुद्धत्तुं पर अप्पाणमेव य ।
पय मे संसय सव्व साहू कहय' पुच्छओ ॥
- १६—अग्गिहोत्तमुहा वेया जन्नट्ठी वेयसां मुहं ।
नक्खत्ताण मुह चन्दो धम्माणं कासवो मुहं ॥
- १७—'जहा चन्द्र गहाईया चिट्ठन्ती पजलीउडा ।
वन्दमाणा नमसन्ता उत्तम मणहारिणो ॥'^३
- १८—अजाणगा जन्नवाई विज्जामाहणसंपया ।
भूटा^३ सज्जायतवसा भासच्छन्ता इवऽग्गिणो ॥

माहण पद

१९.—जो लोग्द्रम्भणो वुत्तो अग्गी वा महिओ जहा ।
नया कुसलसदिट्ठ त वयं वूम माहण ॥

१—इह (७) ।

२—उहा चन्दे गहाईये चिट्ठन्ती पंजलीउडा ।

मममममम' बदली उदत्तमहा रिणो [उदत्तमणगारिणो] ॥ (६० पा०) ।

३—भूटा (६०) , वूटा (६० पा०) ।

- २०—जो न सज्जइ आगन्तु पव्वयन्तो न सोयई^१ ।
 रमए अज्जवयणमि त वयं बूम माहण ॥
- २१—जायख्वं जहामइ^२ निद्धन्तमलपावग ।
 रागद्दोसभयाईय त वयं बूम माहणं ॥
 [तवस्सियं किस दन्त अवचियमंससोणियं ।
 सुव्वयं पत्तनिव्वाणं त वयं बूम माहणं ॥]^३
- २२—तसपाणे वियाणेत्ता सगहेण 'य थावरे'^४ ।
 जो न हिंसइ तिविहेणं^५ त वयं बूम माहण ॥
- २३—कोहा वा जइ वा हासा लोहा वा जइ वा भया ।
 मुसं न वयई जो उ त वय बूम माहण ॥
- २४—चित्तमन्तमचित्त वा अप्प वा जइ वा बहं ।
 न गेण्हइ अदत्त जो तं वयं बूम माहण ॥
- २५—दिव्वमाणुसतेरिच्छं जो न सेवइ मेहुणं ।
 मणसा कायवक्केण त वय बूम माहणं ॥
- २६—जहा पोम जले जायं नोवलिप्पइ वारिणा ।
 एव अलित्तो^६ कामेहि तं वय बूम माहण ॥
- २७—अलोलुय मुहाजीवी^७ अणगार अकिंचणं ।
 अससत्त गिहत्थेसु त वय बूम माहणं ॥

१—सुव्वइ (उ) ।

२—महामइ (बू०), जहामइ (बू० पा०) ।

३—यह श्लोक बृहद्ग वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

४—सथावरे (बू० पा०) ।

५—एय तु (बू०), तिविहेण (बू० पा०) ।

६—अलित्त (आ, इ, सु) ।

७—मुहाजीवि (बू० पा०) ।

- [जहिता पुव्वसंजोग नाइसंगे^१ य बन्धवे ।
 जो न सज्जइ एएहिं^२ तं वयं बूम माहणं ॥]^३
 २८—पमुवन्धा^४ सव्ववेया^५ जइं च पावकम्मणा ।
 न त तायन्ति दुस्सीलं कम्माणि बलवन्ति ह ॥
 २९—न विमुण्डिणण समणो न ओकारेण बम्भणो ।
 न मुणी रण्णवासेण कुसचीरेण न तावसो ॥
 ३०—समयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो ।
 नाणेण य मुणी होइ तवेणं होइ तावसो ॥
 ३१—कम्मणा बम्भणो होइ कम्मणा होइ खत्तिओ ।
 वइस्सो कम्मणा होइ सुदो हवइ^६ कम्मणा ॥
 ३२—एए 'पाउकरे बुद्धे'^७ जेहिं होइ सिणायओ ।
 सव्वकम्मविनिम्मुक्क त वय बूम माहणं ॥
 ३३—एव गुणसमाउत्ता जे भवन्ति दिउत्तमा ।
 ते समत्या उ उद्धत्तु पर अप्पाणमेव य ॥

घुड-पद

- ३४—एव तु संसाए छिन्ते विजयघोसे य माहणे^८ ।
 'समुदाय लयं त तु'^९ जयघोसं महामुणिं ॥

- १—संजोग (क्र) ।
 २—भीतु (ञ) एरत्तु (उ) ।
 ३—एह इत्थं एतद् वृत्ति में पाठान्तर रूप में स्वीकृत है ।
 ४—पमुवन्धा (वृ० पा०) ।
 ५—सव्व वेया च (उ) ।
 ६—हवइ (उ) हंइ उ (वृ०) ।
 ७—पाउकरेण (वृ० पा०) ।
 ८—इतो (वृ०) माहणे (वृ० पा०) ।
 ९—तओ (उ, वृ क्र) ।
 १०—समुदाय लयं तं तु (वृ० पा०) , समादाय तयं तं व (उ) ।

३५—तुट्टे य विजयघोसे इणमुदाहु कयजली ।
माहणत्त जहाभूय सुट्ठु मे उवदसिय ॥

३६—तुब्भे जइया जन्नाण तुब्भे वेयविऊ विऊ ।
जोइसगविऊ तुब्भे तुब्भे धम्माण पारगा ॥

३७—तुब्भे समत्था उद्धत्तु पर अप्पाणमेव य ।
तमणुग्गह करेहऽम्ह^१ भिक्खेण^२ भिक्खुउत्तमा ॥

सवोहि-पदं

३८—न कज्ज मज्झ भिक्खेण खिप्प निक्खमसू दिया ।
मा भमिहिसि भयावट्टे^३ घोरे^४ ससारसागरे ॥

३९—उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई ।
भोगी भमइ ससारे अभोगी विप्पमुच्चई ॥

४०—उल्लो सुक्को य दो छूढा गोलया मट्टियामया ।
दो वि आवडिया कुड्डे जो उल्लो सोतत्थ^५ लग्गई ॥

४१—एव लग्गन्ति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा ।
विरत्ता उ न लग्गन्ति जहा सुक्को उ गोलओ ॥

निक्खेव-पद

४२—एव से विजयघोसे जयघोसस्स अन्तिए ।
अणगारस्स निक्खन्तो धम्मं 'सोच्चा अणुत्तरं'^६ ॥

१—करे अम्म (अ, इ) ।

२—भिक्खुणं (वृ०) ।

३—भवावत्ते (वृ० पा०) ।

४—दीहे (वृ० पा०) ।

५—सोऽत्थ (वृ०, ऋ) ।

६—सोच्चाण केवल (वृ० पा०) ।

४३—खवित्ता पुव्वक्कम्माइं संजमेण तवेण य ।
 जयघोसविजयघोसा सिद्धिं पत्ता अणुत्तर ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

छवीसइम अज्भयण

सामायारी

सामायारी-पद

- १-सामायारि पवक्खामि सव्वदुक्खविमोक्खणि ।
ज चरित्ताण निग्गन्था तिण्णा ससारसागर ॥
- २-पढमा आवस्सिया नाम विडया य^१ निसीहिया ।
आपुच्छणा य तडया चउत्थी पडिपुच्छणा ॥
- ३-पचमा छन्दणा नाम इच्छाकारो य छट्ठओ ।
सत्तमो मिच्छकारो य^२ तहकारो य अट्ठमो ॥
- ४-अब्भुट्ठाण नवम, दसमा उवसपदा ।
एसा दसगा साहूण सामायारी पवेडया ॥
- ५-गमणे आवस्सिय कुज्जा ठाणे कुज्जा निसीहिय ।
आपुच्छणा सयंकरणे परकरणे पडिपुच्छणा ॥
- ६-छन्दणा दव्वजाएण इच्छाकारो य सारणे ।
मिच्छाकारो य निन्दाए तहकारो य^३ पडिस्सुए ॥
- ७-अब्भुट्ठाण गुरुपूया अच्छणे उवसपदा ।
'एवं दुपचसजुत्ता'^४ सामायारी पवेडया ॥

चरिया-पद

- ८-पुव्विल्लमि चउव्भाए आइच्चंमि समुट्ठिए ।
भण्डय पडिलेहिता वन्दिता य तओ गुरुं ॥

१-होइ (उ) ।

२-उ (आ, इ) ।

३-X (उ) ।

४-एसा दसगा साहूण (वृ० पा०) ।

- ९-पुच्छेज्जा पंजलिउडो किं कायव्वं मए इहं ? ।
 इच्छ निओइउ भन्ते । वेयावच्चे व सज्झाए ॥
 १०-वेयावच्चे निउत्तेण कायव्व अगिलायओ ।
 सज्झाए वा निउत्तेण सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥

दिवसचरिया-पद

- ११-दिवसस्स चउरो भागे कुज्जा भिक्खू वियक्खणो ।
 तओ उत्तरगुणे कुज्जा दिणभागेसु चउसु वि ॥
 १२-पढम पोरिसिं सज्झाय वीयं भाण भियायई ।
 तइयाए भिक्खायरिय पुणो चउत्थीए सज्झायं ॥
 १३-आसाढे मासे दुपया पोसे मासे चउप्पया ।
 चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी ॥
 १४-अगुल सत्तरत्तेण पक्खेण य दुअंगुल ।
 वड्ढए हायए वावी मासेण चउरगुलं ॥
 १५-आसाढवहुलपक्खे भद्दए कत्तिए य पोसे य ।
 फग्गुणवड्ढसाहेसु य नायव्वा^१ अमोरत्ताओ ॥
 १६-जेट्टामूले आसाढसावणे छहि अगुलेहिं पडिलेहा ।
 अट्ठहिं वीयतियमी तइएदस अट्ठहिं चउत्थे ॥

रत्तिचरिया-पद

- १७-रत्ति पि चउरो भागे भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
 तओ उत्तरगुणे कुज्जा राइभाएसु चउसु वि ॥
 १८-पढम पोरिसिं सज्झाय
 वीय भाण भियायई ।
 तइयाए निट्ठमोक्ख तु
 चउत्थी भुज्जो^२ वि सज्झायं ॥

१-वोद्धवा (आ) ।

२-पुणो (अ) ।

- १९-जं नेइ जया रत्ति
नक्खत्त तंमि नहचउब्भाए ।
संपत्ते विरमेज्जा
सज्भायं पओसकालम्मि ॥
पडिलेहण-पद
- २०-तम्मेव य नक्खत्ते
गयणचउब्भागसावसेसंमि ।
वेरत्तियं पि कालं
पडिलेहिता मुणी कुज्जा ॥
- २१-पुव्विल्लंमि चउब्भाए पडिलेहित्ताण भण्डय ।
गुरु वन्दित्तु सज्भायं कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥
- २२-पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरु ।
अपडिक्कमित्ता कालस्स भायणं पडिलेहए ॥
पडिलेहणविहि-पद
- २३-मुहपोत्तियं^१ पडिलेहिता पडिलेहिज्ज गोच्छ्रं ।
गोच्छ्रगलइयंगुलिओ वत्थाइ पडिलेहए ॥
- २४-उड्ढ थिर अतुरियं पुव्वं वा वत्थमेव पडिलेहे ।
तो बिइय पप्फोडे तइय च पुणो पमज्जेज्जा ॥
- २५-अणच्चाविय अवलियं
अणाणुबन्धि अमोसलि^२ चेव ।
छप्पुरिमा नव खोडा
^३पाणीपाणविसोहणं^४ ॥

१-मुहपत्ति (आ, इ, उ, ऋ) ।

२-अमोसल (अ), अमोसलि (वृ०) ।

३-पाणीपाणि० (वृ०) ।

४-^० पमज्जण (आ, वृ० पा०), ^० पमज्जणया (ओघनिर्युक्ति ४२५)

२६—आरभडा सम्मद्दा
 वज्जेयव्वा य मोसली तइया ।
 पप्फोडणा चउत्थी
 विक्खित्ता वेइया छट्ठा ॥

२७—पसिढिलपलम्बलोला
 एगामोसा अणेगरूवधुणा^१ ।
 कुणइ पमाणि पमायं
 सकिएगणणोवगं कुज्जा ॥

२८—अणूणाइरित्तपडिलेहा
 अविवच्चासा तहेव य ।
 पढमं पय पसत्थ
 सेसाणि उ अप्पसत्थाइं ॥

२९—पडिलेहणं कुणन्तो
 मिहोकह कुणइ जणवयकहं वा ॥
 देइ व पच्चक्खाण
 वाएइ सय पडिच्छइ वा ॥

३०—पुढवीआउक्काए
 तेऊवाऊवणस्सइत्तसाण ।
 पडिलेहणापमत्तो
 छण्ह पि विराहओ होइ ॥

- आहार-पद

[पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइत्तसाण ।
 पडिलेहणआउत्तो छण्ह आराहओ होइ ॥]^२

१—अणेगरूवधुया (वृ० पा०) ।

२—यह गाथा केवल (अ) प्रति में ही है ।

३१—तइयाए पोरिसीए भत्त पाण गवेसाए ।
छण्हं अन्नयरागम्मि कारणमि समुट्टिए ॥

३२—वेयणवेयावच्चे

डरियट्टाए य सजमट्टाए ।
तह पाणवत्तियाए
छट्ट पुण धम्मचिन्ताए ॥
अणाहार-पद

३३—निगन्थो

धिडमन्तो
निगन्थी वि न करेज छहिं चैव ।
ठाणेहिं उ डमेहिं
अणइक्कमणा य से होइ ॥

३४—आयंके

उवसग्गे^१
तित्तिक्खया वम्भचेरगुत्तोमु ।
पाणिदया तवहेउं
सरीरवोच्छेयणट्टाए ॥
विहार-पद

३५—अवसेस भण्डग गिज्झा चक्खुसा पडिलेहए ।
प्रमद्धजोयणाओ विहार विहरए मुणी ॥

३६—चउत्थीए पोरिसीए निक्खवित्ताण भायणं ।
सज्झाय तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं^२ ॥
संझा-पद

३७—पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
पडिक्कमित्ता कालस्स सेज्ज तु पडिलेहए ॥

१—उमग्गे (उ) ।

२—सव्वदुक्खविमोक्खणं (वृ० पा०) ।

३८-पासवणुच्चारभूमि च पडिलेहिज्ज जयं जई ।
काउस्सगं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

पडिक्कमण-पद

३९-देसिय च अईयार चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणे' दंसणे चेव चरित्तम्मि तहेव य ॥

४०-पारियकाउस्सगो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
देसियं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥

४१-पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
काउस्सगं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

४२-पारियकाउस्सगो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
'थुइमंगलं च काऊण'^३ कालं संपडिलेहए ॥

४३-'पढम पोरिसि सज्झायं वीय भाणं भियायई ।
तइयाए निदुमोक्ख तु सज्झाय तु चउत्थिए ॥'^३

४४-'पोरिसीए चउत्थीए कालं तु पडिलेहिया ।
सज्भाय तओ कुज्जा अबोहेन्तो असंजए ॥'^४

४५-पोरिसीए चउब्भाए 'वन्दिऊण तओ गुरु'^५ ।
पडिक्कमित्तु कालस्स कालं तु पडिलेहए ॥

४६-आगए कायवोस्सगो सव्वदुक्खविमोक्खणे ।
काउस्सगं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

१-नाणे य (आ) , नाणमि (उ) ।

२-सिद्धाण सथव किच्चा (वृ० पा०) ।

३-पढमा पोरिसि सज्झाय वीए ज्ञाण क्षियायति ।

ततियाए निदुमोक्ख च चउब्भाए चउत्थए ॥ (वृ० पा०) ।

४-काल तु पडिलेहिता अवोहितो असंजए ।

कुज्जा मुणी य सज्झाय सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ (वृ० पा०) ।

५-से से वंदित्तु ते गुरु (वृ० पा०) ।

- ४७-राइय च अईयार चित्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
 नाणंमि दसणमी य चरित्तमि तवमि य ॥
- ४८-पारियकाउस्सग्गो वन्दिताण तओ गुरु ।
 राइयं तु अईयार आलोएज्ज जहक्कम ॥
- ४९-पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दिताण तओ गुरु ।
 काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खण ॥
- ५०-किं तव पडिवज्जामि एव तत्थ विचिन्ताण ।
 काउस्सग्गं तु पारित्ता वन्दई य तओ गुरु ॥
- ५१-पारियकाउस्सग्गो वन्दिताण तओ गुरु ।
 तव सपडिवज्जेत्ता^१ करेज्ज सिद्धाण मथवं ॥

निक्खेव-यदं

- ५२-एसा सामायारी समासेण वियाहिया ।
 ज चरित्ता वहू जीवा तिण्णा ससाग्गत्ताग्ग ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

सत्तावीसइम अज्भयण

खलुंकिज्जं

१—थेरे गणहरे गगो मुणी आसि विसारए ।

आइण्णे गणिभावम्मि समाहि पडिसंधए ॥

२—वहणे वहमाणस्स^१ कन्तार अइवत्तई ।

जोए वहमाणस्स ससारो अइवत्तई ॥

३—खलुके जो उ जोएइ विहम्माणो किलिस्सई^२ ।

असमाहि च वेएइ तोत्तओ य से भज्जई ॥

४—एग डसइ पुच्छमि एग विन्धइऽभिकखण ।

एगो भजइ समिल एगो उप्पहपट्टिओ ॥

५—एगो पडइ पासेण निवेसइ निवज्जई ।

उक्कुद्दइ उप्फिडई सढे वालगवी वए ॥

६—माई मुद्धेण पडइ कुद्धे गच्छइ पडिप्पह ।

‘मयलक्खेण चिट्ठी’^३ वेगेण य पहावई ॥

७—छिन्नाले छिन्दइ सेल्लि दुद्धन्तो भजए जुग ।

से वि य सुस्सुयाइत्ता^४ उज्जाहित्ता^५ पलायए ॥

८—खलुका जारिसा जोज्जा दुस्सीसा वि हु तारिसा ।

जोडया धम्मजाणम्मि भज्जन्ति धिइदुब्बला ॥

१—वाहयमाणस्स (अ, सु), वहणमाणस्स (ऋ) ।

२—किलामई (वृ०), किलिस्सई (वृ० पा०) ।

३—पल्लय (यल) ते ण चिट्ठिया (वृ० पा०) ।

४—सुस्सुयत्ता (अ) ।

५—उज्जुहिता (आ, वृ०, सु) ।

- ९-इड्ढीगारविए एगे एगेऽत्थ --- रसगारवे । - १
 सायागारविए एगे एगे सुचिरकोहणे ॥
- १०-भिक्षालसिए एगे एगे ओमाणभीरुए थद्धे ।
 एग च^१ अणुसासम्मी हेऊहिं कारणेहि य ॥
- ११-सो वि अन्तरभासिल्लो दोसमेव पकुव्वई^२ ।
 आयरियाण त वयण पडिकूलेइ अभिक्खण ॥
- १२-न सा मम वियाणाड न वि^३ सा मज्झ दाहिई ।
 निग्गया होहिई मन्ने साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ ॥
- १३-पेसिया^४ पलिउचन्ति ते परियन्ति समन्तओ ।
 रायवेट्ठि^५ व मन्नन्ता करेन्ति भिउडि मुहे ॥
- १४-वाइया सगहिया चैव 'भत्तपाणे य'^६ पोसिया ।
 जायपक्खा जहा हसा पक्कमन्ति दिसोदिसि ॥
- १५-अह सारही विचिन्तेइ^७ खलुकेहि समागओ ।
 किं मज्झ दुट्ठसीसेहि अप्पा मे अवसीयई ॥
- १६-जारिसा^८ मम सीसाउ तारिसा^९ गल्लिगद्धा ।
 गल्लिगद्धे चइत्ताण^{१०} दढ परिगिण्हई^{११} तव ॥

१-× (अ) ।

२-पमासए (वृ० पा०) ।

३-य (उ) ।

४-पोसिया (वृ० पा०) ।

५-रायाविट्ठ (अ) ।

६-भत्तपाणेण (अ, आ, इ) ।

७-हि चिन्तेइ (अ) ।

८-तारिसा (अ) ।

९-जारिसा (अ) ।

१०-जहित्ताण (आ) ।

११-पगिण्हामि (वृ०), परिगिण्हई (वृ० पा०) ।

१७—मिउ महवसंपन्ने गम्भीरे सुसमाहिए ।
 विहरइ महि महप्पा सीलभूएण अप्पणां ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

अट्टावीसडमं अज्भयणं

मोक्खमग्गगई

१-मोक्खमग्गगड तच्चं मुणेह जिणभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं नाणदंसणलक्खणं ॥

मग्ग-पद

२-नाण च दसण चेव चरित्त च तवो तथा ।
एस^१ मग्गो त्ति पन्नत्तो जिणेहि वरदसिहि^२ ॥
३-नाण च दसणं चेव चरित्त च तवो तथा ।
एयंमग्गमणुप्पत्ता^३ जीवा गच्छन्ति सोग्गडं ॥

नाण पद

४-तत्थ पंचविह नाण मुय आभिनिवोहिय ।
ओहीनाण तु तइयं मणनाण च केवलं ॥
५-एय पंचविह नाणं दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाणं च सव्वेसि नाण नाणीहि देसिय ॥

दव्व-पद

६-गुणाणमासओ दव्व एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ^४ अस्सिया भवे ॥
७-धम्मो अहम्मो आगास कालो पुग्गलजन्तवो ।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो जिणेहि वरदंसिहि ॥

१-एय (अ) ।

२-सव्वदंसिहि (अ) ।

३-एव^० (अ) ।

४-इहओ (अ) ।

- ८-धम्मो अहम्मो आगासं दव्वं इक्किक्कमाहियं ।
अणन्ताणि य दव्वाणि कालो पुग्गलजन्तवो ॥
- ९-गडलक्खणो उ^१ धम्मो अहम्मो ठाणलक्खणो ।
भायण सव्वदव्वाणं नह ओगाहलक्खण ॥
- १०-वत्तणालक्खणो कालो जीवो उवओगलक्खणो ।
नाणेण दसणेण च सुहेण य दुहेण य ॥
- ११-नाणं च दसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
वीरिय उवओगो य एय जीवस्स लक्खणं ॥
- १२-सद्वन्धयारउज्जोओ पहा 'छायातवे इ वा'^२ ।
वण्णरसगन्धफासा पुग्गलाण तु लक्खणं ॥
- १३-एगत्त च पुहत्त^३ च सखा सठाणमेव य ।
सजोगा य विभागा य पज्जवाण तु लक्खणं ॥

नवतहिय-पद

- १४-जीवाजीवा य वन्धो य पुण्ण पावासवो तहा ।
सवरो निज्जरा भोक्खो सन्तेए तहिया नव ॥

सम्मत्तरुड-पद

- १५-तहियाण तु भावाणं 'सव्भावे उवएसण ।
भावेण सद्वहन्तस्स सम्मत्त त वियाहिय'^४ ॥

१-य (उ) ।

२-^० तवेइ या (उ क्र) ^० तवुत्ति वा (वृ०) ।

३-दुहत्त (उ) ।

४-सव्भावे (वेणो) वएसणे ।

भावेण उ नद्वहा सम्मत्त होति आहिय ॥ (वृ० पा०) ।

१६-निसग्गुवएसरुई

आणारुई मुत्तवोयरुडमेव ।

अभिगमवित्थाररुई

किरियासखेवधम्मरुई ॥

१७-भूयत्थेणाहिगया

जीवाजीवा य पुण्णपावं च ।

सहसम्ममुइयासवसवरो य^१

रोएइ उ निसग्गो ॥

१८-जो जिणदिट्ठे भावे

चउव्विहे सदहाइ सयमेव ।

एमेव^२ नऽन्नह ति य

निसग्गरुइ ति नायव्वो ॥

१९-एए चेव उ^३ भावे

उवइट्ठे जो परेण सदहई ।

छउमत्थेण जिणेण व^४

उवएसरुइ ति नायव्वो ॥

२०-रागो दोसो मोहो

अन्नाण जस्त अवगयं होइ ।

आणाए रीयंतो

सो खलु आणारुई नाम ॥

१-उ (अ) ।

२-एमेय (अ, उ, वृ०) ।

३-हु (ऋ) ।

४-य (ऋ) ।

- २१—जो सुत्तमहिज्जन्तो
सुएण ओगाहई उ सम्मतं ।
अगेण बाहिरेण व^१
सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥
- २२—एगेण अणेगाइं
पयाइ जो पसरई उ सम्मत ।
उदए व्व तेल्लबिन्दू
सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥
- २३—सो होइ अभिगमरुई
सुयनाण जेण अत्थओ दिट्ठ ।
'एक्कारस' अगाइं^२
पडण्णगं^३ दिट्ठिवाओ थ ॥
- २४—दव्वाण सव्वभावा
सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा ।
सव्वाहि नयविहीहि य
वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥
- २५—दंसणनाणचरित्ते
तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु^४ ।
जो किरियाभावरुई
सो खलु किरियारुई नाम ॥

१—य (ऋ) ।

२—इक्कारसमगाइ (उ, ऋ) ।

३—पइणिय (उ) ।

४—सच्च^० (उ) ।

२६—अणभिग्गहियकुदिट्ठी

सखेवरुड त्ति होड नायव्वो ।

अविसारओ

पवयणे

अणभिग्गहिओ य सेसेमु ॥

२७—जो

अत्थिकायधम्म

सुयधम्म खलु चरित्तधम्म च ।

सद्दहइ

जिणाभिहिय

सो धम्मरुड त्ति नायव्वो ॥

२८—परमत्थसथवो

वा

सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वा वि ।

वावन्नकुदसणवज्जणा

य

सम्मत्तसद्दहणा ॥

२९—नत्थि चरित्त

सम्मत्तविहूण

दसणे

उ

भइयव्व ।

सम्मत्तचरित्ताडं

जुगवं

पुव्व

व^१

सम्मत्त ॥

३०—नादसणिस्स

नाण

नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा ।

अगुणिस्स

नत्थि मोक्खो

नत्थि अमोक्खस्स निव्व्वाणं ॥

३१—निस्संकिय

निक्कखिय

निव्वित्तिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।

उववूह

थिरीकरणे

वच्छल्ल

पभावणे

अट्ट ॥

चारित्त-पद

- ३२-सामाइयत्थ^१ पढमं छेओवट्ठावण भवे बीय ।
 परिहारविसुद्धीयं सुहुम तह संपरायं च ॥
- ३३-अकसाय अहक्खायं छउमत्थस्स जिणस्स वा ।
 एय चयरित्तकर चारित्त होइ आहियं ॥

तव-पद

- ३४-तवो य दुविहो वुत्तो बाहिरब्भन्तरो तहा ।
 वाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥

निक्खेव-पद

- ३५-नाणेण जाणई भावे दसणेण य सद्वहे ।
 चरित्तेण निगिण्हाइ^२ तवेण परिसुज्झई ॥
- ३६-खवेत्ता पुव्वकम्माइ सजमेण तवेण य ।
 सब्बदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमन्ति महेसिणो ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१-सामाइय च (उ, क्र) ।

२-निगिहति (६० पा०) ।

एगूणतीसडम अज्भयण

सम्मत्तपरक्रमे

उक्खेव-पद

सू० १—‘सुय मे आउस । तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु सम्मत्त-
परक्रमे ‘नाम अज्भयणे’” समणेणं भगवया महावीरेण कासवेण
पवेइए जसम्म सद्वहिता पत्तियाडत्ता रोयडत्ता फासडत्ता पालडत्ता^१
तीरइत्ता किट्टइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालडत्ता वहवे
जीवा सिज्भन्ति बुज्भन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वट्टुक्खाणमन्त
करेन्ति । तस्स ण अयमट्ठे एवमाहिज्जइ त जहा -- सवेगे १ निव्वेए २
धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६
गरहणया ७ सामाइए ८ चउव्वीसत्थए ९ वन्दणए^३ १०
पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुइमगले^४ १४
कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७
सज्जाए १८ वायणया^५ १९ पडिपुच्छणया २० परिउट्टणया २१ अणु-
प्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगगमणसनिवे-
सणया २५ सजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडि-
बद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२ सभोग-
पच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसाय-
पच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहाय-

१—नाम मज्झयणे (अ, ऋ), नामज्झयणे (स, उ) ।

२—पालइत्ता, पूरइत्ता (अ) ।

३—वंदणे (अ) ।

४—थय थुइ मगले (अ, ऋ), थण थुई मगले (उ) ।

५—वायणाए (ऋ), वायणा (उ) ।

पञ्चक्खाणे ३९ भत्तपञ्चक्खाणे ४० सब्भावपञ्चक्खाणे ४१ पडिरुवया^१
 ८२ वेयावच्चे ४३ सब्बगुणसपण्णया^२ ४४ वीयरागया ४५
 वन्ती ८६ मुत्ती ८७ अज्जवे^३ ४८ महवे^४ ४९ भावसच्चे ५० करण-
 सच्चे ५१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया
 ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया
 ५८ नाणसपन्नया ५९ दसणसपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१
 नोडन्दियनिग्गहे ६२ चक्खिन्दियनिग्गहे ६३ घाणिन्दियनिग्गहे ६४
 जिट्ठिन्दियनिग्गहे ६५ फ़ासिन्दियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७
 माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जदोसमिच्छा-
 दमणविजाग ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ७३ ॥

सवेग-पद

सु० २—सवेगंण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

सवेगेण अणुत्तर धम्मसद्ध जणयइ । अणुत्तराए
 धम्मसद्धाण सवेग हव्वमागच्छइ । अणन्ताणुवन्धिकोहमाणमायालोभे
 गवेज्ज । कम्म न वन्धइ । तप्पच्चइय च ण मिच्छत्तविसोहिं काऊण
 वण्णानाहण भवइ । दसणविसोहीए य ण विसुद्धाए अत्थेगइए
 तेणैव भवण्णहणेण सिज्जइ । सोहीए य ण विमुद्धाए तच्च पुणो
 भवण्णहण नाउमइ ॥

निव्वेय-पद

सु० ३—निव्वेयंण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

निव्वेयंण द्विवमाणुसतेगिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेयं
 हव्वमागच्छइ । सब्बविमाणुसु विरज्जइ सब्बविसएसु विरज्जमाणे

१—पडिरुवया (४१) ।

२—सब्वगुणसपण्णया (४३, ४४, ४५) ।

३—अज्जवे (४८) ।

४—महवे (४९) ।

५—अकम्मया (७३) ।

आरम्भपरिच्चाय^१ करेइ । आरम्भपरिच्चाय करेमाणे ससारमग्ग
वोच्छिन्दइ सिद्धिमग्गे पडिवन्ते य भवइ ॥

धम्मसद्धा-पद

सू० ४—धम्मसद्धाए णं भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

धम्मसद्धाए ण सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ । अगारधम्म
च णं चयइ अणगारेण ण जीवे सारीरमाणसाण दुक्खाण छेयणभेयण-
सजोगाईण वोच्छेय करेइ अक्वावाह च सुहं निव्वत्तेइ^२ ॥

सुस्सूसणा-पद

सू० ५—गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए ण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए ण विणयपडिवत्ति जणयइ । 'विणय-
पडिवन्ते य ण'^३ जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणिय-
मणुस्सदेवदोगाईओ निरुम्भइ । वण्णसजलणभत्तिवहुमाणयाए
मणुस्सदेवसोगाईओ निबन्धइ सिद्धि सोग्गइ च विसोहेइ । पसत्याइ
च ण विणयमूलाइ सव्वकज्जाइ साहेइ । अन्ने य वहवे जीवे
विणइत्ता भवइ ॥

आलोयणा-पद

सू० ६—आलोयणाए ण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

आलोयणाए ण मायानियाणमिच्छादसणसल्लाण मोक्खमग्ग-
विग्घाण अणन्तससारवद्धणाण^४ उद्धरण करेइ । उज्जुभाव च^५
जणयइ । उज्जुभावपडिवन्ते^६ य ण जीवे अमाई इत्थीवेयनपुसगवेय
च न बन्धइ । पुव्ववद्ध च ण तिज्जरेइ ॥

१—आरम्भपरिगह^० (अ) ।

२—निव्विते (ऋ) ।

३—^० पडिवन्नएण (ऋ) ।

४—^० वद्धमाण (अ) ।

५—च ण (उ, ऋ, स) ।

६—^० पडिवन्नएण (ऋ) ।

निन्दण-पद

सू० ७—निन्दणयाए ण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

निन्दणयाए ण पच्छाणुतावं जणयइ । पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करणगुणसेट्ठिं^१ पडिवज्जइ । करणगुणसेट्ठिं 'पडिवन्ते य'^२ ण अणगारे मोहणिज्ज कम्मं उग्घाएइ ॥

गरहण-पद

सू० ८—गरहणयाए ण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

गरहणयाए ण अपुरक्कार जणयइ । अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ^३ पसत्थजोगपडिवन्ते य णं अणगारे अणन्तघाडपज्जवे खवेइ ॥

सामाडय-पदं

सू० ९—सामाडएण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

सामाडएण सावज्जजोगविरइ जणयइ ॥

चउव्वीसत्थव-पद

सू० १०—चउव्वीसत्थएण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

चउव्वीसत्थएण दसणविसोहिं जणयइ ॥

वन्दण-पद

सू० ११—वन्दणएण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

वन्दणएण नीयागोय कम्म खवेइ । उच्चागोय निवन्धइ । मोहणं च ण अप्पट्ठित्तं आणाफळ निव्वत्तेइ दाहिणभावं च ण जणयइ ॥

पडिकमण-पद

सू० १२—पडिकमणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिकमणेणं वयच्छिदाइं पिहेइ । पिहियवयच्छिहे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अइसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते^१ सुप्पणिहिए^२ विहरइ ।

काउस्सग-पद

सू० १३—काउस्सगणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

काउस्सगणेणं तीयपडुप्पन्त पायच्छित्तं विसोहेइ । विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए 'ओहरियभारो व्व'^३ भारवहे पसत्थज्झाणोवगए^४ सुहंसुहेणं विहरइ ।

पच्चक्खाण-पद

सू० १४—पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पच्चक्खाणेण आसवदाराइं निरुम्भइ^५ ।

थवथुइ-पदं

सू० १५—थवथुइमगलेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

थवथुइमंगलेण नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ । नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ते य ण जीवे अन्तकिरियं कप्पविमाणोववत्तिग आराहणं आराहेइ ।

कालपडिलेहण-पदं

सू० १६—कालपडिलेहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कालपडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ।

१—अपमत्ते (वृ० पा०) ।

२—सुप्पणिहिदिए (वृ० पा०) ; सुप्पिणिहिए (अ, उ, ऋ) ।

३—^० भरुव्व (उ, ऋ) ।

४—^० उज्जाणज्झाइ (वृ० पा०) ।

५—निरुम्भइ । पच्चक्खाणेण इच्छानिरोह जणयइ । इच्छानिरोहं गए य ण जीवे सव्वदव्वेसु विणीयत्तण्हे सीइभूए विहरइ । (इ, उ) ।

पायच्छित्त-पद

सू० १७—पायच्छित्तकरणेण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ निरइयारे यावि भवइ । सम्म च ण पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्ग च मग्गफलं च विसोहेइ आयारं च आयारफलं च आराहेइ ।

खमावण-पद

सू० १८—खमावणयाए णं भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

खमावणयाए णं पल्हायणभाव^१ जणयइ । पल्हायणभावमुवगाए य सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ । मित्तीभावमुवगाए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ ।

सज्जाय-पदं

सू० १९—सज्जाएण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

सज्जाएण नाणावरणिज्ज कम्मं खवेइ ।

सू० २०—वायणाए ण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

वायणाए ण निज्जर जणयइ । सुयस्स य 'अणासायणाए वट्टए'^२ । सुयस्स अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ । तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ।

सू० २१—पडिपुच्छणयाए णं भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

पडिपुच्छणयाए णं सुत्तत्थतदुभयाइ विसोहेइ । कंखामोहणिज्ज कम्म वोच्छिन्दइ ।

सू० २२—परियट्टणाए णं भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

परियट्टणाए ण वंजणाइ जणयइ वंजणलद्धिं च उप्पाएइ ।

१—पल्हाएणत भाव (बृ०), पल्हायणभाव (बृ० पा०) ।

२—अणुसज्जणाए वट्टइ (बृ० पा०) ।

सू० २३—अणुप्पेहाए ण भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

अणुप्पेहाए ण आउयवज्जाओ सत्तकम्मप्पगडीओ धणियबन्धणवद्धाओ सिद्धिलबन्धणवद्धाओ पकरेइ । दीहकालट्टिइयाओ हस्सकालट्टिइयाओ पकरेइ । तिच्चाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ । 'बहुपएसग्गाओ अप्पएसग्गाओ पकरेइ'^१ । आउयं च ण कम्म सिय बन्धइ सिय नो बन्धइ । 'असायावेयणिज्ज च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ'^२ अणाइय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरन्त संसारकन्तार खिप्पामेव वीइवयइ ।

सू० २४—धम्मकहाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मकहाए ण 'निज्जर जणयइ'^३ । 'धम्मकहाए ण पवयणं पभावेइ'^४ । पवयणपभावेणं जीवे आगमिस्स भद्दाए कम्म निबन्धइ ।

सुय-पद

सू० २५—सुयस्स आराहणयाए ण भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

सुयस्स आराहणयाएण खवेइ न य सकिलिस्सइ ।

एगग्गमण-पद

सू० २६—एगग्गमणसनिवेसणयाए ण भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

एगग्गमणसनिवेसणयाए णं चित्तनिरोह करेइ ।

सजम-पद

सू० २७—सजमेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संजमेण अणण्हयत्त जणयइ ।

१—बहुपएसग्गाओ अप्पएसग्गाओ पकरेइ (वृ० पा०) ।

२—साया वेयणिज्ज च ण कम्म भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ (वृ० पा०) ।

३—पवयण पभावेइ (वृ० पा०) ।

४—X (वृ०) ।

तव-पदं

सू० २८—तवेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

तवेणं वोदाण जणयइ ।

वोदाण-पद

सू० २९—वोदाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वोदाणेणं अकिरियं जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिञ्झइ बुञ्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ।

सुहसाय-पद

सू० ३०—सुहसाएण^१ भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सुहसाएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ । अणुस्सुयाए ण जीवे अणुकम्पए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्ज कम्म खवेइ ।

अपडिबद्ध-पद

सू० ३१—अप्पडिबद्धयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अप्पडिबद्धयाए णं निस्संगत्त जणयइ । निस्संगत्तेण^२ जीवे एगे एगगचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ।

विवित्त-पद

सू० ३२—विवित्तसयणासणयाए^३ ण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

विवित्तसयणासणयाए णं चरित्तगुत्तिं जणयइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपडिवन्ते अट्टविहकम्मगण्ठि निज्जरेइ ।

१—सुहसाइयाएणं (बृ०), सुहसायाएणं, सुहसाएण (बृ० पा०) ;

सुहसायाएण (अ, आ, इ, उ, ऋ) ।

२—निस्संगत्त गएणं (उ, ऋ) ।

३—० सयणासणसेवणयाए (आ, इ) ।

विनियट्टण-पदं

सू० ३३—विणियट्टणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

विणियट्टणयाए ण पावकम्माण अकरणयाए अब्भुट्टेइ ।
पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए त नियत्तेइ तओ पच्छा चाउरन्तं
संसारकन्तार वीइवयइ ।

पच्चक्खाण-पद

सू० ३४—संभोगपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संभोगपच्चक्खाणेण आलम्बणाइं खवेइ । निरालम्बणस्स य
आययद्धिया जोगा भवन्ति । सएण लाभेण संतुस्सइ^१ परलाभ
'नो आसाएइ'^२ नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्थेइ नो अभिलसइ ।
परलाभ अणासायमाणे^३ अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे
अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ताण विहरइ ।

सू० ३५—उवहिपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

उवहिपच्चक्खाणेणं अपलिमन्थ जणयइ । निरुवहिए ण जीवे
निक्कखे^४ उवहिमन्तरेण य न सकिलिस्सइ ।

सू० ३६—आहारपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

आहारपच्चक्खाणेणं 'जीवियाससप्पओगं'^५ वोच्छिन्दइ^६ ।
जीवियाससप्पओग वोच्छिन्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न
सकिलिस्सइ ।

१—तुस्सइ (उ, ऋ) ।

२—'नो आसाएइ' व्याख्यात नहीं है (वृ०) ।

३—अणस्सायमाणे (वृ०) ।

४—'नक्कखे' एतच्च पद क्वचिदेव दृश्यते (वृ०) ।

५—जीवियास विप्पओग (वृ० पा०) ।

६—वोच्छिन्दिय (वृ० पा०) ।

सू० ३७—कसायपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कसायपच्चक्खाणेणं वीयरारागभावं जणयइ ।

वीयरारागभावपडिवन्ते वि य ण जीवे समसुहदुक्खे भवइ ।

सू० ३८—जोगपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगपच्चक्खाणेण अजोगत्त जणयइ । अजोगी^१ ण जीवे नवं कम्म न बन्धइ पुव्वबद्ध निज्जरेइ ।

सू० ३९—सरीरपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सरीरपच्चक्खाणेणं सिद्धाइसयगुणत्तण^२ निव्वत्तेइ ।

सिद्धाइसयगुणसपन्ते य ण जीवे लोगगमुवगए परमसुही भवइ ।

सू० ४०—सहायपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सहायपच्चक्खाणेण एगीभावं जणयइ । एगीभावभूए वि^३ य णं^४ जीवे एगगं भावेमाणे अप्पसद्दे^५ अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमत्तुमे सजमबहुले सवरबहुले समाहिए यावि भवइ ।

सू० ४१—भत्तपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भत्तपच्चक्खाणेणं अणेगाइ भवसयाइं निरुम्भइ ।

सू० ४२—सब्भावपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सब्भावपच्चक्खाणेण अनियट्ठि^६ जणयइ । अनियट्ठिपडिवन्ते^७ य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ त जहा वेयणिज्जं आउय

१—अजोगीय (ऋ) ।

२—^०सयगुणत्त (उ, ऋ) ।

३—X (उ, ऋ) ।

४—X (उ, ऋ) ।

५—X (वृ०) ।

६—नियट्ठि (वृ० पा०) ।

७—नियट्ठि० (वृ० पा०) ।

नामं गोय । तओ^१ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाएइ
सव्वदुक्खाणमन्त करेइ ।

पडिरुव-पद

सू० ४३—पडिरुवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिरुवयाए णं लाघविय जणयइ । लहुभूए णं^२ जीवे
अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते
सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे^३ जिइन्दिए
विउलतवसमिइसमन्नागए यावि भवइ ।

वेयावच्च-पद

सू० ४४—वेयावच्चेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वेयावच्चेणं तित्थयरनामगोत्तं कम्म निबन्धइ ।

सव्वगुणसपन्न-पद

सू० ४५—सव्वगुणसंपन्तयाए^४ ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सव्वगुणसपन्तयाए ण अपुणरावत्तिं जणयइ । अपुणरावत्ति
पत्तए य^५ णं जीवे सारीरमाणसाण दुक्खाण नो भागी भवइ ।

वीयराग-पद

सू० ४६—वीयरागयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वीयरागयाएणं^६ नेहाणुबन्धणाणि तण्हाणुबन्धणाणि^६ य
वोच्चिन्दइ मणुन्नेसु^७ सद्दफरिसरसरूवगन्धेसु चैव विरज्जइ ।

१—X (उ, ऋ) ।

२—य ण (उ, ऋ) ।

३—अप्पपडिलेहे (वृ० पा०) ।

४—^० सपुण्णयाए (अ, आ) ।

५—X (उ, ऋ) ।

६—^० वधणाणि तण्हा वधणाणि (वृ०) , नेहाणु वन्धाणि, तण्हाणु बन्धणाणि (वृ० पा०) ।

७—मणुन्नामणुन्नेसु (अ) ।

खंति-पदं

सू० ४७—खन्तीए ण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

खन्तीए ण परीसहे जिणइ ।

मुत्ति-पद

सू० ४८—मुत्तीए ण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

मुत्तीए ण अकिंचणं जणयइ । अकिंचणे य जीवे
अत्थलोलानं^१ अपत्थणिज्जो भवइ ॥

अज्जव-पदं

सू० ४९—अज्जवयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अज्जवयाए ण काउज्जुयय भावुज्जुययं भासुज्जुययं
अविसंवायणं जणयइ । अविसंवायणसपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स
आराहए भवइ ।

मद्दव-पदं

सू० ५०—मद्दवयाए ण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

मद्दवयाए णं 'अणुस्सियत्त जणयइ । अणुस्सियत्ते णं
जीवे मिउमद्दवसपन्ने अट्ट मयट्ठाणाइ निट्ठवेइ'^२ ।

सन्न-पद

सू० ५१—भावसच्चेणं भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ । भावविसोहीए वट्टमाणे
जीवे अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ ।

१—अत्थलोलान पुरिसाण (आ, इ, उ, ऋ, स) ।

२—अणुस्सुअत्त जणइ । अणुसुअपत्तेण जीवे मद्दवयाएण मिउ० (अ), मद्दवयाए ण
मिउ० (उ, वृ०, ऋ), मद्द० अणुसियत्त जणेत्ति, अणुस्सियत्ते ण जीवे मिउ०
(वृ० पा०) ।

अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए^१ अब्भुट्ठित्ता
परलोगधम्मस्स^२ आराहए हवइ ।

सू० ५२—करणसच्चवेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

करणसच्चवेणं करणसत्तिं जणयइ । करणसच्चवे वट्टमाणे
जीवे जहावाइ तहाकारी यावि भवइ ।

सू० ५३—जोगसच्चवेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगसच्चवेणं जोगं विसोहेइ ।

सू० ५४—मणगुत्तयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मणगुत्तयाए णं जीवे एगगं जणयइ । एगगचित्ते णं जीवे
मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ।

गुत्ति-पद

सू० ५५—वयगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वयगुत्तयाए णं निव्वियारं^३ जणयइ । 'निव्वियारेणं जीवे'^४
वइगुत्ते अज्भप्पजोग'ज्झाणगुत्ते'^५ यावि भवइ ।

सू० ५६—कायगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कायगुत्तयाए णं सवर जणयइ । संवरेणं कायगुत्ते पुणो
पावासवनिरोह करेइ ।

समाहारण-पद

सू० ५७—मणसमाहारणयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मणसमाहारणयाए णं एगगं जणयइ । एगगं जणइत्ता
नाणपज्जवे जणयइ । नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं
च निज्जरेइ ।

१—आराहणयाए ण (ऋ) ।

२—परलोगाराहए (वृ० पा०) ।

३—निव्वियारत्त (अ, स) ।

४—निव्वियारे ण जीवे वयगुत्तय जणयइ (वृ० पा०) ।

५—^० साहणज्जुत्ते (उ, ऋ, वृ०) ।

सू० ५८—वयसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वयसमाहारणयाए ण वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ ।
वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेत्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ
दुल्लहबोहियत्तं निज्जरेइ ।

सू० ५९—कायसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कायसमाहारणयाए ण चरित्तपज्जवे विसोहेइ । चरित्तपज्जवे
विसोहेत्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ । अहक्खायचरित्तं विसोहेत्ता
चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ
परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ।

सपन्नया-पद

सू० ६०—नाणसपन्नयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

नाणसपन्नायाए ण जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ ।
नाणसंपन्ने ण जीवे चाउरन्ते संसारकन्तारे न विणुस्सइ ।

जहा सूई ससुत्ता

पडिया वि न विणस्सइ ।

तहा जीवे ससुत्ते

संसारे न विणस्सइ ॥

नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ ससमयपरसमय^१

सघायणिज्जे भवइ ।

सू० ६१—दंसणसपन्नयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

दंसणसंपन्नयाए णं भवमिच्छत्तच्छेयणं करेइ परं न विज्झायइ^२ ।

‘अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ’^३ ।

१—० समय विसारए य (अ) ।

२—विज्झाइ (ऋ), वज्झाइ । पर आणाज्झायमाणे (अ) ।

३—अप्पाण संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे अणुत्तरेण नाणदंसणेणं विहरइ (अ), अनुत्तरेणं
नाणदंसणेणं विहरइ (वृ० पा०) ।

सू० ६२—चरित्तसंपन्नयाए ण भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

चरित्तसंपन्नयाए णं सेलेसीभाव जणयइ। 'सेलेसिं पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मसे खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्त करेइ'^१ ।

इन्द्रियनिग्गह-पदं

सू० ६३—सोइन्द्रियनिग्गहेण भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

सोइन्द्रियनिग्गहेण मणुन्तामणुन्नेसु सद्देषु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्म न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६४—चक्खिन्द्रियनिग्गहेण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

चक्खिन्द्रियनिग्गहेण मणुन्तामणुन्नेसु रूवेसु^२ रागदोस-निग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६५—घाणिन्द्रियनिग्गहेण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

घाणिन्द्रियनिग्गहेण मणुन्तामणुन्नेसु गन्धेषु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्म न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६६—जिब्भिन्द्रियनिग्गहेणं भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

जिब्भिन्द्रियनिग्गहेणं मणुन्तामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६७—फासिन्द्रियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

फासिन्द्रियनिग्गहेणं मणुन्तामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्म न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

१—सेलेसी पडिवन्ने विहरइ (वृ०), सेलेसिं पडिवन्ने अणगारे चत्तारि केवलिकम्मसे खवेति, ततो पच्छा सिज्झति (वृ० पा०) ।

२—चक्खिदिपसु (अ) ।

कसायविजय-पदं

सू० ६८—कोहविजएणं भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

कोहविजएणं खन्ति जणयइ कोहवेयणिज्ज कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६९—माणविजएण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

माणविजएणं मह्वं जणयइ माणवेयणिज्ज कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ७०—मायाविजएणं भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

मायाविजएणं उज्जुभाव जणयइ मायावेयणिज्ज कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ७१—लोभविजएणं भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

लोभविजएणं सतोसीभावं जणयइ लोभवेयणिज्ज कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ।

खवणा-पद

सू० ७२—पेज्जदोसमिच्छादसणविजएण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

पेज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं नाणदसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ । 'अट्टविहस्स कम्मस्स कम्मगण्ठविमोयणयाए'^१ तप्पढमयाए जहाणुपुर्व्वि अट्टवीसइविह मोहणिज्ज कम्मं उग्घाएइ पंचविह नाणावरणिज्जं नवविहं दंसणावरणिज्जं^२ पचविह अन्तरायं एए तित्ति वि कम्मसे जुगव खवेइ । तओ पच्छा अणुत्तरं अणंतं कसिणं पडिपुण्ण निरावरण वितिमिरं विसुद्ध लोगालोगप्पभावगं^३ केवल-

१—अट्टविहकम्म विमोयणाए (वृ० पा०)

२—दसणावरण (उ, ऋ) ।

३—लोगालोगसभाव (वृ० पा०) ।

वरनाणदंसणं समुप्पाडेइ । जाव सजोगी भवइ ताव य इरियावहियं
कम्मं बन्धइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं । तं पढमसमए बद्धं बिइयसमए
वेइयं तइयसमए निज्जिण्णं^१ तं बद्धं पुट्टं उदीरिय वेइय निज्जिण्णं
सेयाले य अकम्म चावि भवइ ।

सू० ७३—अहाउयं पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्धावसेसाउए^२ जोगनिरोहं
करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइ सुक्कज्जाणं भायमाणे
तप्पढमयाए 'मणजोगं निरुम्मइ २ ता वइजोग निरुम्मइ २ ता
आणापाणुनिरोहं'^३ करेइ २ ता ईसि पंचरहस्सक्खरुच्चारद्धाए य णं
अणगारे समुच्छिन्नकिरिय अनियट्टिसुक्कज्जाणं भियायमाणे
वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि वि^४ कम्मसे
जुगवं^५ खवेइ ।

निकखेव-पद

सू० ७४—तओ ओरालियकम्माइ च सव्वाहि विप्पजहणाहि
विप्पजहिता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं
अविग्गहेण तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्जइ बुज्जइ मुच्चइ
परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्त करेइ^६ ।

१—निविण्ण (अ) ।

२—अतोमुहुत्तद्धावसेसाए (बू० पा०) , अतोमुहुत्तावसेसाउए । (उ, ऋ, बू० पा०) ।

३—मणजोग निरुम्मइ वइजोग निरुम्मइ आणापाणुनिरोह करेइ (बू०) , मणजोग
निरुम्मइ, वइजोग निरुम्मइ, कायजोग निरुम्मइ आणापाण० (आ, इ) ।

४—× (उ, ऋ) ।

५—× (उ, ऋ) ।

६—(क) इह च चूर्णिकृता—“सेलेसीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अकम्मय
जणति, अकम्मयाए जीवा सिज्झंति” इति पाठः, पूर्वत्र च क्वचित्किञ्चित्पाठ-
भेदेनाल्पा एव प्रश्ना आश्रिताः, अस्म.भिस्तु मूयसीषु प्रतिषु
यथाव्याख्यातपाठदर्शनादित्थमुन्नीतमिति (बू० पा०) ।

(ख) सेलेसीएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अकम्मयं जणति अकम्मयाए जीवा
सिज्झंति वुज्झंति मुचंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणं अत्तं करंति (चू०) ।

एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्टे समणेणं
 भगवया महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए^१ उवदंसिए ।

—त्ति वेमि ॥

*

तीसइमं अज्भयणं

तवमग्गई

उक्खेव-पदं

१-जहा उ पावगं कम्मं रागदोससमज्जियं ।
खवेइ तवसा भिक्खू तमेगग्गमणो सुण ॥

२-पाणवहमुसावाया^१

अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ ।

राईभोयणविरओ

जीवो भवइ अणासवो ॥

३-पंचसमिओ तिगुत्तो अकसाओ जिइन्दिओ ।
अगारवो य निस्सल्लो जीवो होइ अणासवो ॥

४-एएसि तु विवच्चासे^२ रागदोससमज्जियं ।
'जहा खवयइ भिक्खू'^३ 'तं मे एगमणो'^४ सुण ॥

५-जहा महातलायस्स सन्निरुद्धे जलागमे ।
उस्सिचणाए तवणाए कमेण सोसणा भवे ॥

६-'एव तु'^५ संजयस्सावि पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसंचियं कम्म तवसा निज्जरिज्जइ ॥

तव-पद

७-सो तवो दुविहो वुत्तो बाहिरब्भन्तरो तथा ।
बाहिरो छ्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥

१-पाणिवह मुसावाए (उ, ऋ) ।

२-विवच्चासे (वृ९) ।

३-खवेइ ज जहा कम्म (उ, ऋ) , खवेइ तं जहा भिक्खू (वृ०) ।

४-त मे एगमणा (स) , तमेगग्गमणो (सु) ।

५-एमेव (अ) ।

बाहिरगतव-पद

८-अणसणमूणोयरिया

भिव्वायरिया य रसपरिच्चाओ ।

कायकिलेसो सलीणया य

बज्जो तवो होइ ॥

९-इत्तिरिया मरणकाले^१ 'दुविहा अणसणा'^२ भवे ।

इत्तिरिया सावकंखा निरवकंखा^३ विइज्जिया ॥

१०-जो सो इत्तरियतवो

सो समासेण छव्विहो ।

सेढित्तवो

पयरतवो

घणो य 'तह होइ वग्गो य'^४ ॥

११-तत्तो य वग्गवग्गो उ पंचमो छट्ठओ पइण्णतवो ।

मणइच्छियचित्तथो नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥

१२-जा सा अणसणा मरणे दुविहा सा वियाहिया ।

सवियारअवियारा^५ कायचिट्ठं पई भवे ॥

१३-अहवा 'सपरिकम्मा अपरिकम्मा'^६ य आहिया ।

नीहारिमणीहारी आहारच्छेओ य दोसु वि ॥

१४-ओमोयरिय^७ पंचहा समासेण वियाहिय ।

'दव्वओ खेत्तकालेण'^८ भावेणं^९ पज्जवेहि य ॥

१-० कालाय (उ, ऋ) ।

२-अणसणा दुविहा (उ, ऋ, वृ०) ।

३-निरकखा उ (वृ०), निरवकखा उ (सु), निरवकखा (वृ० पा०) ।

४-वग्गो चउत्थोउ (अ) ।

५-सवियारमवियारा (उ, ऋ वृ०, सु) ।

६-सपडिकम्मा अपडिकम्मा (अ) ।

७-ओमोयरण^१ (अ, वृ० पा०, ऋ) ।

८-खित्तओ काले (ऋ), खेत्त काले य (अ) ।

९-भावओ (अ) ।

१५—जो जस्स उ आहारो तत्तो ओम^१ तु जो करे ।

जहन्नेणेगसित्थाई एवं दब्बेण ऊ भवे ॥

१६—गामेनगरेतह रायहाणि- निगमे य आगरे पल्ली ।

खेडे कब्बडदोणमुह- पट्टणमडम्बसबाहे ॥

१७—आसमपए विहारे सन्निवेसे समायघोसे य ॥

थलिसेणाखन्धारे सत्थे सवट्टकोट्टे य ॥

१८—वाडेसु व रच्छासु व घरेसु वा एवमित्ति य खेत्त ।

कप्पइ उ एवमाई एव खेत्तेण ऊ भवे ॥

१९—पेडा य अद्धपेडा

गोमुत्तिपयगवीहिया चेव ।

सम्बुक्कावट्टाऽऽययगन्तु

पच्चागया छट्टा ॥

२०—दिवसस्स पोरुसीण

चउण्ह पि उ जत्तिओ भवे कालो ।

एव चरमाणो खलु

कालोमाण मुणेयव्वो^२ ॥

२१—अहवा तइयाए पोरिसीए

ऊणाइ घासमेसन्तो ।

चउभागूणाए

वा

एव कालेण ऊ भवे ॥

२२—इत्थी वा

पुरिसो वा

अलकिओ वाऽणलकिओ वा वि ।

अन्नयरव्यत्थो

वा

अन्नयरेण व वत्थेण ॥

१—ऊण (अ) ।

२—मुणेयव्व (उ, ऋ) ।

- २३—अन्नेण विसेसेण
वण्णेण भावमणुमुयन्ते उ ।
एवं चरमाणो खलु
भावोमाणं मुणेयव्वो^१ ॥
- २४—दव्वे खेत्ते काले
भावम्मि य आहिया उ जे भावा ।
एएहि ओमचरओ
पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥
- २५—अट्टविहगोयरगं तु तहा सत्तेव एसणा ।
अभिग्गहा य जे अन्ने भिक्खायरियमाहिया ॥
- २६—खीरदहिसप्पिमाई पणीय पाणभोयण ।
परिवज्जणं रसाणं तु भणिय रसविवज्जणं ॥
- २७—ठाणा वीरासणाईया जीवस्स उ सुहावहा ।
उग्गा जहा धरिज्जन्ति कायकिलेसं तमाहियं ॥
- २८—एगन्तमणावाए इत्थीपसुविवज्जिए ।
सयणासणसेवणया विवित्तसयणासण ॥
- २९—एसो बाहिरगतवो समासेण वियाहिओ ।
अब्भिन्तर 'तव एत्तो'^२ वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥
अब्भितरतव-पद
- ३०—पायच्छित्त विणओ
वेयावच्च तहेव सज्झाओ ।
'भाण च विउस्सगो'^३
'एसो अब्भिन्तरो तवो'^४ ॥

१—मुणेयव्व (उ, ऋ) ।

२—तवो इत्तो (उ, ऋ) ।

३—झाण उस्सगो वि य (उ, ऋ, स) ।

४—अट्टमन्तरओ तवो होइ (उ, ऋ, स) ।

- ३१-आलोयणारिहाईय पायच्छित्त तु दसविहं ।
 जे भिक्खू वहई सम्मं पायच्छित्त तमाहिय ॥
- ३२-अब्भुट्ठाण अजलिकरणं तहेवासणदायण ।
 गुरुभत्तिभावसुस्सूसा विणओ एस विवाहिओ ॥
- ३३-आयरियमाइयम्मि^१ य वेयावच्चम्मि दसविहं ।
 आसेवण जहाश्रामं वेयावच्च तमाहिय ॥
- ३४-वायणा पुच्छणा चेव तहेव पण्यदृणा ।
 अणुप्पेहा धम्मकहा सज्जाओ पचहा भवे ॥
- ३५-अट्टरुद्दाणि वज्जिता भाएजा मुममाहिण ।
 धम्मसुक्काड जाणाड जाण त तु वृद्धा वण ॥
- ३६-सयणासणठाणे वा जे उ भिक्खू न वावने ।
 कायस्स विउस्सग्गो छट्ठो सो पणिकिन्निओ ॥

निकवेव-पद

- ३७-एव तव तु दुविह जे सम्म आयरे मुणी ।
 'से खिप्प सच्चसंसारा विप्पमुच्चइ पणिट्टा'^२ ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१-आयरिमाईए (उ, ऋ) ।

२-सो खवेत्तरय अरओ नीरय तु गइ गए (बु० पा०) ।

एगतीसइमं अज्भयणं

चरणविही

- १—चरणविहिं पवक्खामि जीवस्स उ सुहावह ।
ज चरित्ता बहू जीवा तिण्णा ससारसागर ॥
- २—एगओ विरइ कुज्जा एगओ य पवत्तण ।
असजमे नियत्ति च सजमे य पवत्तण ॥
- ३—रागद्दोसे य दो पावे पावक्म्मपवत्तणे ।
जे भिक्खू र्म्मभई निच्च से न अच्छइ^१ मण्डले ॥
- ४—दण्डाण गारवाण च सल्लाणं च तिय तिय ।
जे भिक्खू चयई निच्चं से न अच्छइ^२ मण्डले ॥
- ५—दिच्चे य जे^३ उवसग्गे तथा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहई निच्च से न अच्छइ^४ मण्डले ॥
- ६—विगहाकसायसन्नाणं भाणाण च दुय तथा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्च से न अच्छइ^५ मण्डले ॥
- ७—वएसु इन्दियत्थेसु 'समिईसु किरियासु य'^६ ।
जे भिक्खू जयई निच्च से न अच्छइ मण्डले ॥
- ८—लेसासु छसु काएसु छक्के आहारकारणे ।
जे भिक्खू जयई निच्च से न अच्छइ मण्डले ॥
- ९—पिण्डोगहपडिमासु भयट्ठाणेसु सत्तसु ।
जे भिक्खू जयई निच्च से न अच्छइ मण्डले ॥

१, २—गच्छइ (अ, वृ० पा०) ।

३—X (उ, ऋ) ।

४, ५—गच्छइ (अ, वृ० पा०) ।

६—समीतीसु य तहेव य (वृ० पा०) ।

- १०-मयेसु -वम्भगुत्तीमु
जे भिक्खू जयई निच्चं
- ११-उवासगाणं पडिमानु
जे भिक्खू जयई निच्चं
- १२-किरियासु भूयगामेनु
जे भिक्खू जयई निच्च
- १३-गाहासोलसएहिं
जे भिक्खू जयई निच्च
- १४-वम्भम्मि नायज्भयणेमु
जे भिक्खू जयई निच्च
- १५-एगवीसाए सवलेमु
जे भिक्खू जयई निच्च
- १६-तेवीसइ मूयगडे
जे भिक्खू जयई निच्च
- १७-पणवीसणावणाहिं
जे भिक्खू जयई निच्च
- १८-अणगारगुणेहिं च
जे भिक्खू जयई निच्चं
- १९-पावसुयपसगेमु
जे भिक्खू जयई निच्चं
- २०-सिद्धाडगुणजोगेमु
जे भिक्खू जयई निच्चं

१-देवेसु (वृ० पा०) ।

२-पणु^० (अ) ।

३-उ (उ, ऋ, वृ) ।

४-^०णाणि (अ) ।

२१-इइ एएसु ठाणेसु जे भिक्खू जयई सया ।
 खिप्पं से सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डओ ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

बत्तीसइम अज्भयण

पमायट्टाणं

उक्खेव-पद

- १—अच्चन्तकालस्स समूलगस्स
 सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
 तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता
 सुणेह एगगहिं^१ हियत्थं ॥
- २—ताणस्स सव्वस्स^२ पगासणाए
 अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
 रागस्स दोसस्स य सखएण
 एगन्तसोक्ख समुवेइ मोक्खं ॥
- ३—तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा
 विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
 'सज्झायएगन्तनिसेवणा य'^३
 सुत्तत्थसच्चिन्तणया धिई य ॥
- ४—आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं
 सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं^४ ।
 निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोगं
 समाहिकामे समणे तवस्सी ॥

१—एगन्त ° (बृ० पा०, सु) ।

२—सव्वस्स (बृ० पा०, सु, पा) ।

३—° निसेवणाए (बृ० पा०) , ° निवेसणा य (बृ०) ।

४—निउणेह ° (बृ० पा०) ।

५—न वा लभेज्जा निउण सहाय
 गुणाहिय वा गुणओ सम वा ।
 एक्को वि पावाइ विवज्जयन्तो^१
 विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥
 तण्हा-पद

६—जहा य अण्डप्पभवा बलागा
 अण्ड बलागप्पभवं जहा य ।
 एमेव मोहाययण खु तण्हं^२
 मोह च तण्हाययण वयन्ति ॥

७—रागो य दोसो वि य कम्मवीय
 कम्म च मोहप्पभव वयन्ति ।
 कम्म च जाईमरणस्स मूल
 दुवख च जाईमरण वयन्ति ॥

८—दुवख हय जस्स न होइ मोहो
 मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
 तण्हा हया जस्स न होइ लोहो
 लोहो हओ जस्स न किचणाइ^३ ॥
 उवाय-पद

९—राग च दोस च तहेव मोह
 उद्धत्तुकामेण समूलजाल ।
 जे जे 'उवाया पडिंविज्जियव्वा'^४
 ते कित्तडस्सामि अहाणुपुंवि ॥

१—अणायरन्तो (वृ० पा०) ।

२—तण्हा (अ) ।

३—किंचनत्थि (वृ० पा०) ।

४—अपाया परि^० (वृ० पा०) ।

१५—अदंसणं चैव अपत्थणं च
अचिन्तणं चैव अकित्तणं च ।

इत्थीजणस्सारियम्हाणजोगं

हियं सया बम्भवए^१ रयाणं ॥

१६—काम तु देवीहि विभूसियाहि
न चाइया खोभइउं तिगुत्ता ।

तहा वि एगन्तहिय ति नच्चा

विवित्तवासो^२ मुणिणं^३ पसत्थो ॥

१७—मोक्खाभिकंखिस्स वि माणवस्स

ससारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।

नेयारिसं^४ दुत्तरमत्थि लोए

जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥

१८—एए य संगे समइक्कमित्ता

सुहुत्तरा चैव भवन्ति सेसा ।

जहा महासागरमुत्तरित्ता

नई भवे अवि गगासमाणा ॥

दुक्ख-पद

१९—कामाणुगिद्विप्पभव खु दुक्खं

सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।

ज काइय माणसिय च किंचि

तस्सऽन्तग गच्छइ वीयरगो ॥

१—वंभचेरे (उ, दृ० पा०, ऋ) ।

२—० भावो (उ, ऋ) ।

३—मुणिणो (अ) ।

४—न तारिस (आ, इ, उ, ऋ) ।

२०—जहा य किपागफला मणोरमा
 रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।
 'ते खुद्दए जीविय'^१ पच्चमाणा
 एओवमा कामगुणा विवागे ॥

२१—जे इन्दियाण विसया मणुन्ता
 न तेसु^२ भाव निसिरे क्याइ ।
 न याऽमणुन्नेसु मण पि^३ कुज्जा
 समाहिकामे समणे तवस्सी ॥

२२—चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति
 तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

रूव-पद

२३—रूवस्स चक्खु गहण वयन्ति
 चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु^४
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु^५ ॥

२४—रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिब्बं^६
 अकालियं पावइ से विणासं^७ ।
 रागाउरे से जह वा पयंगे
 आलोयलोले संमुवेइ मच्चु ॥

१—ते जीविय खुदए (अ), ते जीवियं खुदति (बू० पा०), ते खुदए जीविय (सु) ।

२—तेसि (अ) । ३—तु (अ) ।

४—तमणुणमाहु (बू० पा०) । ५—तऽमणुणमाहु (बू० पा०) ।

६—निच्च (अ) । ७—किल्लेसं (बू० पा०) ।

२५—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^१
तसि क्खणे से 'उ उवेइ दुक्खं'^२ ।

दुहन्तदोसेण सएण जन्तू
न किञ्चि रूवं अवरज्झई से ॥

२६—एगन्तरत्ते^३ रुइरंसि रूवे
अतालसे से कुणई पओसं ।

दुक्खस्स सपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

२७—रूवाणुगासाणुगए^४ य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।

चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिद्धे ॥

२८—रूवाणुवाएण^५ परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे^६ ।

वाए विओगे य कर्हि सुहं से ?
सभोगकाले य अतित्तिलाभे^७ ॥

२९—रूवे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।

अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१—निच्च (वृ०, अ) ।

२—समुर्वेति सव्व (वृ० पा०) ।

३—^० रुत्तो (अ) ।

४—^० वायाणुगए (वृ० पा०) ।

५—^० वाए य (अ), ^० राणेण (वृ० पा०), ^० वाए ण (सु) ।

६—^० तन्निओगे (उ) ।

७—अतित्त^० (वृ०) पत्तित्ति^० (वृ० पा०) ।

- ३०—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
 -- -- रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुस वड्ढइ लोभदोसा
 तत्थाऽवि दुक्खा न विमुच्चई से ॥
- ३१—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
 पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एव अदत्ताणि समाययन्तो
 -- रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥
- ३२—रूवाणुरत्तस्स नरस्स एव
 कत्तो सुह होज्ज कयाइ किञ्चि ? ।
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
 निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥
- ३३—एमेव रूवम्मि गओ पओसं
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुद्धचित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
 ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥
- ३४—रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो
 एएण दुक्खोहपरपरेण ।
 न लिप्पए भवमज्जे वि सन्तो
 -- जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥
- ३५—सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति
 त रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
 तं दोसहेउ अमणुन्नमाहु
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

३६—सहस्स सोयं गहण वयन्ति
 सोयस्स सहं गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु
 दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥

३७—सहेसु जो गिद्धिमुवेइ तिब्ब^१
 अकालियं पावइ से विणास ।
 रागाउरे हरिणमिगे व^२ मुद्धे^३
 सहे अतित्ते समुवेइ मच्चु ॥

३८—जे यावि दोस समुवेइ तिब्ब^४
 तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुद्धन्तदोसेण सएण जन्तु
 न किञ्चि सह अवरज्झई से ॥

३९—एगन्तरत्ते रुइरसि सहे
 अतालिसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स सपीलमुवेइ बाले
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

४०—सहाणुगासाणुगए य जीवे
 चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
 चित्तेहि ते परियावेइ बाले
 पीलेइ अत्तद्दुगुरु किलिद्धे ॥

१—निच्च (अ) ।

२—व्व (उ, ऋ) ।

३—युद्धे (अ) ।

४—निच्च (अ, वृ०) ।

४६—एमेव सद्दम्मि गओ पओसं
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुट्टचित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
 ज से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

४७—सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो^२
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पए भवमज्जे वि सन्तो
 जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

गन्ध-पदं

४८—घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति
 तं रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
 त दोसहेउं अमणुन्नमाहु
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

४९—गन्धस्स घाण गहण वयन्ति
 घाणस्स गन्ध गहण वयन्ति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

५०—गन्धेमु^३ जो गिद्धिमुवेइ तिब्बं^४
 अकालिय पावइ से विणासं ।
 रागाउरे ओसहिगन्धगिद्धे
 सप्पे विलाओ विव निक्खमन्ते ॥

१—उ (अ) ।

२—उत्तोगो (अ) ।

३—गधत्स (अ, क) ।

४—निच्च (अ) ।

५१—जे यावि दोसं समुवेइ तिब्ब^१
 तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख ।
 दुहन्तदोसेण सएण जन्तू
 न किंचि गन्धं अवरज्भई से ॥

५२—एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे
 अतालिसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

५३—गन्धाणुगासाणुगए य जीवे
 चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले
 पीलेइ अत्तइगुरू किलिट्ठे ॥

५४—गन्धाणुवाएण^२ परिग्गहेण
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कहिं मुहं से ?
 संभोगकाले य अतित्तिळाभे^३ ॥

५५—गन्धे अतित्ते य पग्गिगहे य
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिओमेण द्दुही पग्म्म
 लोभाविले आययई अदन्नं ॥

१—निच्च (दृ०, अ) ।

२—^०वाए य (अ), ^०गग्ग (दृ० पा०) ; ^०वाए ण (सु) ।

३—अतित्त^० (दृ०) अत्ति^० (दृ० पा०) ।

५६—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य ।

मायामुस वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

५७—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।

एव अदत्ताणि समाययन्तो
गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

५८—गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एव
कत्तो सुह होज्ज कयाइ किञ्चि ? ।

तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥

५९—एमेव गन्धम्मि गओ पओस
उवेइ दुक्खोहपरपराओ ।

पदुट्ठचित्तो य^१ चिणाइ कम्म
ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥

६०—गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।

न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥

ग्गस-पद

६१—जिहाण ग्गस गहण वयन्ति
त रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।

त दोसहेउ अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

६२-रसस्त् जिह्वं १२० १२०

१२० १२० १२० १२०

रागस्त् १२० १२० १२० १२०

१२० १२० १२० १२०

६३-रसोसुं जो नि १२० १२०

१२० १२० १२० १२०

रागाउं १२० १२० १२० १२०

१२० १२० १२० १२०

६४-जे गवि क्रोमं १२० १२०

१२० १२० १२० १२०

दुहन्तवेने १२० १२०

१२० १२० १२० १२०

६५-एगन्तने १२० १२०

१२० १२० १२० १२०

दुक्कवम्प मंगीलपुवेइ वाले

१२० १२० १२० १२०

६६-रसागुनामागुगा य जीवे

१२० १२० १२० १२०

चित्तहि ने परितावेइ वाले

१२० १२० १२० १२०

-
- १-जीहा (उ, ऋ) ।
 - २-रसस्त् (अ, ऋ) ।
 - ३-निच्चं (अ) ।
 - ४-० लोभगिद्धे (अ) ।
 - ५-निच्च (वृ०, अ) ।
 - ६-न किञ्चि रस्त् (अ) ।

७७-जे यावि दोस समुवेइ तिच्च^१
 तसि कखणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुद्धन्तदोसेण सएण जन्तू
 न किचि फास अवरज्जई से ॥

७८-एगन्तरत्ते रुइरसि फासे
 अतालिसे से कुणई पओस ।
 दुक्खस्स सपीलमुवेइ बाले
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

७९-फासाणुगासाणुगए य जीवे
 चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले
 पीलेइ अत्तट्टगुरू किलिट्टे ॥

८०-फासाणुवाएण^२ परिग्गहेण
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वाग विओगे य कहिं मुह से ?
 मभोगकाले य अतित्तिलाभे^३ ॥

८१-फामे अनित्ते य परिग्गहे य
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अनृट्ठिदोमेण दुही परस्स
 न्ओभाविले आययई अदत्त ॥

१-तिच्च (दू० उ) ।

२-^०वाए ण (उ) ^०सणेण (वृ० पा०) ^०वाए ण (सु) ।

३-अत्ति^० (दू०) अत्तित्ति^० (वृ० पा०) ।

- ८२-तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
 फासे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुस वड्ढइ लोभदोसा
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥
- ८३-मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
 पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एवं अदत्ताणि समाययन्तो
 फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥
- ८४-फासाणुरत्तस्स नरस्स एव
 कत्तो सुह होज्जकयाइ किञ्चि ? ।
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख
 निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥
- ८५-एमेव फासम्मि गओ पओस
 उवेइ दुक्खोहपरपराओ ।
 पट्टुच्चित्तो य' चिणाइ कम्म
 जं से पुणो होइ दुह विवागे ॥
- ८६-फासे विरत्तो मणुओ विसोगो
 एएण दुक्खोहपरपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
 जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥
 भाव-पदं
- ८७-मणस्स भाव गहण वयन्ति
 तं रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
 त दोसहेउ अमणुन्नमाहु
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

८८—भावस्स मण गहण वयन्ति
मणस्स भाव गहणं वयन्ति ।

रागस्स हेउ समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

८९—भावेमु^१ जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं^२
अकालियं पावइ से विणास ।

रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे
करेणुमगावहिए 'व नागे'^३ ॥

९०—जे यावि दोस समुवेइ तिव्वं^४
तसि क्वणे से उ उवेइ दुक्खं ।

दुद्धन्तदोसेण साएण जन्तू
न किञ्चि भाव अवरज्भई से ॥

९१—एगन्तरत्ते रुडरसि भावे
अतालिसे से कुणई पओस ।

दुक्खम्म सपीलमुवेइ वाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

९२—भावाणुगासाणुगाए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।

चिन्नेहि ते परितावेइ वाले
पीलेइ अत्तट्टगुरू किलिट्ठे ॥

१—मो (अ), भावन् (ऋ) ।

२—निच्चं (उ) ।

३—ए व्व (उ) ।

४—निच्चं (दू०, उ) ।

९३—भावाणुवाएण^१ परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कर्हि सुहं से ?
सभोगकाले य अतित्तिलाभे^२ ॥

९४—भावे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्त ॥

९५—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
भावे अतित्तस्स परिग्गहे य !
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

९६—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एव अदत्ताणि समाययन्तो
भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

९७—भावाणुरत्तस्स नरस्स एव
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥

१—^०वाए य (अ), ^०रागेण (वृ० पा०) ; ^०वाए ण (चु) ।

२—अतित्त^० (वृ०), अतित्ति^० (वृ० पा०) ।

१८-एमेव भावम्मि गओ पओस
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।

पट्टुच्चित्तो य' चिणाइ कम्म
ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥

१९-भावे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरपरेण ।

न लिप्पई भवमज्जे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥

निक्खेव-पद

१००-एविन्दियत्था य मणस्स अत्था
दुक्खस्स हेउ मणुयस्स रागिणो ।

ते चेव थोव पि कयाइ दुक्ख
न वीयरागस्स करेन्ति किंचि ॥

१०१-न कामभोगा समय उवेन्ति
न यावि भोगा विगइ उवेन्ति ।

जे तप्पओसी य परिग्गही य
सो तेमु मोहा विगइ उवेइ ॥

१०२-कोह च माण च तहेव माय
लोह दुगुछ अरइ रइ च ।

हाम भय सोगपुमित्थिवेय
नपुसवेय विविहे य भावे ॥

१०३-आवजई एवमणेगरुवे
एवविहे कामगुणेमु सत्तो ।

जन्ते य एयप्पभवे विसेमे
कान्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥

वत्तीसइम अज्भयणं

१०४—कप्प न इच्छिज्ज सहा^१

पच्छाणुतादि^२

एव वियारे अमियप्पयारं

आवज्जई इन्दियत्था^३

१०५—तओ से जायन्ति पओयणाइ

निमज्जिउ मोहमहणवग्गि^४

सुहेसिणो दुक्खविणोयणद्दा^५

तप्पच्चय^३ उज्जमए य र^६

१०६—विरज्जमाणस्स य इन्दियत्था

सद्दाइया^४ तावडयप्पगारा ।

न तस्स सव्वे वि मणुन्नय वा

निव्वत्तयन्ती अमणुन्नय वा ॥

१०७—एव ससकप्पविकप्पणासु^५

सजायई समयमुवट्ठियस्स ।

‘अत्थे य सक्कप्पयओ’^६ तओ से

पहीयए कामगुणेषु तण्हा ॥

१०८—स वीयरगो कयसव्वकिच्चो

खवेड नाणावरण खणेण ।

तहेव ज दसणमावरेड

ज चउत्तराय पकरेड कम्म ॥

१—पच्छाणुतावेण (सु) ।

२—दुक्ख विमोयणाय (वृ० पा०) ।

३—तप्पच्चया (वृ० पा०) ।

४—वण्णाइया (वृ० पा०) ।

५—^० विकप्पणासो (वृ० पा०) ।

६—अत्थे असक्कप्पयत्तो (वृ० पा०) ।

- १०९—सव्व तओ जाणइ पासए य
 अमोहणे होइ निरन्तराए ।
 अणासवे भाणसमाहिजुत्ते
 आउक्खए मोकखमुवेइ सुद्धे ॥
- ११०—सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को
 ज वाहई सयय जन्तुमेय ।
 दीहामयविप्पमुक्को पसत्थो
 तो होइ अच्चन्तसुही कयत्थो ॥
- १११—अणाउकाळप्पभवस्स एसो
 'सव्वस्स दुक्खस्स पमोकखमग्गो'^१ ।
 वियाहिओ ज समुविच्च सत्ता
 कमेण अच्चन्तसुही भवन्ति ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

तेतीसइमं अज्भयणं

कम्मपयडी

उक्खेव-पदं

१—अट्ट कम्माइं वोच्छामि आणुपुण्वि जह्कम्म^१ ।
जेहिं बद्धो अयं जीवो संसारे परिवत्तए^२ ॥

कम्म-पद

२—नाणस्सावरणिज्ज दंसणावरण तहा ।
वेयणिज्ज तहा मोह आउकम्मं तहेव य ॥
३—नामकम्म च गोयं च अन्तराय तहेव य ।
एवमेयाइ कम्माइं अट्टेव उ समासओ ॥

पयडि-पदं

४—नाणावरण पचविहं सुय आभिणिबोहिय ।
ओहिनाणं तइयं मणनाण च केवल ॥

५—निट्ठा तहेव पयला
निट्ठानिट्ठा य पयलपयला य ।
तत्तो य थीणगिद्धी उ
पचमा होइ नायव्वा ॥

६—चक्खुमचक्खुंओहिस्स
दसणे केवले य आवरणे ।
एव^३ तु नवविगप्प
नायव्व दसणावरणं ॥

१—सुणेह मे (वृ० पा०) ।

२—परिभम्मए (वृ० पा०) ।

३—एय (अ) ।

- ८—वेयणीय पि य^१ दुविह
सायमसायं च आहियं ।
नायस्त उ वह भेया
एमेव असायस्त वि ॥
- ९—मोहणिज्ज पि दुविह दसणे चरणे तथा ।
द्वणं तिविह वुत्त चरणे दुविह भवे ॥
- १०—नम्मन चैव मिच्छत्त सम्मामिच्छत्तमेव य ।
एयाओ तिल्लि पयडीओ मोहणिज्जस्स दसणे ॥
- ११—‘तग्निमोहण कम्म दुविह तु वियाहिय’^२ ।
‘कनायमोहणिज्ज तु नोकसाय तहेव य ॥
- १२—नोद्धमविहभेएण कम्म तु कसायज ।
नन्विह नवविह वा कम्म नोकसायज ॥
- १३—नेरयतिक्विपाउ मणुस्साउ तहेव य ।
वेयाउय चउत्थ तु आउकम्म चउव्विह ॥
- १४—नाम कम्म तु दुविह मुहममुह च आहियं’^३ ।

१६-एयाओ मूलपयडीओ उत्तराओ य आहिया ।
पएसगं खेत्तकाले य भाव चादुत्तरं सुणं ॥

पएस-पदं

१७-सव्वेसिं चेव कम्माण पएसग्गमणन्तग ।
गण्ठियसत्ताईय^१ अन्तो सिद्धाण आहिय ॥

१८-सव्वजीवाण कम्म तु सगहे छद्दिसागय ।
सव्वेसु वि पएसेसु सव्व सव्वेण वद्धगं ॥

ठिडय-पद

१९-उदहीसरिनामाण तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥

२०-आवरणिज्जाण दुण्ह पि वेयणिज्जे तहेव य ।
अन्तराए य कम्मम्मि ठिई एसा वियाहिया ॥

२१-उदहीसरिनामाण सत्तारिं कोडिकोडिओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥

२२-तेत्तीस सागरोवमा उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥

२३-उदहीसरिनामाण वीसई कोडिकोडिओ ।
नामगोत्ताण उक्कोसा अट्ट मुहुत्ता जहन्निया ॥

अणुभाग-पद

२४-सिद्धाणण्णन्तभागो य^२ अणुभागा हवन्ति उ ।
सव्वेसु वि पएसग्ग सव्व जीवेसु ऽड्छिद्य^३ ॥

१-गण्ठि सत्ताणाइ (वृ० पा०) ।

२-X (उ, ऋ) ।

३-स इच्छिय (उ, सु) - अहिच्छिय (स) ।

निक्खेव-पद

२५-तम्हा एएसि कम्माण अणुभागे वियाणिया ।
 एएसि संवरे चेव खवणे य जए बुहे ॥
 —त्ति वेमि ॥

चउतीसइम अज्भयण

लेसज्भयणं

उक्खेव-पद

- १—लेसज्भयण पवक्खामि आणुपुव्वि जहक्कम ।
 छण्ह पि कम्मलेसाण अणुभावे सुणेह मे ॥
- २—नामाइ वण्णरसगन्ध- फासपरिणामलक्खण ।
 ठाण ठिइं गड चाउ लेसाण तु सुणेह मे ॥

लेसा-पद

- ३—किण्हा नीला य काऊ य तेऊ पम्हा तहेव य ।
 मुक्कलेसा य छट्ठा उ^१ नामाइ तु जहक्कम ॥

वण्ण-पद

- ४—जीमूयनिद्धसकासा गवलरिद्धगसन्निभा ।
 खंजणणनयणनिभा किण्हलेसा उ वण्णओ ॥
- ५—नीलाऽसोगसकासा चासपिच्छसमप्पभा ।
 वेरुलियनिद्धसकासा नीललेसा उ वण्णओ ॥
- ६—अयसीपुप्फसकासा कोडलच्छदसन्निभा ।
 पारेवयगीवनिभा काउलेसा उ वण्णओ ॥
- ७—हिंगुलुयधाउसकासा तरुणाइच्चसन्निभा^२ ।
 मुयतुण्डपईवनिभा^३ तेउलेसा उ वण्णओ ॥
- ८—हरियालभेयसकासा हलिद्दाभेयसनिभा^४ ।
 सणासणकुसुमनिभा पम्हलेसा उ^५ वण्णओ ॥

१—य (उ, ऋ) ।

२—^० च्छावि^० (वृ० पा०) ।

३—सुयतुडगसकासा, सुयतुडालत्तदीवामा (वृ० पा०) ।

४—^० सज्जभा (अ, आ इ) ।

५—य (ऋ) ।

९—संखककुन्दसकासा खीरपूरसमप्पभा^१ ।
 रययहारसकासा सुक्कलेसा उ^२ वण्णओ ॥

रस-पद

१०—जह कडुयतुम्बगरसो
 निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो
 रसो उ^३ किण्हाए नायव्वो ॥

११—जह तिगडुयस्स य रसो
 तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो
 रसो उ नीलाए नायव्वो ॥

१२—जह तरुणअम्बगरसो
 तुवरकविट्ठस्स^४ वावि जारिसओ ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो
 रसो उ काऊए नायव्वो ॥

१३—जहपरिणयम्बगरसो
 पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो
 रसो उ^५ तेऊए नायव्वो ॥

१—खीरपूर^० (वृ०), खीरधार^०, खीरपूर^० (वृ० पा०) ।

२, ३—य (ऋ) ।

४—तुवर^० (ऊ), तुवरु^० (उ), अट्ट^० (वृ० पा०) ।

५—य (ऋ) ।

१४—वरवारुणीए व रसो
विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
'महुमेरगस्स व रसो
एत्तो पम्हाए' परएण'^२ ॥

१५—खज्जूरमुद्दियरसो
खीररसो खण्डसक्कररसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ^३ सुक्काए नायव्वो ॥

गन्ध-पद

१६—जह गोमडस्स गन्धो
सुणगमडगस्स^४ व जहा अहिमडस्स ।
'एत्तो वि'^५ अणन्तगुणो
लेसाण अप्पसत्थाण ॥

१७—जह सुरहिकुसुमगन्धो
गन्धवासाण^६ पिस्समाणाण^७ ।
'एत्तो वि'^८ अणन्तगुणो
पसत्थलेसाण तिण्ह पि ॥

१—पम्हाउ (अ) ।

२—एत्तो वि अणत्त गुणो रत्तो उ पम्हाए नायव्वो (वृ० पा०) ।

३—य (ऋ) ।

४—^० मडस्स (उ, ऋ) ।

५—एत्तो (अ), इत्तो वि (उ, ऋ) ।

६—गघाण य (वृ० पा०) ।

७—पिस्सिमाणेण (अ) ।

८—एत्तो (अ) इत्तो वि (उ, ऋ) ।

फास-पद

१८-जह करगयस्स फासो
गोजिब्भाए व सागपत्ताण ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
लेसाण अप्पसत्थाणं ॥

१९-जह वूरस्स व फासो
नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाण ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
पसत्थलेसाण तिण्ह पि ॥

परिणाम-पद

२०-तिविहो व नवविहो वा
सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा ।
दुसओ तेयालो वा
लेसाण होइ परिणामो ॥

२१-पचासवप्पवत्तो^१
तीहिं अगुत्तो छसु अविरओ य ।
'तिव्वारम्भपरिणओ
खुदो साहसिओ नरो'^२ ॥

२२-'निद्वन्धसपरिणामो निस्ससो अजिइन्दिओ'^३ ।
एयजोगसमाउत्तो किण्हलेस तु परिणमे ॥

१-० प्यमत्तो (वृ) . ० प्यवत्तो (वृ० पा०) ।

२-निद्वन्धसपरिणामो निस्ससो अजिइन्दिओ । (वृ० पा०) ।

३-विद्वानं परिणमो खुदो साहसिओ नरो ॥ (वृ० पा०) ।

- २३—इस्साअमरिसअतवो अविज्जमाया 'अहीरिया य'^१ ।
 गेद्धी पओसे य सढे पमत्ते^२ रसलोलुए साय गवेसए य ॥
- २४—आरम्भाओ^३ अविरओ खुद्धो साहस्सिओ नरो ।
 एयजोगसमाउत्तो नीललेसं तु परिणमे ॥
- २५—वके वकसमायारे नियडिल्ले अणुज्जुए ।
 पलिउच्चग ओवहिए मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥
- २६—उप्फालगदुद्धुवाई^४ य तेणे यावि य मच्छरी ।
 एयजोगसमाउत्तो काउलेस तु परिणमे ॥
- २७—नीयावित्ती अचवले अमाई अकुऊहले ।
 विणीयविणए दन्ते जोगव उवहाणव ॥
- २८—पियधम्मे दढधम्मे वज्जभीरू हिएसए^५ ।
 एयजोगसमाउत्तो तेउलेस तु परिणमे ॥
- २९—पयणुक्कोहमाणे य मायालोभे य पयणुए ।
 पसन्तचित्ते दन्तप्पा जोगव उवहाणव ॥
- ३०—तहा पयणुवाई^६ य उवसन्ते जिइन्दिए ।
 एयजोगसमाउत्तो पम्ह्लेस तु परिणमे ॥
- ३१—अट्टरुट्ठाणि वज्जित्ता धम्ममुक्काणि भायए^७ ।
 पसन्तचित्ते दन्तप्पा समिए गुत्ते य गुत्तिहि ॥

१—अहीरियगयाय (अ) ।

२—य मत्ते (वृ० पा०) ।

३—आरम्मओ (अ) , आरम्मा (उ, ऋ) ।

४—उफालदुद्धुवाई (अ) उप्फात्ता^० (उ) उप्फाडग^० (ऋ) ।

५—हियात्तए अणात्तए (वृ० पा०) ।

६—^० याइ (अ) ।

७—त्ताहए (वृ०, सु) , झायए (वृ० पा०) ।

३२—सरागे वीयरगे वा^१ उवसन्ते^२ जिइन्दिए ।
एयजोगसमाउत्तो सुक्कलेसं तु परिणमे ॥

ठाण-पद

३३—असखिज्जाणोसप्पिणीण^३
उस्सप्पिणीण जे समया ।
सखाईया^४ लोगा
लेसाण हुन्ति ठाणाइं ॥

ठिइ-पद

३४—'मुहुत्तद्ध तु'^५ जहन्ना
तेत्तीस सागरा मुहुत्तऽहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा किण्हलेसाए ॥

३५—'मुहुत्तद्ध तु'^६ जहन्ना
दस उदही पलियमसखभागमव्वहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा नीललेसाए ॥

३६— मुहुत्तद्ध तु'^७ जहन्ना
तिण्णुदही पलियमसखभागमव्वहिया ।
उक्कोमा होइ ठिई
नायव्वा काउलेसाए ॥

१—य (अ) ।

२—उवसन्ते (५० प ०) ।

३—असखिज्जाणोसप्पिणीण (अ) ।

४—सखाईया (५० प ०) ।

५—मुहुत्तद्ध तु (५० प ०) ।

६—मुहुत्तद्ध तु (५० प ०) ।

७—मुहुत्तद्ध तु (५० प ०) ।

- ३७—'मुहुत्तद्धं तु'^१ जहन्ता
दोउदही पलियमसखभागमव्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा तेउलेसाए ॥
- ३८—'मुहुत्तद्धं तु'^२ जहन्ता
दस 'होन्ति सागरा मुहुत्ताहिया'^३ ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा पम्हलेसाए ॥
- ३९—'मुहुत्तद्धं तु'^४ जहन्ता
तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा सुक्कलेसाए ॥
- ४०—एसा खलु लेसाणं
ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ ।
चउसु वि गईसु एत्तो
लेसाण ठिइं तु वोच्छामि ॥
- ४१—दस वाससहस्साइ
काऊए ठिई जहन्निया होइ ।
'तिण्णुदही 'पलिओवम
असखभाग'^५ च उक्कोसा'^६ ॥

१—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

२—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

३—उदही इति मुहुत्तन्वभहिया (उ, ऋ) ।

४—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

५—पलियमसख भाग (सु), पलियमसखेज्ज भाग (वृ०) ।

६—उक्कोसा तित्नुदही पलियमसखेज्जभागइहिय (वृ० पा०) ।

- ४२-तिष्णुदही पलिय-
 मसखभागा जहन्नेण नीलठिई ।
 दस उदही 'पलिओवम
 असखभाग'^१ च उक्कोसा ॥
- ४३-'दस उदही 'पलिय-
 मसखभाग'^२ जहन्निया होइ ।
 तेत्तीससागगड उक्कोसा
 होइ किण्हाए ॥'^३
- ४४-एमा नेरइयाण
 लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
 तेण पर वोच्छामि
 तिग्गियमणुस्साण देवाणं ॥
- ४५-अन्नोमुहुत्तमद्ध
 लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ ।
 तिग्गियाण नगण वा'
 वजित्ता केवल लेस ॥
- ४६-मुहुत्तद्ध तु जहन्ना
 उमोसा होइ पुव्वकोडी उ ।
 नवद्वि वग्गिमेहि ऊणा
 नायच्चा मूक्कलेसाए ॥

४७—एसा तिरियनराण
लेसाण ठिई उ वणिया होइ ।
तेण पर वोच्छामि
लेसाण ठिई उ देवाण ॥

४८—दस वाससहस्ताइ
किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
पलियमसंखिज्जइमो
उक्कोसा होइ किण्हाए ॥

४९—जा किण्हाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमव्वहिया ।
जहन्नेण नीलाए
'पलियमसख तु'^१ उक्कोसा ॥

५०—जा नीलाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमव्वहिया ।
जहन्नेण काऊए
पलियमसखं च उक्कोसा ॥

५१—तेण पर वोच्छामि
तेउलेसा जहा सुरगणाणं ।
भवणवइवाणमन्तर-
जोइसवेमाणियाण च ॥

१—पलियनसखं च (उ. ऋ), पलियनत्तज्जि (वृ०) ।

४२-तिण्णुदही

पलिय-

मसखभागा जहन्नेण नीलठिई ।

दस उदही

'पलिओवम
असखभाग'^१ च उक्कोसा ॥

४३-'दस उदही

'पलिय-

मसखभाग'^२ जहन्निया होइ ।

तेत्तीससागराड

उक्कोसा

होइ किण्हाए ॥'^३

४४-एणा

नेग्इयाण

लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।

तेण पर

वोच्छामि

तिरियमणुस्साण देवाणं ॥

४५-अन्नोमुह्त्तमद

लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ ।

तिग्गियाण

नराण वा'

वज्जिन्ना केवल लेस ॥

४६-मुह्त्तद

नु जहन्ना

उमोमा होइ पुव्वकोडी उ ।

नवहि

वग्गिमेहि

ऊणा

नायच्चा

मद्वलेसाए ॥

४७—एसा तिरियनराणं
 लेसाण ठिई उ वणिगया होइ ।
 तेण परं वोच्छामि
 लेसाण ठिई उ देवाणं ॥

४८—दस वाससहस्ताइ
 किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
 पलियमसंखिज्जइमो
 उक्कोसा होइ किण्हाए ॥

४९—जा किण्हाए ठिई खलु
 उक्कोसा सा उ समयमव्वहिया ।
 जहन्नेणं नीलाए
 'पलियमसंख तु'^१ उक्कोसा ॥

५०—जा नीलाए ठिई खलु
 उक्कोसा सा उ समयमव्वहिया ।
 जहन्नेणं काऊए
 पलियमसंखं च उक्कोसा ॥

५१—तेण पर वोच्छामि
 तेउलेसा जहा मुरगणाणं ।
 भवणवडवाणमन्तर-
 जोडसवेमाणियाणं च ॥

१—पलियमसखं च (उ, ऋ), पलियमसखिज्ज (वृ०) ।

- ५२-पलिओवम^१ जहन्ता
उक्कोसा सागरा उ दुण्हऽहिया^२ ।
पलियमसत्तेज्जेण
होई भागेण^३ तेऊए ॥
- ५३-दस वाससहस्साइ
तेऊए ठिई जहन्निया होइ ।
दुण्णदही पलिओवम
असखभाग च उक्कोसा ॥
- ५४-जा तेऊए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमव्वहिया ।
जहन्नेण पम्हाए दसउ
मुहत्तऽहियाइ च उक्कोसा ॥

धम्मलेसा-पदं

५७—तेऊ पम्हा सुक्का-
 तिन्निं वि एयाओ धम्मलेसाओ ।
 एयाहि तिहि वि जीवो
 सुग्गइं उववज्जई बहुसो^१ ॥

उववात-पद

५८—लेसाहि सव्वाहि
 पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
 'न वि कस्सवि उववाओ'^२
 परे भवे अत्थि^३ जीवस्स ॥

५९—लेसाहि सव्वाहि
 चरमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
 'न वि कस्सवि उववाओ'^४
 परे भवे अत्थि^५ जीवस्स ॥

६०—अन्तमुहुत्तम्मि गाए
 अन्तमुहुत्तम्मि सेसाए चेव ।
 लेसाहि परिणयाहिं
 जीवा गच्छन्ति पग्गलोय ॥

१—x (उ, ऋ) ।

२—न ह कस्सवि उववत्ति (वृ०) ।

न वि^० (वृ० पा०) , न ह^० (उ, ऋ, चु) ।

३—भवइ (वृ०, चु) । -

४—न ह कस्सवि उववत्ति (वृ०) ।

५—भवइ (वृ०, चु) ।

पणतीसइमं अज्भयण
अणगारमग्गई

- १—सुणेह 'मे एगगमणा'^१ मग्ग बुद्धेहि देसिय ।
जमायरन्तो भिक्खू दुक्खाणन्तकरो भवे ॥
- २—गिहवास परिच्चज्ज पवज्जअस्सिओ^२ मुणी ।
इमे सगे वियाणिज्जा^३ जेहिं सज्जन्ति माणवा ॥
- ३—तहेव हिंस अलिय चोज्ज अवम्भसेवण ।
इच्छाकाम च लोभ च सजओ परिवज्जए ॥
- ४—मणोहर चित्तहर मल्लधूवेण वासिय ।
सकवाड पण्डुरुल्लोय मणसा वि न पत्थए ॥
- ५—इन्द्रियाणि उ भिक्खुस्स तारिसम्मि उवस्सए ।
दुक्कराइ निवारेउ^४ कामरागविवड्ढणे ॥
- ६—सुसाणे सुन्नगारे वा रक्खमूले व एक्कओ^५ ।
पडरिक्के^६ परकडे वा वास तत्थऽभिरोयए ॥
- ७—फासुयम्मि अणावाहे इत्थीहिं अणभिद्दुए ।
तत्थ सकप्पए वास भिक्खू परमसजए ॥
- ८—न सय गिहाड कुज्जा णेव अन्नेहिं कारण ।
गिहकम्मसमारम्भे भूयाण दीसई व्हो ॥

१—मे एगगमणा (उ, ऋ) ।

२—पवज्जामस्सिए (उ, ऋ) ।

३—वियापेत्ता (अ) ।

४—उ धारेउ (वृ०), निवारेउ (वृ० पा०) ।

५—एगओ (उ, ऋ) एगया (वृ०) एक्कतो (वृ० पा०) ।

६—परक्के (वृ०), पडरिक्के (वृ० पा०) ।

- ९-तसाण थावराण च सुहुमाण बायराण य ।
तम्हा गिहसमारम्भं सजओ परिवज्जए ॥
- १०-तहेव भत्तपाणेसु पयण^१ पयावणेसु य ।
पाणभूयदयट्ठाए न पये न पयावए ॥
- ११-जलधन्ननिस्सिया जीवा^२ पुढवीकट्टनिस्सिया^३ ।
हम्मन्ति भत्तपाणेसु तम्हा भिक्खू न पायए ॥
- १२-विसप्पे सव्वओधारे बहुपाणविणासणे ।
नत्थि जोडसमे सत्थे तम्हा जोइ न दीवए ॥
- १३-हिरण जायख्व च मणसा वि न पत्थए ।
समलेट्ठुकचणे भिक्खू विरए कयविक्कए ॥
- १४-किणन्तो कडओ होइ विक्किणन्तो य वाणिओ ।
कयविक्कयम्मि वट्टन्तो भिक्खू न भवइ तारिसो ॥
- १५-भिक्खियव्व न केयव्व भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा ।
कयविक्कओ महादोसो भिक्खावत्ती^४ सुहावहा ॥
- १६-समुयाण उच्छमेसिज्जा जहासुत्तमणिन्दिय ।
लाभालाभम्मि सतुट्ठे पिण्डवाय 'चरे मुणी'^५ ॥
- १७-अलोले न ग्गे गिट्ठे जिव्वादन्ते अमुच्छिअए ।
न ग्सट्ठाए भुजिज्जा जवणट्ठाए महामुणी ॥
- १८-अच्चण ग्यण चैव वन्दण पूयण तथा ।
उट्ठीमवान्सम्माण मणसा वि न पत्थए ॥

- १९—सुक्कभाण भियाएज्जा अणियाणे अकिचणे ।
 वोसट्टकाए विहरेज्जा जाव कालस्स पज्जओ ॥
- २०—निज्जूहिऊण आहार कालधम्ममे उवट्टिए ।
 जहिऊण^१ माणुस बोन्दि प्हू दुक्खे विमुच्चई ॥
- २१—निम्ममो निरहकारो वीयरगो अणासवो^२ ।
 सपत्तो केवल नाण सासय परिणिव्वुए ॥
 --त्ति वेमि ॥

*

१—चइऊण (उ, ऋ) ।

२—निरासवे (चू०) ।

छत्तीसइम अज्भयण

जीवाजीवविभत्ती

उवखेव-पद

१—जीवाजीवविभत्ति 'सुणेह मे'^१ एगमणा इओ ।
ज जाणिऊण समणे^२ सम्मं जयइ सजमे ॥

लोकालोक-पद

२—जीवा चेव अजीवा य एस लोए वियाहिए ।
अजीवदेसमागासे अलोए से वियाहिए ॥

३—दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तथा ।
परुवणा तेसि भवे जीवाणमजीवाण य ॥

४—रुविणो चेवऽरुवी य अजीवा दुविहा भवे ।
अरुवी दसहा वुत्ता रुविणो वि चउव्विहा ॥

अरुवि-अजीव-पद

५—धम्मत्थिकाए तद्देसे तप्पएसे य आहिए ।
अहम्मं तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए ॥

६—आगामे तस्स देमे य तप्पएसे य आहिए ।
अट्टासमए चेव अरुवी दसहा भवे ॥

७—धम्माधम्मं य दोऽवेए^३ लोगमिक्का वियाहिया ।
लोगाल्लोगे य आगासे समए समयखेत्तिए ॥

८—धम्माधम्मागासा तिन्नि वि एए अणाडया ।
अनज्जवमिया चेव सव्वट्ठं तु वियाहिया ॥

१—मे सुणेह (६०) ।

२—भिण्ण (उ ऋ ६०) , म्मणे (६० प ०) ।

३—दोऽर (७) , द वे य (७) ।

९—'समए वि सन्तड पप्प एवमेव'^१ वियाहिए ।
 आएस पप्प साईए सपज्जवसिए वि य ॥

रुवि अजीव-पद

१०—खन्धा य खन्धेदेसा य तप्पएसा तहेव य ।

परमाणुणो य बोद्धव्वा रुविणो य चउव्विहा ॥

११—एगत्तेण पुहत्तेण खन्धा य परमाणुणो ।

लोएगदेसे लोए य भइयव्वा ते उ खेतथो ॥

इत्तो कालविभाग तु तेसिं वुच्छं चउव्विह ॥

१२—संतड पप्प तेऽणार्ई अपज्जवसिया वि य ।

ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१३—असखकालमुक्कोस 'एग समय जहन्निया'^३ ।

अजीवाण^३ य रूवीण ठिई एसा वियाहिया ॥

१४—अणन्तकालमुक्कोस एग समय जहन्नय ।

अजीवाण^३ य रूवीण अन्तरेय वियाहिय ॥

१५—वण्णओ गन्धओ चेव रसओ फासओ तथा ।

सठाणओ य विन्नेओ परिणामो तेसि पचहा ॥

१६—वण्णओ परिणया जे उ पचहा ते पकित्तिया ।

किण्हा नीला य लोहिया हाल्लिहा मुद्धिला तथा ॥

१७—गन्धओ परिणया जे उ दुविहा ते वियाहिया ।

नुट्ठिभगन्धपरिणामा दुट्ठिभगन्धा तहेव य ॥

१८—रसओ परिणया जे उ पचहा ते पकित्तिया ।

तित्तकट्टयकसाया अम्भिल्ला महुरा तथा ॥

- १९—फासओ परिणया जे उ अट्टहा ते पकित्तिया ।
कक्खडा मउया चेव गरुया लहुया तहा ॥
- २०—सीया उण्हा य निट्ठा य तहा लुक्खा य आहिया ।
इड फासपरिणया एए पुग्गला समुदाहिया ॥
- २१—सठाणपरिणया जे उ पच्चहा ते पकित्तिया ।
परिमण्डला 'य वट्टा'^१ तसा चउरसमायया ॥
- २२—वण्णओ जे भवे किण्हे भइए से उ गन्धओ ।
ग्गओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- २३—वण्णओ जे भवे नीले भइए से उ गन्धओ ।
ग्गओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- २४—वण्णओ लोहिए जे उ भइए से उ गन्धओ ।
ग्गओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- २५—वण्णओ पीयए जे उ भइए से उ गन्धओ ।
ग्गओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- २६—वण्णओ मुक्किले जे उ भइए से उ गन्धओ ।
ग्गओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- २७—गन्धओ जे भवे मुट्ठी भइए से उ वण्णओ ।
ग्गओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- २८—गन्धओ जे भवे टुट्ठी भइए से उ वण्णओ ।
ग्गओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- २९—ग्गओ तित्ता जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

- ३०—रसओ कडुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३१—रसओ कसाए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- ३२—रसओ अम्बिले जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- ३३—रसओ महुरए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- ३४—फासओ कक्खडे जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- ३५—फासओ मउए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- ३६—फासओ गुरुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- ३७—फासओ लहुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- ३८—फासओ सीयए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- ३९—फासओ उण्हए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- ४०—फासओ निद्धए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥
- ४१—फासओ लुकवण जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि

- ४२-परिमण्डलसंठाणे भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चैव भइए फासओ वि य ॥
- ४३-सठाणओ भवे वट्टे भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चैव भइए फासओ वि य ॥
- ४४-सठाणओ भवे तसे भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चैव भइए फासओ वि य ॥
- ४५-सठाणओ य चउरसे भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चैव भइए फासओ वि य ॥
- ४६-जे आययसठाणे भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चैव भइए फासओ वि य ॥
- ४७-ग्गा अजीवविभत्ती समासेण वियाहिया ।
 ज्जा जीवविभत्ति वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥

जीव-पद

- ४८-नगाग्था य सिद्धा य दुविहाजीवा वियाहिया ।
 मित्राणेगविहावृत्ता^१ त मे कित्तयओ मुण ॥

मिद्धजीव-पद

- ४९-अग्गी पुग्गिनिद्धा य तहेव य नपुसगा ।
 तन्निगे अन्नन्निगे य गिहिन्निगे तहेव य ॥
- ५०-उतोमोगात्तणाण य जहन्मज्झिमाड य ।
 इत्त अहे न निग्गिय न नमुद्दम्मि जल्लम्मि य ॥
- ५१-अग्ग चैव नपुग्गिणु^२ वीम ज्जिय्यामु य ।
 पुग्गिणुग्गु य अत्तणय समणणेणेण निज्झई ॥

१-संज्ञा (३-२०)

२-संज्ञा (३-२०)

३-संज्ञा (३-२०)

- ५२—चत्तारि य गिहिलिगे अन्नलिगे दसेव यं ।
सलिगेण यं अट्टसयं समणणेण सिज्झई ॥
- ५३—उक्कोसोगाहणाए य सिज्झन्ते जुगव दुवे ।
चत्तारि जहन्नाए जवमज्झसट्ठुत्तर^१ सय ॥
- ५४—‘चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे
तओ जले वीसमहे तहेव^२ ।
सय च अट्ठुत्तर तिरियलोए
समणणेण उ ‘सिज्झई उ’^३ ॥’^४
- ५५—कहि पडिहया सिद्धा ? कहि सिद्धा पइट्ठिया ? ।
कहि वोन्दि चइत्ताण ? कथ गन्तूण सिज्झई ? ॥
- ५६—अलोए पडिहया सिद्धा लोयग्गे य पइट्ठिया ।
इह वोन्दि चइत्ताण तथ गन्तूण सिज्झई ॥
- ५७—वारसहि जोयणेहि सब्बट्ठस्सुवरि भवे ।
ईसीपव्भारनामा उ’ पुढवी छत्तसठिया ॥
- ५८—पणयालसयसहस्सा जोयणाण तु आययां ।
तावइय चेव वित्थिण्णा ‘तिगुणो तस्सेव परिरओ’^५ ॥
- ५९—अट्टजोयणवाहला सा मज्झम्मि वियाहिया ।
परिहायन्ती चरिमन्ते मच्छियपत्ता तणुयरी ॥

१—मज्झे अट्ठुत्तर (अ) ।

२—तहेव य (अ) ।

३—सिज्झई दुव (उ, ऋ) ।

४—चउगे उड्ढलोगमि वीसपहुत्त अहे भवे ।

सय अट्ठुत्तर तिरिए एण समण सिज्झइ ॥

दुवे समुद्दे सिज्झत्त नैस जलेसु ततो जण ।

एमा ह सिज्झण मगिया पुव्वमत्तं पडुच्च उ ॥ (दू० पा०) ।

५— (उ, ऋ) ।

६—निउा जाहिय पडित्त (दू० पा०) ।

६०-अज्जुणमुवण्णगमई

सा पुढवी निम्मला सहावेणं ।

उत्ताणगच्छत्तगसठिया य

भणिया जिणवरेहि ॥

६१-गन्धककुन्दसकासा पण्डुरा निम्मला सुहा ।

सीयाए जोयणे तत्तो लोयन्तो उ वियाहिओ ॥

६२-जोयणस्स उ जो तस्स' कोसो उवरिमो भवे ।

'तस्स कोसस्स छट्ठभाए सिद्धाणोगाहणा भवे'^२ ॥

६३-तव्य सिद्धा महाभागा लोयग्गम्मि पइट्ठिया^३ ।

भवापवच उम्मुक्का सिद्धि वरगड गया ॥

६४-उन्नेहो जस्स जो हीड भवम्मि चरिमम्मि उ^४ ।

निभागहीणा तत्तो य सिद्धाणोगाहणा भवे ॥

६५-एगनेण साईया अपज्जवसिया वि य ।

पुट्टनेण अणाईया अपज्जवसिया वि य ॥

६६-अण्विणो जीवघणा नाणदसणसन्निया ।

अउल्ल मुद्द सपत्ता उवमा जस्स नत्थि उ ॥

६७-गोणमदेम' ते सव्वे नाणदसणसन्निया ।

गमाग्गारनिच्छिन्ता मिद्धि वरगड गया ॥

गमाग्ग्यजीव-पद

६८-गमाग्ग्या उ जे जीवा दृविहा ते वियाहिया ।

ग्गमा य थावग्ग च्चैव थावग्ग निविहा तहि ॥

६९—पुढवी आउजीवा य तहेव य वणस्सई ।
इच्चेए थावरा तिविहा तेसि भेए सुणेह मे ॥

पुढवि-पद

७०—दुविहा पुढवीजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए^१ दुहा पुणो ॥

७१—बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया ।
सण्हा खरा य बोद्धव्वा सण्हा सत्तविहा तहिं ॥

७२—किण्हा नीला य रहिरा य^२
हालिद्दा सुक्किला तहा ।

पण्डुपणगमट्टिया

खरा छत्तीसईविहा ॥

७३—पुढवी य सक्करा वालुया य
उवले सिला य लोणूसे ।

'अयत्तम्बतउय'^३-सीसग-

रुप्पसुवण्णे य वइरे य ॥

७४—हरियाले

हिंगुलुए

मणोसिला सासगंजणपवाले ।

अव्भपडलऽव्भवालुय

वायरकाए मणिविहाणा ॥

१—एगमेगे (दू० पा०) ।

२—X (अ) ।

३—उद्वद त्त्तो य (अ) ; अय त्त्तय त्त्त्व (उ, ऋ) ।

आउ-पद

- ८४—दुविहा आउजीवा उ सुहुमा वायरा तथा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥
- ८५—वायरा जे उ पज्जत्ता पचहा ते पकित्तिया ।
सुद्धोदए य उस्से हरतणू महिया हिमे ॥
- ८६—एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य वायरा ॥
- ८७—सन्तइ पप्पणाईया^१ अपज्जवसिया वि य ।
ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- ८८—सत्तेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउट्टिई आऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया^२ ॥
- ८९—असखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायट्टिई आऊणं त कायं तु अमुचओ ॥
- ९०—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढमि सए काए आऊजीवाण अन्तर ॥
- ९१—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥

वणस्सई-पद

- ९२—दुविहा वणस्सईजीवा सुहुमा वायरा तथा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए^३ दुहा पुणो ॥
- ९३—वायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया ।
साहारणसरीरा य पत्तेगा य तहेव य ॥

१—^० तेजाई (अ) ।

२—जहन्नग (अ) ।

३—एवमेव (अ) ।

१४-‘पत्तेगसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया’^१ ।

रक्खा गुच्छाय गुम्माय लया वल्ली तणा तथा ॥

१५-लयावलय^२ पव्वगा^३ कुहुणा

जलरुहा ओसहीतिणा^४ ।

हरियकाया य वोद्धव्वा

पत्तेया इति आहिया ॥

१६-साहारणसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया ।

आनुण मूलए चेव सिंगवेरे तहेव य ॥

१७-हिण्ळी सिरिली सिस्सिरिली

जावई केदकन्दली” ।

पण्डुलसणकन्दे य

कन्दली य कुडुवए^५ ॥

१८-ओहि णीह य थिहू य कुहगा य तहेव य ।

तण्हे य वजकन्दे य कन्दे मूरणए^६ तथा ॥

१९-अन्नारणी य वोद्धव्वा सीहकणी तहेव य ।

मुमुट्टो य ह्दिहा य णेगहा एवमायओ ॥

२०-एणविट्ठमायना मुट्टमा तन्थ वियाहिया ।

एवमा तन्थयोगम्मि लोगदेमे य वायग ॥

- १०१—सतइ पप्पणार्इया^१ अपज्जवसिया वि य ।
 ठिड पडुच्च सार्इया सपज्जवसिया वि य ॥
- १०२—दस चेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
 वणप्फईण^२ आउं तु अत्तोमुहुत्तं जहन्नग ॥
- १०३—अणत्तकालमुक्कोस अत्तोमुहुत्त जहन्नय ।
 कायठिई पणगाण त काय तु अमुच्चओ ॥
- १०४—असखकालमुक्कोस अत्तोमुहुत्त जहन्नय ।
 विजडमि सए काए पणगजीवाण अन्तर ॥
- १०५—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रत्तफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥
- १०६—इच्चेए थावरा तिविहा समासेण वियाहिया ।
 इत्तो उ तसे तिविहे वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥
- १०७—तेऊ वाऊ य वोद्धव्वा उराला य तसा तहा ।
 इच्चेए तसा तिविहा तेसि भेए नुणेह मे ॥

तेउ-पड

- १०८—वुविहा तेउजीवा उ नुहुमा वायग तहा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥
- १०९—वायरा जे उ पज्जत्ता पेगहा ते वियाहिया ।
 डगाले मुम्मुरे अगणी अच्चि जान्ना तहेव य ॥
- ११०—उक्का विज्जू य वोद्धव्वा पेगहा एवमायओ ।
 एगविहमणाणत्ता नुहुमा ते विगहिया ॥
- १११—नुहुमा सव्वलोगम्मि लोगेद्वे^३ य वायग ।
 इत्तो कालविनागं तु तेसि वुच्चं चउच्चिह ॥

१—० ते-इ (३) ।

२—इ-ई (८ अ ६०) . व-वई (६० पः)

३—रदेने (३) ।

- १३२—वासाइं वारसे व उ उक्कोसेण वियाहिया ।
वेडन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १३३—सखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्त जहन्नयं^१ ।
वेडन्दियकायठिई त कायं तु अमुचओ ॥
- १३४—अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नयं ।
वेडन्दियजीवाणं अन्तरेय^२ वियाहिय ॥
- १३५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

तेडन्दिय-पद

- १३६—तेडन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए मुणेह मे ॥
- १३७—कुन्धुपिवीलिउड्डसा उक्कलुद्देहिया तथा ।
तणहारकट्टहारा मालुगा पत्तहारगा ॥
- १३८—कप्पासऽट्टिमिजा य तिदुगा तउसमिजगा ।
सदावरी य गुम्मी य वोद्धव्वा इन्दकाडया ॥
- १३९—उन्दगोवगमाईया णेगहा एवमायओ ।
त्तोण्णदेने ते सच्चवे न सच्चत्थ वियाहिया ॥
- १४०—नंतऽ पण्णज्जाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिऽ पट्टय नाईया गपज्जवमिया वि य ॥

१२३—असखकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
कायट्टिई वाऊणं त काय तु अमुचओ ॥

१२४—अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
विजढमि सए काए वाउजीवाण अन्तर ॥

१२५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥

१२६—ओराला तसा जे उ चउहा^१ ते पकित्तिया ।
वेइन्दियतेइन्दिय- चउरोपचिन्दिया चेव ॥

वेइन्दिय-पद

१२७—वेइन्दिया उ^२ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥

१२८—किमिणो सोमगला चेव अलसा माइवाहया ।
वासीमुहा य सिप्पीया^३ सखा सखणगा^४ तहा ॥

१२९—पल्लोयाणुल्लया^५ चेव तहेव य वराडगा ।
जलूगा जालगा चेव चन्दणा य तहेव य ॥

१३०—इड वेइन्दिया एए णेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥^६

१३१—सतड पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिड पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१—चउव्विहा (ऋ) ।

२—य (अ, ऋ) ।

३—सिप्पीया (आ, इ, ऋ) ।

४—सखलगा (अ) ; सखणगा (उ) ।

५—पल्लोया^० (आ), अल्लोया^० (ऋ) ।

६—इस श्लोक के बाद इतना और है —

एतो काल विभा तु तेसिं दुच्च चउव्विह ॥ (उ) ।

- ११२—संतइं पप्पण्णार्इया अपज्जवसिया वि य ।
ठिं पडुच्च साइया सपज्जवसिया वि य ॥
- ११३—तिण्णेव अहोरत्ता उक्कोत्तेण वियाहिया ।
आउट्ठिई तेऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- ११४—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायट्ठिई तेऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥
- ११५—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजडंमि सए काए तेउजीवाण अन्तरं ॥
- ११६—एएसि वण्णओ चैव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणाद्वेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

वाउ-पदं

- ११७—डुविहा वाउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥
- ११८—वायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया ।
उक्कलियामण्डलिया- घणगुंजा सुद्धवाया य ॥
- ११९—संवट्टगवाते य ऽण्णेगविहा^१ एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता नुहुमा ते वियाहिया ॥
- १२०—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे^२ य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु तेसि वुच्छं चउव्विहं ॥
- १२१—संतइं पप्पण्णार्इया अपज्जवसिया वि य ।
ठिं पडुच्च साइया सपज्जवसिया वि य ॥
- १२२—तिण्णेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउट्ठिई वाऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१—ऽण्णेगहा (उ ऋ) ।

२—दादेसे (ङ) ।

१२३—असखकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
कायट्टिई वाऊण त काय तु अमुचओ ॥

१२४—अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्तं जहन्नय ।
विजढमि सए काए वाउजीवाण अन्तर ॥

१२५—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥

१२६—ओराला तसा जे उ चउहा^१ ते पकित्तिया ।
वेइन्दियतेइन्दिय- चउरोपचिन्दिया चेव ॥

वेइन्दिय-पद

१२७—वेइन्दिया उ^२ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसि भेए मुणेह मे ॥

१२८—किमिणो सोमगला चेव अलसा माइवाहया ।
वासीमुहा य सिप्पीया^३ सखा सखणगा^४ तहा ॥

१२९—पल्लोयाणुल्लया^५ चेव तहेव य वराडगा ।
जलूगा जालगा चेव चन्दणा य तहेव य ॥

१३०—इड वेइन्दिया एए णेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥^६

१३१—सतइ पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिड पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१—चउब्बिहा (ऋ) ।

२—य (अ, ऋ) ।

३—त्तप्पीया (अ, इ, ऋ) ।

४—सखलगा (अ) ; सखणगा (उ) ।

५—पल्लोया^० (अ) अल्लोया^० (ऋ) ।

६—इत्त इत्तं क के वाद इत्तन्ना और है —

रतो काल विभा तु तेसि दुच्च चउब्बिह ॥ (उ) ।

- १३२—वासाइं बारसे व उ उक्कोसेण वियाहिया ।
 बेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १३३—सखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं^१ ।
 बेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुचओ ॥
- १३४—अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्तं जहन्नय ।
 बेइन्दियजीवाण अन्तरेय^२ वियाहियं ॥
- १३५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥

तेइन्दिय-पद

- १३६—तेइन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥
- १३७—कुन्थुपिवील्लिउड्डसा उक्कलुद्धेहिया तथा ।
 तणहारकट्टहारा मालुगा पत्तहारगा ॥
- १३८—कप्पासऽट्टिमिंजा य तिंदुगा तउसमिंजगा ।
 सदावरी य गुम्मी य बोद्धव्वा इन्दकाइया ॥
- १३९—इन्दगोवगमाइया णेगहा एवमायओ ।
 लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥
- १४०—सतइ पप्पऽणाइया अपज्जवसिया वि य ।
 ठिइ पड्डुच्च साइया सपज्जवसिया वि य ॥
- १४१—एगूणपण्णऽहोरत्ता^३ उक्कोसेण वियाहिया ।
 तेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१—जहन्निया (अ) ।

२—^० ण (अ) ।

३—एगूणवण्ण^० (उ, ऋ) ।

१४२—सखिज्जकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय^१ ।
तेइन्द्रियकायठिई त काय तु अमुचओ ॥

१४३—अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
तेइन्द्रियजीवाण अन्तरेय वियाहिय ॥

१४४—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाड सहस्ससो ॥
चउरिन्द्रिय-पद

१४५—चउरिन्द्रिया उ जे जीवा दुविहा ते पक्कित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसि भेए मुणेह मे ॥

१४६—अन्धिया पोत्तिया चेव मच्छिया मसगा तथा ।
भमरे कीडपयगे य ढिकुणे कुकुणे तथा ॥

१४७—कुक्कुडे सिंगिरीडी य नन्दावत्ते य विच्छिए ।
डोले भिंगारी^२ य विग्ग्ली अच्छिवेहण ॥

१४८—अच्छिले माहए^३ अच्छि-
रोडए विचित्ते चित्तपत्तण ।
ओहिजल्लिया जल्लकारी य
नीया नन्नवगाविय^४ ॥

१४९—इइ चउरिन्द्रिया एण ण्णंगहा एवमायओ ।
लोगस्स एण देसम्मि ते नञ्चे पक्कित्तिया ॥

१५०—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।

ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१५१—'छच्चेव य'^१ मासा उ उक्कोसेण वियाहिया ।

चउरिन्दियआउठिई^२ अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१५२—सखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं^३ ।

चउरिन्दियकायठिई त कायं तु अमुचओ ॥

१५३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं^४ ।

'विजठमि सए काए'^५ अन्तरेय वियाहिय ॥

१५४—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।

'सठाणादेसओ वावि'^६ विहाणाइं सहस्ससो ॥

पच्चिन्दिय-पदं

१५५—पच्चिन्दिया उ जे जीवा चउव्विहा ते वियाहिया ।

नेरइयतिरिक्खा य मणुया देवा य आहिया ॥

नेरइय-पद

१५६—नेरइया सत्तविहा पुढवीसु सत्तसू भवे ।

रयणाभ सक्कराभा वालुयाभा य आहिया ॥

१५७—पकाभा धूमाभा तमा तमतमा तहा ।

इइ नेरइया एए सत्तहा परिकित्तिया ॥

१५८—लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे उ वियाहिया ।

एत्तो कालविभाग तु वुच्छ तेसि चउव्विहं ॥

१—छच्चेविउ (अ) ।

२—चउरिन्दिया य आउठिई (अ) ।

३—जहन्निया (अ) ।

४—जहन्निया (अ) ।

५—चउरिन्दियजीवाण (उ) ।

६—सठाण भेयओ या वि (अ) ।

- १७९-चउप्पया य परिसप्पा दुविहा थलयरा भवे ।
चउप्पया चउविहा ते मे कित्तयओ मुण ॥
- १८०-एगखुरा दुखुरा चेव गण्डीपयसणपया ।
हयमाड्ढगोणमाड्ढ- गयमाड्ढसीहमाड्ढो ॥
- १८१-भुओरगपरिसप्पा य परिसप्पा दुविहा भवे ।
गोहाई अहिमाई य एक्केक्का णेगहा भवे ॥
- १८२-लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभाग तु वुच्छ तेसि चउव्विह ॥
- १८३-सतड्ढ पप्पणार्डया अपज्जवसिया वि य ।
ठिड्ढ पडुच्च सार्डया सपज्जवसिया वि य ॥
- १८४-पलिओवमाउ^१ तिण्णि उ उबोमेण वियाहिया ।
आउट्ठिई थलयरण अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥
- १८५-पलिओवमाउ तिण्णि उ^२ उबोमेण तु माहिया ।
पुव्वकोडीपुहत्तेण अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥
- १८६-कायट्ठिई थलयरण अन्तर तेमिम भवे ।
कालमणन्तमुओस अन्तोमुहुत्त जहन्नय ॥
- १८७-एएत्ति वण्णओ चेव गधओ रसफानआ ।
सठाणावेत्तओ वावि विहाणाट नहन्नमां ॥
- १८८-चम्मे उ लोमपक्की य तइया नमुग्गपक्किया ।
वियपक्की य वोट्ठव्वा पक्किणो य चउव्विहा ॥

तिरिक्खजोणिय-पद

१७०-पचिन्दियतिरिक्खाओ दुविहा ते वियाहिया ।

सम्मच्छिमतिरिक्खाओ^१गब्भवक्कन्तिया तथा ॥

१७१-दुविहावि ते भवे तिविहा

जलयरा थलयरा तथा ।

खहयरा य बोद्धव्वा

तेसिं भेए सुणेह मे ॥

१७२-मच्छा य कच्छभा य गाहा य मगरा तथा ।

सुसुमारा य बोद्धव्वा पचहा^२ जलयराहिया ॥

१७३-लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।

एत्तो कालविभागं तु वुच्छ तेसिं चउव्विह ॥

१७४-सतइ पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।

ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१७५-एगा य पुव्वकोडीओ उक्कोसेण वियाहिया ।

आउट्टिई जलयराण अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥

१७६-पुव्वकोडीपुहत्त तु उक्कोसेण वियाहिया ।

कायट्टिई जलयराण अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१७७-अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्तं जहन्नय ।

विजढमि सए काए जलयराण तु अन्तर ॥

१७८-'एएसिं वण्णओ चेव गधओ रसफासओ ।

सठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥'^३

१-^० तिरिक्खा य (उ) ।

२-पचविहा (अ) ।

३-X (अ, ऋ) ।

- २१५-उवरिमाउवरिमा चैव इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयन्ता य^१ जयन्ता अपराजिया ॥
- २१६-सव्वट्टसिद्धगा^२ चैव पचहाऽणुत्तरा सुरा ।
इड वेमाणिया देवा^३ णेगहा एवमायओ ॥
- २१७-लोगस्स एगदेसम्मि ते सब्बे परिकित्थिया ।
इत्तो कालविभाग तु वुच्छ तेसिं चउव्विह ॥
- २१८-सतड पप्पाऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिड पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- २१९-साहिय सागर एकक उक्कोसेण ठिई भवे ।
भोमेज्जाण जहन्नेण दसवाससहस्सिया ॥
- २२०-पलिओवममेग तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
वन्तराण जहन्नेण दसवाससहस्सिया ॥
- २२१-पलिओवम एग तु वासलक्खेण साहिय ।
पलिओवमऽट्टभागो जोड्ढेसु जहन्तिया ॥
- २२२-दो चैव सागराड उक्कोसेण वियाहिया^४ ।
सोहम्ममि जहन्नेण एग च पलिओवम ॥
- २२३-सागरा साहिया वृत्ति उक्कोसेण वियाहिया ।
ईसाणम्मि जहन्नेण नाहिय पलिओवम ॥
- २२४-सागराणि य नन्नेव उक्कोसेण ठिई भवे ।
नणकुमारो जहन्नेण वृत्ति उ नागरोवमा ॥

- २०६-असुरा नागसुवण्णा विज्जू अग्गी य आहिया ।
दीवोदहिदिसा वाया थणिया भवणवासिणो ॥
- २०७-पिसायभूय जक्खा य
रक्खसा किन्नरा य किंपुरिसा ।
महोरगा य गन्धव्वा
अट्टविहा वाणमन्तरा ॥
- २०८-चन्दा सूरा य नक्खत्ता गहा तारागणा तहा ।
दिसाविचारिणो^१ चेव पचहा^२ जोइसालया ॥
- २०९-वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगा य बोद्धव्वा कप्पाईया तहेव य ॥
- २१०-कप्पोवगा बारसहा सोहम्मोसाणगा तहा ।
सणकुमारमाहिन्दा बम्भलोगा य लन्तगा ॥
- २११-महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा ।
आरणा अच्चुया चेव इइ कप्पोवगा सुरा ॥
- २१२-कप्पाईया उ^३ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जाऽणुत्तरा चेव गेविज्जा नवविहा तहिं^४ ॥
- २१३-हेट्टिमाहेट्टिमा चेव हेट्टिमामज्झिमा तहा ।
हेट्टिमा उवरिमा चेव मज्झिमाहेट्टिमा तहा ॥
- २१४-मज्झिमामज्झिमा चेव मज्झिमाउवरिमा तहा ।
उवरिमाहेट्टिमा चेव उवरिमामज्झिमा तहा ॥

१-ठिया^० (आ, उ, ऋ) ।

२-पच वेहा (अ) ।

३-य (ऋ) ।

४-तहा (ऋ) ।

- २१५-उवरिमाउवरिमा चैव इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयन्ता य^१ जयन्ता अपराजिया ॥
- २१६-सव्वद्विसिद्धगा^२ चैव पंचहाऽणुत्तरा सुरा ।
इइ वेमाणिया देवा^३ णेगहा एवमायओ ॥
- २१७-लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया ।
इत्तो कालविभाग तु वुच्छ तेसिं चउव्विह ॥
- २१८-सतइ पप्पाऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिईं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- २१९-साहिय सागरं एक्क उक्कोसेण ठिई भवे ।
भोमेज्जाण जहन्नेण दसवाससहस्सिया ॥
- २२०-पलिओवममेग तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
वन्तराण जहन्नेण दसवाससहस्सिया ॥
- २२१-पलिओवम एग तु वासलक्खेण साहिय ।
पलिओवमऽट्ठभागो जोइसेसु जहन्निया ॥
- २२२-दो चैव सागराइ उक्कोसेण वियाहिया^४ ।
सोहम्ममि जहन्नेण एग च पलिओवम ॥
- २२३-सागरा साहिया दुन्नि उक्कोसेण वियाहिया^५ ।
ईसाणम्मि जहन्नेण साहिय पलिओवम ॥
- २२४-सागराणि य सत्तेव उक्कोसेण ठिई भवे ।
सणकुमारे जहन्नेण दुन्नि ऊ सागरोवमा ॥

१-× (अ) ।

२-° सिद्धिगा (अ) ।

३-एए (उ, ऋ) ।

४-ठिई भवे (आ, स) ।

५-ठिई भवे (आ, स) ।

- २२५-साहिया सागरा सत्त उक्कोसेण ठिई भवे ।
 माहिन्दम्मि जहन्नेण साहिया दुन्नि सागरा ॥
- २२६-दस चेव सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 बम्भलोए जहन्नेण सत्त ऊ सागरोवमा ॥
- २२७-चउद्दस^१ सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे ।
 लन्तगम्मि जहन्नेण दस ऊ सागरोवमा ॥
- २२८-सत्तरस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 महासुक्के जहन्नेण चउद्दस सागरोवमा ॥
- २२९-अट्टारस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे ।
 सहस्सारे जहन्नेण सत्तरस सागरोवमा ॥
- २३०-सागरा अउणवीस तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
 आणयम्मि जहन्नेण अट्टारस सागरोवमा ॥
- २३१-वीस तु सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पाणयम्मि जहन्नेण सागरा अउणवीसई ॥
- २३२-सागरा इक्कवीस तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
 आरणम्मि जहन्नेण वीसई सागरोवमा ॥
- २३३-वावीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे ।
 अच्चुयम्मि जहन्नेण सागरा इक्कवीसई ॥
- २३४-तेवीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पढम्मि जहन्नेण वावीस सागरोवमा ॥
- २३५-चउवीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे ।
 विडयम्मि जहन्नेण तेवीस सागरोवमा ॥
- २३६-पणवीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे ।
 तडयम्मि जहन्नेण चउवीस सागरोवमा ॥

- २३७—छव्वीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउत्थम्मि जहन्नेण सागरा पणुवीसई ॥
- २३८—सागरा सत्तवीस तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
पंचमम्मि जहन्नेण सागरा उ छवीसई ॥
- २३९—सागरा अट्टवीस तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
छट्टम्मि जहन्नेण सागरा सत्तवीसई ॥
- २४०—सागरा अउणतीस तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
सत्तमम्मि जहन्नेण सागरा अट्टवीसई ॥
- २४१—तीस तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
अट्टमम्मि जहन्नेण सागरा अउणतीसई ॥
- २४२—सागरा इक्कतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
नवमम्मि जहन्नेण तीसई सागरोवमा ॥
- २४३—तेत्तीस सागराउ उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउसु पि विजयाईसु जहन्नेणेक्कतीसई^१ ॥
- २४४—अजहन्नमणुक्कोसा^२ तेत्तीस सागरोवमा ।
महाविमाण सव्वट्ठे ठिई एसा वियाहिया ॥
- २४५—जा चेव उ^३ आउठिई देवाण तु वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया^४ भवे ॥
- २४६—अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
विजढमि सए काए देवाण हुज्ज अन्तर ॥^५

१—जहन्ना इक्कतीसई (उ, ऋ) ।

२—^० मणुक्कोस (अ, ऋ) ।

३—य (अ) ।

४—जहन्नमु^० (ऋ, षु०) ।

५—इस श्लोक के बाद दो श्लोक और हैं .—

अणतकालमुक्कोस वासपुहत्ता जहन्नग ।

आणयादीण कप्पाण गेविज्जाण तु अतर ॥

सखिज्जसागरुक्कोस वासपुहत्ता जहन्नग ।

अणुत्तराण देवाण अतर तु वियाहिय ॥ (उ) ।

- २४७—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 'सठाणादेसओ वावि'^१ विहाणाइ सहस्सओ ॥
 २४८—ससारत्था य सिद्धा य इइ जीवा वियाहिया ।
 रूचिणो चेव ऽरूवी य अजीवा दुविहा वि य ॥
 २४९—इइ जीवमजीवे य सोच्चा सद्वहिऊण य ।
 सव्वनयाण अणुमए रमेज्जा सजमे मुणी ॥^२

सलेहणा-पद

- २५०—तओ बहूणि वासाणि सामणमणुपालिया ।
 इमेण कमजोगेण अप्पाणं सलिहे मुणी ॥
 २५१—वारसेव उ वासाइ
 संलेहुकोसिया^३ भवे ।
 सवच्छर मज्झिमिया^४
 छम्मासा^५ य जहन्निया^६ ॥
 २५२—पढमे वासचउक्कम्मि विगईनिज्जूहण^७ करे ।
 विइए वासचउक्कम्मि विचित्त तु तवं चरे ॥
 २५३—एगन्तरमायाम कट्टु सवच्छरे दुवे ।
 तओ सवच्छरद्व तु नाइविगिट्ठ तव चरे ॥

१—सठाण भेयओ या वि (अ) ।

२—श्लोक क्रमात् २४८, २४९ के स्थान पर चूर्णि में निम्न दो श्लोक हैं —

जीवमजीवे एते णच्चा सद्वहिऊण य ।

सव्वन्नममत्तमी जएज्जा सजमे विदू ॥

पमत्तंरताज्जाणोवणए काल किच्चा ण सजए ।

निद्धे वा मासए भवति देवे वावि पहडिदए ॥

३—ए लुक्कासतो (वृ० पा०) ।

४—मज्झिमनो (वृ० पा०) मज्झमिया (ऋ) ।

५—छम्मास (उ) ।

६—जहन्ननो (वृ० पा०) ।

७—विगई^० (वृ०), विगई^० (वृ० पा०) ।

- २६५—नाणस्स केवलीणं
 धम्मारियस्स सघसाहूणं ।
 माई अवण्णवाई
 किब्बिसियं भावण कुणइ ॥
- २६६—अणुबद्धरोसपसरो
 तह य निमित्तमि होइ पडिसेवि ।
 एएहि कारणेहि
 आसुरिय भावण कुणइ ॥
- २६७—सत्थग्गहण विसभक्खण च
 जलण च जलप्पवेसो य ।
 अणायारभण्डसेवा
 जम्मणमरणाणि बन्धन्ति ॥
 निक्खेव-पद
- २६८—इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुए ।
 छत्तीस उत्तरज्जाए भवसिद्धीयसमए^१ ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

- २६०—जिणवयणे अणुरत्ता
जिणवयणं जे करेन्ति भावेण ।
अमला असकिलिद्धा
ते होन्ति परित्तससारी ॥
- २६१—बालमरणाणि बहुसो
अकाममरणाणि च्चेव य बहूणि^१।
मरिहन्ति^२ ते वराया
जिणवयण जे न जाणन्ति ॥
- २६२—वहुआगमविन्नाणा
समाहिउप्पायगा^३ य गुणगाही ।
एएण कारणेण
अरिहा आलोयण सोउ ॥
- २६३—कन्दप्पकोक्कुइयाइ^४ तह
सीलसहावहासविगहाहि^५ ।
विम्हावेन्तो य पर
कन्दप्प भावण कुणइ ॥
- २६४—मन्ताजोग^६ काउं
भूईकम्म च जे पउजन्ति ।
सायरसडडिह्हेउ
अभिओग भावण कुणइ ॥

१—उट्टयाणि (इ, उ, ऋ, स) ।

२—मरिहति (उ), मरिहति (ऋ) ।

३—^० मुवायणा (अ) ।४—^० ककुयाइ (वृ०, सु) ।५—^० एम्म^० (वृ०, सु) ।६—मन्त^० (ङ) ।

परिशिष्ट-१
दसवेआलिय शब्दसूची

दसवेआलिय शब्द-सूची

[१—अव्यय और सर्वनाम के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार किया गया है ।

२—रूपान्तरों को एक साथ लिया है । जैसे—लोअ(ग, य), चद(ब्द) ।

३—ताराकित शब्द धातुएँ हैं । उनके रूप उनके नीचे निर्देशाचिह्न (ढैश) के बाद है ।

४—संस्कृत छाया केवल समान शब्दों की ही दी गई है ।]

अ	अउल	७	४३
अ	१६(४)	१	१५
अइउकस	५(२)	४२	६,७
अइकमित्तु	५(२)	११	२
अइकम्म	५(२)	२५	१ चू० सू० १
अइदूर	५(१)	२३	अग
अइभूमि	५(१)	२४	५
अइयार	५(१)	८६	१ चू० १५
अइलाभ	६(३)	५	अगुलिया
अइवत्त *			४ सू० १८
-अइवत्तए	६(२)	१६	अजण
अइवाय *			३ ६
-अइवाएज्जा	४	सू० ११	५(१) ३३
-अइवायावेज्जा	४	सू० ११	अजली
अइवायत *			६(२) १७
-अइवायते	४	सू० ११	अड
अइहील **			८ १५
-अइहीलेज्जा	५(१)	६६	अडय
अईअ	७	८ से १०	४ सू० ६
			अतरा
			५ ४६
			अतलिक्ख
			७ ५३
			अतिय
			८ ४५
			६(१) १२
			अघगवण्हि
			२ ८

१—शब्द के सामने दी हुई पहली संख्या अध्ययन और अध्ययन संख्या के बाद कोष्ठगत संख्या उद्देश्य का द्योतन करती है । वाद की संख्या श्लोक की द्योतक है । 'सू०' सूत्र के लिए प्रयुक्त है । 'चू०' चूलिका का संकेत है ।

अचित्त	५(१)	८१, ८६
-	६	१३
अचित्तमत	४	सू० १३, १५
अचित्त (दे०)	५(१)	१७
	७	४३
अच्चविल	५(१)	७८, ७९
अच्चि	४	सू० २०
	८	८
अच्चिमालि	९(१)	१४
अच्छरणजोय	८	३
अच्छद	२	२
अच्छि	८	२०
अजय	४	१ से ६
अजाइया	५(१)	१८
	६	१३
अजाण	६	९
	८	३१
अजीव	४	१२ से १४
	५(१)	७७
अज्ज (आर्य)	६	५३
अज्ज (अद्य)	१ चू०	९
अज्जपय	१०	२०
अज्जय	७	१८
अज्जव	६	६७
अज्जवभाव	८	३८
अज्जिया	७	१५

अज्जप्परय	१०	१५ --- ६
अज्जयण	४	सू० १-से-३
अज्जमाइयव्व	९(४)	सू० ५
अज्जोयर	५(१)	५५
अट्ट (अर्थ)	३	४, १३-
	४	सू० १७
	५(१)	३०, ४०, ४७,
		४९, ५१, ५३,
		५६, ६५, ६७,
		७८, ९४, ९७
	६	११, १९, ३४
		५२, ५५, ६३
	७	४, ७, ८, १३,
		४०, ४६
	८	४२, ५१
	९(२)	१३
	९(३)	२, ४
	९(४)	सू० ६, ७
	१०	८
अट्ठ (अष्टन्)	६	७
	८	१३, १४
अट्ठम	८	१५
अट्ठया	९(४)	सू० ६
अट्ठारस	१ चू०	सू० १
अट्ठारसम	१ चू०	सू० १
अट्ठावय	४	३

अव	७	३३	अक्खोड*		
अविल	५(१)	६७	-अक्खोडेज्जा	४	सू० १६
अक्कस	७	३	अक्खोडत	४	सू० १६
अकप्प	५(१)	४४	अखडफुडिय	६	६
अकप्पिय	५(१)	२७,४१,४३, ४८,५०,५२, ५४,५८,६०, ६२,६४	अगघण	२	६
	५(२)	१५,१७	अगणि	४	सू० २०
६	४७			८	२,८
५(१)	८०		अगारि	६	५७
५(२)	४,५		अगाह	७	३६
६	६८		अगिद्ध	१०	१६
८	६३		अगुण	५(२)	४४
१ चू०	१३			६(३)	११
७	४५		अगुणप्पेहि	५(२)	४१
६(३)	१०		अगुत्ति	६	५८
१०	१३		अग	५(१)	२
६(२)	२२			६(१)	८,६
५(१)	७		अगवीय	४	सू० ८
१०	१३		अगला	५(२)	६
६(३)	१०			७	२७
१०	११		अगि	६(३)	१
८	२०			१ चू०	१२
६	सू० १ मे ८		अक्कवुविसअ	५(१)	२०
६(१)	सू० १		अक्कवुम	६	२७,३०
			अक्कवु		४१,४४
			अक्कवु	८	२६

दसवेवालय शब्द-सूची

अचित्त	५(१)	८१, ८६
	६	१३
अचित्तमत	४	सू० १३, १५
अचित्त (दे०)	५(१)	१७
	७	४३
अच्चबिल	५(१)	७८, ७९
अच्चि	४	सू० २०
	८	८
अच्चिमालि	९(१)	१४
अच्छणजोय	८	३
अच्छद	२	२
अच्छि	८	२०
अजय	४	१ से ६
अजाइया	५(१)	१८
	६	१३
अजाण	६	९
	८	३१
अजीव	४	१२ से १४
	५(१)	७७
अज्ज (आर्य)	६	५३
अज्ज (अद्य)	१ चू०	९
अज्जपय	१०	२०
अज्जय	७	१८
अज्जव	६	६७
अज्जवभरव	८	३८
अज्जिया	७	१५

अज्जप्परय	१०	१५
अज्जयण	४	सू० १ से ३
अज्जाइयव्व	९(४)	सू० ५
अज्जोयर	५(१)	५५
अट्ट (अर्थ)	३	४, १३
	४	सू० १७
	५(१)	३०, ४०, ४७,
		४९, ५१, ५३,
		५६, ६५, ६७,
		७८, ९४, ९७
	६	११, १९, ३४
		५२, ५५, ६३
	७	४, ७, ८, १३,
		४०, ४६
	८	४२, ५१
	९(२)	१३
	९(३)	२, ४
	९(४) सू०	६, ७
	१०	८
अट्ट (अष्ट)	६	७
	८	१३, १४
अट्ठम	८	१५
अट्ठया	९(४) सू०	६
अट्ठारस	१ चू०	सू० १
अट्ठारसम	१ चू०	सू० १
अट्ठावय	४	३

अट्टिय	५(१)	८४
अट्टियप्प	२	९
अणतनाण	९(१)	११
अणंतहियकामय	९(२)	१६
अणगारिया	४	१८, १९
अणज्ज	१ चू०	१
अणभिज्झिय	१ चू०	१४
अणरुम	८	४२
अणवज्ज	७	३, ४६

अणिस्सिय	७	५७
अणिह	१०	१३
अणु	४ सू०	१३, १५
अणुगय	६	६८
अणुगय	८	२८
अणुग्गह	५(१)	९४
अणुचिट्ठ *		
-अणुचिट्ठई	५(२)	३०
अणुजाण *		
-अणुजाणति	६	१४
अणुत्तर	४	१९, २०
	८	४२
	९(१)	१६, १७
अणुदिसा	६	३३
अणुन्नय	५(१)	१३
अणुन्नविय	५(१)	१९
अणुन्नवेत्तु	५(१)	८३
अणुपाल *		
-अणुपालए	६	४६
-अणुपालेज्जा	८	६०
अणुपासमाण	२ चू०	१३
अणुप्पत्त	३	१५
अणुफाम	६	१८
अणुत्रवि	९(३)	७
अणुमाय	५(२)	४९
	८	२४
अणुमोयणी	७	५४

दसवेआलिय शब्द-सूची

अणुविग्न	५(१)	२,६०
	८	४८
अणुवीड	७	४४,५५
अणुसास *		
-अणुसासयति	६(१)	१३
अणुसासण	६(४)	२
अणुसासिज्जत	६(४)	सू० ४
अणुसोय	२ चू०	२,३
अणुस्सिन्न	५(२)	२१
अणेग	४	सू० ४ से ६
	५(२)	४३
	६(१)	१७
अणोहाइय	१ चू०	सू० १
अतितिण	८	२६
	६(४)	५
अत्त	४	सू० १७
	८	३०
	१०	५, १८
अत्तकम्म	५(२)	३६
अत्तगवेसि	८	५६
अत्तट्टागुरुअ	५(२)	३२
अत्तव	८	४८
अत्तसपग्गहिय	६(४)	सू० ४
अत्थ (अर्थ)	१०	१५
	२ चू०	११
अत्थ (अत्र)	३	१४

अत्थगय	८	२८
अत्थविणिच्छय	८	४३
अत्थसजुत्त	५(२)	४३
अत्थिय	५(१)	७३
अदिट्ठम्म	६(२)	२३
अदिन्न	४	सू० १३
अदिन्नादाण	४	सू० १३
अदीण	५(२)	२६
अदीणवित्ति	६(३)	१०
अट्टु	१ चू०	१८
	२ चू०	१४
अट्टुट्टु	७	५५
अट्टुव	५	१५
	६	२, ६, २३
	८	१२
अट्टुवा	५(१)	७५
	६	६३
	८	१७
अदेत	५(२)	२८
अधुव	८	३४
अनियाण	१०	१३
अनिल	६	३६
	१०	३
अनिव्वाण	५(२)	३८
अनिव्वुड	३	७
	५(२)	१८

दसदेआलिय शब्द-सूची

७

अप्य (अल्प)	४	सू० १३, १५
	५(१)	७४, ६६
	६	१३
	२ चू०	५
अप्यग	६(३)	११
	२ चू०	१२
अप्यगघ	७	४६
अप्यण	६	११
	६(२)	१३
अप्यतेय	१ चू०	१२
अप्यत्तिय (दे०)	५(२)	१२
	८	४७
अप्यभासि	८	२६
अप्यभूय	४	६
अप्यमत्त	८	१६
	६(१)	१७
अप्यय	१	२
	१०	१४
अप्यरय	६(४)	७
अप्यसन्न	६(१)	५, ७, १०
अप्यसुय	६(१)	२
अप्यहिट्ट	५(१)	१३
अप्यिच्छ	८	२५
अप्यिच्छया	६(३)	५
अप्यियकारिणी	६(३)	६
अफासुय	८	२३

अबभचरिय	६	१५
अबोहि	४	२०, २१
	६(१)	५, १०
अबोहिय	६	५६
अबभ	८	६३
	६(१)	१५
अब्भितर	४	१७, १८
अभिकख *		
-अभिकखई	१०	१२
-अभिकखे	१०	१७
अभिकखमाण	६(३)	२
अभिकखि	६(१)	१०
अभिककत	४	सू० ६
अभिकखण	५(१)	१०
	२ चू०	७
अभिगच्छ *		
-अभिगच्छई	४	२१, २२-
	६(२)	२
-अभिगच्छेज्जा	५(१)	१४
-अभिगच्छइ	६(२)	२१
अभिगम		
(अभिगम)	६(३)	१५
अभिगम		
(अभिगम्य)	६(४)	६
अभिगिज्ज	७	१७, २०
अभिघाय	६(३)	८

अलाभ	५(२)	६
	८	२२
अलाय	४ सू०	२०
	८	८
अलोग	४	२२, २३
अलोल	१०	१७
अलोलुअ	६(३)	१०
अल्लीण	८	४०, ४४
अवदिम	१ चू०	३
अवक्कम *		
(अव + क्रम)		
-अवक्कमे	५(१)	८५
अवक्कम *		
(अप + क्रम)		
-अवक्कमेज्जा	६(१)	६
अवक्कमित्ता	५(१)	८१, ८६
	५(२)	११
अवगम	८	६३
अवगय	७	५७
	८	६३
	६(३)	१४
	१०	१६
अवणय	५(१)	१३
अवणी *		
-अवणेज्जा	४ सू०	२३
अवण्णवाय	६(३)	६
अवत्तव्व	७	२, ४३

अवपंगुर *		
-अवपगुरे	५(१)	१८
अवरज्ज *		
-अवरज्जई	६	७
अवररत्त	२ चू०	१२
अवराह	६(२)	१८
अवलविया	५(२)	६
अवलोय *		
-अवलोयए	५(१)	२३
अवह	६	५७
अवाज्ज	३	१२
अवि	१	१
अविक्किय	७	४३
अविणीय	६(२)	३, ५, ७, १०, २१
अविस्सास	६	१२
अविहेडअ	१०	१०
अवे *		
-अवेस्सइ	१ चू०	१६
-अविस्सइ	१ चू०	१६
अवेयइत्ता	१ चू० सू०	१
अव्वक्खित्त	५(१)	२, ६०
अव्वहिय	८	२७
अस *		
-सत्ति	१	३
	६	२३, ६१
-होमो	२	८

-अमि	४	सू० ११ से १६	असण	६	४६,५०
-अत्थि	५(२)	२७		१०	८,६
	७	४३	असत्थपरिणय	५(२)	२३
	६(१)	१०	असब्भवयण	६(२)	८
	१०	७	असावज्ज	५(१)	६२
असइ	१०	सू० १	असासय	१०	२१
असकिल्लिट्ठ	२ चू०	६		१ चू०	१६
असजम	५(१)	२६, ६६	असाहु	७	४८
	६	५१		६(३)	११
	१ चू०	१४	असाहुया	५(२)	३८
असजय	७	४७	असिणाण	६	६२
असथड	७	३३	असुइ	१०	२१
असदिद्ध	७	३	असूइय	५(१)	६८
	८	४८	अस्सिय	५(१)	११
असवद्ध	८	२४	अह	४	सू० ११ से १६
असभत	५(१)	१		५(१)	७७, ६६
असविभागि	६(२)	२२	अहण	१०	६
अससट्ठ	५(१)	३४, ३५	अहम्म	६	१६
अससत्त	५(१)	२३	अहम्मसेवि	१ चू०	१३
	८	३२	अहर	१ चू०	सू० १
असच्चमोसा	७	३	अहागड	१	४
असज्जमाण	२ चू०	१०	अहिंसा	१	१
असण	४	सू० १६		६	८
	५(१)	४७, ४९, ५१, ५३, ५७, ५९, ६१	अहिंकरण	८	५०
			अहिज्जग	८	४९

अहिज्जिउ	४	सू० १ से ३	१८
अहिज्जिता	६(४)	३	१८
अहिट्टु *	-		
-अहिट्टुए	८	६१	६१
	६(४)	२	
-अहिट्टेज्जा	६(४)	सू० ६, ८	१
-अहिट्टिज्जासि	१ चू०	१८	६०, ६६
अहिट्टुग	६	५४, ६२	१५
अहिय (अहित्त)	६(१)	४	६६
अहिय (अविक)	२ चू०	१०	३६, ३७, ३९
अहियगामिणी	८	४७	
अहियास *			२३
-अहियासए	५(२)	६	५६
	८	२६	७१
-अहियासे	८	२७	
अहुणाघोय -	५(१)	७५	२
अहुणोवलित्त	५(१)	२१	१६
अहे	६	३३	१६
अहो	५(१)	६२	१६
	६	२२	७
आ			७
आ	१ चू०	६	७
आइ	६	४६	
	७	७	

आणव *		
-आणवेइ	२ चू०	११
आणा	१०	१
आणुपुव्वी	८	१
आणुलोमिआ	७	५६
आभिओग	६(२)	५,१०
आभोएत्ताण	५(१)	८६
आम	५(१)	७०
	५(२)	२३
आमग	३	७,८
	५(१)	७०
	५(२)	१६, २१, २२,
		२४
	८	१०
आमिया	५(२)	२०
आमुस *		
-आमुसेज्जा	४	सू० १६
-आमुसावेज्जा	४	सू० १६
आमुसत	४	सू० १६
आय	१ चू०	१८
आयड	१ चू०	१
आयक	१ चू०	सू० १
आयय	६(४)	५
आययट्टि	५(२)	३४
आययट्टिय	६(४)	२
आययण	६	१५

आयर *		
-आयरति	६	१५, २१
आयरिय	५(२)	४०, ४५
	८	३३, ६०
	६(१)	४, ५,
		११, १२
		१७
	६(२)	१२, १६
	६(३)	१
आया *		
-आयाए	५(२)	३१
आयाण	५(१)	२६
आयाय	५(१)	८८
आयार	६	५०, ६०
	६(३)	२
	६(४)	१
	६(४)	सू० ७
	२ चू०	४
	७	१३
	८	४६
आयारगोयर	६	२, ४
आयारपणिहि	८	
	८	१
आयारभावतेण	५(२)	४६
आयारमत	६(१)	३
आयारसमाहि	६(४)	सू० ३, ७
	६(४)	५

दसवेआलिय शब्द-सूची

आयाव *

-आयावयाही	२	५
-आयावयति	३	१२
-आयावेज्जा	४	सू० १६
आयावत	४	सू० १६
आयावयट्टु	५(२)	२
आरभ *		
-आरभे	६	३४
आरक्खिय	५(१)	१६
आरहत	६(४)	सू० ७
आराह *		
-आराहेइ	५(२)	३६, ४०, ४५
-आराहए	७	५७
	६(१)	१६
-आराहयइ	६(३)	१
	६(४)	सू० ४
आराहइत्ताण	६(१)	१७
आरुह *		
-आरुहे	५(१)	६७
आलव *		
-आलवे	७	१६, १६, २१, २३, ३५, ४२, ४८, ५३
-आलवेज्ज	७	१७, २०
आलिह *		
-आलिहेज्जा	४	सू० १८

-आलिहावेज्जा	४	सू० १८
आलिहंत	४	सू० १८
आलोइय		
(आलोचित)	५(१)	६१
आलोइय		
(आलोकित)	६(३)	१
आलोअ *		
-आलोए	५(१)	६०, ६६
आलोय	५(१)	१५
	५(१)	६६
आवगा	७	३६, ३७, ३६
आवज्ज *		
-आवज्जेज्जा	४	सू० २३
आवज्जइ	६	५६
आवण	५(१)	७१
आविअ *		
-आवियइ	१	२
आवील *		
-आवीलेज्जा	४	सू० १६
-आवीलावेज्जा	४	सू० १६
आवीलत	४	सू० १६
आवेउं	२	७
आस *		
-आसे	४	७
आस	७	४७
	८	१३
आसइत्तु	६	५४

आसदी	३	५	आहड	५(१)	५५
	६	५३ से ५५		६	४८, ४९
आसण	५(२)	२८		८	२३
	७	२९	आहम्मिय	८	३१
	८	५, १७, ५१	आहर *		
	९(२)	१७	-आहरे	५(१)	२७, ३१, ४२
	९(३)	५		५(२)	३३
	२ चू०	८	-आहारए	१०	३
आसमाण	४	३	आहार	६	२५, ४६
आसय	५(१)	८५	आहारमइय	८	२८
आसव	३	११	आहारत	५(१)	२८
	१०	५	आहियगि	९(१)	११
	४	९		९(३)	१
	२ चू०	३	आहुइ	९(१)	११
आसा	९(३)	६			
आसाअ *					
-आसायए	९(१)	४	इ	१	४
-आसाययई	९(३)	२		३	१४
आसाइत्ताण	५(१)	७७		५(१)	९५, ९६
आसायण	५(१)	७८	इ *		
आसायणा	९(१)	२, ५, ६	-एहि	७	४७
	८	१०	इइ	२	४
आसालय	९	५३	इगाल(अङ्गार)	४	सू० २०
आमोविम	९(१)	५ से ७		८	८
आमु	८	४७	इगाल(आङ्गार)	५(१)	७
आमुरत्त	८	२५	इगिय	९(३)	१

इद	६(१)	१४	इत्थथ	६(४)	७
	१ चू०	२	इत्थी	२	२
इदिय	५(१)	१३, २६, ६६		५(२)	२६
	८	१६, ३५		७	१६, १७, २१
	१०	१५		८	५१, ५३,
	१ चू०	१७			५६, ५७
	२ चू०	१६		६(३)	१२
इच्छ *				१०	१
-इच्छसि	२	७	इत्थीओ	६	५८
-इच्छेज्जा	५(१)	२७, ३५, ३७,	इम	४	सू० ३
		८२, ८७,	इमेरिस	६	५६
		६५, ६६	इरियावहिया	५(१)	८८
	६	४७	इव	६(२)	१२
-इच्छति	६	१०, १७,	इसि	६	४६
		३२, ३७		२ चू०	५
-इच्छे	६(१)	८	इह	४	सू० १
इच्छत	८	३६	इहलोग	८	४३
इच्छा	५(२)	२७		६(२)	१३
इट्टाल(दि०)	५(१)	६५		६(४)	सू० ६, ७
इडिढ	६(२)	६, ६, ११, २२			
	१०	१७			
इति	२	२			
इत्तरिय	१ चू०	सू० १			
इत्थ	३	१४			
	६(४)	सू० ४ से ७	ई	५(१)	४५
	१ चू०	सू० १		८	१०, २१

उ

उ	४	१
उईर *		
-उईरति	६	३८
उउ	६	६८
उछ	८	२३
	१०	१७
उज *		
-उज्जेज्जा	४	सू० २०
	८	८
-उजावेज्जा	४	सू० २०
उजत	४	सू० २०
उडग (दे०)	४	सू० २३
उडुय (दे०)	५(१)	८७
उक्कट्ट	५(१)	३४
उक्का	४	सू० २०
उक्किट्ट	१	१
	४	१६, २०
उक्खिवित्तु	५(१)	८५
उग्गम	५(१)	५६
उच्चार	८	१८
उच्चार-भूमि	८	१७, ५१
उच्चावय	५(१)	१४, ७५
	५(२)	७, २५
उच्छह	६(३)	६

उच्छुखण्ड	३	७
	५(१)	७३
	५(२)	१८
उच्छोलणा	४	२६
उज्जाण	६	१
	७	२६, ३०
उज्जाल *		
-उज्जालेजा	४	सू० २०
-उज्जालावेज्जा	४	सू० २०
उज्जालत	४	सू० २०
उज्जालिया	५(१)	६३
उज्जुदसि	३	११
उज्जुप्पन्न	५(१)	६०
उज्जुमइ	४	२७
उट्ट *		
-उट्टए	५(१)	४०
उट्टिअ	५(१)	४०
उट्ट	६	३३
उट्टिद्वय	१ चू०	१२
उण्ह	७	५१
	८	२७
उत्तम	८	६०
	६(२)	२३
	१ चू०	११
उत्तर	५(२)	३
उत्तरओ	६	३३
उत्तार	२ चू०	३

उत्तिगा	५(१)	३८
	८	११, १५
उद+उल्ल	६	२४
	८	७
उदओल्ल	४	सू० १६
	५(१)	३३
उदग	४	सू० १६
	५(१)	३०, ५८, ७५
	८	११
उदगदोणी	७	२७
उदर	४	सू० २३
उदाहर *		
-उदाहरिस्तामि	८	१
उद्देसिय	३	२
	५(१)	५५
	६	४८, ४९
	८	२३
	१०	४
उन्नय	७	५२
उप्यज्ज *		
-उप्यज्जए	२ चू०	१
उप्यण्ण	५(१)	६६
	५(२)	३
	१ चू०	सू० १
उप्यल	५(२)	१४, १६, १८
उप्यिलाव *		
-उप्यिलावए	६	६१

उप्यिलोन्गा	७	३६
उप्येहि	१ चू०	सू० १
उप्युल्ल	५(१)	२३
उप्यिभद्विया	५(१)	४६
उप्यिभय	४	सू० ६
उप्येडय	६	१७
उप्यभय	४	११
	५(२)	१२
उप्यमीस	५(१)	५७
उप्यर	८	२६
उल्ल	५(१)	२१, ६८
उल्लघिया	५(१)	२२
उवइट्ट	६(३)	२
उवगय	६(१)	११
उवगरण	४	सू० २३
उवघाइणी	७	११, २६, ५४
उवचिट्ट *		
-उवचिट्टएज्जा	६(१)	११
उवचिय	७	२३
उवज्झाय	६(२)	१२
उवट्टाइ	१ चू०	सू० १
उवट्ठिय	४	सू० ११ से १६
	६(२)	५, १०
उवणीय	१ चू०	१५
उवन्नत्थ	५(१)	३६
उवभोग	६(२)	१३

१८

परिशिष्ट-१

उवमा	६(१)	६,८
	१ चू०	११
उवयार	६(२)	२०
उवरअ	८	१२
उववज्भ	६(२)	५,६
उववन्न	५(२)	४७
उववाइय	४	सू० ६
उववाय *		
-उववायए	८	३३
उववेय	६(१)	३
उवसकम *		
-उवसकमेज्ज	५(२)	१३
उवसकमत	५(२)	१०
उवसत	६	६४, ६८
	१०	१०
उवसपज्जित्ताण	४	सू० १७
उवसपया	१ चू०	सू० १
उवसम	८	३८
उवस्सअ	७	२६
उवहण *		
-उवहम्मई	१	४
	७	१३
उवहम *		
-उवहमे	८	४६
उवहि	६	२१

उवहि	६(२)	१८
	१०	१६
	२ चू०	५
उवाय	८	२१
	६(२)	४, २०
	१ चू०	१८
उवे		
-उवोत	६	६८
-उवेइ	१०	२१
	२ चू०	१६
उवेत	१ चू०	१७
उव्वट्टण	३	५
	६	६३
	६(१)	१२
उव्विगग	५(२)	३६
उसिण	६	६२
उसिणोदग	८	६
उस्सक्किया	५(१)	६३
उस्सक्कित्ताण	५(१)	६७
उस्सिचिया	५(१)	६३

ऊ

ऊरु	४	सू० २३
	८	४५

उत्स	५(१)	३३
उत्सद	५(२)	२५
	७	३५
ए		
एक	२ चू०	१०
एकक्य	५(१)	६६
एग	५(१)	३७
	६(१)	३
एगअ	४ सू०	१८ से २३
एग य	५(२)	३१, ३३, ३७
एगत	४ सू०	२३
	५(१)	११, ८१, ८५, ८६
	५(२)	११
एगगचित्त	६(४)	सू० ५
	६(४)	३
एकभत्त	६	२२
एगया	५(१)	६५
एज्जत	६(२)	४
एय	१	३
एयारिस	५(१)	६६
एरिस	६	५
	७	४३
	२ चू०	१५

एला	५(१)	२२
एलमूयया	५(२)	४८
एव	४ सू०	१०
एव	१	३
एस *		
-ऐसेज्जा	५(२)	२६
एसकाल	७	७
एसणा	१	३
	५(२)	३६, ५०
एसणिय	५(१)	३६, ३८
	६	२३
एहत	६(२)	५ से ७
		६ से ११
ओ		
ओगास	५(१)	१६
ओगगह	५(१)	१८
	६	१३
	८	५
ओघ	६(२)	२३
ओमज्जण	१ चू०	सू० १
ओमाण	२ चू०	६
ओयारिया	५(१)	६३
ओवघाइय	८	२१
ओवत्तिया	५(१)	६३

ओववाइय	४	सू० ६
ओवाय	५(१)	४
ओवायव	६(३)	३
ओसक्कया	५(१)	६३
ओसन्न	१ चू०	७
ओसन्नदिट्टाहड	२ चू०	६
ओसहि	७	३४
ओसा (दे०)	४	सू० १६
ओह	६(२)	२३
ओहाण	१ चू०	सू० १
ओहारिणी	७	५४
	६(३)	६
ओहाविअ	१ चू०	२

क

क	१	४
कड	२ चू०	१४
कटय	५(१)	८४
	६(३)	६, ७
कत	२	३
कद	३	७
	५(१)	७०
कम	६	५०
कमपाय	६	५०
कय	६	६३

कक्कस	८	२६
कज्ज	७	३६
कट्टु	८	३१
	१ चू०	१४
कट्ट	४	सू० १८
	५(१)	६५, ८४
	६(२)	३
	१०	४
कड	४	२०, २१
	५(१)	५६, ६१
	१ चू०	सू० १
	२ चू०	१२
कडुय	४	१ से ६
	५(१)	६७
कण	४	सू० २१
	८	२०, २६, ५५
	६(३)	८
कणसर	६(३)	६
कत्थइ	५(२)	८
कन्ना	६(३)	१३
कप्प *		
-कप्पइ	५(१)	२८, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४,

दसवेआलिय शब्द-सूची

-कप्पइ	५(१)	७२, ७४, ७६	कया	७	५१
	५(२)	१५, १७, २०	कयाइ	६	६३
-कप्पई	६	५२, ५६, ५६	कर *		
कप्य	५(१)	४४	-काहिसि	२	६
कप्पिय	५(१)	२७	-काही	४	१०
	६	४७	-कुज्जा	५(१)	६४
कब्बड	१ चू०	५		५(२)	६
कम *				८	३३, ५२
-कमाही	२	५		६(१)	५
कम	५(१)	१, ४		६(२)	१७
कमिय	२	५		२ चू०	८, ६, १३
कम्म	३	१५	-करेति	६	६७
	४	१ से ६		६(१)	२
	४	२०, २१, २४,	-करिस्सामि	७	६
		२५, २८	-करिस्सई	७	६
	६	६५	-करेहि	७	४७
	८	१२, ३३, ६३	-करे	८	१६
	६(२)	२३	कर	५(१)	१६, २६
	१ चू०	सू० १	करत	४	सू० १० से १६, १८ से २३
कम्महेउअ	७	४२	करग	४	सू० १६
कय (कृत)	५(१)	३४	करण	६	२६, २६, ४०, ४३
कय (क्रय)	७	४६		८	४
	१०	१६	करेत्ता	५(१)	६३
कयर	४	सू० २	करेत्ताण	३	१४
	८	१४			
	६(४)	सू० २			

कलह	५(१)	१२
	२ चू०	५
कलुण	६(२)	८
कलुस	४	२०, २१
कल्लाण	४	११
	५(२)	४३
कल्लाणभागि	६(१)	१३
कवाड	५(१)	१८
	५(२)	६
कविट्ट	५(२)	२३
कसाय	५(१)	६७
	७	५७
	८	३६
	६(३)	१४
	१०	६
कसिण	८	३६, ६३
कह	१०	१०
कह	२	१
	४	७, १२
	६	२, २३, २४
कहा	५(२)	८
	८	५२
	१०	१०
कहि	२ चू०	८
नाउम्मग्गकारि	२ चू०	७
काग	७	१२

काम	२	१, ५
	६	१८
	८	५७
	१ चू०	सू० १
	२ चू०	१०
कामय	५(२)	३५
काय	४	सू० १० से १६, १८ से २३
	६	२६, २६, ४०, ४३
	८	३, ७, ६, २६, ४४
	६(१)	१२
	६(२)	१८
	१०	५, ७, १४
	१ चू०	१८
	२ चू०	१४
कायतिज्ज	७	३८
कायव्व	६	६
	८	१
कारण	२	७
	५(२)	३
	६(२)	१३, १५
	१ चू०	१
कारिय	६	६४
काल	५(१)	१

दसवेआलिय शब्द-सूची

काल	५(२)	४ से ६	कित्ति	६(२)	२
	७	८		६(४)	सू० ६, ७
	६(२)	२०	किमिच्छय	३	३
	२ चू०	१२	किलाम		
कालमासिणी	५(१)	४०	-किलामेइ	१	२
कालालोण	३	८	-किलामेसि	५(२)	५
कासव	४	सू० १ से ३	किर्लिच (दे०)	४	सू० १८
कासवनालिआ	५(२)	२१	किलेस	१ चू०	१५
किं	३	१४	किविण	५(२)	१०
	४	१०	कीड	४	सू० ६, २३
	५(२)	४७	कीय	६	४८, ४९
	६	६४		८	२३
	७	५	कीय	६(१)	१
	६(१)	५	कीयगड	३	२
	६(२)	१६		५(१)	५५
	२ चू०	१२, १३	कीरमाण	७	४०
किंचि	६	३४	कील	५(१)	६७
	७	२९	कुडमोय (दे०)	६	५०
किच्च	७	३६	कुथु	४	सू० ६, २३
	२ चू०	१२	कुकुडब	१ चू०	७
किच्चा	५(२)	४७	कुक्कुड	८	५३
	६(२)	१६	कुक्कुस	५(१)	३४
	६(३)	८	कुतत्ति	१ चू०	७
किच्चाण	८	४५	कुप्प *		
कित्त *			-कुप्पे	५(२)	२७, ३०
-कित्तडस्स	५(२)	४३		१०	१०

-कुप्पई	६(२)	४	केवल	६(१)	१४
-कुप्पेज्ज	८	४७	केवलि	४	२२, २३
	१०	१८		२ चू०	१
-कुप्पेज्जा	५(२)	२८	कोट्टअ	५(१)	२१, २२
कुमारिया	५(१)	४२	कोट्टग	५(१)	२०, ८२
कुमुय	५(२)	१४, १६, १८	कोमुई	६(१)	१५
कुम्म	८	४०	कोल	४	सू० २२
कुम्मास	५(१)	६८		५(२)	२१
कुल	२	६, ८	कोलचुण्ण	५(१)	७१
	५(१)	१४, १७, २४	कोविय	६(२)	२३
	५(२)	२५	कोह	४	सू० १२
	२ चू०	८		६	११
कुलओ	८	५३		७	५४
कुविय	६(१)	७, ९		८	३६ से ३९
कुव्व *				६(१)	१
-कुव्वइ	५(२)	४२, ४६		६(३)	१२
	६(४)	६			
-कुव्वई	५(२)	३५			
-कुव्वेज्जा	८	२४			
कुनग्ग	१ चू०	सू० १	ख	६(१)	१५
कुगट	६(३)	१५	खति	४	२७
कुमीट	६	५८	खघ	६(२)	१
	१०	१८	खघवीय	४	सू० ८
	१ चू०	१२	खभ	७	२७
	१०	२०	खण	५(१)	६३
	७	८५			

गड	६(३)	१५	गणि	६	१
	१०	२१		६(१)	१५
	१ चू०	सू० १		१ चू०	६
	१ चू०	१३, १४, २३	गन्धिय	७	३५
गडिआ	७	२८	गमण	५(१)	८६
गतु	७	२६, ३०	गय	५(१)	१२
गघ	२	२		६(२)	५, ६
	३	२		१ चू०	सू० १
गघण	२	८	गरह *		
गभीर	५(१)	६६	-गरहति	५(२)	४०
गभीर विजय	६	५५	गरहिय	६	१२
गच्छ *			गरिह *		
-गच्छड	४	२४, २५	-गरिहसि	५(२)	५
	८	४३	-गरिहामि	४	सू० १० से १६, सू० १८ से २२
-गच्छई	५(२)	३२	गल	१ चू०	६
-गच्छति	५(१)	१००	गव	७	२५
-गच्छामो	७	६	गवेस *		
-गच्छावेज्जा	४	सू० २२	-गवेसए	५(१)	१
-गच्छे	१०	१		५(२)	३
	१ चू०	१८	गहण	८	११
	८	सू० २२	गहिय	५(१)	६०
	५(?)	८, ६, २४, ६६	गहेऊण	५(१)	८५
	८	२५	गा	७	२४
	८	सू० २०	गाढ	७	४२
	६(१)	१५			

दसवेर्वालिय शब्द-सूची

गाम	४	सू० १३, १५
	५(१)	२
	२ चू०	८
गाम कटअ	१०	११
गाय	३	५
	६	६३
गायाभग	३	६
गारव	६(२)	२२
गावी (दे०)	५(१)	१२
गिण्ह *		
-गिण्हहाहि	६(३)	११
गिद्ध	८	२३
	१०	१७
गिम्ह	३	१२
गिरा	७	३, ५, ५२, ५४, ५५
	६(१)	१२
गिरि	६(१)	६
	१ चू०	१७
गिलित्ता	१ चू०	६
गिह	७	२७
गिहतर निसेज्जा	३	५
गिहत्य	५(२)	४०, ४५
गिहवई	५(१)	१६
गिहवास	१ चू०	सू० १
गिहि	३	६

गिहि	६	१८
	८	५०
	६(२)	६३
	६(३)	१२
	१ चू०	सू० १
	२ चू०	६
गिहिजोग	८	२१
	१०	६
गिहिभायण	६	५२
गिहिमत्त	३	३
गिहिसथव	८	५२
गुज्भग	६(२)	१०, ११
गुज्भाणुचरिअ	७	५३
गुण	४	२७
	५(२)	४१
	६	६, ६७
	७	४६, ५६
	८	६०
	६(१)	३, १७
	६(३)	११, १४
	६(४)	४
	१०	१२
	२ चू०	४, १०
गुणओ	२ चू०	१०
गुणप्येहि	५(२)	४४
गुणव	५(२)	५०

३०

चित *

-चितए	५(१)	६१
-चिते	५(१)	६४
चिक्कण	६	६५
चिट्ट *		
-चिट्ट	७	४७
	८	१३
-चिट्टड	४	१०
-चिट्टे	४	७
	८	१६
-चिट्टेज्ज	५(२)	११
-चिट्टेज्जा	८	सू० २२
	५(१)	२६
	५(२)	६
	८	११, ४५
-चिट्टावेज्जा	८	सू० २२
चिट्ट त	८	सू० २२
चिट्टमाण	८	२
	५(१)	२७
चिट्टिणाण	५(२)	८
चिन	१०	१
	१ चू०	सू० १
चिनभिनि	=	५४
चिनमन	८	सू० ४ मे ८,
		१३, १५
	६	१३

चियत्त (दि०)

चिरं	१ चू०	१६
चिरकाल	१ चू०	सू० १
चिराघोय	५(१)	७६
	१ चू०	सू० १
चुय	१ चू०	३, १३
चुल्लपिउ	७	१८
चूलिया	२ चू०	१
चे	१ चू०	१६
चेय	५(१)	२, ६०
	६	६६
	१ चू०	१४
चेल	४	सू० २१
चोइय	६	२, ४
चोर	७	१२
छ		
छ	३	११
	४	सू० ६, १०
	७	५६
	१०	५
छद्र	५(१)	३७
	६(२)	२०
	६(३)	१
छदिय	१०	६

दसवेआलिय शब्द-सूची

छज्जीवणिया	४	सू० १ से ३
	४	२८
छट्ठ	४	सू० ६, १६, १७
छड्डु *		
-छड्डुए	५(१)	८५
	५(२)	१
छड्डुण	६	५१
छण *		
-छतति	६	५१
छत्त	३	४
छमा	१ चू०	२
छविइय	७	३४
छाय	६(२)	७
छारिय	५(१)	७
छिद *		
-छिदावए	१०	३
-छिदाहि	२	५
-छिदे	१०	३
-छिदेज्जा	८	१०
छिदित्तु	१०	२१
छिन्न	४	सू० २२
	५(१)	७०
	७	४२
छिवाडी (दे०)	५(२)	२०
छूड	१ चू०	५
छेय	४	१०, ११

ज

ज	१	१
जअ	७	५०
जइ (यदि)	२	६
	५(१)	६४, ६५, ६८
	५(२)	२
	६	११, १३
	८	२१
	१ चू०	६
जइ (यति)	२ चू०	६
जओ	७	११
	२ चू०	६
जतलट्टि	७	२८
जतु	१ चू०	१५, १६
जकख	६(२)	१०, ११
जग (दे०)	५(१)	६८
जग(जगत्)	८	१२
जगनिस्सिय	८	२६
जढ	६	६०
जण *		
-जणति	६(३)	८
जण	२ चू०	२
जत्त	६(३)	१३
जत्य	५(१)	२०, २१
	५(२)	४८
	७	६

जल्थ	२ चू०	१४	जल्लिय (दि०)	८	१८
जल्न	१ चू०	१२	जवण	६(३)	४
जय (यत्)	४	८, २८	जस	५(२)	३६
	५(१)	६, ८१, ८६,	जससि	६	६८
		६६	जसोकामि	२	७
	५(२)	७		५(२)	३५
	६	३८	जह	२ चू०	११
	७	५६	जहक्कम	५(१)	८६, ६५
	८	१६	जहा	१	२, ४
जय (यत्) "				२	१०, ११
-जए	८	१६		४	सू० ३, ८, ६
-जएज्जा	२ चू०	६		५(१)	६०
जया	४	१४ से २५		५(२)	३६
	१ चू०	१ से ७		६	६
जग	६	५६		८	१, ५३, ५६,
	८	३५			५६
जगज्य	४	सू० ६		६(१)	११, १४, १५
जर	६(२)	१२		६(२)	३
	१ चू०	सू० १		६(४)	सू० ३ से ७
जर *				१०	२
जरायाग	१०	०		१ चू०	८
जरे	१०	०	जहाभाग	५(१)	१३
जराज्या	६	३३	जहारिह	७	१७, २०
जरा	६(१)	११	जहि	५(१)	३५
जरा	०	६	जहोवड्ड	६(३)	२
जरा	६(१)	६	जाड	७	२१
				१०	१६

दसवेआलिय गब्द-सूची

जाइ	८	३०
	६(४)	७
	१०	१४, २१
जाइत्ता	८	५
जाइपह	६(१)	४
	१०	१४
	२ चू०	१६
जाइमत	७	३१
जागरमाण	४	सू० १८ से २३
जाण *		
-जाणइ	४	११, २२, २३
-जाणई	४	११
-जाणति	५(२)	४०, ४५
-जाणतु	५(२)	३४
-जाणेज्ज	५(१)	४७, ७६
-जाणेज्जा	७	८
जाण (जानत्)	६	६
	८	३१
जाण (यान)	७	२६
जाणिऊण	५(१)	६६
जाणित्ता	५(१)	२४
	८	१६
जाणित्तु	८	१३
जाणिय	१०	१८
	१ चू०	११
जाणिया	५(२)	२४
	७	५६

जाय	२	६
	४	सू० २२, २३
जाय *		
-जाएज्जा	५(२)	२६
जायतेय	६	३२
जाला	४	सू० २०
जाव	७	२१
	८	३५
जावत	६	६
जावज्जीव	४	सू० १० से १६, १८ से २३
	६	२८, ३१, ३५, ३६, ४२, ४५, ६२
जिइदिय	३	१३
	८	३२, ४४, ६३
	६(३)	८, १३
	६(४)	१
	२ चू०	१५
जिण	४	२२, २३
	५(१)	६२
जिण *		
-जिणे	८	३८
जिणत	४	२७
जिणदेसिय	१ चू०	६

ट		
टाल (दि०)	७	३२
ठ		
ठविय	५(१)	६५
ठाण	५(१)	१६
	६	७, ८, ५८
	६(२)	१७
	६(४)	सू० १ से ३
	१ चू०	सू० १
	१ चू०	३
ठावय *		
-ठावयई	६(४)	३
ठिअ	६(४)	३
	१०	२०
ठियप्य	६	४६
	१०	१७, २१
ड		
डह		
-डेहेज्जा	६(१)	७
डह	५(२)	२६
	६(१)	२ से ४
	६(३)	३, १२
ण		
ण	५(२)	२

ण	५(२)	२६
णु	७	५१
णो	६	६
	७	६
त्		
त (तत्)	१	२
त (त्वत्)	२	८, ९
तउज्जुय	५(२)	७
तओ	४	सू० २३
	४	१०
	५(१)	६६
	५(२)	३, १३
	६(२)	१
	६(३)	७
तजहा	४	सू० ३
तच्च	४	सू० १३
तज्जणा	१०	११
तज्जायससट्टु	२	६
तण	४	सू० ८
	५(१)	८४
	८	२, १०
	१०	४
तणग	५(२)	१६
तणहा	५(१)	७८, ७९

दसवेआलिय शब्द सूची

तसिय	४	सू० ६	तारा	६(१)	१५
तह	२	चू० ८	तारिस	५(१)	२८, २९, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४, ७२, ७४, ७६
तहप्पगार	४	सू० २३			
तहा	५(१)	३०, ४७, ४९, ५१, ५३, ५६, ६१, ७१, ७५			
	५(२)	२१			
	६	६			
	७	३२, ३८, ५७		५(२)	१५, १७, २०, ३६ से ४१, ४४, ४५
	८	११, ५६			
	९(२)	१८			
	१ चू०	११		६	३६, ६६
तहाभूय	८	७		८	६३
तहामुत्ति	७	५		१ चू०	१७
तहाविह	५(१)	७१, ८४	तारिसग	४	२६, २७
	१ चू०	१४	तालउड	८	५६
तहि	२ चू०	११	तालियट	४	सू० २१
तहेव	५(१)	७१		६	३७
ता	५(२)	३४		८	६
	१ चू०	१५	ताव	७	२१
ताड	३	१, १५		८	३५
	६	२०, ३६, ६६, ६८	ति	६	५६
	८	६२	तिदुय	५(१)	७३
ताग्गिय	५(१)	६४	तिक्ख	६	३२
ताग्मि	७	३८	तिगुत्त	३	११
				६(१)	१४

दसवेआलिय शब्द-सूची

थेर	६(४) सू०	१ से ३
थेरअ	१ चू०	६
थोव	५(१)	७८
	८	२६
व		
दड	४ सू०	१०
	६(२)	४, ८
दडग	४ सू०	२३
दत	१	५
	३	१३
	४	६
	५(१)	६
	६	३
	८	२६
	६(४)	५
दतपहोयणा	३	३
दतवण (दि०)	३	६
दतसोहण	६	१३
दसण	४	२१, २२
	५(१)	७६
	६	१
	७	४६
दग	५(१)	४५
	८	२, ६

दगभवण	५(१)	१५
दगमट्टिआ	५(१)	३, २६
दच्छ [*]		
-दच्छसि	२	६
दट्टव्व	२ चू०	४
दट्टूण	५(१)	२१
	५(२)	३१, ४६
	६	२५
	८	५४
दमअ (दि०)	७	१४
दमइत्ता	५(१)	१३
दम्म	७	२४
दया	४	१०
	६(१)	१३
दयाहिगारि	८	१३
दरिसणिय	७	३१
दलय [*]		
-इलाहि	५(१)	७८
दवदव	५(१)	१७
दव्वो	५(१)	३०, ३५, ३६
	६	७
दस		
दह ^५		
-दहे	६	३३
दा ^५		
-दए	५(१)	६१, ६३
	५(२)	११, १६

-दावण	५(१)	८६,८०	दिया	६	२८
-देज्ज	५(२)	२७	दिव्व	८	सू० १८
-देज्जा	५(१)	८६		४	१६,१७
दाइय	५(२)	३१		६(२)	४
दाटा	१ चू०	१२	दिम्म	७	५३
दाण	१	३		१०	१२
	५(१)	८७	दीमय	५(२)	२८
दायग	५(२)	१२	दीह	६	६४
दायव्व	२ चू०	२		७	३१
द्वार (द्वार)	५(१)	१५	दु	४	१४
	५(२)	६		५(१)	३७,३८, १००
द्वार (दार)	१ चू०	८		७	१
दारग	५(१)	२२,४२	दुक्कर	३	१४
दारुण	८	२६	दुवव	२	५
	६(२)	१४		३	१३
दावय	५(१)	४६,६७		८	२७
दाहिणओ	६	३३		१०	११
दिज्जमाण	५(१)	३५ से ३८		१ चू०	सू० १
दिट्ठ	५(१)	६६		१ चू०	११,१६
	६	६,५१	दुक्खसह	८	६३
	८	२०,२१,४८	दुग्गअ	६(२)	१६
दिट्ठि	८	५४	दुग्गइ	५(१)	११
दिट्ठिवाय	८	४६		६	२८,३१,३५, ३६,४२,४५
दित्त	५(१)	१२			
दिन्न	५(२)	१३	दुग्घ	५(२)	१
दिया	४	सू० १८ से २३			

दसवेआलिय गब्द-सूची

दुच्चर	६	५
दुच्चिण	१ चू० सू० १	
दुज्झ	७	२४
दुट्ट	७	५५, ५६
दुत्तोसअ	५(२)	३२
दुन्नामघेज्ज	१ चू०	१३
दुप्पउत्त	२ चू०	१४
दुप्पजीवि	१ चू० सू० १	
दुप्पडिक्कत	१ चू० सू० १	
दुप्पडिलेहग	५(१)	२०
	६	५५
दुवुद्धि	६(२)	१६
दुम	१	२
	६(२)	१
दुमपुप्फिया	१	
दुम्मड	५(२)	३६
दुम्मणिय	६(३)	८
दुरहिद्विय	६	४, १५
दुरासय	२	६
	६	३२
दुस्त	६(३)	७
दुरत्तर	६	६५
	६(२)	२३
दुरुद्धर	६(३)	७
दुरुहमाण	५(१)	६८
दुल्लह	४	२८

दुल्लभ	१ चू० सू० १	
दुल्लह	४	२६
	५(१)	१००
दुव्वाई	६(२)	३
दुव्विहिय	१ चू०	१२
दुस्समा	१ चू० सू० १	
दुस्सह	३,	१४
दुस्सेज्जा	८	२७
दुह	६(२)	५, ७, १०
	१ चू०	१४, १५
	२ चू०	१६
दुहअ	७	१४
दुहओ	६(२)	२१
दुरओ	५(१)	१२, १६
	६	५८
देतिय	५(१)	२८, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४, ७२, ७४, ७६ ५(२) १५, १७, २०
देव	१	१
	४	सू० ६
	७	५०, ५२
	६(२)	१०, ११
	६(४)	७

देवकिन्विस	५(२)	४६, ४७
देवत्त	५(२)	४७
देवया	१ चू०	३
देवलोय (ग)	३	१४
	१ चू०	१०
देस	२ चू०	८
देसिय	५(१)	६२
	६	८
देह	५(१)	६२
	६	२१
	८	२७
	१ चू०	१७
देहपलोयणा	३	३
देहवास	१०	२१
दोच्च	४	सू० १२
दोस	२	५
	५(१)	११, ६६, ६६
	५(२)	३५, ३७
	६	१६, २५, २८, ३१, ३५, ३६, ४२, ४५
	७	५६
	८	३५
	६(३)	११
दोसन्त	७	१३

घ		
घम्म	१	१
	२	१०
	४	१६, २०
	८	३५
	६(२)	२
	६(३)	८
	१०	२०
	१ चू०	सू० १
	१ चू०	१, २, १२, १३
	२ चू०	१
घम्मकामी	६(१)	१६
घम्मजीवि	६	४६
घम्मज्जाण	१०	१६
घम्मट्टकहा	६	
घम्मत्थकाम	६	३
घम्मपणत्ति	४	
	४	सू० १ से ३
घम्मपय	६(१)	१२
घम्मसासण	१ चू०	१७
घर	८	४६
धाय (दे०)	७	५१
घार *		
-घारए	५(१)	१६
-घारति	६	१६

धारण	३	४
	५(१)	६२
चिह्नमअ	२ चू०	१५
घिरत्यु	२	७
घीर	३	११
	७	४,७,४७
	२ चू०	१४
घुण *		
-घुणइ	४	२०,२१
	६ (४)	४
	१०	७
-घुणंति	६	६७
घुणिय	६(३)	१५
घुन्नमल	७	५७
घुयमोह	३	१३
घुव	८	१७,४२
घुवजोग	१०	१०
घुवजोगि	१०	६
घुवसीलया	८	४०
धूमकेउ	२	६
धूया	७	१५
धूवगेति	३	६
धेगु	७	२५
घोव	५(१)	७६
घोयग	६	५१

न	१	२
नई	७	३८
नगल	७	२८
नक्खत्त	८	५०
	६(१)	१५
नगर	४ सू०	१३,१५
	५(१)	२
	२ चू०	८
नगिण	६	६४
नच्चा	५(१)	१६,२६,७७
	७	३६,४०
	८	३४,४६,५६
	६(१)	२,४
	६(३)	१
नत्तुणिय	७	१८
नत्तुणिया	७	१५
नमस *		
-नमसे	६(१)	११
-नमंसंति	१	१
	६(२)	१५
नमोक्कार	५(१)	६३
नर	५(२)	४६
	७	५,५३
	८	५६
	६(२)	४,७,६,२२

नर	६(३)	६	नायपुत्त
	१ चू०	१८	नारी
नरय	५(२)	४८	
	१ चू०	६	
नव	६	६७	नालिआ
नह	७	५२	नालीया
नहग्नि	६	६४	नावा
ना			नास
-नाहिङ्ग		२,१३	ना
नाग			ना

निक्खिन्न *

-निक्खिन्ने	५(१)	८५
निगामसाइ	४	२६
निग्गथ	३	१, १०, ११
	६	४, १०, १६, २५, ४६, ५२, ५४
निग्गथत्त	६	७
निग्गहण	३	११
निच्च	५(२)	३६
	६	२२
	८	३, ११, १६, ५३
	९(१)	१२
	९(३)	४
	९(४)	१, ४
	१०	१, १२, २१
	२ चू०	१५
निच्चिञ्चय	१ चू०	१७
निज्जरट्टिय	९(४)	४
निज्जरा	९(४)	सू० ६
निज्जायत्तवरयञ्ज	१०	६
निज्झा *		
-निज्झाए	८	५४, ५७
निट्ठाण	८	२२
निट्ठिय	७	४०

निण्हव *

-निण्हवे	८	३२
निट्ठा	८	४१
निट्ठिस*		
-निट्ठिसे	७	१०
	८	२२
निट्ठेसवत्ति	९(२)	१५, २३
निट्ठणे	७	५७
निप्पुलाअ	१०	१६
निमत *		
-निमताए	५(१)	३७, ३८
-निमतेज्ज	५(१)	६५
निमित्त	८	५०
नियच्छ, **		
-नियच्छति	९(२)	१४
नियट्ट * ^३		
-नियट्टेज्ज	५(१)	२३
नियडि (निकृति)	५(२)	३७
नियडि		
(निकृति) (मत्)	९(२)	३
नियत्तण	९(३)	३
नियनिय	५(२)	१३
नियम	२ चू०	४
नियाग	३	२
	६	८८
निग्ग (य)	१ चू०	१०, ११

नर	६(३)	६	नायपुत्र	५(२)	४६
	१ चू०	१८	नारी	२	६
नरय	५(२)	४८		८	५२, ५४, ५५
	१ चू०	६		६(२)	७, ६
नव	६	६७	नालिआ	५(२)	१८
नह	७	५२	नालीया	३	४
नहसि	६	६४	नावा	७	२७, ३८
ना *			नास *		
-नाहिइ	४	१०, १२, १३	-नासेइ	८	३७
नाग	२	१०	नास	६(१)	५
	६(१)	४	नासण	८	३७
	१ चू०	८, १२	नासा	८	५५
नाण	४	१०, २१, २२	निउण	६	८
	६	१		६(३)	१५
	७	४६		२ चू०	१०
	६(४)	३	निद *		
	१०	७	-निदामि	४	सू० १० से १६ १८ से २२
नाणा	६(१)	११	निकाय	४	सू० ६, १०
नाणापिड	१	५	निकखत	८	६०
नाभि	७	२८	निकखम *		
नाम	४	सू० १ से ३	-निकखमे	५(२)	४
नाम *			निकखम्म	१०	१, २०
-नामेइ	७	४	निकिखत्त	५(१)	५६, ६१
नामधिज्ज	७	१७, २०	निकिखवित्ताण	५(१)	३०
नाय	६(२)	२१	निकिखवित्तु	५(१)	४२

निक्खिन्न *

-निक्खिन्ने	५(१)	८५
निगामसाइ	४	२६
निगय	३	१,१०,११
	६	४,१०,१६,
		२५,४६,
		५२,५४
निगयत्त	६	७
निगहण	३	११
निन्न	५(२)	३६
	६	२२
	८	३,११,१६.
		५३
	६(१)	१२
	६(३)	४
	६(४)	१,४
	१०	१,१२,२१
	२ चू०	१५
निच्चिय	१ चू०	१७
निज्जरट्टिय	६(४)	४
निज्जरा	६(४)	सू० ६
निज्जायत्तवरयअ	१०	६
निज्जा *		
-निज्जाए	८	५४,५७
निट्टाण	८	२२
निट्टिय	७	४०

निणह्व *

-निणह्वे	८	३२
निट्टा	८	४१
निट्टिस*		
-निट्टिसे	७	१०
	८	२२
निट्टेसवत्ति	६(२)	१५,२३
निट्टणे	७	५७
निप्पुलाअ	१०	१६
निमत *		
-निमतए	५(१)	३७,३८
-निमतेज्ज	५(१)	६५
निमित्त	८	५०
नियच्छ *		
-नियच्छति	६(२)	१४
नियट्ट *		
-नियट्टेज्ज	५(१)	२३
नियडि (निकृति) ५(२)		३७
नियडि		
(निकृति) (मत्) ६(२)		३
नियत्तण	६(३)	३
नियत्तिय	५(२)	१३
नियम	२ चू०	४
नियाग	३	२
	६	४८
निरअ (य)	१ चू०	१०,११

निरासय	६(४)	४
निरुभित्ता	४	२३, २४
निरुक्केस	१ चू०	सू० १
निवार *		
-निवारए	२	१
निवेस *		
-निवेसयति	६(३)	१३
निव्वडिय	६	२४
निव्वाण	५(२)	३२
निव्वाव *		
-निव्वावए	८	८
-निव्वावेज्जा	४	सू० २०
निव्वावत	४	सू० २०
निव्वाविया	५(१)	६३
निव्विद *		
-निव्विदए	४	१६, १७
निव्विगइ	२ चू०	७
निसंत	६(१)	१४
निसन्न	५(१)	४०
निसिर *		
-निसिर	८	४८
निसीअ *		
-निसीए	८	४४
-निसीएज्ज	५(२)	८
-निसीएज्जा	४	सू० २२
	५(१)	४०

-निसीएज्जा	८	५
-निसीयावेज्जा	४	सू० २२
निसीयत	४	सू० २२
निसीहिया	५(२)	२
नित्तेज्जा	३	५
	६	५४, ५६, ५६
निस्सकिय	५(१)	५६, ७६
	७	१०
निस्सर *		
-निस्सरई	२	४
निस्सिचिया	५(१)	६३
निस्सिय	१०	४
निस्सेणि	५(१)	६७
निस्सेस	६(२)	२
निहा *		
-निहावए	१०	८
-निहे	१०	८
निहुअ	२	८
	६	३
निहुअप्प	६	२
निहुइदिय	१०	१०
नीम	५(२)	२१
नीय	५(२)	२५
	६(२)	१७
नीयदुवार	५(१)	२०
नीरय	३	१४
	४	२४, २५

नीलिआ	७	३४
नीसा (दे०)	५(१)	४५
नीसेस	५(१)	८८
नु	२	१
	६(१)	५
नेउणिय	६(२)	१३
नेरइय	४	सू० ६
	१ चू०	१५
नो	२	४

प

पइरिक्कया	२ चू०	५
पइट्टिय	४	सू० २२
पईव	६	३४
पउज *		
-पउजे	८	४०
	६(१)	१२
	६(३)	२,३
पवत्त	५(१)	६७
पउम	५(२)	१४,१६
पउमग	६	६३
पओज	६(२)	१६
पओय	७	५२
पक	१ चू०	७
पच	३	११

पच	४	सू० १७
	६(३)	१४
	१०	५
पचम	४	सू० १५
पचिदिय	४	सू० ६
	७	२१
पजलि	६(१)	१२
पंडग	७	१२
पडिय	२	११
	५(२)	२६,२७
	६(४)	१
	१ चू०	११
पत	५(२)	३४
पसुखार	३	८
पकुव्व *		
-पकुव्वई	५(२)	३२
	६(२)	१६
पक्क	७	३२,३४,४२
पक्कम *		
पक्कमति	३	१३
पक्खओ	८	४५
पक्खद *		
-पक्खदे	२	६
पक्खलत्त	५(१)	५
पक्खि	७	२२

पक्खोड *			पट्टिय	२ चू०	२
-पक्खोडावेज्जा	४	सू० १६	पड *		
-पक्खोडेज्जा	४	सू० १६	-पडइ	६	६५
पक्खोडत	४	सू० १६	पडत	५(१)	८
पगइ	६(१)	३	पडागा	१ चू०	सू० १
पगड	५(१)	४७, ४६, ५१,	पडिआय *		
		५३	-पडियायई	१०	१
	८	५१	पडिकुट्ट	५(१)	१७
	१ चू०	सू० १	पडिकोह	६	५७
पच्चग	८	५७	पडिक्कत	४	सू० ६
पच्चक्खओ	६(३)	६	पडिक्कम *		
पच्चक्ख	५(२)	२८	-पडिक्कमामि	४	सू० १० से १६, सू० १८ से २२
पच्चक्ख *			-पडिक्कमे	५(१)	८१, ६१
-पच्चक्खामि	४	सू० ११		५(२)	४
पच्चुपन्न	७	८ से १०	पडिगाह *		
पच्छा	५(१)	६१	-पडिगाहेज्जा	५(१)	२७, ५६, ७७
	६(२)	१		६	४७
	१ चू०	२ से ८		८	६
पच्छाकम्म	५(१)	३५	पडिगह	४	सू० २३
	६	५२		५(२)	१
पज्जय	७	१८	पडिग्घाअ	६	५७
पज्जव	१ चू०	१६	पडिच्छ, *		
पज्जालिया	५(१)	६३	-पडिच्छेज्जा	५(१)	३६, ३८
पज्जिया	७	१५	पडिच्छन्न	५(१)	८३
पज्जुवास *			पडिच्छिन्न	८	५५
-पज्जुवासेज्जा	८	४३			
पट्टवेत्ताण	५(१)	६३			

दसवेआलिय शब्द-सूची

पडिच्छिय	५(१)	८०	पडियाइयण	१ चू०	सू० १
पडिजागर *			पडिलेह *		
-पडिजागरेज्जा	६(३)	१	-पडिलेहए	५(१)	३७
पडिण	६	३३	-पडिलेहसि	५(२)	५
पडिणीय	६(३)	६	-पडिलेहेज्जा	५(१)	२५
पडिनिस्सिअ	४	सू० २२		८	१७
पडिन्नव *			पडिलेहिता	८	१८
-पडिन्नवेज्जा	२ चू०	८	पडिलेहिताण	५(१)	८२
पडिपुच्छिऊण	५(१)	७६		६(२)	२०
पडिपुण्ण	६(४)	५	पडिलेहिय	४	सू० २३
पडिपुन्न	८	४८	पडिलेहिया	५(१)	८१, ८६, ८७
पडिवघ	२ चू०	१३	पडिवज्ज *		
पडिवुद्धजीवि	२ चू०	१५	-पडिवज्जई	४	२३, २४
पडिवोह *			पडिवज्जमाण	६(१)	२
-पडिवोहएज्जा	६(१)	८	पडिवज्जिया	१०	१२
पडिमा	१०	१२	पडिसलीण	३	१२
पडिय	१ चू०	२	पडिसमाहर *		
पडियरिय	६(३)	१५	-पडिसमाहरे	८	५४
पडियाडक्ख *			पडिसाहर *		
-पडियाडक्खे	५(१)	२८, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४, ७२, ७४, ७६	-पडिसाहरेज्जा	२ चू०	१४
			पडिसेह *		
			-पडिसेहए	६(२)	४
			पडिसेहिय	५(२)	१३
			पडिसोय	२ चू०	२, ३
			पडिहयपच्चक्खाय-		
	५(२)	१५, १७, २०	पावकम्म	४	१८ से २३

पढम	४	सू० ११
	४	१०
	६	८
पणग	५(१)	५६
	८	११, १५
पणास *		
-पणासेइ	८	३७
पणिय	७	४५
पणियट्टु	७	३७, ४६
पणिहाय	८	४४
पणीय	५(२)	४२
पणीयरस	८	५६
पणुल्ल *		
-पणुल्लेज्जा	५(१)	१८
पत्त (पत्र)	४	सू० २१
	६	३७
	८	६
	६(२)	१
पत्त (प्राप्त)	६(२)	६, ६, ११
पत्तेय	१०	१८
	१ चू०	सू० १
पत्थ *		
-पत्थाए	५(२)	२३
	६	६०
	८	१०, २८
पन्नत्त	६(४)	सू० १ से ३

पन्नत्ति	८	४६
पन्नव	७	१ से ३, १३, १४, २४, २६, २६, ३०, ३६, ४४, ४७
पबन्ध *		
-पबधेज्जा	५(२)	८
पबभट्टु	१ चू०	४
पभव	६(२)	१
पभास *		
-पभासई	६(१)	१४
पमज्जित्तु	८	५
पमज्जिय	४	सू० २३
पमाण	२ चू०	११
पमाय	६	१५
	६(१)	१
पमेइल	७	२२
पय	८	३१, ५०
	६(१)	११
	६(४)	सू० ४ से ७
	६(४)	६
	१ चू०	सू० १
पय *		
-पाए	१०	४
-पयावए	१०	४
-पयावेज्जा	४	सू० १६

पयअ	२ चू०	७
पयग	४	सू० ६, २३
पयत्तछिन्न	७	४२
पयत्तपक्क	७	४२
पयत्तलट्ट	७	४२
पयल *		
-पयलेति	१ चू०	१७
पयाय	७	३१
पयाव	६	३४
पयावत	४	सू० १६
पर	५(१)	४
	६	११, १४, ३७
	७	१३, ४०, ५४,
		५७
	८	४७, ६१
	९(१)	५
	९(२)	१३
	९(४)	सू० ५
	१०	८, १८, २०
	२ चू०	११, १३
परक्कम *		
-परक्कमे	५(१)	६, २४
	५(२)	७
-परक्कमेज्जा	८	४०
परक्कम	७ चू०	४
परक्कम्म	८	३२

परगघ	७	४३
परघर	५(२)	२७
परम	६	५
	९(२)	२
परमगसूर	९(३)	८
परम दुक्कचर	६	५
परमाहम्मिय	४	सू० ६
परम्ममुह	९(३)	९
परलोग	९(४)	सू० ६, ७
परागार	८	१६
परिकिन्न	१ चू०	७
परिकवभासि	७	५७
परिगय	९(२)	८
परिगिज्ज	८	३३
	९(३)	२
परिगेण्ह *		
-परिगेण्हेज्जा	४	सू० १५
परिगेण्हत	४	सू० १५
परिगगह	४	सू० १५
	६	२०
परिगगह *		
-परिगगहे	६	२१
परिज्जुण्ण	९(२)	८
परिट्ठप्प	५(१)	८१, ८६
परिट्ठप्प *		
-परिट्ठवेज्जा	५(१)	८१

-परिट्टावेज्ज	८	१८
परिणय	५(१)	७७
परिणाम	८	५८
परिनिव्वुड	३	१५
परितप्प *		
-परितप्पइ	१ चू०	२ से ८
परिदेव *		
-परिदेवएज्जा	६(३)	४
परिन्नाय	३	११
परिब्भट्ट	१ चू०	२
परिभव *		
-परिभवे	८	३०
परिफासिय	५(१)	७२
परिभस्स *		
-परिभस्सइ	६	५०
परिभोत्तुय	५(१)	८२
परिमिय	८	३४
परियाय	१ चू०	सू० १
	१ चू०	६ से ११
परियायजेट्ट	६(३)	३
परियायट्टाण	८	६०
परियाव	६(२)	१४
परिवज्ज #		
-परिवज्जए	५(१)	४, १२, १६, १७, २०, २१, २५, २६, ७०

-परिवज्जए	५(२)	१६, २१, २२, २४
	६	५८
	७	५५
	१०	६
परिवज्जत	५(१)	२६
परिवज्जय	७	५६
परिवुड	६(१)	१५
परिवुड्ढ	७	२३
परिव्वयत	२	४
परिसखाय	७	१
परिसह	३	१३
	४	२७
परिसा	४	सू० १८ से २३
परिसाड *		
-परिसाडेज्ज	५(१)	२८
परिहर *		
-परिहरति	६	१६
परिहा *		
-परिहरति	६	३८
परीणाम	८	५६
पलव	५(१)	७०
पलाइय	४	सू० ६
पलिओवम	१ चू०	१५
पलियकय	३	५
	६	५३ से ५५

दसवेआलिय शब्द-सूची

पलीण (प्रलीन) ङ		४०
पलोअ *		
-पलोएज्जा	५(१)	२३
पवक्ख *		
-पवक्खामि	२ चू०	१
पवड *		
-पवडेज्जा	५(१)	६८
पवडत	५(१)	५, ८
पवड्ढ *		
-पवड्ढति	६(२)	१२
पवडट्माण	८	३६
पवयण	५(२)	१२
पवाल	५(२)	१६
पविट्ठ	५(१)	१६
	५(२)	८
	६	५६
पवियक्खण	२	११
पविस *		
-पविने	५(१)	१७, २२
	५(२)	११
पविमिक्खा	५(१)	८८
पविमिन्नु	८	१६
पवील *		
-पवीलावेज्जा	४	सू० १६
-पवीनेज्जा	४	सू० १६
पवीरन	८	सू० १६

पवुच्च *		
-पवुच्चई	४	सू० ६
पवेइय	४	सू० १ से ३
पवेय *		
-पवेयए	१०	२०
पव्वइय	४	१८, १९
	६	१८
	६(३)	५२
	१ चू०	सू० १
पव्वय	७	२६, ३०
	६(१)	८
पसत	१०	१०
पससण	७	५५
पसज्ज	१ चू०	१४
पसढ	५(१)	७२
पसत्थ	२ चू०	५
पसन्न	६	६८
पसव *		
-पसवई	५(२)	३५
पसाय	६(१)	१०
पसारिय	४	सू० ६
पसाहा	६(२)	१
पसु	७	२२
	८	५१
पसूय	७	३५

पस्स *

पाण (पान)

६०,६२,६४,

-पस्सइ ५(२) ३७,४३

७५,८६

पहाण ४ २७

५(२) ३,१०,१३,

पहार ६(१) ८

१५,१७,२८,

१० ११

३३

पहारगाढ ७ ४२

६ ४६,५०

पहीण ३ १३

८ १६

पहोइ ४ २६

६(३) ५

पाइम ७ २२

२ चू० ६,८

पाईण ६ ३३

पाणक (ग) ५(१)

४७,४६,५१,

पाण (प्राण) ४ सू० ६,११

५३,५७,५६,

४ १ से ६

६१

५(१) ३,५,२०,

१० ८,६

२६

पाणहा ३ ४

५(२) ७

पाणाइवाय ४ सू० ११

६ ८,१०,२३,

पाणिपेज्जा ७ ३८

२४,२७,३०,

पामिच्च ५(१) ५५

४१,४४,५५,

पाय (पाद) ३ ४

५७,६१

४ सू० १८,२३

७ २१

५(१) ७,६८

८ २,१२,१५

८ ४४,५५

पाण (पान) ४ सू० १६

६(१) ५,१०

५(१) १,२७,३१,

६(२) १७

३६,४१ से

१० १५

४४,४८,५०,

पाय (पात्र) ६ १६,३८,४७

५२,५४,५८,

८ १७

पायखज्ज	७	३२
पायव	६(२)	१२
पारत्त	८	४३
पारेत्ता	५(१)	६३
पाव	४	७ से ९, १५, १६
	५(२)	३२, ३५
	६	६७
	७	५, ११
	८	३६
	१०	१८
	१ चू० सू०	१
	२ चू०	१०
पाव *		
-पावई	६(१)	१७
पावग (य)		
(पापक)	४	१ से ६, १०, ११
	८	२२
	६(४)	४
	१०	७
पावग (पावक)	६	३२
	६(१)	६, ७
पावार	५(१)	१८
पान *		
-पानड	२ चू०	१३

-पासे	२ चू०	१४
-पासेज्ज	८	१२
-दीसति	६(२)	५ से ७
पास	४	९
पासवण	८	१८
पासाय	५(१)	६७
	७	२७
पाहन्न	६(३)	५
पिअ *		
-पिए	१०	२
-पियावए	१०	२
पिउस्सिया	७	१५
पिंड	६	४७
पिण्डपाय	५(१)	८७
पिंडेसणा	५	
पिज्जेमाण	५(१)	४२
पिट्टु	५(१)	३४
	५(२)	२२
पिट्टुओ	८	४५
पिट्टिमस	८	४६
पिण्णाग	५(२)	२२
पिय	२	३
पियाल	५(२)	२४
पिव	५(१)	८
	५(२)	३६, ३७
पिव	८	५४

पिवासा	८	२७
	६(२)	८
	१ चू०	१६
पिवीलिया	४	सू० ६,२३
पिसुण	६(२)	२२
पिहिय	४	६
	५(१)	१८,४५
पिहुक्ज्ज	७	३४
पिहुज्जण	१ चू०	१३
पिहुण (दे०)	४	सू० २१
पिहुणहत्थ (दे०)	४	सू० २१
पीइ	८	३७
पीढ	५(१)	६७
पीढग (य)	४	सू० २३
	५(१)	४५
	६	५४
	७	२८
पीण *		
-पीणेइ	१	२
पीणिय	७	२३
पील *		
-पीलेइ	८	३५
पीला	५(१)	१०
पुछ *		
-पुछे	८	७
-पुछेज्ज	८	१४

पुगल	४	सू० २१
	५(१)	७३
पुच्छ *		
-पुच्छेज्जा	५(१)	५६
-पुच्छति	६	२
पुज्ज	६(३)	१ से ६ ८ से १४
पुड	८	६३
पुट्ठ (पृष्ट)	८	२२
पुट्ठ (स्पृष्ट)	७	५
पुढविकाइय	४	सू० ३
पुढविकाय	६	२६ से २८
पुढविजीव	५(१)	६८
पुढवी	४	सू० ४,१८
	८	२,४
	१०	२,४,१३
पुढो	४	सू० ४ से ८
पुण	४	सू० ६
पुणभव	८	३६
पुण्ण (पुण्य)	४	१५,१६
	५(१)	४६
	१०	१८
	१ चू०	सू० १
पुण्ण (पूर्ण)	७	३८
पुन्न	२ चू०	१
पुत्त	७	१८
	१ चू०	७

दसवेआलिय शब्द-सूची

पुष्प	१	२ से ४
	५(१)	२१, ५७
	५(२)	१४, १६
	८	१५
	६(२)	१
पुम	७	२१
	६(३)	१२
पुरओ	५(१)	३
	८	४५
पुरक्कार	१ चू०	सू० १
पुगत्य	८	२८
पुगण	६(४)	४
	१०	७
पुगिस	५(२)	२६
	७	१६, २०
पुगिसकारिया	५(२)	६
पुगिनोत्तम	२	११
पुरेकड	६	६७
	७	५७
	८	६२
	६(३)	१५
पुरेकम्म	५(१)	३२
	६	५३
पुन	१०	१६
पुन्य	३	१५
पुन्यउत्त	५(२)	३

पुव्वरत्त	२ चू०	१२
पुव्वि	५(१)	६१
	१ चू०	सू० १
पूअ *		
-पूययामि	६(१)	१३
-पूयति	५(२)	४५
	६(२)	१५
पूइअ	५(२)	४३
पूइकम्म	५(१)	५५
पूइम	१ चू०	४
पूई	५(१)	७८, ७९
	५(२)	२२
पूय	५(१)	७१
पूयण	१०	१७
	२ चू०	६
पूयणट्टि	५(२)	३५
पेच्छ *		
-पेच्छइ	८	२०
पेम	८	२६, ५८
पेह *		
-पेहेइ	६(४)	२
पेहमाण	५(१)	३
पेहा	२	४
पेहाए	७	२६, ३०
	८	१३
पेहिय	८	५७

५८

परिशिष्ट-१

पोगल	८	६,५८,५६
पोय	८	५३
	१ चू०	सू० १
पोयय	४	सू० ६
पोरबीय	४	सू० ८

फ

फरुस	५(२)	२६
	७	११
फल	३	७
	४	१ से ६
	५(२)	२४,४७
	७	३२,३३
	८	१०
	९(१)	१
	९(२)	१

फलग ४ सू० २३

५(१) ६७

फलिह ५(२) ६

७ २७

फाणिय ५(१) ७१

६ १७

फाम ८ २६

फाम *

-फासे	४	१६,२०
	१०	५
फासुय	५(१)	१६,८२,६६
	८	१८
फुम * (दि०)		
-फुमावेज्जा	४	सू० २१
-फुमेज्जा	४	सू० २१
फुमत	४	सू० २१

व

वध	४	१५,१६
	६(२)	१४
	१ चू०	सू० १
वध *		
-वधइ	६	६५
-वधई	४	१ से ६
वधण	१०	२१
	१ चू०	७
वभचेर	५(१)	६
	६	५७,५८
	६(१)	१३
वभयारि	५(१)	६
	८	५३,५५
वद्ध	१ चू०	७
वण्य	७	१८

बलाहय	७	५२
बहिद्धा	२	४
बहु	४	सू० ६, १३
बहुअट्टिय	५(१)	७३
बहुज्जिभय		
वम्मिय	५(१)	७८
बहुकटय	५(१)	७३
बहुनिव्वट्टिम	७	३३
बहुवाहड	७	३६
बहुल	६	३६, ६६
	१ चू०	सू० १
	२ चू०	४
बहुवित्थडोदगा	७	३६
बहुविह	८	१८, १५
बहुमभय	७	३३, ३५
बहुमम	७	३७
बहुमलिआ	७	३६
बहुन्नुय	८	४३
	१ चू०	६
भाय	८	सू० ११
भा	६	७
	१ चू०	१
बाहि	८	सू० २१
	८	१७, १८
	८	६, ३०

बाहु	४	सू० २३
	१ चू०	सू० १
विडु	१ चू०	सू० १
विड	६	१७
विल्ल	५(१)	७३
विहेलग	५(२)	२८
वीय (वीज)	३	७
	४	सू० २२
	५(१)	३, १७, २१,
		२६, २६, ५७
	५(२)	२४
	६	२४
	८	१०, ११, १५
	१०	३
वीय (द्वितीय)	८	३१
	२ चू०	११
वीयरुह	८	सू० ८
बुद्ध	१	५
	५(२)	५०
	६	२१, २२, ३६,
		५४, ६६
	७	२, ५६
बुद्धवयण	१०	१, ६
बुद्धि	८	३०
	६(१)	३, १४, १६
बुद्धिम	१ चू०	१८

६०

परिशिष्ट-१

बू ^३

-बूया ६ ११
७ १७, २०, २३,
२५

बेइदिय ४ सू० ६

बोधव्व ५(१) ३४

बोहि ५(२) ४८

१ चू० १४

अ

भग ४ सू० २१

भत (भ्रान्त) ४ सू० ६

भत (भदन्त) ४ सू० १० से १६,
१८ से २३

भक्ख *

-भक्खे ६(१) ७, ९

भक्खर ८ ५४

भगव ४ सू० १ से ३

६(४) सू० १

भगवत ६(४) सू० १ से ३

भज्जिम ७ ३४

भज्जिय ५(२) २०

भट्ट ७ १६

भट्टा ७ १६

भट्ट १ चू० १२

भत्त

१

३

५(१)

१, ४१, ४३,

४४, ४८, ५०,

५२, ५४, ५८,

६०, ६२, ६४,

८६

५(२)

३, ७, १०,

१३, १५, १७,

२८

६(३)

५

२ चू०

६

भद्दग

५(२)

३३

८

२२

भमर

१

२, ४

भय *

-भएज्ज

८

५१

भय

४

सू० १२

६

११

७

५४

८

२७, ५३

१०

११, १२

भव *

-भवति

१

५

भवत

६

२

८

१

भविस्ताण

४

१८, १६

दसवेआलिय गब्द-सूची

भस्स *			भासा	७	११, २६, ५६
-भस्सई	६	७		८	४७, ४८
भाइणेज्ज	७	१८		९(३)	९
भाइणेज्जा	७	१५	भासिय	५(२)	४९
भाअ *				६	२५
-भायए	१०	१२		२ चू०	१
भायण	५(१)	३२, ३५, ३६, ९६	भासुर	९(३)	१५
भारह	९(१)	१४	भिद *		
भाव	२	९	-भिदावेज्जा	४	सू० १८
	७	१३	-भिद	८	४
	२ चू०	८		९(१)	९
भाव *			-भिदेज्ज	९(१)	९
-भावए	९(३)	१०	-भिदेज्जा	४	सू० १८
भावतेण	५(२)	४६	भिदत	४	सू० १८
भावमघअ	९(४)	५	भिव्वा	५(१)	१, ६९
भावियप्प	९(३)	१०		५(२)	५०
	१ चू०	९	मिक्खु	४	सू० १८ से २३
भाम	९(१)	३		५(१)	६६, ८७
भाम *				५(२)	४ से ६, २५, ३६, ३८, ५०
भामेज्ज	७	१, २		६	६१, ६५
भामत	८	७		८	१, २०
भाममाण	८	९		९(१)	१५
	५(१)	१४		९(२)	१६
	८	४६		१०	१ से २१
भामा	९	१, २, ७,		२ चू०	६, ११

भिक्षुणी	४	सू० १८ से २३	भूमिभाग	५(१)	२५
भित्ति	४	सू० १८	भूय	४	१ से ६, ९
	८	४		५(१)	५
भित्तिमूल	५(१)	८२		६	३, ५, ३४,
भिलुगा (दि०)	६	६१			५१
भीम	६	४		७	११, २६
भुज *				८	१२, १३, ५०
-भुजति	२	२		१ चू०	सू० १
	६	२५, ५२	भूयस्त्व	७	३३
-भुजावेज्जा	४	सू० १६	भेतु	६(१)	८
-भुजे	५(२)	१	भेयाययणवज्जि	६	१५
	१०	४, ६	भेरव	१०	११, १२
-भुजेज्ज	५(१)	८३, ६६, ६७	भेसज	८	५०
-भुजेज्जा	४	सू० १६	भो	६(१)	१२
	५(१)	६६		१ चू०	सू० १
	८	२३	भोग	२	११
भुजत	४	सू० १६		८	३४
	४	७, ८		१ चू०	सू० १
	६	५०		१ चू०	१, १४, १६
भुजमाण	८	५	भोच्चा	५(२)	३३
	५(१)	३७, ३८, ८४		१०	६
भुजित्तु	१ चू०	१४	भोच्चाण	५(२)	२
भुज्ज	१ चू०	सू० १	भोत्तु	२	६
भुज्जमाण	५(१)	३६		५(१)	८७
भुत्त	५(१)	३६	भोय	२	३
भूमि	५(१)	२४		८	१६, १७
	८	५२			

भोयण	५(१)	२७, २८, ३१, ३६, ४२, ६८
	५(२)	२६, ३३
	६	२२
	८	१६, २३, ५६
भोयणजाय	५(१)	७४
भोयराय	२	८

ञ

मड	५(१)	७६
	६(२)	२२
	२ ञ०	१
मडअ (दे०)	७	२८
मगल	१	१
मच	५(१)	६७
	६	५३
मन	८	५०
	६(१)	६१
मय	५(१)	६८
	५(२)	२४
म	५(१)	२
	६(१)	२ से ४
मगदतिया (दि०)	५(२)	१४, १६
मग	५(१)	६
	२ ञ०	११

मच्छ	१ ञ०	६
मज्ज *		
-मज्जइ	६ (४)	२
-मज्जेज्जा	८	३०
मज्जग	५(२)	३६
मज्जप्पमाय	५(२)	४२
मज्झ	७	५५
	६(१)	१४, १५
	१ ञ०	सू० १
	१ ञ०	१५
मट्टिया	५(१)	३३
मड	७	४१
मण	१	१
	२	४
	४	सू० १० से १६, सू० १८ से २३
	५(२)	२३
	६	२६, २६, ४०, ४३
	८	३, १०, १६, २८
	६(१)	१२
	१०	७
	१ ञ०	१५
मणुण	८	५८

मणुय	४	सू० ६
	७	५०
	१ चू०	सू० १
मणुस्स	७	२२
	१ चू०	सू० १
मणोसिला	५(१)	३३
मत्त (मत्त)	१०	१६
मत्त (अमत्त)	६	५१
मत्थयत्थ	४	२५, २६
मद्दव	८	३८
मन्न #		
-मन्नति	६	३६, ६६
-मन्नेज्ज	१०	५
ममत्त	२ चू०	८
ममाइय	६	२१
ममाय *		
-ममायति	६	४८
मय	६(४)	२
	१०	१६
मया	६(१)	१
मग्ग	२	७
	६(४)	७
	१०	१४, २१
मरणत	५(२)	३६, ४१, ४४
मग्गिज्जउ	६	१०
मरु	८	६२
	६(३)	१५

मल्ल	३	२
मसाण	१०	१२
मह	५(१)	६६
	६	१६
	१०	२०
	१ चू०	१०
महग्घ	७	४६
महप्प	८	३३
महब्भय	६(३)	७
	१०	१४
महल्ल	७	२६, ३०
महल्लग (य)	५(२)	२६
	७	२५
	६(३)	१२
महव्वय	४	सू० ११ से १५, १७
	१०	५
महाकाय	७	२३
महागर	६(१)	१६
महाफल	८	२७
महायस	६(२)	६, ६, ११
महायारकहा	६	
महालय	७	३१
महावाय	५(१)	८
महावीर	४	सू० १ से ३
महावीर	६	८

महि	५(१)	३
	६	२४
महिङ्किय	६(४)	७
महिया	४ सू०	१६
	५(१)	८
महु	५(१)	६७
महुकार	१	५
महुर	५(१)	६७
महेसि	३	१, १०, १३
	५(१)	६६
	६	२०, ४८
	८	२
	६(१)	१६
	१ चू०	१०
मा	२	८
	५(२)	३१
	७	५०, ५१
माउल	७	१८
माउल्ला	५(२)	२३
माउन्निया	७	१५
माण	५(२)	३५
	८	३६ से ३६
	६(४)	२
मान	६(३)	१३
मानरि	६(३)	१३
मानर	७	५२, ५४

माणस	१ चू०	१८
	२ चू०	१४
माणिम	१ चू०	५
माणिय	६(३)	१३
माणुस	४ सू०	१४
	४	१६, १७
मामग	५(१)	१७
माया (मात्रा)	५(२)	१
माया (माया)	८	३६ से ३६
मायण्ण	५(२)	२६
मायामोसा	५(२)	३८, ४६
	८	४६
मायासल्ल	५(२)	३५
मारुय	८	२
मार [†]		
-मारै	६(१)	७
मालोहड	५(१)	६६
माहण	५(२)	१०
	६	२
मिअ	६(२)	३
मिच्छा	६(१)	२
मित्त	८	३७
मिय	५(१)	२४
	७	५५
	८	१६, ४८
मियासण	८	२६

मिहोकहा	८	४१
मीसजाय	५(१)	५५
मुअ *		
-मुच्चड	२ चू०	१६
-मुच्चई	६(४)	७
मुच *		
-मुच	७	४५
	६(३)	११
मुड	४	१८, १९
	६	६४
मुक्क	६(१)	१५
मुच्छा	६	२०
मुच्छय	१ चू०	१
मुणालिया	५(२)	१८
मुणि	५(१)	२, ११, १३, २४, ८८, ६३
	५(२)	६, ३४
	६	१५
	७	४०, ४१, ५५
	८	७, ८, ४४, ४६
	६(३)	१४, १५
	१०	१३, २०
	२ चू०	६
मुत्त (मुक्त्त)	१	३
मुत्त (मत्त)	५(१)	१६

मुम्पुर	४	सू० २०
मुसा	४	सू० १२
	६	११
	७	२, ५
मुसावाय	४	सू० १२
	६	१२
मुह	४	सू० २१
मुहाजीवि	५(१)	६६, १००
	८	२४
मुहादाइ	५(१)	१००
मुहालद्ध	५(१)	६६
मुहुत्तदुक्ख	६(३)	७
मूल	३	७
	५(१)	७०
	६	१६
	८	१०, ३६
	६(२)	१, २
मूलगतिया	५(२)	२३
मूलय (ग)	३	७
	५(२)	२३
मूलवीय	४	सू० ८
मेत्त	६	१३
मेरग	५(२)	३६
मेह	७	५२
मेहावि	५(१)	८३
	५(२)	४२, ४६

मेहावि	८	१४
	६(१)	१७
	६(३)	१४
मेहुण	४	सू० १४
	६	१६, ६४
मोकव	४	१५, १६
	५(१)	६२
	६(१)	५, ७, ६, १०
	६(२)	२, २२
	१ चू०	सू० १
मोसा	६	१२
मोह	१ चू०	८

य

य	१	०
याण *		
-याणई	८	१२
याणाइ	८	१२
	५(२)	४७

र

रवका	१ चू०	
रगिपयव्य	० चू०	१६
रन्	१ चू०	८

रण	४	सू० १३, १५
रम *		
-रमतो	१ चू०	६
-रमे	८	४१
-रमेज्ज	१ चू०	११
-रमेज्जा	६(१)	१०
रय (रत)	१	३, ५
	४	२७
	५(२)	२६
	६	१, १७, ६७
	७	४६
	८	४१, ६२
	९(३)	५, १४
	६(४)	३ से ५
	१०	६, १२, १४,
		१६
	१ चू०	१० ११
रय (रजस्)	४	२०, २१
	५(१)	७२
	६(३)	१५
रयहरण	८	सू० २३
रत	१	२
	५(२)	३६, ४२
	६(२)	१
	१०	१७

दमवेआलिय शब्द-सूची

लजा	६(१)	१३	लह *		
लजासम	६	२२	-लहइ	८	४२
लद्ध	२	३	-लहई	७	५५
	५(१)	६७	लहुत्त	५(२)	१२
	२ चू०	२	लहुभूयविहारी	३	१०
लद्धु	५(२)	३१, ३३	लहुस्सग	१ चू०	मू० १
	८	१, २६	लाइम	७	३४
	६(३)	४	लाभ	८	२२, ३०
लद्धूण	५(२)	६७		१०	१६
लभ *			लाभमट्टिअ	५(१)	६४
-लभामो	१	४	लुद्ध	५(२)	३२
-लभिही	५(२)	४८	लूस +		
-लभेज्जा	२ चू०	१०	-लूसए	५(१)	६८
लभित्ता	१०	८, ६	लूसिए	१०	१३
लभित्तु	८	२८	लूहवित्ति	५(२)	३४
लयण	८	५१		८	२५
ल्या	८	मू० ८	लेलु	४	मू० १८
रुलिडदिय	६(२)	१८		८	४
रव *			लेव	५(१)	४५
रवे	७	१०, ४८		५(२)	१
	८	५२	लोअ (ग)	१	३
	७	१७		४	२२, २३, २५
	८	२१		६	५, ८, १२, १५
	५(१)	६७		७	४८, ५७
	८	५७		६(२)	७
				२ चू०	३, १५

लोढ (दे०)	५(१)	४५	वद *		
लोण	३	८	-वदे	५(२)	३०
	५(१)	३३	-वदेज्जा	६(२)	१७
	६	१७	वंदण	२ चू०	६
लोद्ध	६	६३	वदमाण	५(२)	२६
लोभ	५(२)	३१	वदिअ	५(२)	३०
	६	१८	वदिम	१ चू०	३
	८	३६ से ३६	वक्क	८	३
लोह	४	सू० १२		६(३)	२
	७	५४	वक्ककर	६(३)	३
			वक्कसुद्धि	७	
			वच्च	५(१)	१६, २५
			वच्छग	५(१)	२२
व			वज्ज*		
व (इव)	१	३	-वज्जए	५(१)	११, ५५
	८	६१ से ६३		५(२)	४२
	६(३)	१३		६	२८, ३१, ३५, ३६, ४२, ४५
	१ चू०	३, ४, ७, १२, १७		७	४१
व (वा)	५(१)	५	-वज्जयति	६	१०, १६, ४६
वड	८	४६	-वज्जेज्ज	१०	२०
वडमय	६(३)	६	वज्जत	५(१)	३
वन	२	७	वज्जिय	५(१)	६६
	१०	१	वज्जम	७	२२, ३६
	१ चू०	सू० १	वट्ट	७	३१
वनय	२	६			

वट्ट *			वत्थिकम्म	३	६
-वट्टड	६(३)	३	वमण	३	६
वट्ट *			वम *		
-वट्टड	५(२)	३८	-वमे	८	३६
	८	३५		१०	६
वट्टण	५(१)	११	वय (वच्) *		
	६	२८, ३१, ३५,	-वाएज्जा	८	सू० १२
		३६, ४२, ४५,	-वक्खामो	७	६
		५८	-वायावेज्जा	८	सू० १२
	८	३६	वय (वत)	४	सू० १६
वण	७	२६, ३०		५(१)	१०
वणम्मड	४	सू० ८		६	७, ६२
	६	४० से ४२	वय (वद्) *		
वणम्मडकाडय	४	सू० ३	-वाए	५(२)	२६
वणिमय (दि०)	५(१)	५१		७	६, १२, २२,
वणोमग (दि०)	५(२)	१०, १२			२५, ३१, ३२,
	६	५७			३४, ३६, ३८,
वण	६(४)	सू० ६, ७			८३, ४४, ५०,
वणिय	६	००			५१
वणिय	५(१)	३८		६(२)	१६
वणिय	७	११	-वाएज्ज	७	३३, ५६
वणिय	१ वृ०	१५		६(२)	१८
वणिय	२	०	-वाएज्जा	७	५२, ५८
	४	सू० १८, १९, २३		१०	१८
	५(२)	२८	-वायावए	६	११
	६	१६, ३८, ४७	वय (वच्च्)	५(२)	८६

वय(वचस्)	६	१७,२६,२६,
		४०,४३
	१०	७
वय * (वृज्)		
-वयाहि	७	४७
वयत	४	सू० १२
वयण	२	१०
	८	३३
	६(२)	१२
	६(३)	८
	१०	५
वयणकर	६(२)	१२
वयतेण	५(२)	४६
वदेय	१ चू०	१२
वस	२	१
	१०	१
वस *		
-वमेज्जा	२ चू०	६,११
वसत	१ चू० म०	१
वसाणुअ	५(१)	६
वमुल् (दि०)	७	१८,१९
वमुल् (दि०)	७	१६
वद्	६	१०, १८, ५७
	६(१)	१
	६(२)	१८
	१ च० मू०	१-

वह *		
-वहई	६(२)	१६
वहण	१०	४
वा	४	११
वा	१ चू०	२
वाउ	४	सू० ७
वाउकाइय	४	सू० ३
वाउकाय	६	३६
वाय	२	६
	६	३८
	७	५१
	१ चू०	१७
वाय	१०	१५
वायत	५(१)	८
वाया	४	सू० १० से-१६, सू० १८ से-२३
	८	१२, ३३
	६(३),	७
	१ चू०	१८
	२ चू०	१४
वाग्धोयण	५(१)	७५
वारय	५(१)	४५
वाम (वर्ष)	५(१)	८
	२ चू०	११
वाम (वास)	१ चू० मू०	१
वामत	५(१)	८

दमवेआलिप्र शब्द-सूची

वासमड	८	५५
वासा	३	१२
वाहि	८	३५
वाहिम	७	२४
वाहिय	६	६, ५६, ६०
	७	१२
विउत्ता	६(१)	२
विइत्तु	१०	१४
विउल	५(२)	४२
	६(४)	६
विउलट्टाणभाइ	६	५
विउहिताण	५(१)	२२
विउत्तय *		
-विउत्तयई	६(३)	४
विउत्तय	७	४६
	१०	१५
विउत्तयमाण	५(१)	७२
विउत्तय	८	६६
विउत्तय	८	५५
विउत्तयेदिय	६(२)	७
विउत्तयो	८	५३
विउत्तय		
विउत्तय	७	२१
विउत्तय	५(६)	६
विउत्तय	५(६)	६
विउत्तय	६	१०

विडिम	७	३१
विणय	५(१)	८८
	७	१
	८	३७, ४०
	६(१)	१
	६(२)	२, ४, २२, २३
	६(३)	२, ३
	६(४)	१
विणयसमाहि	६	
	६(४)	सू० १ से ४
विणासण	८	३७
विणिगूह *		
-विणिगूहई	५(२)	३१
विणिच्छय	८	४३
विणिज्झा *		
-विणिज्झाए	५(१)	१५, २३
विणित्तए	५(१)	७८, ७९
विणिय	६(२)	२१
विणियट्ट *		
-विणियट्ट ति	२	११
-विणियट्टेज्ज	८	३४
विणी *		
-विणएज्ज	२	४, ५
विगीयतण्ह	८	५६
विणह	७	४
वित्ति	१	४

वित्ति	५(१)	६२
	५(२)	२६
	६	२२
विन्नाय	४	सू० ६
(विज्ञात)		
विन्नाय	८	५८
(विज्ञाय)		
विष्पइण्ण	५(१)	२१
विष्पमुक्क	३	१
विपिट्ठिकुब्ब †		
-विपिट्ठिकुब्बड	०	३
विभमण	३	६
विभमा	६	६४
	८	५६
विभूमावत्ति	६	६५, ६६
विमण	५(१)	८०
विमड	६	६८
	६(१)	१५
विमाग	६	६८
विद्य	८	४८
विरात्तग	५(१)	२५
	६	३
	=	१४
	५(२)	००
	६	६१
	=	३०

वियत्त	६	६
वियागर †		
-वियागरे	७	३७, ४५, ४६
वियाण †		
-वियाणई	४	१३, १४
	५(२)	३७
	१०	१५
वियाणत्त	४	१३
वियाणित्ता	५(१)	११
	६	२८, ३१, ३५,
		३६, ४२, ४५
वियाणिया	८	३४
	६(३)	११
	१ चू०	१८
विरय	४	सू० १८ से २३
विरस	५(१)	६८
	५(२)	३३, ४२
	१०	१६
विराय †		
-विरायई	८	६३
	६(१)	१४
विगल्लिया	५(२)	१८
विराह †		
-विराहेज्जामि	४	२८
विस्ह †		
-विस्हत्ति	६(०)	१

विरयण	३	६
विलिह *		
-विलिहावेज्जा	८	सू० १८
-विलिहेज्जा	८	सू० १८
विलिहत	८	सू० १८
विवज्ज*		
-विवज्जए	५(१)	१५, ७५
	५(२)	४६
	७	४, ७
	८	४१, ४६, ५५
-विवज्जयामि	२ चू०	१३
-विवज्जेज्जा	५(१)	३६
	६	२४
विवज्जअ	५(२)	४१, ४३
विवज्जइत्ता	१०	१६
विवज्जत	६	४६
विवज्जण	२ चू०	५, ६
विवज्जयत	१०	३
	२ चू०	१०
विवज्जिय	६	५५
	८	५१
विवज्जेत्ता	५(०)	८
विवज्जा	८	५७
विवज्जा	५(२)	३३
विवज्जा	६(२)	८
विवज्जा	६	५६
विवज्जा	६(२)	८१

विवित्त	८	५२ -
विवित्तचरिया	२ चू०	---
विविह	५(१)	३६
	५(२)	२७, ३३
	६	२७, ३०, ४१,
		४४
	८	१०, १२
	६(४)	४
	१०	८, ६, १२
	१ चू०	१८
विम	८	५६
	६(१)	६
	१ चू०	१२
विसम	५(१)	४
विमय	८	५८
विमीअ *		
-विसीएज्ज	५(२)	२६
विसीदत	२	१
विसुज्ज *		
-विसुज्जई	८	६०
विसुद्ध	६(३)	८
विमोत्तिया	५(१)	६
विसोहिठाण	६(१)	१३
विह	६(४)	सू० ८
विहगम	१	३

विहम्म *			वुग्गह	७	५०
-विहम्मड	१ चू०	७	वुग्गहिय	१०	१०
विहर *			वुच्च *		
-विहरामि	८ सू०	१७	-वुच्चति	१	५
-विहरे	८	५६		७	४८
-विहरेज्ज	२ चू०	१०	वुज्झ *		
-विहरेज्जामि	५(२)	५०	-वुज्झड	६(२)	३
विहारचगिया	२ चू०	५	वुट्ठ	७	५१, ५२
विहि	५(२)	३		८	६
विहिमत	६	२७, ३०, ४१, ४४	वुत्त	६	५, २०, ४८, ५४
विहुयण	८ सू०	२१		८	२
	६	३७		६(२)	१६
	८	६	वेणडय	६(१)	१२
वीअ *			वेय	६(४)	सू० ४
-वीण	१०	३	वेयइत्ता	१ चू०	सू० १
-वीणज्ज	८	६	वेयावडिय	३	६
-वीणज्जा	८ सू०	२१		२ चू०	६
-वीयावा	१०	३	वेर	६(३)	७
-वीयावेज्जा	८ सू०	२१	वेरमण	४	सू० ११ से १७
वीरत	८ सू०	२१	वेत्तुय	५(२)	२१
वीरत	३	०	वेत्तोडय	७	३२
	६	३७	वेम	५(१)	६, ११
	५(१)	६३	वेहिम	७	३२
	५(१)	६८	वाक्कत	६	६०
			वोम्मट्ट	५(१)	६१

दसवेआलिय शब्द-सूची

वोसडुवत्तदेह	१०	१३	-
वोमिर *			
-वोमिरामि	४	सू० १० से १६, सू० १८ से २२	
-वोमिरे	५(१)	१६	
व्व	२	६	
	८	४०	
	१ चू०	५, ६	
स्त			
स	४	सू० ८	
	४	१७, १८	
	५(१)	८७	
	६	६	
	८	२	
	२ चू०	१	
	५(१)	६	
	६	६८	
	५(२)	२०	
	५(२)	६	
	६	५३	
	५(१)	१५	
	६	५८	
	८	१	
	१ चू०	सू० १	

संकम	५(१)	—४, ६५
संका	७	६
सक्रिय	५(१)	४४, ७७
	७	७
सकिलेस	५(१)	१६
सकुचिय	४	सू० ६
सखडि	७	३६, ३७
सग	१०	१६
सघट्ट *		
-सघएट्ट	८	७
सघट्टइत्ता	६(२)	१८
सघट्टिया	५(१)	६१
सघाय	४	सू० २३
सजइदिय	१०	१५
सजम	१	१
	२	८
	३	१, १०
	४	१२, १३, २७
	६	१, ८, १६,
		४६, ६०, ६७
	७	४६
	८	४०, ६१
	९(१)	१३
	१०	७, १०
	१ चू०	सू० १

सजमजीविय	२ चू०	१५	संत	५(२)	११
मजय	२	१०		६(३)	१३
	३	११, १२		६(१)	५
	४	सू० १८ से २३	सअत	१ चू०	८
	४	१०	सताण	१ चू०	८
	५(१)	५ से ७, २२, ४१, ४३, ४८, ५०, ५२, ५४, ५६, ५८, ६०, ६२, ६४, ६६, ७७, ८३, ८६, ९७	सतुट्टु	५(२)	३४
			सतोस	६(३)	५
			सतोसओ	८	३८
			सथर *		
			-सथरे	५(२)	२
			मथार	८	१७
				६(३)	५
	५(२)	१, ८ से ११, १३, १५, १७, २८, ५०	सथारग	४ सू०	२३
			सधि	५(१)	१५
			मपडिलेहियव्व	१ चू० सू०	१
	६	१४, २६, २८, ३४, ४०, ४३	मपविडज्ज *		
			-मपडिवज्जड	८(४)	सू० ४
		४६, ५६	मपडिवाडय	२	१०
		३, ४, ६, १३, १४, १६, १८, २४	मपडिवाय *		
			-मपडिवाया	६(२)	२०
		१५	मपणोन्नियया	५(१)	३०
		२३	मपन्न	५(१)	१
		१०, १८	मपन्नि	६(२)	२१
		५०	मपन्न	६	१
		१०		७	६६
				८	५१

मपमज्जिन्ता	५(१)	८३
मपय	७	७
मपराय	२	५
मपस्सिय	१ चू०	१८
मपहाम	८	४१
	१०	११
मपाविउकाम	६(१)	१६
मपिक्ख *		
-मपिक्खई	२ चू०	१२
मपुच्छण	३	३
मफुम †		
-मफुमावेज्जा	४ सू०	१६
-मफुमेज्जा	८ सू०	१६
मफुमन	४ सू०	१६
मवाहण	३	३
मवुट्ठ	२	११
मभिन्नविन्ता	१ चू०	१३
ममुच्छिय	७	५२
ममराय	६	२१
मग्धि *		
मग्धि	८(४)	७
मग्धिन्ता	५(२)	१
मग्धि	५(२)	१४
मग्धि	५(१)	२५
मग्धि	२ चू०	११
मग्धि	६	१६ २०

सवर	५(२)	३६, ४१, ४४
	१०	५
	२ चू०	४
सवर *		
-सवरे	८	३१
सवहण	७	२५
सवुड	५(१)	८३
	६(४)	५
ससअ	५(१)	१०
	६	३४
समग्धि	५(१)	१०
	६	१६
	८	५६
ससट्ठ	५(१)	३४, ३६
ससट्ठकप्प	२ चू०	६
ससक्क	६	२४
ससार	२ चू०	३
समारसायर	६	६५
ससेडम		
(मस्वेदज)	४	सू० ६
ससेडम		
(मसेक्किम)	५(१)	७५
सक्क	६(३)	६
सक्कणिज्ज	२ चू०	१२
सक्कग	५(१)	८८

सककार *

सककारण	६(१)	१२
सककारेति	६(२)	१५
सककारण	१०	१७
सककुलि	५(१)	७१
नगाम	५(१)	८८, ९०
	५(२)	५०
	८	४४
	६(१)	१
सकमोमा	७	४
सकचरय	६(३)	१३
सकचवाड	६(३)	३
सकचा	७	२, ३, ११
सकचामोमा	७	२
सकच्चित्त	३	७
	८	सू० २२
	५(१)	३०
	५(२)	१४, १६
	१०	३
	=	=
	=	६०
	५(१)	६३
	८	४१, ६१, ६२
	१०	६
	= १०	-
	१(२)	३
	८	सू० ८ से ८

सक्ति	६(१)	८, ९
सक्तुचुण्ण	५(१)	७१
सत्थ	६	३२
	६(२)	८
	१०	२
सत्थपरिणय	४	सू० ४ से ८
सद्द	८	२६
	६(४)	सू० ६, ७
	१०	११
सद्धा	८	६०
सद्धि	५(१)	६५
सन्निर (दि०)	५(१)	७०
सन्निवेस	५(२)	५
सन्नहि	३	३
	६	१७, १८
	८	२४
सन्नहिओ	१०	१६
सण्ण	६	१७
सण्णुग्गि	२ सू०	१५
सवीय	४	सू० ८
सवीयग	८	२
सभिक्ख	१०	
सम	१	५
	२	८
	६(३)	११
	१०	५, ११, १३
	२ सू०	१०

समुपेहिया	७	५५
समुप्यन्न	७	४६
समुप्येह	७	३
	८	७
समुयाण	५(२)	२५
	६(३)	४
	२ चू०	५
समुवे *		
-समुवेति	६(२)	१
समुस्तय	६	१६
समोसढ	६	१
सम्म	४	६
	५(१)	६१
	६(४)	सू० ४
	१ चू०	सू० १
	२ चू०	१३
सम्मद्वमाण	५(१)	२६
सम्मद्विट्टि	४	२८
	१०	७
सम्मद्विया	५(२)	१६
सम्मय	८	६०
सम्माण	५(२)	३५
सम्मुच्छ्रम	८	सू० ८, ६
सय	५(१)	६
	७	५५

सय *		
-सय	७	४७
	८	१३
-सये	४	७, ८
सय	४	सू० १० से १६
	५(२)	३३
सयण	२	२
	५(२)	२८
	७	२६
	८	५१
	२ चू०	८
सयमाण	४	४
सयय	५(२)	३८
	८	४०
	६(१)	१३
	६(३)	१३, १५
	२ चू०	१६
सयल	६	४
सया	१	१
	४	२८
	५(१)	१४
	५(२)	२५
	७	५५, ५६
	८	३२, ४१, ६१
	६(३)	६, १०
	६(४)	४
	१०	३, ६, ७, २१

मरीच	१०	१०
	१ चू०	१६
मरीचिव	७	२०
मशगा	८	मू० १८
मक्कमुद्दि	३	५५
मविज्जविज्जा	६	६६
मन्वशा	६	३०
	७	१
मन्व	३	१०
मन्वतग	१	२१ २०
मन्वथ	६	२१
	८	११
मन्वभाव	८	१६
मन्वमो	७	१
	८	१३
६(१)	८	
	८	१३
५(२)	३६	
१	मू० १८	
५(१)	३३३	
	५	
	३१	
६(१)	१५	
१	मू० १६	
५(१)	३३	
१	११	

मह *		
-महई	६(३)	८
-महे	१०	११
-महेज्ज	६(३)	६
महाय	२ चू०	१०
महेउ	६(३)	६
महेत्तु	३	१८
माड	१ चू० मू० १	
माडम	८ मू० १६	
	५(१)	८३, ८६, ५१, ५३, ५३, ५२, ६१
	५(२)	२३
	१०	८, ६
माग	६(३)	१६
मागरेव	१ चू०	१५
माग	५(१)	१०, २०
	३	१६
मागी	५(१)	१८
मान	५(१)	६, ११
मानगि	३	५६
	१०	१५
मानप	८	१
	६	२८
	५(१)	१०
	५(२)	३०
	१ चू०	६

सामण्णपुण्डवय	२	
सामिणी	७	१६
सामिय	७	१६
सामुद्द	३	८
साय	४	२६
सायग	४	२६
सारक्ख	५(२)	३६
सारिस	१ चू०	१०
साला	७	३१
सालुय	५(२)	१८
सावज्ज	६	३६, ६६
	७	४०, ४१, ५४
	१ चू०	सू० १
सासय (शाश्वत)	४	२५
	६(४)	७
सासय (स्वाशय)	७	४
सासवनालिआ	५(२)	१८
साहट्टु	५(१)	३०
साहण	५(१)	६२
साहम्मिय	१०	६
माहस	६(२)	२२
साहा	४	सू० २१
	६	३७
	८	६
	६(२)	१
माहार	१ चू०	सू० १

साहीण	२	३
साहु	१	३, ५
	५(१)	५, ६२, ६४ से ६६
	५(२)	४३
	६	१२
	७	४८, ४९
	८	५२
	६(३)	११
	२ चू०	४
सिअ	४	सू० २१
सिगबेर	३	७
	५(१)	७०
सिघाण	८	१८
सिच *		
-सिचति	८	३६
सिघव	३	८
सिबलि	५(१)	७३
सिक्ख *		
-सिक्खे	७	१
	६(१)	१, १२
सिक्खमाण	६(२)	१४
सिक्खा	६	३
	६(२)	१२, २१
सिक्खऊण	५(२)	५०
सिग्घ	६(२)	२

मिज्म *		
-मिज्मनि	३	१४
मिणाण	३	०
	५(१)	२५
	६	६०, ६३
मिणाय *		
-मिणायति	६	६२
मिणायत	६	६१
मिणेह	८	१५
मित्त	६(२)	१२
मिद्ध	४	२५
	६(४)	७
मिद्धि	८	२४, २५
	९	६८
	६(१)	१७
मिद्धिमाग	३	१५
	८	३८
मित्त	६(२)	१३, १५
मित्त	८	८
	५(१)	०८, ४०, ८८
		२२, २८
	५(२)	१०, ३१, ३३
	९	१८, ५२
	८	२८
	८	३२, ४८
	८	४६

सिर	६(१)	८, १२
मिगी	६(२)	४
	१ चू०	१०
सिला	४	१८
	५(१)	६५
	८	८, ६
सिलेस	५(१)	८५
सिलोग	६(४)	सू० ४ से ७
	१ चू०	सू० १
सिव	७	५१
सिहि	६(१)	३
मोडेभूय	८	५६
मीओदय	६	५१
	८	६
	१०	२
मीय	६	६२
	७	५१
	८	२७
मोल	६(१)	१४, १६
मीम	८	सू० २३
	६(१)	६
मीह	६(१)	८, ६
मुअरकिय	८	५४
मुः	८	३२
मुउङ्ग	६(३)	७
मुग	१०	८

सुकड	७	४१
सुकक	५(१)	६८
सुककोय	७	४५
सुगध	५(२)	१
सुगड	४	२६, २७
सुछिन्न	७	४१
सुट्टिअप्य	३	१
	६(१)	३
सुण *		
-सुणेड	८	२०
-सुणेज्जा	५(१)	४७
-सुणेह	५(२)	३७, ४३
	६	४, ६
	८	१
सुणित्तु	२ चू०	१
सुतित्था	७	३६
सुतोसअ	५(२)	३४
सुत्त (सुत्त)	४	सू० १८ से २३
	६(१)	८
सुत्त (सूत्र)	१०	१५
	२ चू०	११
सुदसण	१ चू०	१७
सुदुल्लह	५(२)	४८
सुद्ध	५(१)	५६
सुद्धपुद्धवी	८	५
सुद्धागणि	४	सू० २०

सुद्धोदग	४	सू० १६
सुनिट्टिय	७	४१
सुनिसिय	१०	२
सुपक्क	७	४१
सुपन्नत्त	४	सू० १ से ३
सुप्पणिहिदिअ	५(२)	५०
सुभासिय	२	१०
	६(१)	१७
	६(३)	१४
सुमिण	८	५०
सुय	४	सू० १
	८	२०, २१, ३०, ६३
	६(१)	३, १४, १६
	६(२)	२
	६(४)	सू० १, १ ३
	१०	१६
	२ चू०	१
सुयक्खाय	४	सू० १ से ३
सुयग्गाहि	६(२)	१६
सुयत्थधम्म	६(२)	२३
सुयसमाहि	६(४)	सू० ३, ५
	६(४)	३
सुर	६(१)	१४
सुरक्खिय	२ चू०	१६
सुरा	५(२)	३६

मुग्ध	६(१)	५	सुह	६(१)	१०
मुग्ध	७	४१		६(२)	६, ६, ११
मुग्ध	१ चू०	१४		१०	११
मुग्ध	४	२७		२ चू०	३
मुक्किकीय	७	४५	सुहड	७	४१
मुक्किकीय	६(२)	६, ६, ११	सुहर	८	२५
मुक्किकीय	६(४)	६	सुहावह	६	३
मुक्किकीय	२ चू०	३		६(४)	६
मुग्ध	८	२५	सुहि	२	५
मुग्ध	१०	७	सुहुम	४	सू० ११
मुग्ध	६	३		६	२३, ६१
मुग्ध	७	५७		८	१३ से १५
मुग्ध	३	१२	सूइय	५(१)	६८
	५(१)	६	सूइया	५(१)	१२
	६	२६, २६, ४०,	सूर	८	६१
	८	६३	से (दे०)	४	सू० ६, ११ से १६,
	६(४)	६			सू० १८ से २३
	१०	१५	मेज्जा	४	सू० २३
	२ चू०	१६		५(१)	८७
	६(५)	२		५(२)	२
	६(६)	३		६	४७
	६(७)	४		८	१७, ५२
	६(८)	५		६(२)	१७
	६(९)	६		६(३)	५
	६(१०)	७		२ चू०	८
	६(११)	८		३	५

सेट्टि	१ चू०	५
सेडियाँ	५(१)	३४
सेणा	८	६१
सेय	२	७
	४	सू० १ से ३
सेव	४	सू० १४
	५(२)	३४
	८	६
सेवत	४	सू० १४
सेविय	६	३७, ६६
सेलेसी	४	२३, २४
सेस	५(१)	३६
	२ चू०	१२
सोउमल्ल	२	५
सोअ *		
-सोएज्जा	५(२)	६
सोडिया	५(२)	३८
सोक्ख	८	२६
	१ चू०	११
सोग्गड	५(१)	१००
	८	४३
सोच्चा	२	१०
	४	११
	५(१)	५६, ७६
मोच्चाण	६(१)	१७
	६(३)	१४

सोच्चाण	८	२५
सोय	६(२)	३
सोरट्टियाँ	५(१)	३४
सोवक्केस	१ चू०	सू० १
सोवच्चल	३	८
सोह *		
-सोहई	६(१)	१५
सोहि	५(२)	५०

ह

ह	१ चू०	सू० १
हंदि (दि०)	६	४
हड्ड	२	६
हण *		
-घायए	६	६
-हणे	६	६
	८	३८
हत्य	४	सू० १८, २१, २३
	५(१)	३२, ३५, ३६,
		६८, ८५
	८	४४, ५५
	१०	१५
हत्यग	५(१)	७८, ८३
हत्यिय	१ चू०	७

हील *		
-हीलए	६(३)	१२
-हीलति	६(१)	२
	१ चू०	१२
हीलणा	६(१)	७,६
हीलयत	६(१)	४
हीलिय	६(१)	३
हृ	२	३
हृ	७	१६
हृद	५(१)	६२
	६(२)	२०
	६(४)	सू० ७
हृद	१ चू०	१३
हेमत	३	१२
हो *		
-हवड	४	२५
	६	६०
-डोड	८	१ से ६
	५(२)	३२

-होइ	६	६०
	६(१)	१,४
	१०	४
	१ चू० सू०	१
	१ चू०	२ से ६
-होउ	७	५०,५१
-होज्ज	५(१)	५७,५६,८०
	७	५१
-होज्जा	५(१)	६,६१
	५(२)	१२
	७	२६
-होज्जामि	५(१)	६४
-होति	२ चू०	४
-होमो	२	८
-होहिसि	२	५
हो	७	१६
होउकाम	२ चू०	२
होयव्वय	८	३
होल (दि०)	७	१४,१६
होला (दि०)	७	१६

उत्तरज्भयण शब्द-सूची

[१—अव्यय और सर्वनाम के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार किया गया है ।

२—रूपान्तरो को एक साथ लिया है । जैसे—लोभ(ग, य), चद(न्द) ।

३—ताराकित शब्द धातुएँ हैं । उनके रूप उनके नीचे निर्देशचिह्न (ढँश) के बाद है ।

४—संस्कृत छाया केवल समान शब्दों की ही दी गई है ।]

अ			अइदूर	१	३३
अ	११६	= ३३, ६३		२०	७
अइ	२	२७, ४६	अइदूरओ	१	३४
अइउच्च	१	३४	अइमत	१६	८
अइक्कम *			अश्माय	१६	सू० १०
-अइक्कमे	१	३३		१६	१२
-अइक्कमइ	२६	सू० १	अइयाअ	२०	५६
अइगय	१०	५ से १४	अइरित्त	२६	२८
	२२	२७	अइलोलुअ	११	५
अइच्छत	१६	५	अइवन्त *		
अइच्छिय	३३	२४	-अइवतई	२७	२
अइच्छिया	७	२१	अइवाय *		
अइतिक्व	१६	५२	-अइवाएज्जा	८	६
अइदुस्सह	१६	७२	अइविगिट्ट	३६	२५३

१—इस कोष्ठक की सख्याएँ अध्ययन की सूचक हैं ।

२—इस कोष्ठक का सख्याएँ श्लोक अथवा 'सू०' सूत्र की सूचक हैं ।

अइवेला	२	६,२२
अइसय	२६	सू० ३८
अईय	२३	८५
	२५	२१
	३३	१७
अईयार	२६	३६,४०, ४७,४८
अउणतीस	३६	२४०
अउणतीसइ	३६	२४१
अउणवीस	३६	२३०
अउणवीसइ	३६	२३१
अउत्त	१६	२६
अउल	२	३५
	२०	५,१६
	३६	६६
अक	३४	६
	३६	६१,७५
अकुम्भ	६	६०
	७७	८६
अग	७	३
	३	१
	१७	८३,४८
	१६	४
अग	७०	१६
	७८	२१,७३
अग	७७	३६

अंगण	७	१
अंगविज्जा	८	१३
अगवियार	१५	७
अगुल	२६	१४,१६
अगुलि	२६	२३
अजण	३४	४
	३६	७४
अजलिकरण	३०	३२
अड	३२	६
अत	१४	५१
	२२	१५
	२८	४१,५८,६१, ७३
	२६	सू० १
	३६	५६,६१
अतकर	२३	८४
	३५	१
अतकाल	१३	२२
अतकिरिया	२६	सू० १४
अतग	३२	१६
अतगवेसि	१४	५१
अतमुहुत्त	३४	६०
अतर	१६	सू० ७
	१६	७४
	२०	२०
	३६	८२,६०,

उत्तरजभयण शब्द-सूची

अतर	१०४, ११५, १२४, १३४, १६८, १७७, १८६, १९३, २०२, २४६	अतोमुहुत्त	३६	८० से ८२, ८८ से ९०, १०२ से १०४, ११३ से ११५, १२२ से १२४, १३२ से १३४, १४१ से १४३, १५१ से १५३, १६८, १७५ से १७७, १८४ से १८६, १९१ से १९३, २०० से २०२, २४६
अतरद्वीवय	३६ १९६	अधगवण्हि	२२	४३
अतरमासिल्ल	२७ ११	अधयार	२२	३३
अतरा	२२ ३३		२३	७५
अतराय	१४ ७		२८	१२
	२९ सू० ७१	अधिय	३६	१४६
	३२ १०८	असहर	१३	२२
	३३ ३, १५, २०	असु	२०	२८
अतरिच्छा	२० २१	अकपमाण	२१	१९
अतरेण	१ २५	अकड	१	११
	२९ सू० ३४, ३५	अकम्म	२९	सू० ७१
अतरेय	३६ १४, १३४, १४३, १५३	अकम्मचेट्ट	१२	२९
अतलिक्ख	१२ २५	अकम्म (भूम)	३६	१९६
	१५ ७			
	२१ २३			
अतो	२२ ३३			
	२३ ४५			
	३३ १७			
अतोमुहुत्त	२९ सू० ७२			
	३३ १९, २१, २२			
	३४ ४५			

अकम्मया	२६	सू० १	अकित्तण	३२	१५
अकरणया	२६	सू० ३२	अकिरिया	१८	२३, ३३
अकरेत	६	६		२६	सू० २८
अकलेवरसेणि	१०	३५	अकिरियाअ	२६	सू० २८
अकसाय	२८	३३	अकुअहल	११	१०
	३०	३		३४	२७
अकाड	१३	३४	अकुक्कुअ	२	२०
अकाऊण	१३	२१		२१	१८
अकाऊण	१६	१६	अकुय	१	३०
अकाम	५	३	अकुव्वमाण	१३	२१
	६	५३	अकोहण	११	५
अकामकाम	१५	१	अक्कोस	१	३८
अकाममरण	५	२, १६, १७		२	सू० ३
	३६	२६१		१५	३
अकाममरणिज्ज	५			१६	३१
अकारि	६	३०	अक्कोस *		
अकाल	१	३१	-अक्कोसेज्ज	२	२४
अकालिय	३२	२४, ३७, ५०,	अक्ख	५	१४, १५
		६३, ७६, ८६	अक्ख *		
अकिच्चण	२	१४	-अक्खाहि	१२	४०
	१४	८१	अक्खय	११	३०
	२१	२१	अक्खर	२६	सू० ७२
	२५	२७	अक्खाय	२	सू० १
अकिच्चण	२६	सू० ४७		५	२
	३५	१६		८	८, १३, २०
	१८	१५		१६	सू० १

अक्खाय	१८	४३
	२३	६३
	२४	३
	२६	सू० १
अक्खेव	२५	१३
अगणि	१२	२७
	१६	४७
	३६	१०६
अगार	१	२६
अगारत्थ	५	१६
अगारधम्म	२६	सू० ३
अगारव	३०	३
अगारवास	२	२६
अगारि	५	१६, २३
	२७	२२
अगिलायअ	२६	१०
अगिह	१५	१६
अगुणि	२८	३०
अगुत्त	३४	२१
अग (अग्र)	७	२३, २४
	६	४४
	१०	२
	२०	१५
अग (अग्र्य)	१४	३१
अगमाहिंसी	१६	१
अगला	६	२०

अग्गि	२	७
	६	१२
	१२	३६
	१८	१०, १८, ४३
	१६	३६, ६६
	२०	४७
	२३	५०, ५२, ५३
	२५	१८, १६
	३२	११
	३६	२०६
अग्गिहोत्त	२५	१६
अग्ग *		
-अग्घइ	६	४४
अचक्किय	११	३१
अचक्खु	३३	६
अचयत	२५	१३
अचवल	११	१०
	३४	२७
अचिन्तण	३२	१५
अचित्त	२५	२४
अचियत्त (दि०)	११	६
	१७	११
अचिर	१४	५२
	२४	१७
अचेल	२	सू० ३
अचेलग (अ)	२	१२, १३, ३४
	२३	१३, २६

अचोइय	१	४४
अच्च *		
-अच्चिमो,		
अच्चेमु	१२	३४
अच्चत	१८	५२
	२०	५
	३२	१,११०,
		१११
अच्चणा	३५	१८
अच्चय	१०	१
अच्चि	३६	१०६
अच्चिमालि	५	२७
अच्चुय	३६	२११,२३३
अच्चे *		
-अच्चेइ	१३	३१
अच्छ	१२	२६
अच्छ *		
-अच्छइ	३१	३ से २०
-अच्छहि	२२	१६
अच्छन	१६	८८
अच्छण	२६	७
अच्छि	२०	१६,२०
अच्छिरोडअ	३६	१८८
(दे०)		
अच्छि (दे०)	३६	१८८
अच्छिवेअ	३६	१८७
(दे०)		

अच्छेरग	६	५१
अजय	४	१
अजहन्न	३६	२४४
अजाइय	२	२८
अजाणग	२५	१८
अजाणमाग	१४	२०
अजिइदिय	१२	५
	३४	२२
अजिण	५	२१
अजिय	२३	३८
अजीव	२८	१४,१७
	३६	२ से ४,
		१३,१४,
		२४८,२४६
अजीवविभत्ति	३६	४७
अजोगत्त	२६	सू० ३७
अजोगि	२६	सू० ३७
अज्ज (अद्य)	२	३१
	६	७
	१०	३१
	१२	१७
	१३	६
	१४	२८
अज्ज *		
-अज्जयन्ते	१३	१२

उत्तरजभयण शब्द-सूची

अज्ज (अर्थ) १३	२७,३२	अट्ट (अर्थ)	४	४
१८	४५		५	८
२०	६,८		६	४,१३
अज्जव	५७		७	२५,२६
२६	सू० १		८	३,१२
अज्जवयण	२५	२०	९	८,११,१३,
अज्जवया	२६	सू० ८८		१७,१९,२३,
अज्जिय	१	४२		२५,२७,२९,
१८	१६			३१,३३,३७,
अज्जुण	३६	६०		३६,४१,८३,
अज्जत्थ	६	६		८५,४७,५०
१८	१६		११	३२
अज्जप्पजोग	२६	सू० ५४	१२	३,६,३५
अज्जप्पजभाण-			१४	४,३२
जोग	१६	६३	१५	१०
अज्जभयण	२६	सू० १,७३	१६	१
अज्जभवसाण	१६	७	१८	२१
अज्जभावय	१२	१६,१८,१९	१९	८०
अज्जुसिर	२४	१७	२०	८
अट्ट	३०	३५	२२	१५,१६
३४	३१		२५	५,७,९,१०
अट्टालग	६	१८	२६	३२,३४
अट्टिय	२	३२	२८	३६
२०	२५		२९	सू० १,७३
अट्ट (अर्थ)	१	८,२५,३३	३२	१०५
३	५		३५	१०,१७

अट्ठ (अष्टन)	१०	१३
	११	४
	२२	५
	२४	१, १०
	२६	१६
	२८	३१
	२९	सू० ११, ४९
	३३	१, ३, २३
	३६	५२ से ५४, ५९, २२१
अट्टपअ	१०	३७
अट्टभाग	३६	२२१
अट्टम	२४	२
	२६	३
	३६	२४१
अट्टया	१०	२६
अट्टविह	२९	सू० ३१, ७१
	३०	२५
	३३	१४
	३६	२०७
	३९	२३९
	२९	सू० ७१
	३३	१६७, २४०
	३६	१९, २०५
	३९	२०९
	२०	११

अट्ठिय	१	४६
अड्ढ	१९	५
अणइक्कमण	२६	३३
अणंत	४	५
	१०	९
	१९	४७, ४८, ७३
	२८	८
	२९	सू० ५, ७१
	३४	१० से १३, १५ से १९
	३६	१८६, १९३
अणतअ (ग)	६	१, १२
	२०	३१
	३३	१७
अणतकाल	३६	१४, ८२, ९०, १०३, ११५, १२४, १३४, १४३, १५३, १६८, १७७, २०२, २४६
अणतघाड	२९	सू० ७
अणतभाग	३३	२४
अणतमो	१९	४५, ४९ से ५१, ५३, ५८, ६१, ६४ से ६७

अणताणुवधि	२६	सू० १	अणभिद्दुग	३५	७
अणगार	१	१	अणभिल्लसमाण	२६	सू० ३३
	२	१४, २८	अणल्लकिय	३०	२०
	८	१६	अणवकखमाण	१०	८०
	६	१६	अणवज्ज	१६	२७
	११	१	अणवदग्ग	२६	सू० २०
	१८	८, ६ मे १०, १८, १६	अणमण	१६	६०
	२५	५, २७, ८०	अणाड	३०	५, ६, १०
	२६	सू० ३, ६, ७, ११, ६१, ७०	अणाडण	३६	१११
	३१	१८	अणाडण्ण	१६	१०
अणगारमग्गडडेय			अणाडय	२६	सू० २०
अणगारसीह	२०	५८		३६	८
अणगारिया	१०	२६	अणार्इय	३६	६५, ७६, ८३,
	२०	३०, ३१			१०१, ११०,
	२१	१०			१०१, १३१,
अणच्चाविय	२६	२५			११०, १५०,
अणच्चासायण	२६	सू० १			१५६, १७६,
अणट्ट (अनर्थ)	५	८			१८३, १६०
	१८	३०	अणाउत्त	१३	१६६, २१८
अणट्ट (अनष्ट)	१८	६६			६, १३, १४
अणह्यत्त	२६	सू० २३	अणागय	५	६
अणन्थ	१४	१३			१०
अणन्तिय	६	५८			३२
अणभिग्गन्तिय	२८	२६			११
					२८
					५०
					१८
					१८

अणाद्वय	११	२७	अणाहया	२०	२३ से २७,
अणाण	२	४०, ४१			३०, ३८
अणाणत्त	३६	७७, ८६,	अणिएय	२	१६
		१००, ११०,	अणिद्वय	३५	१६
		११६	अणिगाम	१४	१३
अणाणुवचि	२६	२५	अणिग्गह	११	२, ६
अणावाह	२३	८०, ८३		१७	११
	३५	७	अणिच्च	१८	११, १२
अणाय	२०	२६		१६	१२
अणायार	३६	२६७	अणिन्दियगी	१२	२०
अणाग्रि (अ)	१२	४	अणिमिस	१६	६
	१८	२७	अणियअ	६	१६
	३४	२५	अणियट्ट	७	२५, २६
अणावाय (अ)	२४	१६, १७	अणियत्त	१४	१४
	३०	२८	अणियमेत्ता	८	१४
अणाविट्ठ	१०	८६	अणियाण	३५	१६
अणामन्त	१	३३	अणिल्ल	१८	१०
	२०	७	अणिम्म	३२	३१, ४८, ५७,
	१	१३			७०, ८३, ८६
	३०	२, ३, १०६	अणिम्मस	२२	४५
	३५	२१	अणिम्मिअ	१६	६२
	२६	सू० १६	अणीहारि	३०	१३
	२६	सू० ३३	अणकप *		
	२०	६, १०, १५	-अणकप्पे	१५	१२
		से १३, १३	अणकपअ (ग)	१२	८
	२०	५१		२०	६

उत्तरजभयण शब्द-सूची

अणुकपअ	२६	सू० २६	अणुच्च	१	३०
अणुकपि	१३	३२	अणुजा *		
	२१	१३	-अणुजाड	१३	२३
अणुकसाड	२	३६		२०	४०
	१५	१६	अणुजाण *		
अणुककोस			-अणुजाणह	१६	१०
(अनुक्रोश)	२२	१८	अणुजाण	८	८
अणुककोस			अणुजीव †		
(अनुत्कर्ष)	३६	२४४	-अणुजीवन्ति	१८	१४
अणुग	३२	२७,४०,५३, ६६,७६,६२	अणुज्जुअ	३४	२५
			अणुगत	१४	११
अणुगम *			अणुतप्य †		
-अणुगमिस्सम	१४	३४,३६	-अणुतपेज्ज	२	३०,३६
अणुगय (अ)	४	१३	अणुतावअ	१०	३३
	१५	१५	अणुत्तर	२	३७
	३२	२७,४०,५३, ६६,७६,६२		६	१७
				७	२७
अणुगिज्ज *				६	२
-अणुगिज्जेज्जा	२	३६		१०	३५
अणुगिद्ध	२०	५०		१३	३४,३५
अणुगिद्धि	३२	१६		१८	३८ से ४०,
अणुगीय	१३	१२			४२,४३,४७
अणुग्गह	१२	३५		१६	६५,६८
	२५	३७		२०	५२
अणुचित्त *				२१	२३
-अणुचित्ते	१६	६		२२	४८

अणुत्तर	२५	४२, ४३,	अणुवध	१६	११
	२६	सू० १, ६०, ७१	अणुबधण	२६	सू० ४५
	३६	२१२, २१६	अणुबद्ध	४	२
अणुन्नअ	२१	२०		३६	२६६
अणुन्नाअ	१६	८४, ८५	अणुब्भड	२६	सू० २६
	२३	२२	अणुभविउ	२०	३१
अणुपरियट्ट			अणुभाग	३३	२४, २५
-अणुपरियडन्ति	८	१५		३४	१
अणुपस्सअ	६	१६	अणुभाव	२६	सू० २२
अणुपालडत्ता	२६	सू० १		३४	१
अणुपालिउ	१६	३४	अणुमन्त्त *		
अणुपालिया	१६	६५	-अणुमन्नेज्ज	१४	१२
	३६	२५०	अणुमन्निय	१६	२३
अणुपुब्बसो	५	२६	अणुमय	३६	२४६
	२४	१६	अणुमाणित्ताण	१६	८६
	२६	३६, ४७	अणुमुयत्त	३०	२३
	३०	२६	अणुय	१	१३
	३६	८७, १०६	अणुगत्त	२०	२८, ५८
	१३	१५		३२	३२, ४५, ५८,
	३	७			७१, ८८, ६७
	२८	३		३६	२६०
	०	१८	अणुगग (य)	५	७
	२६	सू० १ २०		१३	१५
	३०	३८	अणुल्लय (दि०)	३६	१२६
	५	११	अणुवघाडय	०४	१७
			अणुवन्ति	७	२६

अणुववायकारअ	१	३
अणुवसत	१६	४२
अणुवाअ	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ८०, ९३
अणुवाइ	१६	सू० १२
अणुव्वय *		
-अणुव्वयाम	१३	३०
-अणुव्वयन्ति	१८	१४
अणुव्वय	२०	२८
अणुसकम *		
-अणुसकमन्ति	१३	२५
अणुसचर *		
-अणुसचरे	१८	३०
अणुसठि	२०	१
अणुसर *		
-अणुसरेज्जा	१६	सू० ८
अणुसरमाण	१६	सू० ८
अणुसरित्ता	१६	सू० ८
अणुसास *		
-अणुसासन्ति	१	२७
-अणुसासम्मी	२७	१०
अणुसासत	१	३८
अणुसासण	१	२८, २९
	६	१०
	२०	५१
अणुसासिड	२०	५६

अणुसासिय	१	९
अणुसिसयत्त	२९	सू० ४९
अणुस्सुय	५	१३, १८
अणुस्सुयत्त	२९	सू० २९
अणुस्सुया	२९	सू० २९
अणुरत्त	१३	५
अणूण	२६	२८
अणेग	४	११
	७	१३
	८	१८
	१९	८३
	२१	१६, १७
	२३	१९, ३५
	२८	२२
	२९	सू० ४०
	३२	२७, ४०, ५३, ६६, ७९, ९२, १०३
अणेगअ	१९	८२
अणेगरूवधुगा	२६	२७
अणेगविह	३६	४८
अणेगसो	१९	५४, ६०, ६२, ६९
अणेगहा	३६	९४, ९६, ९९, १०९, ११०, ११९, १३०,

अणेगहा	३६	१३६, १४६, १८१, २१६	अत्त (आत्मन्) १२ १८	४६ ५३
अणेसणिज्ज	२०	४७	अत्त (आर्त) ६	१०
अण्णव	५	१	अत्तगवेसअ २	३३
	१०	३४	अत्तगवेसि १६	१३
	२३	७०, ७३	अत्तट्ठगुरु ३२	२७, ४०, ५३, ६६, ७६, ६२
अत्तक्केमाण	२६	सू० ३३		
अत्तर	८	६	अत्तट्ठिय १२	११
अत्तघ	३४	२३	अत्तपन्नह १७	१२
अत्तान्निम	३२	२६, ३६, ५२, ६५, ७८, ६१	अत्थ (अत्र) ७ ६	१४ ३०
अत्तित्त	३२	२६ से ३१, ३७, ४२ से ४४, ५५ मे ५७, ६८ मे ७०, ८१ मे ८३, ८४ मे ८६ ८८ ८९ ५४, ६७, ७०, ६३ ८६, ८७, ५५, ६८, ८१, ६४ ८१ १० १०	अत्थ (अर्थ) १ १२ १३ १६ १८ २० २३ २४ २६ ३० ३२	३ १२ ३२ २३ ३३ १०, १२ ८, ६ १३, ३४ १, १६ ३२, ८८ ८, २६ सू० २, ८८ ११ १, ३, ४, १००, १०३
		८५ ८६		

उत्तरजभ्यां शब्द-सूची

अत्थओ	२८	२३	अदुव	१	१७
अत्थत	१७	१६	अदुवा	२	१२
अत्थिकायधम्म	२८	२७		८	५
अथिर	१७	१३		२१	१६
अथिरव्वय	२०	४१	अहाय	१८	५०
अदसण	३२	१५	अहीण	७	२१
अदसणि	२८	३०	अहीणव	७	२२
अदसणिज्ज	१२	७	अद्ध (अध्वन्)	६	१२
अदट्ठु	४	५		७	५, १८
अदत्त	१२	१४, ४१	अद्ध (अर्ध)	२६	३५
	१६	२७		३४	३८ मे ३६,
	२५	२५			४५
	३०	२		३६	२५३ से २५५
	३२	२६, ३१, ४२	अद्धपेडा	३०	१६
		से ४४, ५५,	अद्धा	७	१८
		५७, ६८, ७०,		२६	मू० २२, ७२
		८१, ८३, ६४,		३४	४६
		६६		३६	८
अदत्तहारि	३२	३०, ४३, ५६,	अद्धाण	६	१२
		६६, ८२, ६५		७	५
अदय	१५	११		१६	१८, २०
अदित	६	४०		२३	६०
अदिस्स	२३	२०	अद्धासमय	३६	६
अदीण	२	५, ३२	अधम्म	७	२६
अदीणमण	२	३		३६	७, ८
अदु	२	२३	अधीर	८	६
	८	१२			
	३३	१६			

अधुव	८	१	अन्न (अन्यत्)	२७	१२
अनिगह	२०	३६		२६	सू० ४
अनिद्वेस	१	३		३०	२३
अनियट्टि	२६	सू० ४१, ७२		३२	१०३
अनियाण	१६	६१		३५	८
	३६	२५८	अन्न (अन्न)	१२	६ से ११,
अन्तिय	१	८, १६			१६, ३५
	५	३१		२०	२६
	७	१२, २३		२५	८, १०
	१८	१८, १६	अन्नओ	२५	६
	२५	४२	अन्नमन्न	१३	५, ७
अन्नेउर	६	३, १२	अन्नयर	५	२५, ३२
	२०	१४		३०	२२
अन्न (अन्यत्)	१	३३	अन्नयराग	२६	३१
	०	२१	अन्नया	२१	८
	७	५	अन्नलिंग	३६	६६, ५२
	६	४२	अन्नहा	२८	१८
	१३	२५	अन्नाएसि	२	३६
	१४	१४, ४०, ४२	अन्नाण	२	सू० ३
	१८	१६		१८	२३
	२०	३८		२८	२०
	२३	२८		२६	सू० २४
	३४	३६, ४४, ४६,		३२	०
		५४, ५६, ६४,	अन्नायण्मि	१५	१
		७२, ७४, ७६	अन्निय	१८	४३
	२४	१५		२०	१३, ५२

अपज्जत्त	१४	३६	अपि	१	१३, २६, ४०
	३६	७०, ८४, ६२,	अपीहेमाण	२६	सू० ३३
		१०८, ११७,	अपुट्ट	१	१४
		१२७, १३६,	अपुणच्चव	३	१४
		१४५	अपुणरावत्ति	२६	सू० ४४
अपज्जवसिय	३६	८, १२, ६५,	अपुणागम	२१	२४
		७६, ८७,	अपुरक्काग	२६	सू० ७
		१०१, ११२,	अपुहत्त	२६	सू० ११
		१२१, १३१,	अप्प (आत्मन्)	१	६, १५, १६,
		१४०, १५०,			२१, ३६, ४०
		१५६, १७४,		२	४१
		१८३, १६०,		४	१०
		१६६, २१८		५	११, ३०
अपडिकत्त	१३	२६		६	२, ७
अपडिक्कमित्ता	२६	२२		८	११, १६
अपत्थ	७	११		९	३६
अपत्थण	३२	१५		१०	२८
अपत्थणिज्ज	२६	सू० ४७		११	३२
अपत्थेमाण	२६	सू० ३३		१४	४६
अपर	१६	१७		१५	१५
अपराजिय	३६	२१५		१८	२६
अपरिकम्म	३०	१३		१९	२३
अपरिग्गह	२१	१२		२०	१२, ३५ से
अपरिसाडिय	१	३५			३७, ३६, ४१
अपलिमथ	२६	सू० ३४		२१	१५
अपाहेअ	१६	१८		२२	३६

अभिगच्छ #		
-अभिगच्छड	१	४०
अभिगम	२८	१६
अभिगमहड	२८	२३
अभिगम्म	१४	१७
अभिगपह	३०	२५
अभिजा #		
-अभिजायड	३	१६
अभिजाड्य	११	१३
अभिजाण #		
-अभिजागामि	२	१०, ४०
अभिजाय	३	१८
	१४.	६
अभिगिक्खम #		
-अभिगिक्खमई	६	२
-अभिगिक्खि- माहि	१३	२०
अभिगिक्खमत	६	५
अभितत्त	१६	६०
अमितुर #		
-अमितुर	१०	३१
अमित्युगत	६	५५, ५६
अमिवार #		
-अमिवाण	२	२१
अभिन्त #		
-अभिन्तदेज्जा	०	३३
अभिन्तिकवत	६	४

अभिन्तिकवम्म	१४	३७
अभिन्तिविट्टु	१४	४
अभिण्येअ	५	३१
अभिभूय		
(अभिभूय)	०	सू० १ मे ३
	२	१८
	१५	३
	३०	३०, ४३, ५६
		६६, ८२, ६५
अभिभूय		
(अभिभूय)	१४	४
	१५	१५
अभिराम	१३	१७
अभिरोग #		
-अभिरोग्ज्जा	२१	११, १५
-अभिरोग्ग	३५	६
अभिल्ल #		
-अभिल्लमड	०६	सू० ३३
अभिल्लसणिज्ज	१६	सू० ११
अभिल्लसिज्ज- माण	१६	सू० ११
अभिवन्डिऊग	२०	५६
अभिवन्डित्ता	२३	८६
अभिवन्डिय	१२	२१
अभिवायण	२	३८

अभिसमे *			अमित्त	१५	१६
-अभिसमेद्र	१३	३०		२०	३७
अभिसमेम	२०	६	अमिय	३२	१०४
अभिहण *			अमुंच	३६	८१, ८६, १०३, ११४, १२३, १३३, १४२, १५२
-अभिहणे	२	१०			
अभिहय	२३	५३	अमुच्छिय	३५	१७
अभिहिय	२८	२७	अमुत्त	१४	१६
अभोगि	२५	३६	अमुहरि	१	८
अमइ	४	२	अमूढदिट्टि	२८	३१
अमणुन्त	२६	सू० ६३ से ६७	अमोक्ख	२८	३०
	३२	२१ से २३, ३५, ३६, ४८, ४९, ६१, ६२, ७४, ७५, ८७, ८८	अमोसली	२६	२५
अमणुन्नया	३२	१०६	अमोह	१४	२१ से २३
अमम	२१	२१	अमोहण	३२	१०६
अमय	१७	२१	अम्बग	७	११
अमरिस	३४	२३		३४	१२, १३
अमल	३६	२६०	अम्बिल	३६	१८, ३२
अमहघय	२०	४२	अम्मा	१६	२, ६, १०, ११, २४, ४४, ७५, ७६, ८४ से ८६
अमाड	११	१०		२१	१०
	२६	सू० ५	अम्ह	१	१
	३४	२७	अम्हारिस	१३	२७
अमाणुत्त	३	६	अय (अज)	७	७, ६

अय (अयस्)	१२	२६	अरिह *		
	१६	६७	-अरिहइ	११	१४
	३६	७३	अरिह	३६	२६२
अयतिय	२०	४२	अरुवि	३६	४,६,६६,
अयसी	१६	५५			२४८
	३४	६	अल	६	३
अयाणत	८	७		६	४६
अयाणय	१२	३१	अलकिय	१८	१६
अर	१८	४०		३०	२२
अरइ	२	सू० ३	अल्द्ध	२	३०
	२	१४,१५	अल्स	३६	१२८
	१०	२७	अलाभ	२	सू० ३
	२१	२१		२	३१
	३२	१०२		१४	३२
अरज्जत	१६	६		१६	६०
अरणी	१४	१८		३५	१६
अरण्ण (न्न)	१६	७६,७७	अलाभया	१६	३२
	३२	७६	अलित	२५	२६
अरय (अरत्त)	१७	१५	अलिय	१	१४
अरय (अरजस्)	१८	४०		३५	३
अरह	६	१७	अलोग (अ)	२६	सू० ७१
	२३	१		३६	२,७,५६
अरहत	२६	सू० ५१	अलोल	३५	१७
अरि	२०	२०,४८	अलोलुय	२	३६
अरिट्ठग	३४	४		२५	२७
अग्ग्दिने (णि) मि	२२	४,५,२७	अल्लीण	२३	६

अवउज्भ *			अवलम्ब *		
-अवउज्भइ	१७	६	-अवलम्बइ	२६	सू० २०
	१६	२२	अवलम्बमाण	२६	सू० २०
अवउज्भऊण	६	५५	अवलिय	२६	२५
अवउज्भय	१०	३०	अवस	७	१०
अवकख *				१३	२४
-अवकखे	६	१३		१८	१२
अवगय	२८	२०		१६	१६, ५६, ५७,
अवगाहिया	१०	३३			६३, ६४
अवचिट्ट *			अवसन्न	१३	३
-अवचिट्टे	१४	१८		३२	७६
अवणअ	२१	२०	अवसीय *		
अवणवाइ	३६	२६५	-अवसीयई	२७	१५
अवत्तासिय	१६	६	अवसेस	१२	१०
अवघसि	४	७		२६	२०, ३५
अवपेक्ख *				२६	सू० ७३
-अवपेक्खसि	६	१२	अवसोहिय	१०	३२
अवबुज्भ *			अवहिअ	३२	८६
-अवबुज्भसे	१८	१३	अवहेडिय	१२	२६
अवमन्न *			अवि	१	११, १७
-अवमन्नह	१२	२६	अविग्गह	२६	सू० ७४
अवमाण	१६	६०	अविज्जा	६	१
अवरज्भ *				३४	२३
अवरज्भइ	७	२५, २६	अविणीय	१	३
	३२	२५, ३८, ५१,		११	२, ६, ६
		६४, ७७, ६०	अवियार	३०	१२

अविरा	३४	२१, २४	-अत्थि	३२	१७
अविवच्चास	२६	२८		३६	६६
अविवन्न	२०	४४	-अमि	१२	६
अविसवायण	२६	सू० ४६		१४	३०
अविसारय	२८	२६		१६	१०, ६६, ७०
अविस्साम	१६	३५		२०	६, ३३
अविहेड्य	१५	१५	-अमु	८	७
अवेक्खत	२३	१५	-असि	६	५८
अवेयण	१६	२१		१०	३२, ३४
अव्वक्खित्त	१८	५०		१२	७, ११
	२०	१७		१३	३२, ३३
अव्वग्गमण	१५	३, ४		१८	१०
अव्वाबाह	२६	सू० ४		१६	३४
अस *				२०	८, १२, ४०,
-अत्थि	२	७, २७, २८,			५६
		४४, ४५		२२	४१, ४३
	४	१, ३	-आसिमो	१३	५
	५	६	-आसी	६	५
	६	१४		१२	१
	१२	३२, ३५		१३	६७
	१३	१०		१८	२८
	१४	१५, २७ से		२०	५, १८
		२६		२१	१
	१७	२		२२	१ से ३
	१६	४४, ७४		२३	८८
	२०	४६		२५	१
	२३	६६, ८१			

उत्तरजभयण शब्द-सूची

-सिया	१	८,४०	असजम	३१	२
	२	३१	असजय (अ)	१७	६
-सन्ति	५	२,२०		२०	४३
	८	६		२६	४४
असइ	५	३	असथड	२१	२२
	६	३०	असपहिट्ट	१५	३,४
	१६	४५	असबुद्ध	१	३
असकिलिट्ट	३६	२६०	असम्भन्त	२२	३६
असख	३४	४६,५०	असलोअ	२४	१६,१७
असखकाल	३६	१३,८१,८६, १०४,११४, १२३	असविभागि	११	६
				१७	११
असखभाग	३४	३५ से ३०, ४१ से ४३, ५३	अससत्त	२	१६
	३६	१६२		२५	२७
असखय			असच्च	१	१४
(असस्कृत)	४		असच्चमोसा	२४	२०,२२
	४	१	असज्जमाण	१४	६
असखय				२६	सू० ३१
(असख्यक)	६	४८		३२	५
असखिज्ज	३४	३३	असण (अग्न)	२	३०
असखिज्जइम	३४	४८		१६	६२
असखेज्ज	३४	५२	असण (असन)	३४	८
असखेज्जइम	३६	१६१	असणि	२०	२१
असगया	२०	६	असत्त	१३	३२
			असन्त	६	५१
				१४	१८
			असबल	२६	सू० १२

असब्ध	२१	१४
असमजस	४	११
असमाण	२	१६
असमारभन्त	१२	४१
असमाहि	२७	३
	३१	१४
असरण	६	१०
असाय	३३	७
असायावेय-		
गिज्ज	२०	४२
	२६	सू० २३
असावज्ज	२४	१०
असासय	८	१
	१३	२०, २१
	१४	७
	१६	१२, १३
असाहु	१	२८
असाहुरूव	२०	४६
असि	१६	३७, ५५
असि गेह	८	२
अमिपत्त	१६	६०
असिप्पजीवि	१५	१६
अमिय	१६	१२
अनील	५	१२
	११	५
	२०	४६

असुइ	१६	१२
असुभ	२१	६
	२४	२६
असुय	१४	८
असुर	१२	२५
	३६	२०६
असुह	१०	१५
	१३	२८
	३३	१३
असेवमाण	१२	४१
अस्स	१	१२, ३७
	२०	१४
	२३	५५, ५७, ५८
अस्सजम	३१	१३
अस्सकणी	३६	६६
अस्सस *		
-अस्सासि	२	४१
अस्साय	१६	४७, ४८, ७४
अस्सविली	२३	७१
अस्सिय (अ)	१३	१५
	१८	६
	२८	६
	३५	२
अस्सुयपुव्व	२०	१३
अह (अथ)	२	४१
अह (अहन्)	१४	१४

अहकवाय	१४	५०
	२८	३३
अहकवायचरित	२६	सू० ५६
अहम	६	५४
	१३	१८
अहम्म	४	१३
	५	१५
	७	२८
	१४	२४
	१७	१२
	२८	७ से ६
	३६	५
अहम्मलेसा	३४	५६
अहम्मिट्ट	७	४, २८
अहवा	३०	१३
अहस्सिर	११	४
अहाउय	३	१६
	२६	सू० ७३
अहाच्छद	२०	५०
अहाणुपुब्बी	३२	६
अहि	१६	३८
	३४	१६
	३६	१८१
अहिसया	३	८
अहिंसा	२१	१२
अहिक्खव *		
अहिक्खवई	११	११

अहिगच्छ *		
-अहिगच्छति	२३	३५
अहिगम	२६	सू० ६०
अहिगय	२८	१७
अहिगार	१४	१७
अहिज्ज	१२	१५
	१४	६
अहिज्जत	२८	२१
अहिज्जित्ता	१	१०
अहिट्ठा *		
-अहिट्ठेज्जा	११	३२
-अहिट्ठेज्जासि	३४	६१
अहिट्ठिय	६	४
अहितत्त	२	६
अहिय	१४	१०
	२२	१०
	३१	१६
	३२	५
	३४	३४, ३८, ३६,
		५२, ५४
	३६	१८५, १६२,
		२१६, २२१,
		२२३, २२५
अहियास *		
-अहियासए	२	२३, ३२
	१५	३, ४

-अहियासएज्जा२१	१८	आइ (दि०)	२३	४३
अहिवई	११	१६, २२, २३	२४	१८
अहीण	१०	१७, १८	२६	सू० ३
अहीय	१४	१२	३०	१५, १८, २६,
अहीरिया	३४	२३		३१
अहीलणिज्ज	१२	२३	३१	१७
अहुणेववन्त	५	२७	३२	१०६
अहे	६	५४	३६	६६, ११०,
	३६	५०, ५४		११६, १३०,
अहेउ	१८	५१, ५३		१३६, १४६,
अहो (अहो)	६	५६, ५७		१८०, १८१,
	१२	३६		२१६
	१८	३१	आइअ (य)	१७
	१६	१५		२७, ३३
	२०	६		१०६
	२१	६		१३८
अहो (अहन)	१४	१४	आइक्ख *	
अहो (अघस्)	१६	४६	-आइक्ख	१२
अहोरत्त	३६	११३, १४१	आइच्च	२६
अहोराय	१८	३१		३४
आइ (आ + पा) *			आइण्ण	१
-आइए	१०	२६		१२
आइ (आ + ढा) *				१६, १७
-आइए	२४	१४		११
आइ (दि०)	१६	२७, ५१, ६६,		५२
		६७		२०
				३
				२७
				१

आउ (अप्) ३६	६६, ८४, ८८, ८९, ९०
आउ (आयुष्) ७	१०, १२, १३, २४, २७
१०	३
१४	७
१८	२६
३३	१२
३४	२
३६	१०२
आउअ (य) ४	६
७	४, ७, २४
२६	सू० २३, ४२, ७३
आउकम्म ३२	२, १२, २२
आउककाय (अ) १०	६
२६	३०
आउकखय ३	१६
३२	१०६
आउट्टिह ३६	८०, ८८, ११३, १२२, १३२ से १४१, १५१, १६७, १७५, १८४, १९१, २००, २४५
आउत्त १६	२६
५६	

आउत्तया २०	६०
आउर २	५
१५	=
३२	२१, ३०, ५०
	६३ ८६ ८६
आउम ३	सू० १
१६	सू० १
१७	=
२६	सू० १
आएस ७	१ मे १६
३६	६
आगअ (य) ५	६
७	६ ११, १५
१०	३६
१२	७, ६
१४	४५
१८	५, २६
२१	२, ५, १०
२३	३, १५, १६
२६	४६
२६	सू० ४३
२५	२०
आगन्तु	
आगच्छ*	
-आगच्छइ १२	६
२०	४३
२६	सू० २, ३

-आगच्छऊ	२२	८
आगम	३६	२६२
आगमिस	२६	सू० २४
आगम्म	१	२२
	१४	३
	१८	६
आगर	१६	५,४६
	३०	१६
आगार	१	२
आगास	६	४८,६०
	१२	३६
	१६	३६
	२८	७,८
	३६	२,६ से ८
आघविअ	२६	सू० ७४
आघायाय	५	३२
आणय	३६	२११,२३०
आणा	१	२,३
	२०	१४
	२८	२०
	२६	सू० १,११
आणापाणु	२६	सू० ७३
आणाहड	२८	१६,२०
आणी	१	१
-आगेड	२१	७
आतन्त्री	१	१

आणुपुन्वी	२	१
	३	७
	११	१
	३३	१
	३४	१
आतव	२८	१२
आदाड	१४	३८
आदाण	२४	२
आदाय	२	१७,४३
	५	३०
	६	१३
	१८	५१
आदेसओ	३६	८३,६१, १०५,११६, १२५,१३५, १४४,१५४, १६६,१७८, १८७,१६४, २०३,२४७
आनम	१	
-आनमति	६	३२
आपुच्छ	२१	१०
आपुच्छणा	२६	२,५
आपुच्छित्तण	२०	३४
आभरण	१३	१६
	२२	६,२०

आभिओग	३६	२५६
आभिनि (ण)		
-बोहिय	२८	४
	३३	४
आमत *		
-आमन्नयामो	१४	७
आमतिअ	१३	३३
आमय	३२	११०
आमिस	८	५
	१४	४६
	३२	६३
आमोयमाण	१४	४४
आमीस	६	१२८
आय	२	१५
	८	१६
	१३	१०
	१८	१०
	१५	२
आयक	५	११
	१०	२७
	१६	मू० ३ से १२
	१६	७८
	२१	१८
	२६	३४
आयगवेसअ	१५	५
आयगुत्त	१५	३
	२१	१६

आयय *		
-आययई	३२	२६
आयय	३६	२१, ४६, ५८
आययगतु-		
पञ्चागया	३०	१६
आययट्टिय	२६	मू० ३८
आययण	३२	६
आयय *		
-आयरे	२८	७
	३०	३७
आयरत	१	८०
	३५	१
आयरिय(आचार्य) ?		२०, ८०, ४१,
		४३
	८	१३
	१६	मू० ३ मे १०
	१७	८, ५, १७
	१८	००
	२०	२२
	२७	११
	३०	३३
आयरिय		
(आचरित)	१	८२
	६	८
आयव	२	३५
आयव्हिय	२१	१२

आया *			आराम	१६	१५
-आयएज्ज	६	७	आराह *		
-आययन्ति	३	७	-आराहए	१२	१२
आयाण	६	७		१७	२१
	१३	१६	-आराहेइ	२६	सू० १५, १७
आयाणनिक्खेव	१२	२	आराहअ	२६	सू० १, ४६, ५१, ५४
	२०	४०	आराहइत्ता	२६	सू० १
आयाम	३६	२५३ से २५५	आराहणया	२६	सू० १ २५, ४६, ७२
आयामग	१५	१३	आराहणा	२६	सू० १५
आयाय	३	११	आराहिय	८	२०
आयार	११	१	आरिअत्त	१०	१६
	२०	५२	आरिय	२	३७
	२३	११		८	८
	२६	सू० १७		१८	२५
आरभ	१३	३३	आरियभाण	३२	१५
	१४	४१	आरियत्तण	१०	१७
	१६	२६	आरूह †		
	२४	२१, २३, २५	-आरूहइ	१७	७
	२६	सू० ३	आरूढ	२२	१०
	३४	२१, २४		२३	५५, ७०
आरभ †			आलम्बण	२४	४, ५
-आरभे	८	१०		२६	सू० ३४
आरण	३६	२११, २३२	आलय	१६	१, ११
आरण्णग	१४	६		१६	१४
आग्भटा	२६	१०६			
आग्भत	१६	५३, ६८			

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

आलय	३६	२०८	आवडिय	२५	४०
आलव *			आवन्न	४	४
-आलवे	१	१०		६	१२
आलवत	१	२१	आवर *		
आलसिअ	२७	१०	-आवरेड	३२	१०८
आलस्स	११	३	आवरण	३३	६
आलुय	३६	६६	आवरणिज्ज	३३	२०
आलोडत्ता	१६	सू० ६	आवमह	१३	१३
आलोएमाण	१६	सू० ६		३२	१३
आलोय (आ+लोक्) *			आवस्सिया	२६	२,५
-आलोएइ	१६	४	आवाय	२८	१६
-आलोएज्जा	१६	सू० ६	आवाम	५	२६
आलोय (आ+लोच्) *				१६	१२
-आलोएज्ज	२६	४०, ४८	आवि	१	१७
आलोय	३२	२४	आविद्ध	२२	४८
आलोयण	१६	४	आविल	३२	२६, ४२, ५५,
	२१	८			६८, ८१, ६४
आलोयणया	२६	सू० १	आवेउ	२२	४२
आलोयणा	२६	सू० ६	आस	४	८
	३६	२६२		६	५
आलोयणारिह	३०	३१	आसअ	२८	६
आवई	७	१७	आससा	२६	सू० ३६
आवज्ज *			आसण	१	२१, २२, ३०,
-आवज्जई	३२	१०३, १०४		२	२१
आवट्ट	३	५			
	२५	३८			

आसण	७	८
	१५	४, ११
	१६	सू० ३
	१७	१३
	२६	सू० १, ३२
	३०	२८, ३२, ३६
	३२	१२
आसणया	२६	सू० ३२
आसन्न	१	३४
	२४	१८
आसम	६	४२
आसमपय	३०	१७
आसव(आश्रव)	१८	५
	१६	६३
	२०	४५
	२८	१४, १७
	२६	सू० १२, १४, ५६
	३८	२१
आमव		
(आमव)	३८	१८
आमना	१२	१२
आमा	१०	७
	३०	२७, ८०, ५३,
		६६, ७६, ६२
'आमाज'		
'आमागट'	२६	सू० ३८

आसाढ	२६	१३, १५, १६
आसायणा	३१	२०
आसिय	१६	१२
आसीविस	६	५३
	१२	२७
आसुपन्न	४	६
आसुर	३	३
	८	१४
आसुरत्त	३६	२५६
आसुरिया	७	१०
	३६	२६६
आसेवण	३०	३३
आसोअ	२६	१३
आह		
-आहिज्जइ	२६	सू० १
आहअ	१८	७
आहच्च	१	११
	३	६
आहग्गित्तु	१६	७६
आहाकम्म	३	३
	५	१३
आहार	१५	१२
	१६	सू० ६
	१६	३०
	२४	११, १५
	२६	सू० १, ३२, ३६

उत्तरज्भयण शब्द-सूची

आहार	३०	१३, १५	-एन्ति	७	१६
	३१	८	इ	२	४०
	३२	४	इइ (ति)	२	७
	३५	२०	इओ	१३	३२
	३६	२५५		२०	३२, ४७
आहार *			इंगाल	३६	१०६
-आहारेइ	१७	१५, १६	इंगिय	१	२
-आहारेज्जा	१६	सू० ६		३२	१४
आहारित्ता	१६	सू० ६	इद	२०	२१
आहारेत्ता	१६	सू० १०	इदक	३६	१३८
आहारेमाण	१६	सू० ६, १०	इदगोवग	३६	१३६
आहिय	२४	१	इदत्त	६	५५
	२८	८, ३३	इदनील	३६	७५
	३०	१३, २४, २५,	इदिय	१६	सू० १ से ३, ५
		२७, ३१, ३३		१६	११
	३३	७, १३, १४,		२३	३८
		१६, १७		२४	८, २४
	३६	५, ६, २०,		३२	११, १२, २१
		७७, ६५,			१०४
		१५५, १५६,		३५	५
		१७२, २०६	इदियगाम	२५	२
			इदियगेज्ज	१४	१६
			इदियत्थ	३१	७
				३२	१००, १०६
इ *			इधण	१४	१०
-एड	७	३		३२	११
	२०	४६, ५०			

इक्क	८	१६
	१०	१४
	२८	८
इक्कग	१३	२५
इक्कतीस	३६	२४२
इक्कतीसड	३६	२४३
इक्कवीस	३६	२३२
इक्कवीसइ	३६	२३३
इक्कवाग	१६	३६
इच्छ ^१		
-इच्छड	१२	२२
	१५	५
	१७	१६
-इच्छसि	१४	३८
	२७	४२
-इच्छह	१२	२८
-इच्छामि	२०	५६
	२२	८१
-इच्छामो	१०	८५
-इच्छे	१	१०
	३२	४
	६	२६
	३२	८
	२६	६
	३२	१०८
	१	६

इच्छा	६	४१
इच्छाकाम	३५	३
इच्छाकार	२६	३,
इच्छिअ	२२	२५
	२३	३१
	३०	११
इट्ट	१६	१३
	२२	२
इड्ढि	२	४४
	७	२७
	१२	३७
	१३	११
	१६	८७
	२२	१३, २१
	२७	६
	३५	१८
	३६	२६४
इड्ढिमत्त	५	२७
	२०	१०
इण्ह	१२	३२
इत्तरिय (अ)	१०	३
	३०	६ मे ११
इत्तिय	३०	१८
इत्तो	५	१७
	३६	७८
इत्तय	१६	मु० १०

उत्तरज्भयण शब्द-सूची

इत्थिया	१४	६, १६	इरियावहिय	२६	सू० ७२
इत्थी	१	२६	इव	११	२४
	२	सू० ३	इसि	१२	१६, २१, २४,
	२	१६, १७			३०, ३१, ४४,
	५	१०			४७
	७	६		२१	२२
	८	१६	इसिज्भय	२०	४३
	१२	४१	इस्सरिय	१८	३५
	१६	सू० ३ से १२		२०	१४
	१६	३	इस्सा	३४	२३
	३०	२२	इह	२	सू० १
	३२	१३ से १५,	इह	१२	७, ११
		१७		१३	१४
	३५	७		१७	२०
	३६	४६, ५१		१६	४७, ४८, ६२
इत्थीवेय	२६	सू० ६	इहलोइअ	१५	५६
इम	१	१५	ईसाण	३६	१०
इय	२४	२	ईसाणग	३६	२२३
इयर	२०	६०	ईसि	२६	२१
इर *			ईसिपब्भार	२६	सू० ७३
-इरियामि	१८	२६	ईह *	३६	५७
इरिया	६	२१	-ईहइ	७	४
	१२	२			
	२०	४०			
	२४	२, ४, ८			
	२६	३२			

उ

उ	१	८
उड *		
-उडन्ति	२१	१६
उडज्ज *		
-उडज्जन्ति	२	४१
उछ	३५	१६
उक्कुडुअ	१	२२
उक्कत्त	१६	६२
उक्कल	३६	१३७
उक्कलिया	३६	११८
उक्का	३६	११०
उक्कुट्ट *		
-उक्कुट्टड	२७	५
उक्कगेम	५	३
	१०	५ से १४
	३३	२१ मे २३
	३४	३४ से ३६,
		८१ मे ८३,
		८६ मे १०
		१० मे ११
	३६	१३, १८, ५०,
		१३, ८१, ८२,
		८६ ६०
		१०३ १०८,
		११३ मे ११५

उक्कोस

३६

१२३, १२४,
१३२ से १३४
१४१ से १४३,
१५१ से १५३,
१६० से १६६,
१६८, १७५ से
१७७, १८४ से
१८६, १९२,
१९३, २०१,
२०२, २१६ से
२४३, २४६

उक्कोसिय

३३

१६

३६

८०, ८८,
१०२, १२२,
१६७, २४५,
२५१

उग्ग

१८

५०

१६

२८

२०

५३

२२

८८

३०

२७

उग्गअ

२३

७६, ७८

उग्गतव

१२

२२, २७

उग्गम

२४

१२

उग्गाअ

२८

१२

उग्गाण्ट

२८

१२

१०७, १०८

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

१३३

उच्च	३३	१४
उच्चागोय	३	१८
	२६	सू० ११
उच्चार	२४	२, १५, १८
	२६	३८
	२६	सू० ७३
उच्चारसमिद्ध	१२	२
उच्चावय	२	२२
	१२	१५
उच्चोयअ	१३	१३
उच्छु	१६	५३
उज्जम *		
उज्जमए	३२	१०५
उज्जहिता	२७	७
उज्जाण	१८	३४
	१६	१
	२०	३
	२२	२३
	२३	४, ८
	२५	३
उज्जुअ	१६	८८
उज्जुकड	१४	४१
	१५	१
उज्जुजड	२३	२६

उज्जुभाव	२१	२०
	२६	सू० ६, ७०
जज्जुसेढि	२६	सू० ७४
उज्जुयभूय	३	१२
उज्जेय (उद्योत)	२३	७५, ७६, ७८
	२८	१२
उज्जोय (उद्योग)	२२	३६
उज्जिता	१४	४६
उद्धिअ	१८	३१
उद्धिता	२	२१
उद्धुवड	११	२५
उद्धुस	३६	१३७
उद्धु	३	१३, १५
	६	१३
	१२	२६
	१६	४६, ५१, ८२
	२६	२४
	२६	सू० ७४
	३६	५०
उद्धुलोअ	३६	५४
उण्ह	२	६
	१५	४
	१६	३१, ४७, ६०, ७
	३६	२०
उण्हअ	३६	३६

उत्तम	६	६,५७ से	उत्तिम	२२	१३,२३
		५६	उदग (क,अ)	७	२३
	१०	१८,१६		८	८
	११	३१,३२		११	३०
	१२	४७		१२	३६,३८,३
	१३	१०		२३	६५,६६
	१४	३७		२८	१२
	१८	४१	उदग	११	२०
	१६	६७		१३	३५
	२०	५०,५२,५५		१४	२
	२३	५१,६३,६८	उदय	२३	४८
	२५	६,१७,३३,	उदहि	११	३०
		३७		३३	१६,२१,२
उत्तमद्व	२०	४६		३४	३५ से ३८
उत्तमग	१२	२६			४१ से ४३
	२०	२१			५३
उत्तर	३	१८	उदार	१४	३५
	५	२०,२६	उदाहर *		
	१०	१	-उदाहरिस्सामि	२	१
	३३	१६	-उदाहरे	५	१
	३६	५३,५८		११	४
	२६	११,१७		२२	३६
	३६	२६८	-उदाहगित्या	१२	८
	३०	१८		१३	१५
	३६	६०	उदाह *		
	११	२८	-उदाहगित्या	१२	८
				१३	१५

वृत्तरज्भयण शब्द-सूची

उदाहृ	६	१७	उप्यायग	३६	२६२
	१४	६	उप्यायण	२४	१२
	२०	५४		३२	२८,४१,५४, ६७,८०,९३
उदिण्ण	१८	१	उप्फालग	३४	२६
उदीर *			उप्फिड *		
-उदीरेइ	१७	१२	-उप्फिडई	२७	५
उदीरिय	२९	सू० ७२	उभ	२३	९,१०
उद्दायण	१८	४७	उभओ	११	१७
उद्देस	३१	१७		२८	६
उद्देसिय	२०	४७	उभय	१	२५
उद्देहिया	३६	१३७	उम्मग	२३	५६,६१,६३
उद्धत्तु	२५	३३,३७	उम्मज्ज	७	१८
उद्धत्तुकाम	३२	९	उम्मत्त	१८	५१
उद्धरण	२९	सू० ६	उम्माय	१६	सू० ३ से १२
उद्धरिअ	२३	४५	उम्मक्क	३६	६३
उद्धरित्ता	२३	४६	उयहि	१९	३६
उद्धरित्तु	२३	४८	उर	२०	२८
उद्धाइय	१२	१९	उरग	१४	४७,३६, १८१
उप्पइय	२	३२			४
	९	६०	उरब्भ	७	
उप्पज्ज *			उरब्भज्ज	७	
-उप्पज्जइ	१७	२	उराल	१५	१४
उप्पह	२४	५		३६	१०७
	२७	४	उल्ल	२२	३३
उप्पाअ *				२५	४०
-उप्पाएइ	२९	सू० १८,२२			

उत्तम	६	६,५७ से	उत्तम	२२	१३, २३
		५६	उदग (क,अ)	७	२३
	१०	१८, १६		८	८
	११	३१, ३२		११	३०
	१२	४७		१२	३६, ३८, ३६
	१३	१०		२३	६५, ६६
	१४	३७		२८	१२
	१८	८१	उदगा	११	२०
	१६	६७		१३	३५
	२०	५०, ५२, ५५		१४	२
	२३	५१, ६३, ६८	उदय	२३	४८
	२५	६, १७, ३३,	उदहि	११	३०
		३७		३३	१६, २१, २३
		४६		३४	३५ से ३७,
		२६			४१ से ४३,
		२१			५३
	३	१८	उदार	१८	३५
	५	२०, २६	उदाहर *		
	१०	१	-उदाहरिष्मामि	२	१
	३३	१६	-उदाहरे	५	१
	३६	५३, ५८		११	८
उत्तरगुण	३६	११, १३		२२	३६
उत्तरगुणाय	३६	२६८	-उदाहरिन्वा	१०	८
उत्तरिना	३७	१८		१३	१५
उत्तरात्	३६	६०	उदाह *		
उत्तरिन्वा	११	२८	-उदाहरिन्वा	१०	८
				१३	१५

-उदाहृ	६	१७
	१४	६
	२०	५४
उदिण्ण	१८	१
उदीर *		
-उदीरेइ	१७	१२
उदीरिय	२६	सू० ७२
उदायण	१८	४७
उद्देस	३१	१७
उद्देसिय	२०	४७
उद्देहिया	३६	१३७
उद्धत्तु	२५	३३, ३७
उद्धत्तुकाम	३२	६
उद्धरण	२६	सू० ६
उद्धरिअ	२३	४५
उद्धरित्ता	२३	८६
उद्धरित्तु	२३	४८
उद्धाइय	१२	१६
उप्पइय	२	३२
	६	६०
उप्पज्ज *		
-उप्पज्जइ	१७	२
उप्पहृ	२४	५
	२७	४
उप्पाअ *		
-उप्पाएइ	२६	सू० १८, २२

उप्पायग	३६	२६२
उप्पायण	२४	१२
	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ८०, ६३
उप्फालग	३८	२६
उप्फिड *		
-उप्फिडई	२७	५
उभ	२३	६, १०
उभओ	११	१७
	२८	६
उभय	१	२५
उम्मग	२३	५६, ६१, ६३
उम्मज्ज	७	१८
उम्मत्त	१८	५१
उम्माय	१६	सू० ३ से १२
उम्मुक्क	३६	६३
उयहि	१६	३६
उग्	२०	२८
उग्ग	१४	४७, ३६, १८१
उरव्भ	७	४
उरव्भिज्ज	७	
उराल	१५	१४
	३६	१०७
उल्ल	२२	३३
	२५	४०

उत्तरज्ज्भयण गब्द-सूची

१३५

उवमा	२०	३	उववाडय	५	१३
	३२	२०	उववाय #		
	३६	६६	-उववायए	१	४३
उवरअ (य)	६	६	उववायकारअ	१	२
	१५	२	उववूह	२८	३१
उवरि	३६	५७	उववेय	१	१३
उवरिम	३६	६२, २१३, २१४, २१५		१२	१३
				१३	१० मे १३
उवल	३६	७३		२०	११
उवलद्व	२८	२४	उवसत	२	१५
उवलभ *				६	१
-उवलभामि	१६	१३		१५	१५
उवलिप्प #				३४	३०, ३२
-उवलिप्पई	२५	३६	उवसपज्जित्ताण	२६	सू० ३४
उवलेव	२५	३६	उवसपदा	२६	४, ७
उववज्ज #			उवसग्ग	२	२१
-उववज्जइ	३	१७		२६	३४
	७	२७ से २६		३१	५
	३४	५६, ५७	उवसत्त	३२	२६, ४२, ५५
-उववज्जति	८	१४			६८, ८१, ६८
उववत्तिग	२६	सू० १५	उवसम	३२	११
उववन्न	६	१	उवसोहिय	१०	३७
	१३	१		१८	३८
	१७	१	उवम्सअ	२	२३
	२०	४४		३५	५
उववाअ	३४	५८, ५९			

उत्पन्न '			-उवेड		
				२०	४६,५२
-उक्कमन्ति	१२	४		२१	२०
उक्कमाण	०	४३		३२	११,२४ से
उक्कमाणव	११	१४			२६,२६,३३,
	३८	२७,२६			३७ से ३६,
उक्कि	१०	८			४२,४६,५०
	१६	८८			से ५२,५५,
	२४	११,१५			५६,६३, से
	२६	सू० १ ३५			६५,६८,७२,
उक्कअ (य)	१३	८			७६ से ७८,
	१४	५०			८१,८५,८६
	२२	८			से ९१,९४,
	२५	३			९८,१०१,

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

उसुयारिज्ज	१४	
उस्स	३६	८५
उस्सप्पिणी	३४	३३
उस्सिचणा	३०	५
उस्सिय	१०	३५
उस्सुला (दि०)	६	१८
उस्सेह	३६	६४

ऊ

ऊ	१२	११
ऊण	७	१३
	३०	२१
	३४	४६
ऊणोयरिया	३०	८
ऊरु	१	१८
ऊस	३६	७३
ऊससिय	२०	५६
ऊसिय	२२	११

ए

ए ^१		
-एड	२०	५०
-एन्ति	७	१६
-एहि	२२	३८

एउ	४	१०
एक्क	१३	३
	१४	३४, ३६, ४०
	३६	१८१
एक्कअ	३५	६
एक्कसीइ	३४	२०
एक्कारस	२८	२३
एग	१	२६, ३३
एगअ	२	२०
एगइअ	२६	सू० २
एगओ	१४	२६
	३१	२
एगत	६	४, १६
	१६	३८
	२२	३५
	२६	सू० ३२
	३०	२८
	३२	२, ३, १६, २६, ३६, ५२, ६५, ७८, ६१
एगतदिट्ठीअ	१६	३८
एगतग	३६	२५३
एगखुग	३६	१८०
एगग	१	१०
एगग्ग	२६	सू० १, २६, ३१, सू० ४०, ५८, ५७

-एमेजा	६	२	ओकार	२५	२६
	८	११	ओगाह	२४	१८
एमणा	१	३२		३६	२५८, २५६
	२	४	ओगाह	२८	६
	६	१६	ओगाह *		
	८	११	-ओगाहड	२८	२१
	१२	२	ओगाहणा	३६	५०, ५३, ६०,
	२०	४०			६२, ६४
	२४	२, १२	ओघ	२१	२४
	३०	२५	ओभास *		
एसन्त	३०	२१	-ओभामड	२१	२३
एसणिज्ज	१२	७	ओम	३०	१५
	१६	२७	ओमचरअ	३०	२४
	३२	४	ओमचेलअ	१२	६, ७
एसमाण	१४	१४	ओमरत्त	२६	१५
एसित्ता	१	३२	ओमाण	२७	१०
एह			ओमामण	३२	१२
-एहाण	६	३५	ओमोयग्रिय	३०	१४
एह	१२	४३, ४४	ओयण	७	१
			ओग्म	६	३
			ओराल	३६	१२६
ओ			ओरालिय	२६	मू० ७४
ओडण	५	१४	ओह्जभमाण	१४	२०
	१०	३२	ओरोह	६	४
	१६	५५		२०	५८
	२२	२३	ओवगहिय	२४	१३

ओवहिय	३४	२५			
ओवाय	१	२८			
ओस (दि०)	१०	२			
ओसपिणी	३४	३३			
ओसह	१६	७६			
	३२	१२			
ओसहि	११	२६			
	२२	६			
	३२	५०			
	३६	६५			
ओह	१०	३०			
	१४	१७			
	२३	८४			
	३२	३३, ३४, ४६,			
		४७, ५६, ६०,			
		७२, ७३, ८५,			
		८६, ९८, ९९,			
	३४	४०			
ओहरिय	२६	सू० १३			
ओहारिणी	१	२४			
ओहि	३३	६			
ओहिजलिय	३६	१४८			
ओहिनाण	२३	३			
	२८	४			
	३३	४			
ओहोवहि	२८	१३			
			क		
			क	२	२३
			कडय	३५	१४
			कओ	६	१०
			कख *		
			-कखए	५	३१
			-कखे	४	१३
				६	४
				७	७
				१४	२७
			कखा	१६	सू० ३ से १२
			कखामोहणिज्ज	२६	सू० २१
			कचण	३५	१३
			कचि	२०	६
			कचुय	६	२२
				१६	८६
			कटग	१०	३२
				१६	५२
			कठ	१२	६, १८
				२०	४८
			कतार	१६	४६
				२७	२
				२६	सू० २३, ३३, ६०
			कथअ (ग)	११	१६
				२३	५८
			कद	३६	६७, ६८

कद *			कट्टहार	३६	१३७
-कन्दन्ति	६	१०	कड	१	११
कदत	१६	४६		२	४०, ४१
कदप्प	३६	२५६, २६३		४	३
कदली	३६	६७		६	१४
कदिय	१६	सू० ७		१३	६, १०, २८
	१६	५	कडुय (अ)	१६	११
कदु	१६	४६, ५१		३४	१०
कबोय	११	१६		३६	१८, ३०
कस	६	४६	कड्डोकड्ड	१६	५२
कक्क	१३	१३	कणकुडग	१	५
कक्कर	७	७	कणिट्टग	२०	२६, २७
कक्खड	३६	१६, ३४	कण्ह	३६	६८
कच्छ्रम	३६	१७२	कण्हलेसा	३६	२५६
कज्ज	८	१७	कण्हुई	१	७
	२२	१७		२	४०, ४६
	२३	१३	कण्हुहर	७	५
	२४	३०	कत्तु	१३	२३
	२५	३८		२०	३७
	२६	सू० ५	कत्तिय	२६	१५
कट्टु	१	११	कत्तो	३२	३२, ४५, ५८,
	३	२			७१, ८४, ६७
	२०	४७	कत्थ	३६	५५
	३६	२५३, २५५	कत्थई	२	२७
कट्ट	१२	३०, ३६	कन्ना	२२	६ से ८, २८,
	३५	११			३१, ४०

१४२

परिशिष्ट-२

कप्प	३	१५
	१६	६२
	२३	२७
	३२	१०४
कप्प *		
-कप्पड	३०	१८
-कप्पाए	६	२
कप्पणी	१६	६२
कप्पविमाण	२६	सू० १५
कप्पाईय	३६	२०६, २१२
कप्पासडट्टिमिज	३६	१३८
(दे०)		
कप्पिय	१६	६२
कप्पोवग	३६	२०६ से २११
कब्बड	३०	१६
कम*		
-कम्मड	५	२२
कम	३०	५
	३२	१११
	३६	२५०
कमलावई	१४	३
कमसो	१४	११, ५१
	३६	१६७
कम्पिल्ल	१३	२, ३
	१८	१, ३
कम्म	१	१७, ४३

कम्म	२	४०, ४१
	३	२, ६, ७, १३
	४	२ से ४
	५	११, १२
	६	३, १०, १३,
		१४
	७	६, २०
	८	६, १५
	९	२२
	१०	४, १५
	११	३१
	१२	४०, ४४
	१३	८ से १०,
		१६, २३, २६,
		३२
	१४	२, ५, २०
	१८	१७, ४८
	१६	५३, ५५, ५७
	२०	५२
	२१	६
	२२	४८
	२५	२८, ३१, ३२,
		४३
	२८	३६
	२६	सू० २, ७, ११,
		सू० १६, १७, १६,

कम्म	२६	सू० २१, २३, २४,	कय (कृत)	१८	१७
		सू० ३०, ३३, ३८,		२०	५७
		सू० ४४, ६३ मे		२२	६, २१
		सू० ७२, ७४		२४	१७
	३०	१, ६		३२	३२, ४५, ५८,
	३१	३			७१, ८४, ९७,
	३२	७, ३३, ४६,			१०८
		५६, ७२, ८५,	कय (क्रय)	३५	१३, १४, १५
		९८, १०८	कयजलि	२०	५४
	३३	१, १०, ११,		२५	३५
		१३, १४, १७,	कयत्थ	३२	११०
		१८, २०, २५	कयमड	२३	१४
कम्मस (सत्कर्म)	३	२०	कयर	२	सू० २
	२६	सू० ४२, ५६, ६२,		१२	६, ७, ४३
		सू० ७२, ७३		१६	सू० २
कम्मकिब्बिस	३	५	कया	१	२२
कम्मपयडि	२६	सू० २३	कयाइ	१	११
कम्मप्पवीअ	१३	२४	कर	१	२, ३, २६
कम्मभूम	३६	१६६		८	२
कम्मय	८	१		१३	२७
कम्मलेमा	३४	१	कर		
कम्मसपया	१	४७	-अकासी	१	१०
कम्हिच्चि	१५	२		१३	१, २६
कय (कृत)	८	१७		१४	२०
	१३	१५, ३३	-करनि	१६	१६
	१४	१६		१६	६६

-करिस्सड	२	२३	कुञ्जा	४	२
	२३	७५, ७६, ७८		२६	५, ११, १७,
-करे	३०	१५			२०, २१, २७,
	३६	२५२, २५४			३६, ३८, ४१,
-करेइ	४	४			४६, ४९
	१५	१०		३१	२
	२०	४८		३२	२१
	२९	सू० ३, ४, ६,		३५	८
		सू० २६, २९, ४२,	करकडू	१८	४५
		सू० ५६, ५९, ६१,	करकय	१९	५१
		सू० ६२, ७३, ७४	करगय	३४	१८
-करेज्ज	२६	३३, ५०	करण	२६	५
-करेति	९	६२		२९	सू० १७
	१२	३२	करणगुणसेढि	२९	सू० ७
	२२	४९	करणसञ्च	२९	सू० १, ५२
	२७	१३	करणसत्ति	२९	सू० ५२
	२९	सू० १	करवत्त	१९	५१
	३२	१००	करेउ	१९	३९, ४०
	३६	२६०	करेत	९	५९
करेह	२५	३७	करेणु	११	८
-करेहि	१३	३२		३२	८९
-कारए	३५	८	करेता	२९	सू० ७३
-काहामि	१७	२	करेमाण	२९	सू० ३, ७३
-काहिनति	८	२०	कलव	१९	५०
-काहिमि	२२	८८	कलकलत	१९	६८
-कुञ्जा				९	१५

कलह	८	४
	११	१३
	१७	१२
	२६	सू० ४०
कला	६	४४
	२१	६
कलि	५	१६
कलिग	१८	४५
कल्ल	२०	३४
कल्लाण	१	३८, ३९
	२	२३, ४२
	११	१२
कवल	१६	३७
कवाड	३५	४
कविट्टु	३४	१२, १३
कविल	८	२०
कस	१	१२
	१२	१६
कसाय (अ)	१६	६१
	२३	३८, ५३
	२६	सू० १, ३७, ४०
	३१	६
	३६	१८, ३१
कसायज	३३	११
कसाय-		
मोहणिज्ज	३३	१०

कसिण	८	१६
	१५	३, ४, ६
	२१	११
	२६	सू० ७२ -
कह	२३	६० - -
कह *		
-कहसु	२३	२८, ३४, ३६, ४४, ४६, ५४, ५६, ६४, ६६, ७४, ७६
-कहय	२५	१५
-कहेज्जा	१६	सू० ४
-कहेति	१३	३
-काहए	२०	५३
कह	७	२२ -
कहा	१६	सू० ४
	२६	२६
कहावण	२०	४२
कहि	१६	६
कहिचि	८	२
कहित्ता	१६	सू० ४
कहेमाण	१६	सू० ८
काडय	३२	१६
काउ	३४	३, १२, ४१, ५०, ५६
काउ (कर्तुम्)	२२	२१

काउ (कृत्वा)	२२	३५	काम	१६	१०
	३६	२५४		२०	१५
काउज्जुयया	२६	सू० ४६		२५	२६, ४१
काउलेसा	३४	६, २६, ३६		३२	५, १०, १६,
काउस्सग	२६	३८, ४०, ४१,			१६
		४२, ४६, ४८		३५	५
		से ५१	कामकम	१४	४४
	२६	सू० १, १३	कामखध	३	१७
काऊग	२०	७, ५६	कामगुण	१०	२०
	२६	४२		१३	१५, १७, ३०
	२६	सू० २, १८		१४	४, ११, १६,
काऊग	६	२८			१७, ३१, ३५,
	१६	२१			४०, ५०
कागिणी	७	११		१६	१०
काणण	१६	१		३२	२०, ८६,
काम	३	१५	कामदुहा	२०	१०३, १०७
	४	१०	कामभोग	५	३६
	५	४, ६		१३	५, ७
	७	८, १२,		१४	२८, २६, ३४
		२३ से २५			६, १३, ४३,
	८	८, ६, १४			४६
	९	५१, ५३		१६	१३, १४
	१३	१०, १७, ३५		१८	४८
	१८	१८, ८५, ४७		१६	२८
	१६	०		२६	सू० ३
	१८	३८	कामरुवि	३२	१०१
				५	२७
				६	१५

कलड	२	३ॡ
	३	३
	ॡ	१०,२३
	ॢ	११
	ॣ	१०,१ॡ
	१०	२०
	१२	ॡ
	१ॡ	१२
	२१	२२
	२ॡ	२ॡ
	२ॡ	२ॡ
	३०	३ॢ
	३१	ॣ
	३२	ॢ३,ॡॡ,ॡॡ,
		ॣ१,ॣ२,ॣॢ
	३ॢ	ॢ०,१०३
		१०ॡ,११ॡ,
		११ॡ,१२३,
		१२ॡ,१३३,
		१ॡ२,१ॡ२,
		१ॡ३,१ॢॣ,
		१ॡॡ,२ॡॢ
कलडकलडस	३०	ॣ,२ॡ
कलडकुतुत	१२	३
	२२	ॡॡ
	२ॢ	सू० ॡॢ

कलडकुतुतडल	२ॢ	सू० १,ॡॢ
कलडकुतुतल	२ॡ	२
कलडकुतुतल	३०	१२
कलडकुतुतल	३ॢ	ॣ१,ॣॢ,
		१०३,११ॡ,
		१२३,१३३,
		१ॡ२,१ॡ२,
		१ॢॡ,१ॡॢ,
		१ॣॢ,१ॢ३,
		२०२,२ॡॡ
कलडर	२०	३ॣ
	२१	१ॡ
कलडवुसुसगु	२ॢ	ॡॢ
कलडवुव	२ॢ	ॢ,१०
कलड-		
सडलधलरणडल	२ॢ	सू० १,ॡॢ
कलडरअ	ॢ	३०
कलडरइतुतलण	ॢ	१ॣ,२ॡ
कलडरण	ॢ	ॣ,११,१३,
		१ॡ,१ॢ,२३,
		२ॡ,२ॡ,२ॢ,
		सु ३३,३ॡ,
		३ॢ,ॡ१,ॡ३,
		ॡॡ,ॡॡ,ॡ०
	२०	२ॡ
	२२	१ॢ,ॢ२
	२३	१३,२ॢ,३०

१४८

परिशिष्ट-२

कारण	२४	४—
	२६	३१ -
	२७	१०
	२८	१
	३१	८
	३६	२६२, २६६
काग्व #		
-काग्वे	२	३३
कारिस	१२	४३, ४४
कारण	३२	१०३
काल	१	१०, ३१, ३२
	४	६
	५	३१, ३२
	१०	५ से १२
	१२	६, ६, २७
	१३	२२, ३१
	१४	१३, २६, ५२
	१६	८
	१८	३२
	१९	२६
	२०	८, ४५
	२१	१४
	२३	५
	२४	४, ५, १०,
		१७
	२१	८

काल	२६	२०, २२, ३७, ४४, ४५
	२८	७, ८, १०
	२९	सू० १, १६, २३
	३०	१४, २०, २१, २४
	३२	१, २८, ३१, ४१, ४४, ५४, ५७, ६७, ७०, ८०, ८३, ९३, ९६, १११
	३५	१६
	३६	११, १३, ७८, १११, १२०, १५८, १७३, १८२, १८६, १८९, १९३, २१७
कालओ	२४	६, ७
	३६	३
कालकखि	६	१४
कालकूड	२०	४४
कालग	२२	५
कालवम्म	३५	२०
कालिजर	१३	६
कालिय	५	६

काली	२	३
कालोमाण	३०	२०
काविलीय	८	
कावोया	१६	३३
कासग	१२	१२
कासव	२	सू० १ से ३
	२	१, ४६
	२५	१६
	२६	सू० १
कासी	१३	६
	१८	४८
कि	६	७
किचण	६	१४, ४०
	३२	८
किचि	१	१४
किमाग	१६	१७
	३२	२०
किपुरिस	३६	२०७
किच्च	१	१८, ४४, ४५
	१४	१५
	३२	१०८
किच्च *		
-किच्चड	४	३
किच्चा	२	१५
	६	२०, २१

किच्चा	१८	५०
	२०	१
किट्टडत्ता	२६	सू० १
किड्डा	१६	६
किणत	३५	१४
किणह	३६	१६, २२, ७२
किणह्लेसा	३४	४, २२, ३४
किणहा	३४	३, १०, ४३, ४८, ४९, ५६
कित्त *		
-कित्तडस्सामि	३२	६
कित्तयअ	२४	६
	३६	४८, १७६, १६५, २०४
कित्ति	१	४५
	११	१५
	१४	३
	१८	३६, ४६
किन्नर	१६	६
	२३	२०
	३६	२०७
किच्चिसिय	३६	२५६, २६५
किमि	३६	१२७
किरिया	१८	२३, ३३
	२८	१६, २५
	३१	७, १२

कुण *			कुमारसमण	२३	२, ६, १६,
-कुणई	१६	७६			१८
	२६	२७, २६	कुमुय	१०	२८
	३६	२६३ से २६६	कुम्मास	८	१२
कुणत	२६	२६	कुररी	२०	५०
कुणमाण	१४	२४, २५	कुल	१३	२
कुतित्थि	१०	१८		१४	२, २६
कुदसण	२८	१८		२०	४०, ४२
कुदिट्ठि	२८	३६		२३	१५
कुद्ध	१२	२०		२५	१
	१८	१०	कुलल	१४	४६
	२०	२०	कुविय	१	४१
	२७	६		१२	२८
कुप्प *			कुव्व *		
-कुप्पइ	११	८, १२	-कुव्वड	१	४४
-कुप्पह	१२	३३		५	४
-कुप्पेज्ज	१	६	-कुव्वन्ति	२०	२३
कुप्पवयण	२३	६३	-कुव्वेज्ज	६	२६
कुप्पह	२३	६०	-कुव्वेज्जा	१	१४
कुमार	१२	१६, २०, २४,		६	१५
		३२	कुस	७	२, २
	१४	३		६	४८
	१६	६७		१०	२
	२२	८		१२	३६
कुमाग्ग	१४	११		२३	१७

केसि	२३	८२, ८६, ८८, ८९	कोविय	१५	१५
केसिगोयमिज्ज	२३		कोस (कोष)	९	४६
कोइलच्छद (दे०)	३४	६	कोस (क्रोग)	३६	६२
कोउग (य)	२२	९	कोसम्ब्री	२०	१८
	२३	१९	कोसलिय	१२	२०, २२
कोऊहल	१५	६	कोह	१	१४
	२०	४५		४	१२
कोक्कुय	३६	२६३		९	३६, ५४, ५६
कोट्ट	३०	१७		११	३
कोट्टुग	२३	८		१२	१४
कोट्टागार	११	२६		२४	९
कोडि	८	१७		२५	२३
	१८	१०		२६	सू० १, ६८
	३०	६		३२	१०२
	३४	४६	कोहण	२७	९
	३६	१७५, १८५, १९२, २०१	कोहवेयणिज्ज	२९	सू० ६८
कोडिकोडि	३३	१९, २१, २३	कोहि	११	७
कोडीसहिअ	३६	२५५			
कोत्थल (दे०)	१९	४०	ख		
कोल	१९	५४	खअ		
कोलाहलग	९	५, ७	-खज्जड	१२	१०
कोव	१२	३१	खज	३८	८
कोवय *			खड	१९	६९
-कोवए	१	४०		३४	१५

खंत	२०	३२,३४
खंति (न्ति)	१	६,२६
	३	८,१३
	५	३०
	६	२०,५७
	२०	६
	२२	२६
	२६	सू० १,४७,६८
खंतिक्खम	२१	१३
खघ	३६	१०,११
खग	६	१०
खज्जूर	३४	१५
खड्डुया	१	३८
खण	१४	१३
	१६	१४
	२०	३०
	३२	२५,३८,५१, ६४,७७,९०, १०८
खण *		
-खणह	१२	२६
खण्डिय	१२	१८,३०
खत्त	१२	१८
खत्तिय	३	४,५
	६	१८,२४,२८, ३२,३८,४६

खत्तिय	१५	६
	१८	२०
	२५	३१
खम *		
-खमाह	१२	३०,३१
-खमे	१८	८
खम	१४	२८
	१८	५२
	३२	१३
खमावणया	२६	सू० १,१८
खय	६	१३
	२०	३३
खर	३६	७१,७२
खरपुढवी	३६	७७
खल (अप + सू)*		
-क्खलाहि	१२	७
खल (स्खल्) *		
-खलेज्ज	१२	१८
खलु	१	१५
खलुक	२७	३,८,१५
खलुकिज्ज	२७	
खव *		
-खवेइ	२६	सू० २,८,११, सू० १६,२५,३०, सू० ३४,४२,५६, सू० ६२,७२,७३

-खवेड	३०	१	खीण	१३	३१
	३२	१०८		२३	७८
खवण	३३	२५	खीर	१४	१८
खवित्ता	२५	४३		३०	२६
खवित्ताण	२२	४८		३४	६, १५
खवित्तु	११	३१	खु	२	३३
खवेऊण	२१	२४	खुर	१६	५६, ६२
खवेत्ता	२८	३६	खुडु	१	६
खहयर	३६	१७१, १६१, १६३	खुडुअ	३२	२०
खाइत्ता	१६	८१	खुडुगनियठिज्ज	६	
खाइम	१५	११, १२	खुद्द	३४	२१, २४
खाणि	१४	१३	खेड	३०	१६
खाणु	१४	२६	खेत्त	३	१७
खाम *				१२	१२ से १५
-खामेमि	२०	५६		१३	२४
खाय *				१६	१६
-खायह	१२	२६		३०	१४, १८, २४
खाय	१४	१		३३	१६
खाविय	१६	६६	खेत्तओ	२४	६, ७
खिस *				३६	३, ११
-खिसई	१७	४	खेम	७	२४
-खिसएज्जा	१६	८३		६	२८
खिप्प	१	४४		१०	३५
खिप्पामेव	२६	सू० २३		२१	५
				२३	८०, ८३

१५६

परिशिष्ट-२

खेय	१५	१५
खेल	८	५
	२४	१५
खेल्ल *		
-खेल्लन्ति	८	१८
खेव *		
-खेवेज्ज	२१	१८
खेविय	१६	५२
खोडा	२६	२५
खोभइउ	३२	१६
रा		
गअ	१	२२, ४३
	७	१८
	६	३, १०, ३६, ३७
	११	३१
	१३	१८, २५, ३५
	१४	४२
	१६	सू० ५
	१८	६, ३६
	१६	७
	२०	३३
	२१	२४
	२६	सू० ८
	३२	३३, ४६, ५६, ७२, ८५, ९८
	३३	१८
	३६	६३

गई	५	१२
	७	१६, १७
	६	५४
	१०	३७
	११	३१
	१३	३५
	१८	२५, ३८, ४०,
		४२, ४३, ४७
	१६	६७
	२०	१
	२३	६५, ६६, ६८
	२८	१, ६
	२६	सू० ७४
	३४	२, ४०
गगा	१६	३६
	३२	१८
गठिभेय	६	२८
गठियसत्त	३३	१७
गड	८	१८
	१०	२७
गडीपय	३६	१८०
गतव्व	१८	१२
	१६	१६
गता	२६	सू० ७४
गतु	६	२६
गतूण	३६	५५, ५६

गथ	८	४	गधिअ	२२	२४ -
गध	१२	३६	गभीर	११	३१
	१६	सू० १२		२७	१७
	१६	१०	गगण	२२	१२
	२०	२६	गग्ग	२७	१
	२८	१२	गच्छ *		
	२६	सू० ४६, ६५	-गच्छ	१२	७
	३२	४८ से ६०		१६	८५
	३४	२, १६, १७	-गच्छई	३	३
गधओ	३६	१५, १७, २२		५	५
		से ४६, ८३,		११	६
		६१, १०५,		१८	१७
		११६, १२५,		१६	१६, २१, ८०,
		१३५, १४४,			८१
		१५४, १६६,		२०	४५, ४७
		१७८, १८७,		२३	५६
		१६४, २०३,		२७	६
		२४७		३२	१६
गधण	२२	४३	-गच्छन्ति	५	२८
गधवास	३४	१७		७	१०
गधव्व	१	८८		८	७
	१६	१६		१४	४४
	२३	२०		१८	२५
	३६	२०७		२३	६१
गधहत्थि	२२	१०		२८	३
गधार	१८	४५		३४	६०

-गच्छसि	६	१८, २४, २८, ३२, ३८, ४६, ५८	-गमिस्सामो	१४	२६
	१०	३२, ३५	-गमिस्ससि	२३	७०
-गच्छामि	१३	३३	गमण	१६	३७
-गच्छे	२	६		२६	५
	५	२४	गमित्तए	१०	३४
-गच्छेज्जा	२	२१	गय	१८	३
	८	१		३६	१८०
गच्छत	५	१३	गयण	२६	२०
	१६	१८ से २१	गया	११	२१
गण	१०	१	गयाणीय	१८	२
	१५	६	गयास	१६	६१
	३४	५१	गरहणया	२६	सू० १, ८
	३६	२०८	गरहा	१	४२
गणण	२६	२७		२१	१५, २०
गणहर	२७	१	गरहिय	१७	२०
गणिभाव	२७	१	गरुय	३६	१६
गत्त	१६	१३	गल	१६	६४
	१६	६१	गलि	१	१२, ३७
गद्भालि	१८	१६, २२		२७	१६
गद्दह	२७	१६	गव	६	५
गवभवक्कतिय	३६	१७०, १६५, १६६	गवल	३४	४
गम *			गवेस *		
-गमिस्सामु	१४	३१	-गवेसए	६	१६
				१०	३०
				२६	३१

गवेसअ	२	१७
	११	३२
	२५	६
	३४	२३
गवेसणा	२४	११
गह *		
-गहिन्ति	४	१
गह	२५	१७
	३६	२०८
गहण	२३	३२
	२४	११
	२६	सू० २
	३२	२३, २३, ३५,
		३६, ४८, ४९,
		६१, ६२, ७४,
		७५, ८७, ८८
	३६	२६७
गहाय	४	२
	१३	२२
गहिअ	१६	६४, ६५
गहीअ	४	३
	३२	७६
गाढ	१०	४
गाणगणिअ	१७	१७
गाम	२	१८
	६	१६

गाम	१०	३६
	३०	१६
गामकंटग	२	२५
गामाणुगाम	२	१३
	२३	३, ७
	२५	२
गामि	१४	३३
	२३	७१
गाय	२	६, ३४, ३६
गारत्थ	५	२०
गारव	१६	८६, ६१
	२७	६
	३१	४
गारविअ	२७	६
गाह	३२	७६
	३६	१७२
गाहा	१३	१२
गाहासोलसअ	३१	१३
गाहिय	१७	४
गिज्भ *		
-गिज्भेज्जा	८	१८
गिज्भ	१६	४, ५
	२३	५१
गिज्भा	२६	३५
गिण्हत्त	२४	१३

गिद्ध (गृद्ध)	५	४,५,१०	गिहत्थ	२	१६
	७	६		५	२२,२८
	८	११,१४		२३	१६
	१३	१५,२८,३०,		२५	२७
		३३	गिहवास	५	२४
	१८	७		३५	२
	२०	३६	गिहि	७	२०
	३२	५०,६३,८६		१५	१०
	३५	१७		१७	१६
गिद्ध (गृध्र)	१४	४७	गिहिलिग	३६	४६,५२
	१६	५८	गीय	१३	१४,१६
गिद्धि	३२	२४,३७,५०,		१६	सू० ७
		६३,७६,८६		१६	५,१२
	३४	२३	गीवा	३४	६
गिरा	१२	१५	गुजा	३६	११८
गिरि	११	२६	गुच्छ	३६	६४
	१२	२६	गुण	४	११,१३
	१६	४१		६	६
	२२	३३		१२	१
गिलाण	५	११		१३	१२,१३,१७
गिह	६	७,२४		१४	१०,१७
	१३	१३,२४		१८	४६
	१४	७,६,२१		१६	५,२४,३५,
	१५	१६			३६,४७,४८
	३५	८,६		२०	५१,५२,६०
गिहकम्म	३५	८			

गुण	२५	३३
	२८	५, ६, ३०
	२६	सू० १, ३६, ४५
	३१	१८
	३२	५
	३४	१० से-१३, १५ से १६
	३६	५८
गुणओ	३२	५
गुणगाहि	३६	२६२
गुणत्तण	२६	सू० ३६
गुणवत	२३	१०
गुणावह	१६	६८
गुणिय	७	१२
	१६	७३
गुत्त	१२	१७
	१६	सू० १ से ३
	१६	८८
	२०	६०
	३४	३१
गुत्ति	१२	१७
	२४	१, १६, २६
	२६	३४
	२८	२५
	३४	३१
गुम्म	३६	६४

गुम्मी	३६	१३८
गुरु	१	२, ३, १६, २०
	७	६
	१७	१०
	२६	७, ८, २१, २२, ३७, ४० से ४२, ४५, ४८ से ५१
	२६	सू० १, ५
	३२	३
गुरुअ	१६	३५
	३६	३६
गुरुकुल	११	१४
गुरुभत्ति	३०	३२
गूढ	२५	१८
गेण्ह *		
-गेण्हइ	२५	२४
गेण्हण	१६	२७
गेद्धि	३४	२३
गेहय	३६	७६
गेविज्ज	३६	२१२
गेविज्जग	३६	२१५
गेह	६	६१
	१७	१८
	१६	२२

१६२

परिशिष्ट-२

गेहि	६	४
गो	६	४०
	३४	१६, १८
गोच्छ्रगा	२६	२३
गोण	३६	१८०
गोत्त	३	२
	१८	२१, २२
	२६	सू० ४४, ७३
	३३	२३
गोपुर	६	१८
गोमुक्ति	३०	१६
गोमेज्जञ	३६	७५
गोय	२६	सू० ४२
	३३	३, १४
घोयम	१०	१ से ३७
	१८	२२
	२२	५
	२३	६, ६, १४
		से १८, २१,
		२२, २५, २८,
		३१, ३४, ३५,
		३७, ३९, ४२,
		४४, ४५, ४७,
		४९, ५०, ५२,
		५४, ५५, ५७,
		५९, ६०, ६२

गोयम	२३	६४, ६७, ६९, ७०, ७२, ७४, ७७, ७९, ८२, ८५, ८६, ८८, ८९
गोयर	१६	८०
गोयरगा	२	२६
	३०	२५
गोयरिया	१६	८३
गोलय (अ)	२५	४०, ४१
गोवाल	२२	४५
गोहा	३६	१८१
घ		
घण	३०	१०
	३६	११८
घत्तु	१८	७
घत्थ	१६	१४
घय	३	१२
	१४	१८
घर	६	२६
	२१	५
	३०	१८
घरणी	२१	४
घाण	१०	२३
	३२	४८, ४९

घाणिदिय	२६	सू० १,६५
घास	२	३०
	८	११
	३०	२१
घिसु	२	८,३६
घुट्ट	१२	३६
घेत्तूण	७	१४
	१२	१८
घोर	४	६
	१४	५०
	१८	२५
	१६	३३,७२
	२०	२१
	२२	३१
	२३	५०,७५
	२५	३८
घोरपरक्रम	१२	२३,२७
	१४	५०
	२३	८६
घोररूढ	१२	२५
घोरव्वय	१२	२३,२७
घोरासम	६	४२
घोस	११	१७
	३०	१७

च		
च	१	६
चइत्त(त्यक्त्वा)	१८	१६
चइत्तं (त्यक्तु)	१३	३२
चइत्तण	७	३०
	६	१,६१
	१३	३३
चइत्तण	१	२१
चइत्ता	१४	४६
	१८	३६,३८,४१
चइत्ताण	१	५
	६	५
	६	४२
	१८	४४
	१६	१६
	२७	१६
	३६	५५,५६
चइत्तु	१	४८
	१३	२०
चइयव्व	१६	१३
चउ	३	१,१७
	१८	२३
	२४	८
	२६	११,१४,१७
	२८	१
	३०	२०

१६४

परिशिष्ट-२

चउ	३४	४०
	३६	५२ से ५४,
		२४३
चउक्क	१६	४
	२४	१२
	३६	२५२
चउत्थ	२४	२०
	२६	२, १२, १६,
		१८, २६, ३६,
		४३, ४४
	३३	१२
	३६	१६३, २३७
चउद्दस	११	६, २२
	३६	२२७, २२८
चउप्पय	१३	२४
	२६	१३
	३६	१७६
चउन्माअ (ग)	२६	८, १६ से
		२२, ३७, ४५
चउभाग	३०	२१
चउर (इदिय)	३६	१२६
चउरग	३	२०
चउरगिणी	२२	१२
चउरस	३६	२१, ४५

चउरिदिय	३६	१४५, १४६,
		१५१, १५२
चउरिदियकाय	१०	१२
चउविह	३६	१७६
चउवीस	३६	२३५, २३६
चउन्विह	१६	३०
	२४	२०
	२८	१८
	३३	१२
	३६	४, १०, ११,
		७८, १११,
		१२०, १५५,
		१५८, १७३,
		१८२, १८८,
		१८६, २०४,
		२१७
चउव्वीसत्थअ	२६	सू० १, १०
चउहा	३६	१२६
चचल	१८	१३
चंड	१	१३
	१७	८
	१६	७२
चडाल	३	४
चडालिय	१	१०, ११
चद	११	२५
	२३	१८

चंद	२५	१६, १७
	३६	२०८
चदण	१६	६२
	३६	७६, १२६
चदप्पह	३६	७६
चंपा	२१	१, ५
चक्क	६	६०
	११	२१
	१४	४
	२२	११
चक्कवट्टि	११	२२
	१३	४
	१८	३६ से ३८, ४१
चक्खिदिय	२६	मू० १, ६४
चक्खु	५	५
	१०	२२
	१६	४
	२४	७, १४
	२६	३५
	३२	२२, २३
	३३	६
चक्खुफास	१	३३
चच्चर	१६	४
चत्त	६	१५
	१२	४२
	१६	८६

चम्म	३६	१८८
चय *		
-चयड	२६	मू० ४
	३१	४
-चयति	१३	३१
-चयसि	६	५१
चयरित्तकर	२८	३३
चर *		
-चर	४	६, ८, १०
	१८	३३
	२२	४३
-चरडै	१७	८
	१६	७७
-चरन्ति	१२	१५, ४१
	१४	३५
	२३	८३
-चरिज्ज	२१	१२, १३
-चरिस्ससि	१६	४३
-चरिस्सामि	१४	३२, ४१
	१५	१
	१६	८४, ८५
-चरिस्सामु	१४	७
-चरिस्सिमो	२३	३८
-चरे	१	३२
	२	३, ४, १५, १८, १६

-चरे	४	७	चरम	३४	५६
	६	१६	चरमाण	३०	२०, २३
	६	४६	चराचर	३२	२७, ४७, ५३,
	१०	३६			६६, ७६, ६२
	१२	४०	चरिउ		
	१४	४७	(चरितुम्) १६		३७
	१५	३	चरिउ		
	१६	१५	(चरित्त्वा) २१		२३
	१८	१५, ३१, ३७,	चरित्त	१६	३८
		४१, ४३, ४७,		२०	५२
		५१		२२	२६
	३५	१६		२३	३३
	३६	२५२, २५३,		२६	३६, ४७
		२५५		२८	२, ३, ११,
-चरेज्ज	२	१७			२५, २६, ३५
	१५	२		२६	सू० १, १२, १५,
चरत	२	६			३२, ५६, ६०,
	४	११			६२, ७२
चरण	१८	२२, २४	चरित्तगुत्त	२६	सू० ३२
	१६	६४	चरित्तगुत्ति	२६	सू० ३२
	२३	२, ६	चरित्तधम्म	२८	२७
	२४	५, २६	चरित्तमोहण	३३	१०
	२८	३०	चरित्तमोहणिज्ज	२६	सू० ३०
	३३	८	चरित्ता	१८	२५
चरणविट्ठि	३१			२६	०
	३१	१		३१	

चरित्ताण	२६	१
चरित्ताण	१६	८१, ८२
	२२	४८
चरिम	२३	२७
	३६	५६, ६४
चरिय	१६	६७
चरिया	२	सू० ३
चवल	६	६०
चवेड	१६	६७
चवेडा	१	३८
चाइय	३२	१६
चाउज्जाम	२३	१२, २३
चाउप्पाय	२०	२३
चाउरंत	११	२२
	१६	४६
	२६	सू० २३, ३३, ६०
चाउरगिज्ज	३	
चामर	२२	११
चारि	१६	८३
चारित्त	१३	३५
	२८	३३
चारु	१६	४
चारुपेहिणी	२२	७
चारुभासिणी	२२	३७
चावेयन्व	१६	३८
चाम	३४	५

चिइ	१३	२५
चित्त *		
-चित्तए	२	७, १२, २६, ४४, ४५
-चित्तिज्ज	२६	३६, ४७
-चित्तेइ	२२	१८
चित्तइत्ताण	२०	३३
चित्तत	१६	५६
चित्ता	१४	२२
	२३	१०
चिच्चा	७	२८
	६	४
	१८	२०
चिच्चाण	१०	२६
चिट्ठ *		
-चिट्ठइ	१	४७
	३	१२
	१०	२
	२१	२१
	२३	४५, ५०
-चिट्ठई	२७	६
-चिट्ठसि	१०	३४
	२३	३५
-चिट्ठति	३	१५
	२३	७५
-चिट्ठे	१	१६, २६

-चिट्ठेज्ज	१	३३	चित्तसम्भूइज्ज	१३	
-चिट्ठेज्जा	१	३२	चित्तहर	३५	४
-विट्ठन्ती	२५	१७	चित्ता	२२	२३
चिट्ठमाण	२	२१	चिय	७	७
चिण *			चिया	१६	५७
-विणाइ	३२	३३, ४६, ५६, ७२, ८५, ९८	चिर	२०	४१, ४३
चिण	२१	२२	चिरकाल	१०	४
चित्त (चित्त)	१	१३	चीर	५	२१
	८	१८	चीवर	२२	३४
	१४	४	चुण्णिय	१६	६७
	२२	३४	चुय (अ)	३	१६
	२६	सू० २६		७	१०
	३२	१, १२, १४, ३३, ४६, ५६, ७२, ८५, ९८		१४	१
चित्त (चित्र)	६	१०	चुलणी	१८	२६
	१३	२, ३, ६, ११, १३, १५, २८, ३५	चूडामणी	२०	४७
	३०	११	चे	१३	१
	३२	२७, ४०, ५३, ६६, ७६, ९२	चेइय	१६	सू० ३ से १२
चित्त (चैत्र)	२६	१३	चेइय	६	६, १०
चित्तपत्तय	३६	१४८		२०	२
चित्तमत	२५	२४	चेच्चा	१३	२४
				१४	५०
				१५	१६
				१८	३४, ४७
			चेट्टा	१२	२६
			चेय	१८	३२, ५०
				२०	१७, ५८

चोडय	६	८, ११, १२, १७, १६, २३, २५, २७, २६, ३१, ३३, ३७, ३६, ४१, ४३, ४५, ४७, ५०, ६१	छद	१६	७५
	१७	१६		२१	१६
	१८	४४	छदणा	२६	३, ६
	१९	५६	छक्क	३१	८
चौज्ज	३५	३	छज्जीवकायि	१२	४१
चोयण	१	२८	छट्ट	२६	२६, ३२
चोर	३२	१०४		३०	१६, ३६
				३४	३
				३६	१६५, २३६
			छट्टय	२६	३
				३०	११
			छट्टिया	१३	७
			छत्त	१८	४२
				२२	११
				३६	५७
			छत्तग	३६	६०
छ	२६	१६, २५, ३०, ३१, ३३	छत्तीस	३६	७७, २६८
	३१	८	छत्तीसईविह	३६	७२
	३३	१८	छन्न	२५	१८
	३४	१, २१	छन्भाज	३६	६२
	३६	१५१, २५१	छेवि	२२	५
छउम	२	४३	छेवित्ताणे	२	७
छउमत्त्य	२८	१६, ३३	छविपेव्व	५	२४
छेदे	४	८	छेवीसइ	३६	२३८
	१८	३०	छन्विह	२८	३४
				३०	७, १०

छन्वीस	३६	२३७
छाया	२८	१२
छिद *		
-छिद	६	४
छिदड	२०	३६
	२७	७
-छिदई	१६	८६
-छिदे	२	२
छिदाव *		
-छिदावण	२	२
छिदित्तु	१४	३५
	२३	४३
छिदिया	१०	३७
छिता	१४	४८
	२३	४१, ४६
छिद	२६	सू० १२
छिन्न	१४	२६, ४१
	१५	१, ७
	१६	५१, ५४, ५५, ६०, ६२, ६६
	२३	२८, ३४, ३६, ४४, ४६, ५४, ५६, ६४, ६६, ७८, ७६, ८५, ८६
	२५	३८

छिन्नसोय	२१	२१
छिन्नाल	२७	७
छिन्नावाय	२	५
छुभित्ता	१८	३
छुरिया	१६	६२
छुहा	१६	१८, २०, ३१
छूढ	२५	४०
छेअ	७	१६
	३०	१३
छेतु	२०	४८
छेतूण	७	३
छेओवट्टावण	२८	३२
छेयण	२६	सू० ४, ६१

ज

ज	१	२१
जअ	६	३४
जइ (यदि)	१	१७
	१२	१७, २८
	१३	३२
	१४	३६
	१८	१७
	२०	३२
	२२	१६, ४१, ४४
	२५	२३, २४

जइ (यति)	२४	१२, १४, २१,	जक्ख	२३	२०
		२३, २५		३६	२०७
	२६	३८	जग	८	१०
जइत्ता (जित्वा)	६	३५		१८	३६, ४३
जइत्ता				१६	२५
(याजयित्वा)	६	३८	जगई	१	४५
जइय	२५	३६	जट्ट	२५	२८
जओ	१	७, २१	जट्टा	६	३८
	१२	२	जडि	५	२१
जत	२२	३३	जण *		
जतिय	३२	१२	-जणयड	२६	सू० २ से ७३
जतु	३	१	जण	४	१
	७	६		५	७
	१४	४२		६	३०
	१६	१५		१०	१८, १६
	२३	६०		१२	२५, २८, ३३
	२८	७, ८		१३	१४, १८,
	३२	२५, ३८, ५१,		१६	सू० १२
		६४, ७७, ९०,		१६	१
		११०		२२	१७, २७
जपिय	३२	१४		३२	३, १५
जक्ख	३	१४, १६	जणअ	२२	८
	५	२४, २६	जणइत्ता	२६	सू० ५७
	१२	७, २४, ३२,	जणणी	१६	२
		४०, ४५	जणवय	६	४
	१६	१६	जणवयकहा	२६	२६

१७२

परिशिष्ट-२

जत्ता	१६	८	जय (यत्)	१	३५
	२३	३२		१२	२
जत्तिअ	३०	२०		२४	१२, १४, २१,
जत्थ	५	१२			२३, २५
	७	२७		२६	३८
	९	२६	जय (यत्) *		
	१७	१३	-जए	३३	२५
	१८	१३	जय (यज्) #		
	१९	१५	-जयई	१२	४२
	२३	८१		२५	४
	२४	३	-जयामो	१२	४०
जन्न	९	३८	जयत (जयत्)	४	११
	१२	१७, ४२	जयत (जयत्)	३६	२१५
	२५	४, ५, ७, ११, १४, ३६	जयघोस	२५	१, ३४, ४२, ४३
जन्नइज्ज	२५		जयणा	२४	४, ६
जन्नट्ठि	२५	१६	जया	१४	४०
जन्नवाई	२५	१८		१८	१२
जन्नवाड	१२	३		१९	७८, ८०
जमजन्न	२५	१		२६	१९
जम्बू	११	२७	जरा	४	१
जम्म	१४	५१		१३	२६
	१९	१५, ४६		१४	४, १४, २३
	२०	५५		१९	१४, १५, २३,
जम्मण	३९	२६७			४६
ज्य (ज्ज)	१८	८३		२३	६८, ८१

जल	१६	५६
	२३	५१, ५३
	२५	२६
	३२	३४, ४७, ६०, ७३, ७६, ८६, ९६
	३५	११
	३६	५०, ५४, २६७
जलत्त	११	२३
	१६	४६, ५६, ५७, ७०
जलकत	३६	७६
जलकारि	३६	१४८
जलग	३६	२६७
जलयर	३६	१७१, १७२, १७५ से १७७
जलरुह	३६	६५
जलागम	३०	५
जलूग	३६	१२६
जल्ल (दि०)	२	सू० ३
	२	३७
	१६	३१
जल्लिय (दि०)	२४	१५
जव (यव)	६	४६
	१६	३८
जव (जव)	११	१६

जवण	८	१२
	३५	१७
जवमज्ज	३६	५३
जवस	७	१
जवोदग	१५	१३
जवोदण	१५	१३
जस (यशस्)	३	१३, १८
	७	२७
जससि	५	२६
	२१	२३
जसा	१४	३
जसोकामी	२२	४२
जह	१०	२, ३३
	१६	५६
	२०	४२, ४४
जह *		
-जहाइ	१४	३२
	१५	६
	१६	८४
-जहासि	१२	४५
-जहिज्ज	१५	१
जहक्कम	१४	११
	२२	१२
	२३	४३
	२६	४०, ४८
	३३	१
	३४	१, ३

१७४					
जहन्न	३०	१५	जहन्निय	३६	१२२, १३२,
	३४	३४ से ३६, ४२, ४६, ४६, ५०, ५२, ५४, ५५			१४१, १५१, १७५, १७६, १८४, १८५, १६१, १६२, २००, २०१, २२१, २५१
	३६	५०, ५३, १६० से १६७, २१६, २२०, २२२ से २४३, २४५	जहा	१	४
जहन्नय (ग)	३६	१४, ८१, ८२, ६०, १०२ से १०४, ११४, ११५, १२३, १२४, १३३, १३४, १४२, १४३, १५२, १५३, १६८, १७७, १८६, १६३, २०२, २४६	जहाजाय	२२	३४
			जहाठाण	३	१६
			जहाणुपुव्वी	२६	सू० ७२
			जहाथाम	३०	३३
			जहानाय	२३	३८, ४३, ४६, ४८
			जहाफुड	१६	७६
			जहाभूय	२०	५४
			जहामट्ट	२५	३५
			जहाय	१४	२१
				२०	५१
			जहावाड	२६	सू० ५२
जहन्निय	३३	१६, २१ से २३	जहामुत्त	३५	१६
	३४	८१, ८३, ४८, ५३	जहासुय	१	२३
	३६	१३, ८०, ८८, ८६, ११३,	जहासुह	१७	१
			जहाहिय	२०	८४, ८५, २३

जहिऊग	३५	२०	जाड	२२	४०
जहि	१२	१३		३२	७
जहिच्छ	२३	२२	जाडपह	६	२
जहित्ताण	१८	४०	जाइय	२	२८
जहित्तु	२१	११	जाईसगण	१६	७.८
जहोड्य	२२	२१	जाण *		
जा * (जन्)			-जाणइ	५	६
जायड	१६	७८		२८	३५
-जायए	१	४५		३२	१०६
-जायति	३२	१०५	-जाणामि	१३	२७
जा * (या)				१७	२
-जाड	३	१२		१८	२७
-जति	७	२१	-जाणासि	२५	११, १२
	६	५३	-जाणाह	१२	१५
	१४	२४, २५	-जाणाहि	१२	१०
	२२	३२		१३	११
जाभ	१३	२, १२	-जाणे	१४	२७
	२०	३५		१८	२६
जाड	३	२		२०	१६
	६	१, २	-जाणति	३६	२६१
	१२	५, १३, १४,	जाण (जाणत्)	५	१८
		३७	जाण (यान)	७	८
	१३	१, ७, १८	जाणमाण	१३	२६
		१६	जाणय	२०	६२
	१८	४५	जाणिऊण	३६	९
	१६	८	जाणिना	१	३८

जाणिय	२१	१४
जाय *		
-जायड	२२	६
-जायाहि	२५	६
जाय	७	२
	८	४
	१४	६, १२, १८, २२, २६, ३४
	१६	४३
	२१	४
	२२	४८
	२५	२६
	२७	१४
जायवन्ध	११	१६
जायग	२५	६, ६
जायणजीवि	१२	१०
जायणा	२	सू० ३
	१६	३२
जायनेय	१०	२६
जायव	२५	२१
	३५	१३
जाया	८	११
जायाट	२५	१
जायि	१८	७३
	२७	८९
जायि	३१	१० से १४

जाल	१४	३५, ३६
	१६	६५
	३२	६
जालग	३६	१२६
जाला	३६	१०६
जाव	२	३७
	४	१३
	७	३
	२६	सू० ७२
जावइ	३६	६७
जावत	६	१
जावज्जीव	१६	२५, ३५
	२२	४७
जि *		
-जयड	३१	७ से २१
	३६	१
-जिणेज्ज	६	३४
-जीयन्ति	७	१३
जिडदिय	१२	१, ३, १७, २२
	१५	१६
	२२	२५, ३१, ४७
	२६	सू० ४३
	३०	३
	३८	३०, ३२
जिच्च	७	२२
जिच्चामाण	७	२२

उत्तरजम्भ्यण शब्द-सूची

जिच्चा	२	सू० १ से ३	जिठ्भा	३२	६२
जिण *				३४	१८
-जिए	२३	३६		३५	१७
-जिणह	२६	सू० ४७	जिठ्भदिय	२६	सू० १, ६६
जिण	२	४५	जिय (जित)	५	१६
	१०	३१		७	१७ से १६
	१६	१७		६	३६
	१८	४३		२३	३६
	२०	५०, ५५	जिय (जीव)	२२	१८, १६
	२१	१२	जीमूय	३४	४
	२२	२८	जीव	२	२७
	२३	१, ५, ६३,		३	७
		७८		७	१६
	२४	३		८	३
	२८	१, २, ७,		१०	५ से १४
		१८, १६, २७,		१२	४४
		३३		२३	७३
जिणमग	२२	३८		२६	५२
जिणवयण	३६	२६०, २६१		२८	३, १०, ११,
जिणवर	३६	६०			१४, १७
जिणसासण	२	६, १८, १६,		२६	सू० १ से ७२
		३२, ४६		३०	२, ३, २७, १
जिणिंद	१४	२		३१	१
जिणित्ताण	२३	३६		३२	२७, ४०, ५३,
जिणित्तु	२३	३८			६६, ७६, १२
जिठ्भा	१०	२४		३३	१, १८, २४

जीव	३८	५६ से ६०
	३५	११
	३६	२,३,४८, ६८ से ७०, ८२,८४,९०, ९२,१०४, १०८,११५, ११७,१२४, १२७,१३४, १३६,१४३, १४५,१५५, २४८,२४९, २५७ से २५९

जीव *		
जीवऽ	७	३
	१५	७
-जीवामा	६	१८
जीवन	१८	१८
जीवघण	३६	६६
जीवयोग	१८	११,१२
जीवविभन्ति	३६	८७
जीवा	६	२१
जीवाजीवविभन्ति	३६	
जीवि	२०	८५
जीवि	१	१,७
		१८

जीविय	१०	१,२
	१२	२८,४२
	१३	२१,२६
	१४	३२
	१५	६
	१८	१३
	१९	६०
	२०	४३
	२२	१५,२६,४२
	२६	सू० ३६
	३२	२०
जीवियय	१०	३
जीवा	१२	२६
	३२	६१
जुअ	१६	५६
जुड	७	२७
	१३	११
	२२	१३
जुडम	१८	२८
जुडमन्ति	५	२६
जुज *		
-जुजे	१	१८
जुजण	२८	२५
जुग	२७	७
जुगमिन्ति	२१	७

जुगव	२८	२६	जोअ *		
	२६	सू० ७२, ७३	-जोएइ	२७	३
	३६	५३	जोइ	१२	३८, ४३, ४४
जुज्भ *				३५	१२
-जुज्भाहि	६	३५	जोइय	२७	८
जुज्भ	६	३५	जोइस	३४	५१
जुण्ण	१४	३३		३६	२०४, २०८,
जुत्त (योक्त्र)	१६	५६			२२१ =
जुत्त (युक्त)	१	८, २३	जोइसगविउ	२५	७, ३६
	६	२२	जोइसिय	३६	२०५
	१८	४	जोग	७	२४
	१६	५६, ८८		१२	४४
	३२	१०६		२१	१३
जुम्ह	१२	७		२६	सू० १, ८, ३४,
जुयल	२२	६, २०			३८, ६०, ७३
जुवराय	१६	२		३१	२०
जूव	१२	३६		३४	२२, २४, २६,
जूह	११	१६			२८, ३०, ३२
जं	२२	२१		३६	२५०, २६४
जेट्ट	२०	२६, २७	जोगव	११	१४
	२३	१५		३४	२७, २६
जेट्टग	२२	१०	जोगसच्च	२६	सू० १, ५३
जेट्टामूल	२६	१६	जोग्ग	३२	४, १५
जेम *			जोज्ज (दे०)	२७	८
-जेमेइ	१७	१६	जोणि	३	५, ६, १६
जोअ	२७	२		७	१६, २०

जोयण	२६	३५	भिज्ज * -भिज्जइ	२०	४६
	३६	५७ से ५९, ६१, ६२	भिया *		
जोव्वण	२१	६	-भियाएज्जा	३५	१६
जोह	११	२१	-भियायइ	१८	४
				२६	१२, १८, ४३
			भियायमाण	२६	सू० ७३
अ					
भ.भ.	२६	सू० ४०			
भ.विद्य	१८	५			
भ.मोय	२२	६			
भा *					
-भाएज्ज	१	१०	ठव *		
-भाएज्जा	३०	३५	-ठवेज्ज	१	६
-भायइ	१८	५		८	११, १६
भाया	३४	३१	ठवित्ताण	१८	३७, ४६
भाण	१८	४, ६	ठवेत्तु	६	२
	२०	५७	ठाण	५	२, ४, १२,
	२३	१०, १८, ४३			१३, २८
	२६	सू० १३		६	६, ५८
	२०	३०, ३५		११	३, ४, ६,
	३१	६			१०
	३२	१०६		१२	४३, ४४, ४७
	२६	सू० ५५		१६	सू० १ मे ३, १२
	१८	२१		१६	१४
	२६	सू० ७३		१८	२३
				२०	५२

उत्तरज्जभयण शब्द-सूची

ठाण	२३	८० से ८२,	ठिज्वा	३	१६५
		८४	ठिय	१२	७,११,२५
	२४	१०,२४		१३	३२
	२६	५,३३		१६	८
	२८	६		२०	५५
	२९	मू० ५०		२१	८
	३०	२७,३६		२२	२२,३३
	३१	१४,२१		३२	१७
	३४	२,३३			
ठावडत्ताण	६	३२	ड		
ठिइ	७	१३	डज्भा	६	१२,१४
	३३	१६,२०,२२	डज्भमाण	६	१८
	३४	२,३४ से		१४	४२,४३
		४२,४४,४५,	डमर	११	१३
		४७ से ५०,	डस *		
		५३ से ५५	-डसई	२७	८
	३६	१२,१३,७६,	डह *		
		८७,१०१,	-डहलि	२३	५०,५१,५३
		११२,१२१	-डहेज्ज	१८	१०
		१३१,१४०,	-डहेज्जा	१२	२८
		१५०,१५६	डहिय	१३	२५
		१७४,१८३,	डोल	२६	१८७
		१६०,१६६,			
		२१८ से २२०,	ड		
		२२४ मे २४४	डक (दि०)	१६	५८
ठिइय	२६	मू० २३	डिकुण (दि०)	३६	१८६

पा	तओ	२	४
णं	६	१२	४
णाम	१४	१२	४
णीहु	३६	६८	५, १६, ३१
णु	४	१	७
णहविअ	२२	६	२, ६, १०,
णहाण	२०	२६	१८
णहाय	१२	४५ से ४७	६, १८
णहुसा	६	३	१६
			सू० ११
			१८
			६, १६
			१६
			४३, ८४
			२०
			१०, ३१, ३४,
			३५, ५२
त	१	२	२१
तअ	३६	५४	१२
तइअ	२६	२, १२, १८,	२२
		३१, ४३	१७, २२, ३८
			२३
			१
			२
			सू० ३
			१६
			सू० ३
			३६
			१४८
			२
			३५
			३६
			२१, ४४
तइया	६	५	तकक *
तउय	१६	६८	तककेइ
	३६	७३	तककर
तउसमिजग	३६	१३८	तच्च (तथ्य)
तओ	१	१०	

तच्च (तृतीय) २६	सू० २	तत्तो	२१	११
तच्छिञ्ज	१६	६६	३०	११, १५
तज्ज *			२	२१
-तज्जए	२	३१	तत्थ (त्रस्त)	१६
तज्जणा	१६	३२	तद्दुभय	१
सज्जिञ्ज	२	८, ३५	२६	सू० २१
तण	२	३४, ३५	तप्प *	
	६	७	-तप्पइ	१४
	१२	३६	तप्पओसि	३२
	२३	१७	तप्पञ्चइय	२६
	३६	६४	सू० २, ६३ से	
तणफास	२	सू० ३	६७	
	१६	३१	तप्पच्चय	३२
तणहार	३६	१३७	तप्पढमया	२६
तणु	१४	४७	सू० ७२, ७३	
तणुय	१४	३४	तप्पुरक्कार	२४
तणुयर	३६	५६	तम	७
तण्हा	१६	१८, २०, ३१,	१०	१०
		५६	१४	१२
	२६	सू० ४६	२३	७५
	३२	६, ८, ३०,	तमतम	२०
		४३, ५६, ६६,	४६	४६
		८२, ६५	तमतमा	३६
	१०७		१५७	१५७
तत्त (तक्ष)	१६	६८	तमा	३६
तत्त (तच्च)	२३	२५	१६	६८
			३६	७३
			तम्मुत्ति	२४
			तय (तक)	२२
			तग्र (तत)	१४
			तया	१२
				२२

तथा	१४	४०	तव	२०	४१
	१६	८०		२२	४८
तर *				२३	५३
-तर	२२	३१		२५	१८,३०,४३,
-तरन्ति	८	६		२६	३४,४७,५०
	२३	७३			५१
-तरिस्सन्ति	१८	५२		२७	१६
-तरिहन्ति	८	२०		२८	२,३,११,
तरिड	१६	४२			२५,३४ से
तरित्ता	२१	२४			३६
तगियव्व	१६	३६		२९	मू० १,२८,४३,
तकण	२०	८			६०
	३४	७,१२		३०	१,६ से ८,
तल	१६	४			१०,११,२६,
तव	१	१६,४७			३०,३७,
	२	४३			१०४
	३	८,२०		३६	२५२ से २५५
	५	२८	तवण	३०	५
	६	२०,२२,४६	तवमग्गाइ	३०	
	१२	४,३७,४४	तवस्सि	२	२,२२,३४,
	१३	३५			४४
	१४	५,८,१६,		३	११
		३५,५०		१२	१०
	१८	१५,३१,३७,		१५	५,६
		४१,५०		२३	१०
	१६	५,३७,७७,		२२	४,१४,२१
		६४,६७			

उत्तरज्झयण शब्द-सूची

१८५

तवोकम्म	१७	१५
	१६	८८
तवोधण	१३	१७
	१८	४
	२०	५३
तस	५	८
	८	१०
	१६	८६
	२०	३५
	२४	१८
	२५	२२
	२६	३०
	३५	६
	३६	६८, १०६, १०७, १२६
तह	१८	१४
तहक्कार	२६	३, ६
तहप्पगार	४	१२
तहा	५	२
तहाकारि	२६	सू० ५२
तहाभूय	५	३०
तहाविह	८	४
	२४	१५
तहि	१२	८
तहिय	२८	१४, १५
तहिय	१२	३६

तहेव	६	३६
ता	१३	३२
ताड	८	४, ६
	११	३१
	२१	२२
	२३	१०
ताडिअ	१६	६७
ताण	४	१, ५
	६	३
	१४	१२, ३६, ४०
ताय	१४	६, २३
	१६	११, ७३
ताय *		
-तायए	६	१०
-तायन्ति	५	२१
	२५	२८
तायग	१४	८
तार *		
-तारडस्सामि	१६	२३
तारा	३६	२०८
तारिस	२७	८, १६
	३५	५, १४
तारुण	१६	३६
ताल *		
-तालयति	१२	१६, २५
तालउड	१६	१३

तालणा	१६	३२
तालिस	५	३१
ताव	७	३
तावड्य	३२	१०६
	३६	५८
तावस	२५	२६, ३०
ताहे	१६	७८
ति	५	३२
	७	१४
	२०	६०
	३३	६
	३४	१७, १६, २१, ४१, ४२, ५६, ५७
	३६	५८, ११३, १२२, १६१, १६२, १८४, १८५, २००, २०१
तिदुय (ग)	१२	८
	२३	४, १५
	३६	१३८
तिकव	११	१६, २०
	१६	६२
	२०	२०
	३४	११

तिगडुय	३४	११
तिगिच्छ *		
-तिगिच्छड	१६	७८
तिगिच्छग	२०	२२
तिगिच्छा	२०	२३
तिगिच्छय	१५	८
तिगुत्त	६	२०
	३०	३
	३२	१६
तिगुत्ति	१६	८८
	२०	६०
तिण	३६	६५
तिण्ण	५	१
	१०	३४
	२६	१, ५२
	३१	१
तितिकव *		
-तितिकवएज्जा	२१	१५
-तितिकवे	२	५, १४
तितिकखा	२	२६
	२६	३४
तित्त	३६	१८
तित्तअ	३६	२६
तित्थ	१२	४५, ४६
तित्थधम्म	२६	सू० २०
तित्थयर	२६	सू० ४४

उत्तररजभयंग शब्द-सूची

१८७

तिपया	२६	१३
तिभाग	३६	६४
तिमिर	११	२४
तिय	१६	४
	२०	२१
	२६	१६
	३१	४
तिरिक्ख	३३	१२
	३६	१५५, १७०
तिरिक्खजोणि	१६	१०
	२०	४६
तिरिक्ख-		
जोणिय	२६	सू० ५
तिरिक्खत्तण	७	१६
तिरिच्छ	१५	१४
	२१	१६
तिरिय	३४	४४, ४५, ४७
	३६	५०
तिरियलोय	३६	५४
तिरोड	६	६०
तिल	१४	१८
तिलोय	१६	६७
तिविः	१५	१२
	२५	२२
	३३	८
	३४	२०

तिविह	३६	६८, ६९
		१०६, १०७,
		१७१, १६६
तिव्व	१६	७२
	२३	४३
	२६	सू० २३
	३२	२४, २५, ३७,
		३८, ५०, ५१,
		६३, ६४, ७६,
		७७, ८६, ९०,
	३४	२१
तीय	२६	सू० १३
तीर	१०	३४
	१३	६, ३० -
तीरइत्ता	२६	सू० १
तीस	३६	२४१
तीसड	३३	१६
	३६	२४२
तीसइविह	३६	१६७
तु	२	७
तुग	१६	५२
तुड	३४	७
तुदिल्ल	७	७
तुवग	३४	१०
तुच्छ	४	१३
	१३	२५

तुट्ट	१८	१६	तेउक्काय	१०	७
	२०	५४	तेउलेसा	३४	७, २८, ३७,
	२५	६, ३५			५१
तुट्टि	३२	२६, ४२, ५५,	तेऊ	३४	३, १३,
		६८, ८१, ९४			५२ से ५४
तुमतुम	२६	सू० ४०	तेगिच्छा	२	३३
तुयट्टण	२४	२४		२०	२३
तुरिय (तूर्य)	२२	१२	तेण	१४	३
तुरिय (त्वरित)	२२	२४, २५		७	५
तुला	१६	४१		३४	२६
तुलिया	५	३०	तेत्तीस	३१	२०
	७	१६		३३	२२
तुलियाण	७	३०		३४	३४, ३६, ४३,
तुवर	३४	१२			५५
तुसिणीय	१	२०		३६	१६६, २४३,
	२	२५			२४४
तूर *			तेयाल	३४	२०
-तूरन्ति	१३	३१	तेरिच्छ	२५	२५
तेअ	११	२४		३१	५
	१२	२३	तेरिच्छअ	२६	सू० ३
	१८	१०	तेल्ल	१४	१८
तेइदिय	३६	१२६, १३६,		२८	२२
		१४१ से १४३	तेवीस	३१	१६
तेइदियकाय	१०	११		३६	२३४, २३५
तेउ	२६	३०	तो	६	६०
	३६	१०७, १०८,		२३	६१
		११३ से ११५		२६	२४

उत्तरजन्मयण शब्द-सूची

तोत्त	१६	५६	थावर	२५	२२
तोत्तअ	२७	३		३५	६
तोत्तगवेसअ	१	४०		३६	६८, ६९,
तोलेउ	१६	४१			१०६
तोसिय	२३	८६	थिर	१	३०
				२६	२४
थ			थिरीकरण	२८	३१
थभ	११	३	थी	१६	१, ३ से ६,
थणिय	१६	सू० ७			११
	१६	५	थीकहा	१६	२, ११
	३६	२, ६	थीणगिद्धि	३३	५
थद्व	११	२, ६	थीहु	३६	६८
	१७	५, ११	थुड	२६	४२
	२७	१०		२६	सू० १, १५
थल	८	६	थुणित्ताण	२०	५८
	१२	१२	थूलवय	१	१३
	१३	३०	थेर	१६	सू० १ से ३
थलयर	३६	१७१, १७६, १८४, १८६		२७	१
थलि	३०	१७	थोव	१०	२
थव	२६	सू० १, १५		३२	१००
थामव	२	२, २२	दइय	१६	२
थाव *			दड	५	८
-थावए	२	३२		८	१०
थावर	५	८		१२	१८, १९
	८	१०		१५	७
	१६	८६		१६	६१
	२०	३५			

दड	२०	६०	दसण	२८	१ से ३,
	३१	४			१०, ११, २५,
दत (दान्त)	१	१५, १६			२६, ३५
	२	२७		२६	सू० १, २, १०,
	११	४			१५, ५८, ६१,
	१२	४१			७२
	१६	१५		३२	१०८
	२०	३२, ३४, ५३		३३	६, ८, ९
	३४	२७, २६, ३१		३६	६६, ६७
	३५	१७	दसणावरण	३३	२, ६
दत (दन्त)	१२	२६	दसणावरणिज्ज	२६	सू० ७२
	१६	२७	दसि	६	१७
दस	२	सू० ३	दसिअ	२६	सू० ७४
	२	१०	दक्ख	१	१३
	१५	४	दच्चा	६	३८
	१६	३१	दट्ठु	१४	७
	२१	१८	दट्ठु (दण्ट्वा)	१	१२
दसण	२	सू० ३		४	५
	६	१७		१३	३०
	८	३		२२	३५, ३६
	१६	६४	दट्ठु (दण्टुम्)	३२	१४
	२२	२६	दट्ठूण	१४	४
	२३	३३		२२	३६
	२४	५	दट्ठूण	१३	२८
	२६	३६ ४७	दड्डु	१६	५०, ५७

दढ	११	१७
	१७	२
	१८	५१
	२७	१६
	२६	सू० ३२
दढधम्म	३४	२८
दढव्वअ	२२	४७
दत्त	१	३२
	७	५
दप्प	१६	६
दम	१८	४३
	१६	८२, ६३
दमिय	३२	१२
दमीसर	१६	२
	२२	४, २५
दमेयव्व	१	१५
दम्मत्त	१	१६
दया	५	३०
	१८	३५
	२०	८८
	२१	१३
	२६	३४
	३५	१०
दग्निण	१६	११
	१६	३

दल *		
-दलामि	२२	८
-दलाह	१२	१२
-दलेज्ज	८	१६
दलित्तु	१८	३६
दव	१७	८
दवगिग	१४	४२
	१६	५०
	३२	११
दव्व	१८	१६
	२२	४५
	२८	५, ६, ८, ९,
		२४
	३०	१५, २४
दव्वओ	२४	६, ७
	३०	१४
	३६	३
दव्वजाय	२६	६
दस	१६	सू० १ से ३
	२३	३६
	३४	३५, ३८, ४१,
		४२, ४८, ५३,
		५४
	३६	५१, ५२,
		१०२, १६०,
		१६३, १६४,

दस	३६	२१६, २२०, २२६, २२७
दसग	३	१६
	२६	४
दसण्ण	१३	६
	१८	४४
दसण्णभट्ट	१८	४४
दसम	१६	सू० १२
	२६	४
दसविह	३०	३१, ३३
	३१	१०
दसहा	२३	३६
	३६	४, ६, १८, २०५
दसा	३१	१७
दसार	२२	११, २७
दसुय	१०	१६
दहि	१७	१५
	३०	२५
दा *		
-दए	६	४०
-दाहामि	२५	६
-दाहामु	१२	११, १६
-दाहिई	२७	१२
-दाहित्थ	१२	१७
-दिज्जाहि	२०	२४

-देड	१६	७६
	२१	३
	२६	२६
-देज्जा	७	१
दाढा	११	२०
दाण	१२	३६
	३३	१५
दाणव	१६	१६
	२३	२०
दाणि	१३	२०
दायण	३०	३२
दायार	१३	२५
दार (दार)	१४	३७
	१८	१४, १६
	१६	१६, ८७
दार (द्वार)	१६	६३
	२०	४५
	२६	सू० १४
दारग (अ)	१४	५३
	२१	५
दारुण	२	२५
	६	७
	१६	३३
	२०	२१
दास	१	३६
	३	१७

दास	६	५
	८	१८
	१३	६
दाह	२०	१६
दाहिणभाव	२६	सू० ११
दाहिणछा	२	सू० ३
	२	२
दिच्छ		
-दिच्छसि	२२	४४
दिज्जमाण	१२	२२
दिट्ठ	५	५
	१२	४७
	१५	१०
	१६	६
	२२	३४
	२८	१८, २३
दिट्ठि	८	७
	१८	३३
	१६	६
दिट्ठिवाअ	२८	२३
दिट्ठिसपान्न	१८	३३
दिण	२६	१५
दिन्त (दीप्त)	१२	६
	१६	३६
दिन्त (दत्त)	३२	१०
दिन्तिक	३२	१०

दिन्त	६	७
	१२	२१
दिप्पत	३	१८
दिय	१४	१२, ४८
	२५	७, १३, २३,
		३८
दिया	२६	सू० ३१
दिव	५	२२
दिवस	२८	५
	२६	११
	३०	२०
दिवाय	११	२४
दिन्त्र	१२	३६
	१४	६
	१५	१८
	१८	२५, २८
	२१	१६
	२२	६, १०
	२५	२५
	२६	सू० ३
	३१	५
दिन्त्रिय	७	१०
दिम	३६	२०६
दिमा	३	१३
	६	१२
	७	१०

दिसा	१६	८२	दीहकालिय	१६	सू० ३ से १२
	२७	१४	दीहाउय	५	२७
	३३	१८	दु	५	२
दिसाविचारि	३६	२०८		८	२०
दिसी	२७	१४		२२	२
दिस्स	६	६,७		२६	१४
	१४	४६		३३	२०
	२२	१४		३४	५२,५३
	२३	१६		३६	२२४,२२५
दीण	३२	१०३	दुअ	१८	६
दीव (दीप)	४	५		२२	१४
दीव (द्वीप)	२३	६५, ६७, ६८	दुदुहि	१२	३६
	३६	२०६	दुक्कड	१	२८
दीव *			दुक्कर	२	२८
-दीवए	३५	१२		१६	१६
दीस *				१६	२५ से २७,
-दिस्सई	१०	३१			३७, ३६, ४१,
-दीसड	१०	१७			४२, ५२
	१२	३७		३५	५
	१८	२०	दुक्ख	२	३२
	३५	८		५	२५
-दीसन्ति	१६	७३		६	१, ८, ११
	२३	४०		८	१, ८
दीह	६	१२		१३	३, १४, २३
	१४	७		१४	१३, ३२, ३३,
	२६	सू० २३			५१, ५२
	३२	११०			

दुक्ख	१६	१०, १२, १५, ३२, ३३, ४०, ४५, ६१, ७३, ७१, ८५, ९०, ९८
	२०	२३ से २७, ३०
	२३	८०
	२६	१, १०, २१, ३८, ४१, ४६, ४९
	२८	३६
	२९	सू० २, ४, २६, ३७, ४२, ४५, ५६, ६२, ७४
	३२	१, ७, ८, १६, २५, २६, ३०, ३२ से ३४, ३८, ३९, ४३, ४५ से ४७, ५१, ५२, ५६, ५८ से ६०, ६४, ६५, ६६, ७१ से ७३, ७७, ७८, ८२, ८४, ८५,

दुक्ख	३२	८६, ९०, ९१, ९५, ९७ से १००, १०५, १११ १, २०
दुक्खम	२०	३१
दुक्खसेज्जा	१६	३१
दुक्खिय	३	६
	१८	१५
दुखुर	३६	१८०
दुगच्छिज्ज	१३	१६
दुगुच्छणा	२०	४०
दुगुच्छमाण	४	१३
दुगुच्छा	३२	१०२
दुग्गइ	३४	५६
	३६	२५६
दुक्क	२९	सू० ३४
दुक्कय	१४	४९
दुक्कर	१६	२४, ३८
दुज्जय	९	३४, ३६
	१३	२७
	१६	१३, १४
दुट्ठ	२३	५५, ५८
	२७	१५
दुट्ठवाइ	३४	२६
दुत्तर	१६	३६
	३२	१७

दुद्ध त	२७	७	दुय (द्रुत)	२२	१४
	३२	२५, ३८, ५१,	दुय (द्विक)	३१	६
		६४, ७७, ९०	दुरत	१०	९
दुद्धम	१	१५		३२	३१, ४४, ५७,
दुद्ध	१७	१५			७०, ८३, ९६
दुपच	२६	७	दुरणुपालअ	२३	२७
दुपय	१३	२४	दुरप्य	२०	४८
दुपया	२६	१३	दुराह	२३	८१, ८४
दुप्पट्टिय	२०	३७	दुरासय		
दुप्पघसय	९	२०	(दुराशय)	१	१३
दुप्परिच्चय	८	६	दुगसय		
दुप्पहसय	११	२०, ३१	(दुरासद)	११	३१
दुप्पूरअ	८	१६	दुरुत्तर	५	१
दुब्बल	२७	८	दुलह	१०	४
दुब्भि	३६	२८	दुल्लह	३	१, ८ से
दुब्भिगघ	३६	१७			१०, २०
दुब्भूय	१७	१७		७	१८
दुम	१०	१		१०	१६ से १९
	११	२७		३६	२५७, २५९
	१३	३१			
	१९	६६	दुल्लहबोहियत्त	२९	सू० ५८
	२०	३	दुल्लहय	१०	२०
	३२	१०	दुव	८	२०
दुमपत्तय	१०			२२	२
दुम्मूह	१८	४५		३६	५३, ५४,
दुम्मोह	७	१३			२५३
	२५	४१	दुवालसग	२४	३

उत्तरजमयण शब्द-सूची

देवी	१४	३,३७,५३	देह	७	२,१०,२६
	३२	१६		१२	२५,४२
देस	२१	३		१६	१६
	३६	२,५,६,			
		१०,११,६७,			
		७८,८६,			
		१००,१११,	दे-		
		१२०,१३०,	-द		
		१३६,१४६,	दो		
		१५८,१७३,			
		१८२,१८६,			
		१६८,२१७			
देसिअ (य)					३४
(देगित)	५	४			३६
	१६	१७			२
	२१	१२	दोगुछि		
	२३	१२			
	२८	५	दोगुदग (ओ)		
	३५	१			
देसिय (देगिक)	१०	३१	दोगगड		
देसिय					
(द्वैसिक)	२६	३६,४०			
देह	१	४८			
	२	२	दोउम		
	५	३१	दोगमुट	३०	
	६	१३	दोन (दोय)	१	

१६८

परिशिष्ट-२

दुहि	१६	१८, १६	देव	१४	१
	२०	४६		१६	१६
	३२	२६, ३१, ४२,		१६	३
		४४, ५५, ५७,		२१	७
		६८, ७०, ८१,		२२	२१, २२
		८३, ८४, ८६		२३	२०
दुहिअ	६	१०		२६	सू० ५
	१६	७१		३३	१२
	३२	३१, ४४, ५७,		३४	४४, ४७
		७०, ८३, ८६		३६	१५५, २०४,
दुहिल	११	६			२०६, २१२,
दूर	२४	१८			२४५, २४६
	३२	३	देवई	२२	२
दूस	६	४६	देवग	३२	१६
	१२	६	देवत्त	७	१७
	१६	सू० ७	देवय	७	२१
देय	२५	८	देवलोग (य)	३	३
देव	१	४८		६	१, ३
	३	१५		१३	७
	५	२५	देविंद	६	११, १३, १७,
	७	१२, १६, २३,			१६, २३, २७,
		२६, २६			२६, ३१, ३३,
	१०	१४, २३			३७, ३६, ४१,
	११	२७			४३, ४५, ४७,
	१२	२१			५०
	१३	७, ३२		१२	२१

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

देवी	१४	३,३७,५३	देह	७	२,१०,२६
	३२	१६		१२	२५,४२
देस	२१	३		१६	१६
	३६	२,५,६,		२१	१८
		१०,११,६७,		२३	५१
		७८,८६,		२४	१५
		१००,१११,	देह #		
		१२०,१३०,	-देहइ	१६	६
		१३६,१४६,	दो	५	२५
		१५८,१७३,		८	१७
		१८२,१८६,		१३	३,५
		१६८,२१७		१४	३,५
देसिअ (य)				२२	२,६८
(दिशित)	५	४		३४	३७
	१६	१७		३६	२२२
	२१	१२	दोगुंछि	२	४
	२३	१२		६	७
	२८	५	दोगुदग (अ)	१६	३
	३५	१		२१	७
देसिय (देशिक) १०		३१	दोगड	७	१८
देसिय				८	१
(द्वैसिक)	२६	३६,४०		६	५३
देह	१	४८		२६	सू० ५
	२	२	दोच्च	३६	१६१
	५	३१	दोणमुह	३०	१६
	६	१३	दोम (दोप)	१	२१

दोस (दोष)	४	१३	ध	४	२
	८	२,५	घण	७	८
	१०	३७		१०	२६,३०
	१२	४६		१२	६,२८
	१४	४१ से ४३		१३	१३,२४
	१७	२१		१४	११,१४,१६, १७,३८,३९
	२१	१६		१६	२६,६८
	२३	४३		२०	१८
	२५	२१	घणिय (दि०)	१३	२१
	२७	२१		२६	सू० २३
	२८	२०	घणु	६	२१
	२९	सू० १,६३ से ६७,७२	घन्त	११	२६
	३०	१,४		१३	२४
	३१	३		१६	२६
	३२	२,७,६, २२,२३,२५, २६,३०,३६, ३८,४१,४३, ४६,५१,५५, ५६,६१,६२, ६४,६८,६९, ७५,७७,८१, ८२,८८,९०, ९४,९५	घमणि	२	३
			घम्म (धर्म)	१	४२
				२	१३,३७,४२
				३	८,११,१२
				५	१५,३०
				७	१५,२८,२९
				८	१६,२०
				९	२,४४
				१०	१८,२०

उत्तररजभयण शब्द-सूची

धम्म (धर्म)	११	१५	धम्म (धर्म)	३२	१७
	१२	३३, ४६		३६	७, ८
	१३	२, १५, २१,	धम्म (धर्म्य)	१६	८
		२६, ३२		३०	३५
	१४	१७, २०, २५,		३४	३१
		२८, ४०, ५०,	धम्मकहा	२६	सू० १, २४
		५१		३०	३४
	१५	१	धम्मचित्ता	२६	३३
	१६	सू० ३ से १२,	धम्मजाण	२७	८
		१५, १७	धम्मज्झाण	१८	४
	१७	१	धम्मतित्थयर	२३	१, ५
	१८	१८, २५, ३३,	धम्मत्थिकाय	३६	५
		३४	धम्मरुड	२८	१६, २७
	१९	१९, २१, ४३,	धम्मलेसा	३४	५७
		७७, ९८	धम्मसद्धा	२६	सू० १, २, ४
	२०	१, ४४, ५८	धम्मवारिय	३६	२६५
	२१	१२, २३	धम्माराम	२	१५
	२२	४६	धम्मिट्ठ	७	२६
	२३	११ मे १३,	धग्	६	१७
		२४ से २६,		११	२१
		२६, ३१, ५८,		१०	१, १५
		६८, ८७		१६	५
	२५	७, ११, १४,		२०	५
		१६, ३६, ४२			
	२८	७ मे ९	धग् *		
	२९	सू० ४६, ५१	-धग्ज्जति	३०	०८

२०२

धरिस *

-धरिसेइ

घाउ

घार *

-घारए

-घारेज्जा

घारेह

घार

घारइत्ता

घारा

घारि

घारेउ

घारेयव्व

घावत

धिइ

धिइम

धिइमत

धिरत्थु

धीग

३२

३४

२

१६

१

१६

३५

२०

१६

२३

१४

१६

१६

१६

६

२७

३२

१६

१८

२२

२६

२२

१

७

१२

७

३७

६

१४

६८

१२

४३

३७, ५६, ६२

५३

१७

३३

२४, २८

५६

२१

८

३

१५

३६

३०

३३

२६, ४२

२१

२६

धीर

धीरत्त

धुत्त

धुय

धुरा

१६

धुव

१६

२०

२३

धुवगोयर

धूमणेत

धूमाभा

धूयरा

धूया

धूव

धेणु

धोरेय

न

न

नई(दी)

१४

१५

१८

७

५

३

१४

१६

७

१६

२०

२३

१६

१५

३६

२

२

३

२

१४

१

११

१६

३५

३

३३, ५१, ५३

२६

१६

२०

१७

६८

१६

१७

५२

८

१५

२०

उत्तरज्भयर्ण शब्द-सूची

नई(दी)	२०	३६	नञ्चा	२	१३, २६, ३१,
	३२	१८			३५, ४१
नउय	७	१३		८	१६
नदण	१६	३		३२	१६
	२०	३, ३६	नच्चाण	८	११
नदावत्त	३६	१४७		१८	८७
नदि	११	१७	नट्ट	१३	१८, १९
नक्खत्त	११	२५	नत्थि	१८	१५
	२५	११, १४, १६	नपुस	३६	५१
	२६	१६, २०	नपुसग	३६	८६
	३६	२०८	नपुसगवेय	२६	मू० ६
नग	११	२६	नपुसवेय	३२	१०२
	१३	६	नम *		
नगर	२	१८	-नमड	१	८५
	६	२०, २८	-नमसत्ति	५६	१६
	१०	३६	-नमेड	६	६१
	१६	४	नमसन्त	२५	१७
	२१	२	नमि	६	२, ३, ५, ८
	३०	१६			११, १३, १७
नग (य) रमडल	२३	४, ८			१६, २३, २५,
नगरी	२३	३			२७, २९, ३१,
नगिणिण	५	२१			३३, ३७, ३९,
नगड	१८	४५			८१, ८३, ८५
नगरुड	२०	४६			८७, ९०, ९१
नच्चा	१	४१, ४५			९२
	२	मू० १ मे ३		१८	९१

घरिस *		
-घरिसेइ	३२	१२
घाउ	३४	७
घार *		
-घारए	२	३७
	१६	६
-घारेज्जा	१	१४
घारेह	१६	६८
घार	३५	१२
घारइत्ता	२०	४३
घारा	१६	३७, ५६, ६२
	२३	५३
घारि	१४	१७
घारेउ	१६	३३
घारेयव्व	१६	२४, २८
घावत	१६	५६
घिइ	६	२१
	२७	८
	३२	३
घिउम	१६	१५
	१८	३६
घिउमत	२२	३०
	२६	३३
घिरन्थु	२२	२६, ४२
घोग	१	२१
	७	२६

धीर	१४	३५
	१५	३
	१८	३३, ५१, ५३
धीरत्त	७	२६
धुत्त	५	१६
धुय	३	२०
धुरा	१४	१७
	१६	६८
धुव	७	१६
	१६	१७
	२०	५२
	२३	८१
धुवगोयर	१६	८३
धूमणेत	१५	८
धूमाभा	३६	१५७
धूयरा	२१	३
धूया	१२	२०
धूव	३५	४
धेणु	२०	३६
धोरेय	१४	३५
न		
न	१	७
नई(दी)	११	२८
	१६	५६

नई(दी)	२०	३६	नञ्चा	२	१३, २६, ३१,
	३२	१८			३५, ४१
नउय	७	१३		८	१६
नदण	१६	३		३२	१६
	२०	३, ३६	नच्चाण	८	११
नदावत्त	३६	१४७		१४	१७
नदि	११	१७	नट्ट	१३	१४, १६
नक्खत्त	११	२५	नत्थि	१४	१५
	२५	११, १४, १६	नपुस	३६	५१
	२६	१६, २०	नपुसग	३६	४६
	३६	२०८	नपुसगवेय	२६	सू० ६
नग	११	२६	नपुसवेय	३२	१०२
	१३	६	नम *		
नगर	२	१८	-नमइ	१	४५
	६	२०, २८	-नमसत्ति	१६	१६
	१०	३६	-नमेइ	६	६१
	१६	४	नमसन्त	२५	१७
	२१	२	नमि	६	२, ३, ५, ८,
	३०	१६			११, १३, १७,
नग (य) रमडल	२३	४, ८			१६, २३, २५,
नगरी	२३	३			२७, २९, ३१,
नगिणिण	५	२१			३३, ३७, ३९,
नगगड	१८	४५			४१, ४३, ४५,
नगरुड	२०	४६			४७, ५०, ६१,
नच्चा	१	४१, ४५			६२
	२	सू० १ से ३		१८	४५

२०४

परिशिष्ट-२

नमिपवज्जा	६	
नमो	२०	१
	२३	८५
नय	२८	२४
	३६	२४६
नयण	२०	२८
	३४	४
नयर	१३	३
	१८	१
	१६	१
	२२	१, ३
नयगी	२०	१८
नर	१	६
	४	२
	७	११, २०
	६	४८
	१३	१०, १२, १८, २२, २६
	१५	६
	१६	१३
	१८	१०, १६, २५
	२०	३८
	२१	१७
	२५	४१
	३२	१०, ३२, ४५, ५८, ७१, ८४, ९७

नर	३४	२१, २४, ४५, ४७
नरग(य)	३	३
	४	२
	५	१२, २२
	६	७
	७	४, ७, १६, २८
	१३	३४
	१८	२५
	१९	१०, ४८, ७२, ७३
	२०	४६
नरदेव	१४	४०
नरवड	१३	२८
नराहिव(अ)	६	३२
	१	१५
	१	१८
	२०	
नग्दि	१२	
	१३	
नरोसर		१३

नलकूबर	२२	४१
नव (नवम्)	२६	२५
	२८	१४
	२९	सू० ३८
	३३	६
	३४	४६
नव (नव)	२९	सू० ३८
नवणीय	३४	१९
नवम	२६	४
	३६	२४२
नवर	१९	७५
नवविह	२९	सू० ७२
	३३	११
	३४	२०
नवहा	३६	२१२
नह (नख)	१२	२६
नह (नभस्)	१४	३९
	२६	१९
	२८	९
ना		
-नाहिई	२०	४८
नाड	१	३९
	१३	२३
	१९	८७
	२०	११
नाड	१२	८५

नाग	२	१०
	१३	३०
	१४	४८
	२२	४६
	३२	८९
	३६	२०६
नागराय	२१	१७
नाण	६	१७
	८	३
	१८	३२
	१९	९५
	२०	५१
	२१	२३
	२२	२६
	२३	३३
	२४	५
	२५	३०
	२६	३९, ८७
	२८	१ मे ५.
		१०, ११, २५,
		३०
	२९	सू० १, १५, १७,
		६०, ६१, ६२
	३२	०
	३५	०१
	३६	६६, ६८,
		६९

नाणधर	२१	२३
नाणस्सावर-		
णिज्ज	३३	२
नाणा	३	२
	५	१६
	११	२६, २६, ३०
	१२	३४
	१८	३०
	२०	३
नाणावरण	३२	१०८
	३३	४
नाणावरणिज्ज	२६	सू० १६, १६, ७२
नाणाविह	३	२
	२३	३२
नाणि	२	१३
	६	१७
	२८	५
नाम	८	१, १०
	११	२७
	१२	१, २०
	१४	१
	१७	२
	१८	१, २१, २२, ३६, ३६, ४३
	२०	१८
	२१	१

नाम	२२	१, ३ से ५
	२३	१, ४
	२५	४
	२६	२, ३
	२८	२०, २५
	२९	सू० ४२, ४४, ७३
	३३	१३, १६, २१,
		२३
	३४	३
	३६	५७
नामअ	२१	४
नामओ	२५	१
नामकम्म	३३	३
नाय	२०	२६
नायज्भयण	३१	१४
नायपुत्त	६	१७
नायय (नायक)	१३	२५
नायय (अ)		
(ज्ञातक)	१८	२४
	३६	२६८
नायव	३	१८
नायव्व	२६	१५
	२८	१८, १६, २१,
		२२, २४, २६,
		२७
	३०	११

नायव्व	३३	५, ६	निंदणया	२६	सू० १, ७
	३४	१० से १३, १५, ३४ से ३६, ४६	निंदा	१२	३०
नाराय	६	२२	निंव	३४	१०
नारी	८	१६	निकेय	३२	४
	१३	१४	निककख	२६	सू० ३५
	१५	६	निककखिय	२८	३१
	१६	११	निककस *		
	२२	४४	-निककसिज्जड	१	४, ७
नावा	२३	७० से ७३	निकखत	१८	१६, ४४, ४६
नावि	२३	७३		२५	४२
नास	२	२७	निकखम		
नास *			-निकखमई	२२	२३
-नासइ	१४	१८	-निकखमसू	२५	३८
-नस्ससि	२३	६०	निकखमे	१	३१
-नस्सामि	२३	६१	निकखमत	३२	५०
नाह	२०	६ से १२, १६, ३५, ५५, ५६	निकखमण	२२	२१
निअय	१६	१७	निकखमिअ	२२	२०
निउण	६	२०	निकिक्व *		
	३२	४, ५	-निकिक्वेज्जा	२८	१८
निउत्त	२६	१०	निकिक्वत	२८	१३
निओइउ	२६	६	निकिक्विताण	२६	३६
निओइय	१२	२१	निगम	०	१८
				३०	१६

निटुव *		
-निटुवेइ	२६	सू० ५०
निट्टिय	८	१७
निणहव #		
-निणहविज्ज	१	११
निहमोक्ख	२६	१८, ४३
निहहे #		
-निहहेज्जा	१२	२३
निहा	१७	३
	३३	५
निहानिहा	३३	५
निहेम	१	२
निह	३४	४, ५
	३६	२०
निहअ	३६	४०
निहत्त	२५	२१
निहवस (दे०)	३४	२२
निहग #		
-निहणे	३	११
निहूणित्ताण	१६	८७
निनाज	२२	१२
निन्न	१२	१२
निन्नेह	१४	४६
निणज्जिम्मया	१६	७५
निण्णिग्गह	१४	४६
निण्णिवान	१६	४४

निदध *		
-निदधइ	२६	सू० ५, ११, २४, ४४
निब्भअ	२६	सू० १८
निब्भेरिय(दे०)	१२	२६
निभ	३४	४, ६ से ८
निमतण	२	३८
निमतयत	१८	११
निमतिय	२०	५७
निमज्जिउ	३२	१०५
निमित्त	१७	१८
	२०	४५
	३६	२६६
निमेस	१६	७८
निम्मम	१६	८६
	३५	२१
निम्ममत्त	१६	२६
निम्मल	३६	६०, ६१
निम्मोयणी	१८	३८
नियच्छ,*		
-नियच्छइ	१५	६
नियठयम्म	२०	३८
नियग	१	७
	१२	८
	२०	१३

निगिण्ह *			निच्छुअ	२३	३३
-निगिण्हाइ	२८	३५	निच्छुन्न	३६	६७
-निगिण्हामि	२३	५६, ५८	निज्जतं	२२	१४
निगगन्थ	१६	सू० ३ से १२	निज्जर *		
	२१	२	-निज्जरिज्जइ	३०	६
	२६	१, ३३	-निज्जरेइ	२६	सू० ६, ३२, ३७, ५८, ६३ से
निगगन्थी	२६	३३			
निगगय	७	१४			७१
	१२	२६	निज्जरण्या	२६	सू० ३३
	१६	८७	निज्जरा	२८	१४
	२७	१२		२६	सू० १६, २४
निगगह	२६	सू० १, ६३ से	निज्जरापेहि	२	३७
		६७	निज्जा *		
निगगाहि	२५	२	-निज्जाइ	८	६
निच्च	१	४१	निज्जाअ	२०	२
	२	२८		२२	१३
	११	१४	निज्जाण	२१	६
	१३	३१	निज्जिअ	६	५६
	१६	१६		२३	३५
	१५	३	निज्जिण्ण	२६	सू० ७२
	१७	१०	निज्जहण	३६	२१२
	१६	३, २६, ७१	निज्जहिउण	३५	२०
	२३	८८	निज्जभाइत्ता	१६	सू० ६
	३१	३ से २०	निज्जभा *		
निज्जरा	२०	८७	-निज्जभाण्ज्जा	१६	सू० ६
निज्जरा	१६	१, ७, १०, ११	निज्जभायमाण	१६	सू० ६

उत्तररजभयण शब्द-सूची

निटुव *			निबध *		
-निटुवेड	२६	सू० ५०	-निबन्धड	२६	सू० ५, ११, २४, ४४
निट्टिय	८	१७	निब्भअ	२६	सू० १८
निण्हव *			निब्भेरिय(दे०)	१२	२६
-निण्हविज्ज	१	११	निभ	३४	४, ६ से ८
निट्टमोक्ख	२६	१८, ४३	निमतण	२	३८
निट्टहे *			निमतयत	१४	११
-निट्टहेज्जा	१२	२३	निमतिय	२०	५७
निट्टा	१७	३	निमज्जिउ	३२	१०५
	३३	५	निमित्त	१७	१८
निट्टानिट्टा	३३	५		२०	४५
निट्टेम	१	२		३६	२६६
निट्ट	३४	४, ५	निमेम	१६	७८
	३६	२०	निम्मम	१६	८६
निट्टअ	३६	४०		३५	२१
निट्टत	२५	२१	निम्ममत	१६	२६
निट्टवस (दे०)	३४	२२	निम्मल	३६	६०, ६१
निट्टग *			निम्मोयगी	१८	३८
-निट्टणे	३	११	नियच्छ *		
निट्टणित्ताण	१६	८७	-नियच्छड	१५	६
निताअ	२२	१२	नियठवम्म	२०	३८
निन्त	१२	१२	नियग	१	८
निन्नेह	१४	४६		१०	८
निण्डिगम्मया	१६	७१		२०	१३
निण्डिगिगह	१४	४६			
निण्डिवाम	१६	४४			

नियट्ट *			निरंगण	२१	२४
-नियट्टई	२	४३	निरंतराय	३२	१०६
नियडिल्ल	३४	२५	निरक्किय	६	५६
नियण्ठ	१२	१६	निरट्ट	१	८,२५
	१५	११		२०	५०
	१७	१	निरट्टग	२	४२
	२०	५१	निरट्टिय	२०	४६
नियत्त *			निरत्थिय	१८	२७
-नियत्तेड	२६	सू० ८,३३ -	निरय	८	७
-नियत्तेज्ज	२४	२१,२३,२५	निरवकखा	३०	६
नियत्त	१४	४१	निरवेक्ख	६	१५
	१६	६१	निरस्साय	१६	३७
नियत्तण	२४	२६	निरस्साविणी	२३	७१
नियन्ति	३१	२	निरहकार	१६	८६
नियम	१६	५		३५	२१
	२०	४१	निराणद	२२	२८
	२२	४०	निगमित्त	१४	४१,४६,४६
नियय	१८	१६	निगग्ग	२	१५
नियाग	२०	४७		२०	३२,३४
नियागट्टि	१	७,२०	निरालवण	२६	सू० ३४
नियाण	१३	१,८,२८	निरावण	२६	सू० ७२
	१५	१	निगमव	२०	५२
	१८	५२		३०	६
	२६	सू० ६	निन्म *		
	३६	२५७,२५६	-निन्मड	२६	सू० ५,१४,४१,
निरट्टम	८६	सू० १७			७३

निष्ठाइ	१	३०
निष्ठा	२६	सू० १२
निष्मिता	२६	सू० ७३
निस्वहिय	२६	सू० ३५
निरोवलेव	२१	२२
निरोह	४	८
	७	२६
	२६	सू० २६, ५६, ७३
निल्य	३२	१३
निव	१८	८
	२०	३८
निवज्ज *		
-निवज्जइ	२७	५
निवड †		
-निवडड	१०	१
निवाय	२	३५
निवारण	२	७
निवारेड	३५	५
निवाम	३२	१३
निविज्ज †		
-निविज्जन्ति	३	५
निव्विज्ज	११	२
निवेम †		
-निवेमइ	२७	५
निवेमन्ता	३२	१४
निवेमन्ता	१३	१८, १९

निव्वत्त *		
-निव्वत्तइ	३२	३२, ४५, ५८, ७१, ८४, ९७
-निव्वत्तेड	२६	सू० ४, ११, ३६
निव्वत्तयत	३२	१०६
निव्वाण	३	१२
	११	६
	१६	६८
	२१	२०
	२३	८३
	२८	३०
निव्वावार	६	१५
निव्वाहण	२५	१०
निव्विण्ण	१४	२
	१६	१०, ५०
निव्वितिगिच्छ	२८	३१
निव्वियार	२६	सू० ५५
निव्विसय	१८	४६
निव्वुय	२६	सू० १३
निव्वेय	१८	१८
	२६	सू० १, ३
निसत्त	१	८
निसग्ग	२८	१६, १७
निसग्गखइ	२८	१८
निसण्ण	२३	१८
निसन्त	२०	४

निसम्म	१०	३७	निसेवय	१०	१८, १९
	१६	सू० १ से ३	निसेविय	२०	३
	१९	६७	निसेवियव्व	३२	१०
निसामित्ता	६	७, ११, १३, १७, १९, २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४७, ५०	निस्सकिय	२८	३१
		१०	निस्सग	१९	८९
निसामिया	१७		निस्सगत	२९	सू० ३१
निसिर *			निस्सस	३४	२२
-निसिरे	३२	२१	निस्सल्ल	२६	४१, ४९
निसीअ (य) *				३०	३
-निसीएज्ज	१	२१, ३०	निस्सिय	८	१०
-निसीएज्जा	२	२०		३५	११
-निमीयई	१७	१३	निस्सेयस	८	५
	२२	३५	निस्सेस	८	३
निमीयण	२८	२४		२२	१९
निमीट्ठिया	०	सू० ३	निहतूण	२३	४१
	२३	०, ५	निट्ठय	१२	३२
निमुग्ग	१८	८२	निट्ठिय	११	१५
निमंज्जा	१७	७, १९	निट्ठय (अ)	१९	४१
	०३	१७		२०	३८
निरेया	३०	३		२२	४३
निरेय *			नो *		
-निरेय	८	१०	-निन्नि	१८	१२
	१९	१	-नेट	१३	२२
			नीटकोविअ	२५	६

२१४

परिशिष्ट-२

पइट्टा	२३	६५, ६८	पएसग्ग	२६	सू० २३
पइट्टिय	३६	५५, ५६, ६३		३३	१६, १७, २४
पइण्णग	२८	२३	पओग	२६	सू० ३६
पइण्ण	३०	११		३२	३१, ४४, ५७,
पइण्णवाइ	११	६	पओयण	२३	७०, ८३, ९६
पइण्णि	६	६		३२	३२
पइन्न	२०	५३	पओस	८	१०५
पइन्ना	२३	३३		३२	२
पइरिक्क	२	२३		३२	२६, ३३, ३६,
	३५	६			४६, ५२, ५६,
पईव	२३	२, ६			६५, ७२, ७८,
	३४	७			८५, ९१, ९८
पउज *				३४	२३
-पउजन्ति	८	१३	पओस *		
	३६	२६४	-पओसए	२	११, २६
-पउजेज्ज	२४	१३	पओसकाल	२६	१६
पउजमाण	२०	४५	पक	१	४८
पउमगुम्म	१३	१		२	१७, ३६
पउर	८	१	पकजल	१३	३०
	३२	११	पकाभा	३६	१५७
पउस्स *			पख	१४	३०
-पउस्सइ	१५	११	पच	१	४७
-पउस्से	४	११		११	३
प	३३	१८		१२	४२
०८		५, ६, १०		१७	२०
				१६	१०, ४३, ८८

उत्तरजम्भण द्वाद-सूची

पच	२१	१०	पचिदियगाय	१०	१३
	२२	२१	पचिन्द्रियत्त	१०	१८
	२३	३६, ८७	पचिन्द्रियया	१०	१७
	२६	सू० ७३	पजग	१८	४१
पचम	२३	१७		२२	१८, १६
	२६	३	पजलि	२०	७
	३०	११		२५	१३
	३३	५	पजलिउड	१	८१
	३६	१६१		२६	६
पचविह	१६	१०	पजलीउड	१	२२
	२८	८, ५		२५	१७
	२६	सू० ७३	पजग	१६	सू० ३
	३३	१, १५	पजिय	१	६, ३७
	३६	२०५		४	६
पचमिक्कियय	२३	१२, २३		५	३, १७
पचहा	२८	८		६	२
	३०	१८, ३८		७	१६, ३०
	३६	१५, १६, २१, ८५, ११७, १७२, २०८, २१६		८	६२
				१६	६६
				२२	४६
				२४	२७
पचाल	१३	१३, २६, ३४		३०	३७
	१८	४५		३१	२१
पचिदिय	६	३६	पडियमाणि	६	१०
	३६	१२६, १५५, १७०	पडु	३६	७२
			पडुय	१०	

पंडुर	३५	४	पक्कम *		
	३६	६१	-पक्कमई	३	१३
पडुरय	१०	२१ से २६		१६	८२
पंत	८	१२	-पक्कमंति	२७	१४
	१२	४		२८	३६
	१५	४	पक्ख	५	२३
पंतकुल	१५	१३		२६	१४, १५
पथ	२	५		२७	१४
पसु	१२	६, ७	पक्खओ	१	१८
पकप्प	३१	१८	पक्खन्द *		
पकर *			-पक्खन्द	१२	२७
-पकरेति	१	१३	पक्खपिंड	१	१६
-पकरेइ	२६	सू० २३	पक्खि	४	६
	३२	१०८		६	१५
-पगरेह	१२	३६		१३	३१
पकिण्ण	१२	१३		१४	३०
पकित्थिय	३६	१६, १८, १९, २१, ८५, ९४, ९६, ११७, १२६, १२७, १३६, १४५		१६	५८, ७६
				२०	३
				३२	१०
				३६	१८८
पकुब्ब *			पक्खिणी	१४	४१
-पकुब्बड	११	७	पगड	१३	८, ९
	२७	११	पगब्भ *		
			-पगब्भई	५	७
पक्क	१६	४६, ५७	पगर*		
	३८	१३	-पगरेह	१२	३६

उत्तरज्भयण शब्द-सूची

पगाढ	५	१२
	१६	७२
पगाम	१४	१३, १६, ३१
	३२	१०
पगामभोड	३२	११
पगाममो	१७	३
पगार	३२	१०६
पगास	२०	४२
पगासण	३२	२
पगिज्भ *		
-पगिज्भेज्जा	८	१६
पगिज्भ	१४	५०
पच्चवग	१६	४
पच्चवक्वाण	२६	२६
	२६	सू० १, १४, ३४
		से ४२
पच्चवणुह्व *		
-पच्चवणुहोड	१३	२३
पच्चवमाण	३२	२०
पच्चवय	२३	३२
पच्चवाय	१०	३
पच्चुप्पन्न	७	६
पच्छा	२	४१
	४	७, ६
	५	१३
	१०	३३

पच्छा	१४	२६, ३१
	१७	१
	१६	११, १३, ४३
	२२	३४, ३८
	२६	सू० २६, ३३, ४०,
		५६, ६२, ७२
	३२	३१, ४४, ५७,
		७०, ८३, ६६
पच्छाणुताव	२०	४८
	२६	सू० ७
	३२	१०४
पच्छाणतावा	१०	३३
पच्छायइत्ता	१०	८
पच्छिम	२३	२६, ८७
पजह '		
*पजहामि	१२	४६
	१४	३०
-पजहे	१५	६
पजुज *		
-पजुजई	६	३०
पज्जअ	३५	१६
पज्जत्त	३६	७०, ७१, ८६,
		८५, ९०, ९३,
		१०८, १०९,
		११७, ११८,
		१२७, १३६
		१४५

पञ्जलण	१४	१०
पञ्जलिअ	११	२६
पञ्जव	२८	५, ६, १३
	२६	सू० ८, ५७ से
		५६
	३०	१४
पञ्जवचरअ	३०	२४
पञ्जुवट्टिअ	६	६१
	१८	४६
पट्टण	३०	१६
पट्टिस	१६	५५
पट्टु	५	१
पट्टिय	२३	६१, ६३
	२७	४
पड *		
-पडइ	२७	५, ६
-पडति	१८	२५
पट	१६	८७
पडत	१४	२१
	१६	६०
पडिकूल	१२	१६
पडिकूल *		
-पडिकूलेड	२७	११
पडिकम्म *		
-पडिकम्मामि	१८	३१
-पडिकम्ममे	१	३१

पडिककम	१६	७६
पडिककमण	२६	सू० १, १२
पडिककमिता	२६	३७
पडिककमित्तु	२६	४१, ४५, ४६
पडिगाह *		
-पडिगाहेज्ज	१	३४
पडिघाअ	६	५४
पडिचोय *		
-पडिचोएइ	१७	१६
पडिच्छ *		
-पडिच्छई	१२	३५
	२६	२६
पडिच्छन्न	१	३५
पडिठप्प	१४	६
पडिणीय	१	३, ४, १७
पडितप्प *		
-पडितप्पइ	१७	५
पडित्थद्व	१२	५
पडिनियत्त *		
-पडिनियत्तइ	१४	२४, २५
पडिपुच्छ *		
-पडिपुच्छई	२०	७
पडिपुच्छणया	२६	सू० १, २१
पडिपुच्छणा	२६	
पडिपुण्ण	८	
	६	

उत्तररज्जमयण शब्द-सूची

२१६

पडिपुष्णः	११	२५, २६, ३०	पडिलेहणा	१७	६
	२६	सू० ७२		२६	२६, ३०
	३२	१	पडिलेहा	२६	१६, २८
पडिप्पह	२७	६	पडिलेहिता	२८	१८
पडिवुद्धजीवि	४	६		२६	८, २०, २३
पडिमत् *			पडिलेहिताण	२६	२१
-पडिमतेइ	१८	६	पडिलेहिया	२६	८८
पडिमा	२	८३	पडिवज्ज *		
	३१	६, ११	-पडिवज्जइ	२३	८७
पडियर *				२६	सू० ७
-पडियरसी	१८	२१	-पडिवज्जई	२३	५६
पडिय	२६	सू० ६०	-पडिज्जए	३	१०
पडिरुव	१	३२	-पडिवज्जति	३	८
	२३	१६	-पडिवज्जामि	२६	५०
पडिरुवन्तु	२३	१५	-पडिवज्जयामो	१८	२८
पडिरुवया	२६	सू० १, ८३	पडिवज्ज	२१	२०
पडिलभ *			पडिवज्जअ	२	८३
-पडिलभे	१	७	पडिवज्जमाण	२६	सू० १७
पडिलेह *			पडिवज्जियव्व	३०	६
पडिलेहइ	१७	१८	पडिवज्जिया	३	२०
-पडिलेहए	२६	२२, २३, ३५, ३७, ४५		५	१५
-पडिलेहे	२६	२४		७	२८
-पडिलेहेइ	१७	६, १०		२१	१०
-पडिलेहिज्ज	२६	३८	पडिवति	२३	१०
पडिलेहणया	२६	सू० १, १६		२६	सू० ५

पडिवन्न	२६	सू० ३,५ से ८, सू० ३२, ३७, ४२, सू० ६२	पडुच्च	३६	१४०, १५०, १५६, १७४, १८३, १६०, १६६, २१८
पडिसजल *					सू० १३
-पडिसजले	२	२४	पडुप्पन्न	२६	४
पडिसविकख *			पढम	५	४
पडिसविकखे	२	३१		२०	१६
पडिसघ *				२४	१२
-पडिसघए	२७	१		२६	२, १२, १८,
पडिसलीण	११	१३			२८
पडिसिद्ध	२५	६		२८	३२
पडिसेव *				३४	५८
-पडिनेवन्ति	२	३८		३६	१६०, २३४,
पडिेवि	३६	२६६			२५२
पडिेह *			पणग	३६	१०३, १०४
-पडिेहए	२५	६	पणगमट्टिया	३६	७२
पडिेहिय	१५	११	पणट्ट	४	५
पडिमोअ	१६	३६	पणयाल	३६	५८
पडिमोत्त	१४	३३	पणवीस	३१	१७
पडिस्मुअ	२६	६		३६	२३६
पडिस्पुण *			पणाम		
-पडिस्मुणे	१	१८, २१, २७	-पणामाण	१६	७६
पडिस्स	३६	५५, ५६		२२	२०
पडुच्च	३६	१२, ७६, ८७, १०१, १६२, १२१, १३१,	पणिहाणव	१६	८, १४
			पणिहि	२३	११
			पणीय	१६	सू० ६

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

२२१

पणीय	१६	७, १२	पत्तेग	३६	६३, ६५
	३०	२६	पत्तेगसरीर	३६	६४
पणुवीसड	३६	२३७	पत्थ *		
पणोल्ल *			पत्थए	२	६
-पणोल्लयामो	१२	४०		३५	४, १३, १८
पणण	१	२८	-पत्थेड	२६	सू० ३४
पत्त	५	१५	-पत्थेमि	६	४२, ५१
	७	३	पत्थ	१८	४८
	१२	४७	पत्थिअ	२१	३
	१८	३८, ४०, ४२,	पत्थिव	६	३२, ५१
		४३, ४७		१८	११
	१६	५६, ६१, ६५		२०	१६, १६
	२०	४८	पत्थेमाण	६	५३
	२१	१७	पद्दुट्ट	३२	३३, ४६, ५६,
	२२	४८			७२, ८५, ६८
	२५	२, ४३	पद्दोस	१२	३२
	२६	सू० ७८	पद्दावन	२३	५६
पत्त (पात्र)	६	१५	पन्न	१५	२, १५
पत्त (पत्र)	६	६	पन्नत्त	८	८
	३६	५६		१६	सू० १ से १२
पत्तअ (प्राप्तक)	२६	सू० ४५		२८	२, ७
पत्तअ (पत्रक)	१०	१		२६	सू० ११
पत्तहारग	३६	१३७	पन्नरस	११	१०
पत्तिअ	१	४१		३६	१६७
पत्तियाइत्ता	२६	सू० १	पन्नव	२	३६
पत्तो	१२	२४		२४	१०
	१४	३			

२२२

परिशिष्ट-२

पन्मवय,	७	१३	पभा	५	२७
पन्नविअ	२६	सू० ७४		२२	७
पन्ना	२	सू० ३		२३	१८
	२	३२		३४	५,६
	२३	२५, २८, ३४,	पभाय	२०	३४
		३६, ४४, ४६,	पभाव	१६	६७
		५४, ५६, ६४,		२६	सू० २४
		६६, ७४, ७६,		३२	१०४
		८५	पभाव *		
पप	३६	६, ७६, ८७,	-पभावेड	२६	सू० २४
		११२, १२१	पभावग	२६	सू० ७२
		१३१, १४०,	पभावणा	२८	३१
		१५०, १५६,	पभास *		
		१७४, १८३,	-पभासई	१८	२३
		१६०, १६६,	-पभाससे	१२	१६
		२१८	पभीय	५	११
पप			पभु	१६	३४
पपानि	१४	१४	पभूय	१२	१०, ३५
पफाट				१३	११, १३
-पफोटे	२६	२४		१४	१६, ३१
पफाउणा	२६	२६		२०	२, १८
पत्रन्ध	११	७, ११	पमज्ज *		
पभट्ट	८	१४	-पमज्जेज्ज	२४	१४
पना	२३	७६	-पमज्जेज्जा	२६	२४
पनव	२२	१, ७, १२,	पमत्त	४	१, ५, ६-
		१०३, १११		६	१६

२२४

परिशिष्ट-२

गया "			पर	२६	३५
-पयाड	१३	२४		२८	१६
पयार	३२	१०४		२६	सू० ३४,६१
पयाव '				३२	२६,४२,५५,
-पयावए	२	२			६८,८१,६४
	३५	१०		३४	४७,५१,५८,
-पायए	३५	११			५६
पयावण	३५	१०		३६	२६३
पयाहिणा	६	५६	परअ	३४	१४
	२०	७,५६	परंदम	७	६
पर	१	१६,२५	परपर	३२	३४,४७,६०,
	२	१०,२०,२४,			७३,८६,६६
		३०,४४	परपरा	३२	३३,४६,५६,
	४	४,१३			७२,८५,६८
	५	५,६	परकड	१	३४
११	३२			३५	६
१२	६,३१		परक्कम	६	२१
१३	२१,२४			११	१७
१५	११,१२			१८	५१
१८	१७,२७,२६		परगेह	१७	१८
१६	१६,२१		परज्म	४	१३
२०	३५,४६		परत्थ	१	१५
२१	१०			४	५
२४	१७			१७	२०
२५	८,१२,१५,		परपासड	१७	१७
	३३ ३७		परम	२	२६

परिच्छज्ज	१८	१२, ४८	परितप्प *		
	३५	२	-परितप्पई	५	११, १३
परिच्चत	१४	३८	परितप्पमाण	१४	१०, १४
	२२	२६	परित्तससारि	३६	२६०
परिच्चय *			परिताव	२	३६
-परिच्चयई	६	३	परिताव *		
परिच्चाअ (य)	१६	२६	-परितावेइ	३२	२७, ५३, ६६, ७६, ६२
	२६	सू० ३	-परियावेइ	३२	४०
परिच्चाइ	१७	१७	परिदाह	२	८
परिजुण्ण	२	१२	परिदेव *		
परिजूर *			-परिदेवए	२	८, १३, ३६
-परिजूरड	१०	२१ से २६	परिधाव *		
परिणम *			-परिधावई	२३	५५, ५८
-परिणमे	३४	२२, २४, २६, २८, ३०	परिनिव्वव *		
परिणय (अ)	३४	१३, २१, ५८ से ६०	-परिनिव्ववेइ	१२	२०
	३६	१६ से २१	परिनिव्वा *		
परिणाम	१६	१७	-परिनिव्वाएइ	२६	सू० २६, ४२, ५६, सू० ६२, ७४
	२२	२१	-परिनिव्वायति	२६	सू० १
	३४	२, २०, २२	परिनिव्वुअ	३६	२६८
	३६	१५, १७	परिनिव्वुड	५	२८
परिणिट्ठिय	०	३०		१०	३६
				१४	५३
परिणिव्वुअ *				१८	२४, ३५
-परिणिव्वुअ	३५	०१	परिन्नाय		
			(परिज्ञान)	२	१६

परिवारिय	१८	२	परिहर *		
	२२	११	-परिहरे	१	२४
परिविस्त	१४	६	परिहरिय	१२	६
परिवुड	२०	११	परिहायत	३६	५६
	२२	२२, २३	परिहार-		
परिवूढ	७	२, ६	विसुद्धीय	२८	३२
परिव्वअ *			परिहिय	२२	६
-परिव्वए	२	१६	परी *		
	६	१२, १४, १५	-परियति	२७	१३
	१५	१, ८, ९, १३	परीसह	२	सू० १ से ३
-परिव्वएज्जा	२१	१५		२	१, ५, १४,
परिव्वयत	२	सू० १ से ३			१८, ४६
	१४	१४		१६	३२
परिसकमाग	४	७		२१	११, १७, १६,
परिसप्प	३६	१७६, १८१			२२
परिसा	२२	२१		२६	सू० ४७
	२३	८६		३१	१५
	२५	१३	परीसहपविभत्ति	२	
परिसिच *			पह्वणा	३६	३
-परिमिचई	२०	२८	पह्विअ	२६	सू० ७४
-परिसिचेज्जा	२	६	पलदु	३६	६७
परिमुक्ता	२	५	पलव	२६	२७
परिमुज्ज *			पलाय *		
परिमुज्जई	२८	३५	-पलायए	२७	७
परिमुट्ट	२४	८	पलायण	१४	२७
परिमाप्ति	१२	८	पलाल	२३	१७

२३०

परिशिष्ट-२

पवह	११	२८
पवाइ	४	१३
पवाल	३६	७४
पविट्ठ	२	२६
	१३	३४
	१६	८३
पवित्तिक्रय	२३	१४
पवित्त	१२	६
पविभक्ति	२	१
पवियकखण	६	६२
	१६	६६
	२२	४६
पवेउय(अ)	२	सू० १ से ३
	२	१,४६
	५	१७
	१३	१३
	२६	८,७
	२६	सू० १
	२०	३६
	७	१६
	२०	२०
	३३	२६७
	२	३
	२०	२६
	२०	३६

पव्वइय	१०	२६
	१३	२
	१५	१०
	१७	१,३
	१८	२०,४७
	२०	८,३४
	२२	३२
पव्वगा	३६	६५
पव्वज्जा	६	६
	१३	१४
	१८	३६
	२२	२८
पव्वय	६	४८
पव्वय *		
-पव्वइस्सामि	१६	१०
-पव्वण	१८	३४,४६
	२०	३२
	२१	१०
-पव्वया	१६	७५
पव्वयन	६	५
	२५	२०
पव्वाय *		
-पव्व्वावेमी	२२	३२
पमनचित्त	३८	२६,३१
पममा	१५	५
	१६	६०

२३०

परिशिष्ट-२

पवह	११	२८
पवाड	४	१३
पवाल	३६	७४
पविट्ट	२	२६
	१३	३४
	१६	८३
पवितक्रय	२३	१४
पवित्त	१२	६
पविभत्ति	२	१
पवियकवण	६	६२
	१६	६६
	२२	४६
पवट्टय(अ)	२	सू० १ से ३
	२	१,४६
	५	१७
	१३	१३
	२६	१,७
	२६	सू० १
	२०	३६
	३	१६
	२०	२०
	३२	२६७
	२	३
	२२	२६
	२०	३६

पव्वइय	१०	२६
	१३	२
	१५	१०
	१७	१,३
	१८	२०,४७
	२०	८,३४
	२२	३२
पव्वग	३६	६५
पव्वज्जा	६	६
	१३	१४
	१८	३६
	२२	२८
पव्वय	६	४८
पव्वय *		
-पव्वइस्सामि	१६	१०
-पव्वग	१८	३४,४६
	२०	३२
	२१	१०
-पव्वया	१६	७५
पव्वयत	६	५
	२५	२०
पव्वाय		
-पव्वावेमी	२२	३२
पमतचित्त	३८	२६,३१
पममा	१५	५
	१६	६०

उत्तरज्भयण शब्द-सूची

पसंसिअ	१४	३८	पसाह *	
पसज्ज *			-पसाहि	
-पसज्जसि	१८	११, १२	पमाहिना	
पसत्थ	१२	४४, ४७	पमाहिय	
	१४	६	पनिहि	
	१६	६३	पनिण	
	२६	२८	पसोअ *	
	२६	सू० ५, ८, १३, मू० ४३	-पनीयनि	
	३२	१३, १६, ११०	-पनीयत	
	३४	१७, १६, ६१	पमु	
पसन्त	१	४६		
	१२	४६		
	१८	२०		
पसमिक्ख	१४	११	पमुत्त	२०
पसर	३६	२६६	पसूय	६३
पसर *				२३
पसरई	२८	२२	पस्स (ट्वा)	६
पसव *			पस्स (पय्य)	७
-पसवई	२१	४	पह	१०
पसाय *				२०
-पसायए	१	१३, ४१	पहण	
पमायपेहि	१	२०	-पहणे	१८
पसारिय	१	१६	पहय	१२
	१२	२६	पहसिय	२०

२३०

परिशिष्ट-२

पवह	११	२८
पवाइ	४	१३
पवाल	३६	७४
पविट्ठ	२	२६
	१३	३४
	१६	८३
पवितविक्रय	२३	१४
पवित्त	१२	६
पविभत्ति	२	१
पवियक्खण	६	६२
	१६	६६
	२२	४६
पवेइय(अ)	२	सू० १ से ३
	२	१,४६
	५	१७
	१३	१३
	२६	४,७
	२६	सू० १
पवेविय	२२	३६
पवेस *		
-पवेसत्ति	७	१६
-पवेसे	२०	२०
पवेस	३६	२६७
पव्व	२	३
पव्वइउ	२२	२६
पव्वइत्ताण	२०	३६

पव्वइय	१०	२६
	१३	२
	१५	१०
	१७	१,३
	१८	२०,४७
	२०	८,३४
	२२	३२
पव्वग	३६	६५
पव्वज्जा	६	६
	१३	१४
	१८	३६
	२२	२८
पव्वय	६	४८
पव्वय *		
-पव्वइस्सामि	१६	१०
-पव्वए	१८	३४,४६
	२०	३२
	२१	१०
-पव्वया	१६	७५
पव्वयत	६	५
	२५	२०
पव्वाय *		
-पव्वावेसी	२२	३२
पसतचित्त	३४	२६,३१
पससा	१५	५
	१६	६०

२३२

पहा	२८	१२
पहा *		
-पहीयए	३२	१०७
पहाण	१६	६७
पहाणमग्ग	१४	३१
पहाणि	३	७
पहाणव	२१	२१
पहाय	४	२,१०
	१४	३५,३७,४०
	२१	१६
पहाव *		
-पहावई	२७	६
पहीण	५	२५
	१४	२६,३०
	२१	२१
	२८	३६
पहू	१६	२२
	३५	२०
पा *		
-पाहि	१६	५६
पाअ	१८	८
	१६	४६
	२०	७
पाडय	१६	६८,७०
पाउं (पातुम्)	१७	२
	१६	३६

पाउ (पोत्वा)	१६	८१
पाउकर *		
-पाउकरिस्सामि	१	१
	११	१
-पाउकरे	१८	३२
	३६	२६८
पाउण *		
-पाउणिज्जा	१६	सू० ३ से १२
पाउरण	१७	२
पागड	२६	सू० ४३
पागार	६	१८,२०
पाडिअ	१६	५४,५६
पाढव	३	१३
पाण (प्राण)	१	३५
	२	११
	६	६
	८	७ से ६
	१२	३६
	१७	६
	२२	१४,१६
	२४	१८
	२५	२२
	२६	२५
	२६	सू० १८,४३
	३५	१२

पाण (पान)	२	३
	६	१४
	१२	११, १६, ३५
	१५	११, १२
	१६	सू० ६, १०
	१६	७, १२
	१६	७६, ८०
	२०	२६
	२५	१०
	२६	३१
	२७	१४
	३०	२६
	३५	१०, ११
पाणय	३६	२११, २३१
पाणवत्तिया	२६	३२
पाणवह	३०	२
पाणाइत्राय	१६	२५
पाणि (पाणि)	२	२६
	२६	२५
पाणि (प्राणिन्)	३	५, ६
	६	६
	७	२०
	१०	४
	२२	१७, १८
	२३	६५, ६८, ७५,
		७६, ७८, ८०
	२६	३४

पाणिय	१०	२८
	१६	८१
पाय (पाद)	१	१६
	६	६०
	१२	२६, ३३
	१७	१४
	१६	४६
पाय (पात्र)	६	७
पाय (प्रायस्)	३२	१०
पायं	१२	३६
पायकबल	१७	७, ६
पायच्छित्त	२६	सू० १, १३, १७
	३०	३०, ३१
पायत्ताणिय	१८	२
पायत्र	१६	५२
पार	१०	३४
	२३	७०, ७१
	३६	६७
पारअ	२०	४१
पारग	१८	२२
	२३	२, ६
	२५	७, ३६
पारण	२५	५
पारणअ	१२	३५
पारित्ता	२६	५०
पारिय	२६	४०, ४२, ४८,
		५१

पारेवय	३४	६	पावकारि	४	३
पालइत्ता	१३	३५		१८	२५
	२६	सू० १, ७३	पावग (पापक)	१	१२
पालिअ	२१	१, ४		२	२३, ४२
पान्त्रिया	१	४७		६	८
पालियाण	२०	५२		११	८
पालो (दि०)	१८	२८		१३	२४
पाव	४	२		२१	६
	६	१०		२५	२१
	११	८, १२	पावग (य)	३०	१
	१२	३६, ४०		८	६
	१४	२०	पावदिट्ठि	१३	२५
	१६	५३, ५५, ५७		१	३८, ३६
	२०	४७		२	२२
	२१	२४	पावयण	२१	२
	२५	२८	पावसमण	१७	३ से १६
	२८	१४, १७	पावसमणिज्ज	१७	
	२६	सू० १७, ३३, ५६	पावसुयपसग	३१	१६
	३०	६	पाविय	८	७
	३१	३		१३	१६
	३२	५		१६	५७
पाव *			पास *		
-पावड	३२	२४, ३७, ५०, ६३, ७६, ८६	-पास	४	२
-पावेसु	२२	२५	-पासई	१८	६
पावअ	३	१२		१६	५
				२०	४
				२१	८

-पासए	३२	१०६	पासिया	१२	२०, ३९
-पाते	६	४		२२	३४
पास (पाश)	४	७	पासेत्ता	२२	१५
	६	२	पाहेअ	१६	२०
	१६	५२, ६३	पिउ	१२	२२
	२३	४० से ४२		१६	२, ८४
पास(पार्श्व)	१४	४७	पिड	१	३४
	२०	३०		२	३०
	२३	१, १२, २३,		६	१४
		२६		१५	१३
	२७	५	पिडवाय	६	१६
पास (पश्यत्)	१८	५		३५	१६
पासण्ड	२३	१६	पिडोगह	३१	६
पासण्डि	२३	६३	पिडोलय (दे०)	५	२२
पासमाण	८	४	पिच्छ	३४	५
पासवण	२४	१५	पिज्ज	४	१३
	२६	३८	पिट्टुओ	१	१८
पासाअ(य)	६	७, २४		२	१५
	१६	४	पिट्टि	१२	२६
	२१	७, ८	पिय (प्रिय)	१	१४
पासिऊण	१२	४		६	१५
	२१	६		१४	५
पासित्ता	१८	६		१६	६६, ७०
	२०	५		२१	१५
पासित्तु	१२	२५		३४	२८

२३६

परिशिष्ट-२

पिय (पितृ)	६	३	पिहे #		
	१३	२२	-पिहेइ	२६	सू० १२
	२०	१८, २४	पोड #		
	२१	७	-पोडई	२०	२१
सु कर	११	१४	पीडिअ	१६	१८, १६
पियवाइ	११	१४	पोढ	१७	७
पियदसण	२१	६	पीणिअ	७	२
पियघम्म	३४	२८	पीय	२०	४४
पियर	१८	१५	पीयअ	३६	२५
	१६	६, २४, ४४,	पोल *		
		७५, ७६, ८६	-पीलेइ	३२	२७, ४०, ५३,
	२१	१०			६६, ७६, ६२
पियायण	६	६	पीला	२२	३७
पिव	१६	६७	पोलिग्र	१६	५३
पिवासा	२	सू० ३	पोह *		
	२	४	-पोहए	२	३८
पित्रीलि	३६	१३७	-पीहेइ	२६	सू० ३४
पित्रीलिया	३	४	पुगव	२२	१३
पिसाय	१२	६, ७	पुगल	२८	७, ८, १२
	३६	२०७		३६	२०
पिसुण	५	६	पुच्छ	२७	४
पित्समाग	३४	१७	पुच्छ *		
पिट्टिय	१६	६३	-पुच्छ	२३	२२
	२६	सू० १२	-पुच्छई	१६	७६
पिट्टुड	२१	२, ३		२५	१३
			-पुच्छसी	१८	३२

उत्तरजभयण शब्द-सूची

गुच्छामि	२३	२१	पुण	१	१२, ४१
गुच्छेज्जा	१	२२		३	६
	२६	६		५	६
पुच्छणा	३०	३४		१०	१६, १६, २६,
पुच्छमाग	१	२३			३४
पुच्छिअ	२५	१५		१३	२
पुच्छिऊग	२०	५७		१४	२८
पुज्ज	१	४६		१५	६
	५	२६		१८	३१
पुज्जसत्थ	१	४७		१६	७५
पुट्ट (पुष्ट)	१	१४, २५		२०	३१
	२	४०		२६	१२, २४, ३२
पुट्ट (स्पुष्ट)	२	सू० १ से ३		२६	सू० १२
	२	४, १०, ३२,		३६	११७, २५७,
		४६			२५६
	५	११	पुणो	६	५६
	२६	सू० ७२		२६	सू० २, ५६
पुट्ट (पुष्ट)	७	२		३२	३३, ४६, ५६,
पुट्टविककाय	१०	५		३६	७२, ८५, ६८
पुट्टवी	६	४६			७०, ८४, ६२,
	२६	३०	पुण्ण (पूर्ण)	११	१०८
	३५	११		१२	३१
	३६	५७, ६०, ६६,		२०	१३
		७०, ७३, ७७,	पुण्ण (पुण्य)	१२	१२
		८० से ८२		१३	१०, ११, २०,
पुट्टे	३	२			२१

३३८

परिशिष्ट-२

पुण (पुण्य)	१८	७	पुरओ	१	१८
	२१	२४	पुरदर	११	२३
	२८	१४, १७		२२	४१
पुणपय	१८	३४	पुरत्यओ	३२	३१, ४४, ५७,
पुणमासी	११	२५			७०, ८३, ९६
पुत्त	१	३९	पुरा	१३	९
	६	३		१४	२०
	९	२, १५		१९	६, १३
	१३	२५	पुराकअ(य)	१४	२
	१४	५, ९, १२,		१९	८
		२९, ३०, ३६	पुराकाउ	७	२४
	१८	१५, ३७, ४६	पुराण	८	१२
	१९	२, १६, २४,		१४	१
		३४, ३५, ३८,		२०	१८
		७५, ८४, ८५,	पुरिम	२३	२६, २७, ८७
		८७, ९७		२६	२५
	२०	२५	पुरिमताल	१३	२
	२२	२, ४	पुरिस	६	१
पुत्तय	१४	५		८	६, १८
पुप्फ	९	९		१३	३१
	१२	३६		१४	१४, ३८
	३४	६		३०	२२
मुमत्त	१४	३		३६	५१
पुमित्तियवेय	३२	१०२	पुरिससिद्ध	३६	४९
पुर	९	४	पुरिसोत्तम	२२	४९
	१४	१	पुरी	२२	२७
	२०	१४, १८		२५	२, ४

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

२३६

पुरे	१४	१
पुरेकड	१०	३
	१३	१६
	२१	१८
पुरोहिय(अ)	१४	३,५,११, ३७,५३
पुलय	३६	७६
पुलाग	८	१२
पुव्व	१	४६
	२	४०
	३	१५,१६
	४	८,९
	६	१३
	८	२
	१३	१५
	१६	सू० ८
	१६	६,४६ से ५१,६०
	२५	४३
	२६	२४
	२८	२६,३६
	२९	सू० ६,३३,३८, ६३ से ७१
	३४	४६
	३६	१७५,१७६, १८५,१८२, २०१

पुव्वय	१	४८
पुव्वसथव	६	४
पुव्वि	१२	३२
	१४	५२
पुव्विल्ल	२६	८,२१
पुहत्त	२८	१३
	३६	११,१७६, १८५,१८२, २०१
पुहुत्त	३६	६५
पूइ	७	२६
पूइअ	१	४८
	१२	४०,४५
	१७	२१
	२३	१
पूइकणी	१	४
पूयण	३५	१८
पूया	१५	५,९
	२१	१५,२०
	२६	७
पूर	३४	९
पेच्च	४	३
	९	५८
	१८	१३
पेच्चा	१७	३
पेज्ज	२६	सू० १,७२

फल	२३	४८
	२६	सू० ११, १७
	३२	१०, २०
फट्ट *		
फलेइ	२३	४५
फलाग	१७	७
फलिह	३६	७५
फालिअ	१६	५४, ६२, ६४, ६६
फास	४	११, १२
	१०	२५
	१६	सू० १२
	१६	१०
	२१	१८
	२८	१२
	२६	सू० ६७
	३२	७४ से ८६
	३४	२, १८, १६
	३६	२०
नाम *		
नामए	५	२३
नामयई	२०	३६
नो	६२	४७
नो ज्ञ	२१	२२
ननता	२६	सू० १
नना	३६	१५, १६, २२ से ४६, ८३,

फासओ	३६	६१, १०५, ११६, १२५, १३५, १४४, १४५, १६६, १७८, १८७, १६४, २०३, २४७
फासिदिय	२६	सू० १, ६७
फासय	१०	२०
फासुय	१	३४
	२३	४, ८, १७
	२५	३
	३५	७
फिट्ट *		
-फिट्टई	२०	३०
फुड	१६	४४
फुस *		
-फुसई	२	६
-फुसति	४	११
	१०	२७
	२१	१८
फुस	२२	१२
फुसत	१२	३६
फेण	१६	१३
फोक्कनास		
(दे०)	१२	६

व			-बन्ध	२६	सू० ३८,६३ से
वज्र *					७१
-वज्रभङ्ग	८	५	-बन्धन्ति	३६	२६७
-वज्रभक्ति	६	३०	बन्धण	१	१६
वज्रक	३०	८		१४	४८
वज्रकओ	६	३५		२०	३६
वज्रकमाण	१४	४६		२६	सू० २३
	२३	८०	बन्धव	४	४
वडिस	३२	६३		१०	३०
वद्ध	१४	४५		१३	२३
	१६	५१,५२,६३,		१८	१४
		६५		१६	१६
	२३	४०		२०	३४,५५
	२६	सू० ६,२३,३३,	बन्धवया	४	४
		३८,६३ से	बन्धु	१८	१५
		७२	बन्ध	१२	४६
	३३	१		१३	१३
वद्धग	३३	१८		१६	२८
बन्ध	६	६		२१	१२
	१४	१६		३१	१४
	१६	३२,६८	बन्धइज्ज	१२	३
	२५	२८	बन्धगुत्ति	३१	१०
	२८	१४	बन्धचेर	१६	सू० १ से १२
	२६	सू० १,५,२३		१६	१ से ६,१५
बन्ध *				२५	३०
-बन्ध	२६	सू० २,६,२३,		२६	३४

ब्रम्भचेर-			बहिं	१४	४,१७
समाहिट्टाण १६			बहिया	६	१३
ब्रम्भण	२५	१६, २६ से		१२	३८
		३१		२५	३
ब्रम्भदत्त	१३	१, ४, ३४	बहु	३	६, ६, १०,
ब्रम्भयारि	१२	६, २२			१५
	१६	सू० १ से १३		४	१२
	१६	१६		६	२
	२१	१३		७	८
	३२	११, १३		८	१५
ब्रम्भलोग(अ)	१८	२६		९	९, १६
	३६	२१०, २२६		१०	३, १६
ब्रम्भवय(अ)	१६	३३		१२	१६
	३२	१५		१४	७, १०, १३
बल	३	१८		१७	११
	६	४		२०	३८
	१०	२१ से २६		२१	१७
	११	२१		२२	१७ से १६,
	१८	१			२७, ३२
	२१	१४		२८	१६, ४०, ६०,
बलभद्	१६	१			७५
बलव	११	१८		२५	२४
	२५	२८		२६	५२
बलतिरी	१६	२		२६	सू० १, ५, २३
बला	१६	५८		३१	१
बलागा	३२	६		३३	७, १३

बहु	३५	१२	वायर	३६	१००,१०६,
	३६	२५०,२६१			१०६,१११,
बहुमअ	१०	३१			११७,११८,
बहुमाण	१३	४			१२०
	२६	सू० ५	वायरकाय	३६	७४
बहुय	१	१०	बारगा	२२	२२,२७
	१६	६५	बारस	३६	५७,१३२,
बहुल	१०	१५			२५१
	१६	सू० १ से ३	वारसगविड	२३	७
	२६	१५	वारसहा	३६	२१०
	२६	सू० ४०	बाल	१	३७
बहुविह	१६	८६		२	२४
बहुसो	६	१		५	३,४,७,६,
	१६	६३			१२,१५ से
	३४	५६,५७			१७
	३६	२६१		६	१०
बहुस्सुअ(य)	५	२६		७	४,५,१०,
	११	१५ से ३०			१७,१६,२८
	२२	३२		८	५,७
बहुस्सुअपुज्ज	११			९	४४
	१४	१०		१२	५,३१
बाड	१२	३५		१३	१७
वायर	२५	६		१७	४
	३६	७०,७१,७२,		३२	३,१७,२६,
		८४ से ८६,			२७,३६,४०,
		६२,६३,			५२,५३,६५,
					६६,७२,७६,
					६१,६२

वालगवी	२७	५
वालगपोइया	६	२४
वालत्त	७	२८
वालभाव	७	३०
वालमरण	३६	२६१
वाला	२०	२६
वावत्तरि	२१	६
वावोस	२	सू० १ से ३
	३१	१५
	३६	८०, १६५,
		१६६, २३३,
		२३४
वाह *		
-वाहइ	३२	११०
वाहल्ल	३६	५६
बाहा	१६	३६
	२२	३५
वाहिर	२८	२१, ३४
	३०	७
वाहिरअ	१६	८८
वाहिरग	३०	२६
वाहिरिय	१२	३८
वाहु	१२	२६
विइज्जिय	३०	६
विइय	१०	३०
	२६	२, २४

विइय	२६	सू० ७२
	३६	२३५
विन्दु	१०	२
	२८	२२
विराल	३२	१३
विल	२४	१८
	३२	५०
वोअ	२४	१२
	२६	१२, १६, १८,
		४३
	२८	३२
वोय	१	३५
	१२	१२
	१७	६
	२४	१८
	३२	७
वोयरुइ	२८	१६, २२
बुज्ज *		
-बुज्जइ	२६	सू० २६, ४२, ५६,
		सू० ६२, ७४
-बुज्जन्ति	२६	सू० १
-बुज्जामो	१४	४३
बुज्जिया	३	१६
बुद्ध	१	८, १७, २७,
		२६, ४०, ४२
	६	३

बुद्ध	१०	३६, ३७	अब्बवी	६	३७, ३९, ४१,
	११	१३			४३, ४५, ४७,
	१४	५१			५०
	१८	२१, २४, ३२		१२	५
	२३	३, ७		१३	४
	२५	३२		१६	६
	३५	१		२०	३१
	३६	२६८		२१	६
बुद्धपुत्त	१	७		२२	१५
बुद्धि	८	५		२३	२१, २२, २५,
	१३	३३			३१, ३७, ४२,
	३२	४			४७, ५२, ५७,
बुध्वय	१६	१३			६२, ६७, ७२,
बुधन्त	२३	२१, २२, २५,			७७, ८२
		३१, ३६, ४२,		२५	१०
		४७, ५१, ५७,	-आह	१६	सू० ३ से १२
		६२, ६७, ७२,		२२	८
		७७, ८२	-आहसु	२	४५
बुभाण	२३	३१		२०	३१
बुभ	३०	३५	-आहु	१२	२५
	३३	२५		२१	१४
बुभ			-धित	१६	२४, ४४, ७५
	६	६, ८, ११,	-बूम	२५	१६ से २७,
		१३, २७, १६,			३२
		२३, २१, २७,	-वृत्ति	२५	१४
		२६, ३१, ३३,	बुभ	३४	१६

उत्तरजम्पण शब्द-सूची

वेङ्गिन्दिय	३६	१२६, १२७, १३०, १३२ से १३४	भड	१६	२२
वेङ्गिन्दियक काय १०		१०	भडग(य)	३६	२६७
वोन्दि (दि०)	३५	२०		२४	१३
	३६	५५, ५६	भडवाल	२६	८, २१, ५३
वोद्धव्व	३६	१०, ७१, ७६, ६५, ६६, १०६, ११०, १३८, १७१, १८८, २०६	भत	२२	४५
वोहि	३	१६		६	५८
	८	१५		१२	३०
	३६	२५७ से २५९		१७	२
वोहिलाभ	१७	१	भंस *	२०	१५
	२६	सू० १५	-भसेज्जा	२३	२२
			भक्ख	२६	६
				२६	सू० १ से ७२
			भक्खण	१६	सू० ३ से १२
				१	३२
				६	१४
			भक्खण	२३	४६
				३६	२६७
			भक्खर	२३	७८
भइय	३६	२२ से ४६	भक्खियव्व	२२	१५
भइणी	२०	२७	भक्खी	२३	४५
भइत्ता	१५	४	भगव	२	सू० १ से ३
भइयव्व	२८	२६		६	१७
	३६	११		१६	सू० १
भज *				१८	८ से १०,
-भजई	२७	४			१६
-भजए	२७	७			

२४८

परिशिष्ट-२

भगव	२१	१,१०
	२२	४,२२
	२३	५,६
	२६	सू० १,७४
भगवत	१६	सू० १ से ३
भग	७	१४,१५
	१६	६१
	२२	३४,३६
भज्ज *		
-भज्जई	२७	३
-भज्जति	२७	८
भज्जा	६	३
	१३	२५
	२१	७
	२२	२,४,६
भट्ट	२०	४१
भग *		
-नग	२५	१२
भण्ड	२२	१७,२५,३१
भन	३	६
भण्ड	३०	२६

भत्त	२६	३१
	२७	१४
	२६	सू० १,४१
	३५	१०,११
भत्ति	२०	५८
	२६	सू० ५
भद्	१	३७
	६	१६
	२२	१७,३७
भद्दत्ता	२६	सू० २४
भद्दवअ	२६	१५
भद्दा	१२	२०,२४,२५
भम *		
-भमइ	२५	३६
-भमिहिसि	२५	३८
भमर	२२	३०
	३६	१४६
भय	१	२६
	५	१६
	६	६
	६	५४
	१४	२,४,५१
	१५	१४
	१८	६
	१९	४५,६६,६१
	२१	१६

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

भय	२२	१४	-भवइ	२६	सू० ३७, ३९, ४३,
	२४	६			सू० ४५, ४८, ४९,
	२५	२१, २३, ३८			सू० ५४, ५५, ६०,
	३२	१०२			सू० ७२
भय *				३०	- २
-भएज्ज	२१	२२		३५	१४
-भयइ	११	११	-भवति	१३	२२
-भयाहि	२२	३७		१४	१२
भयकर	२३	४३		१५	१४
भयत	२०	११		२६	सू० ३४
भयट्टाण	३१	६		३२	१११
भयव	६	२, ४, १२	-भवामो	१४	२८
	२३	८६	-भवाहि	६	४२
भयाईय	२५	२१		१८	११
भयावह	१६	६८		२२	२६
	२१	११	-भविस्सई	२	४५
भरह	१८	३४, ४०		२२	१६, ३७
भरहवास	१८	३५	-भविस्ससि	६	५
भरेउ	१६	४०		२०	१२
भल्ली	१६	५५		२२	४४, ४५
भव (भवत्)	२	१	-भविस्सामु	१४	१७
	१२	१०, ४५	-भविस्सामो	१४	४५
भव *			-भवे	५	३
-भवड	२०	१५ से १७		७	१६, २६
	२६	सू० २, ३, ५,		६	४८
		सू० १७, १८, २०,		१४	३६
				२२	४२

२५०

परिशिष्ट-२

-भवे	२८	३२	भव (भव)	२१	२४
	३०	५, ६, १२,		२३	८४
		१५, १८, २०,		२६	सू० ४१, ६१
		२१, २४, ३४		३०	६
	३३	८		३२	३४, ४७, ६०,
	३५	१			७३, ८६, ९९
	३६	३, ४, ६,		३४	५८, ५९
		२२, २३, २७,		३६	६३, ६४
		२८, ४३, ४५,	भवग्गहण	१०	१३, १४
		५७, ६२, ६४,		२६	सू० २
		८०, ८८,	भवण	२२	१३
		१०२, १२२,	भवणवइ	३४	५१
		१५६, १६७,	भवणवासि	३६	२०५, २०६
		१७१, १७६,	भवतणहा	२३	४८
		१८१, १८६,	भवसिद्धिय	३६	२६८
		१९१, १९३,	भवित्ता	२०	४१, ४७
		२०२, २१६,		२६	सू० २६
		२२०, २२४ मे	भवित्ताण	१४	१
		२४३, २४५,	भाग(अ)	२६	११, १७
		२५१, २५८		३४	५२
		२२		३६	१६१
भव (भव)	६	८, १५	भागि	२६	सू० ४५
	१०	२६	भाग्	२३	७६, ७७
	१३	१	भाय	१	३६
	१४	१३, २६		६	३
	१६	१६, २१, ३६		१३	२२

उत्तरज्भयण शब्द-सूची

भायण	१६	१२	भाव	३२	२१, ८७ से
	२६	२२, ३६			६६, १०२
	२८	६		३३	१६
भायर	१३	४, ५	भावओ	३६	२६०
	२०	२६		२१	१६
भार	१०	३३		२३	८७
	१२	१५		२४	६, ७
	१३	१६		३६	३
	२६	सू० १३	भावणा	१४	५२
भाख्ह	२६	सू० १३		१६	६३
भाख्ह	१८	३४, ३६, ३८,		३१	१७
		४१	भावसुस्सूसा	३०	३२
भारिया	१०	२६	भाक्विय	१४	५२
	२०	२८	भावुज्जुयया	२६	सू० ४६
भारुण्ड	४	६	भावेत्तु	१६	६४
भाव	१४	१०, १६	भावेमाण	२६	सू० ४०, ६१
	२०	१	भावोमाण	३०	२३
	२२	४४	भास *		
	२६	३६	-भासइ	११	८
	२८	१५, १८, १६,	-भासई	८	३
		२४, २५, ३५		११	१२
	२६	सू० १, १८, २३,	-भासेज्ज	२४	१०
		सू० ३२, ३७, ४६,	-भासेज्जा	१	११
		सू० ५१, ६०, ६२	भास	२५	१८
	३०	१४, २३, २४	भासअ	३२	१

२५२

भामा	१	२४
	२	२५
	६	१०
	१२	२
	१८	२६
	२०	४०
	२४	२,१०
भामि	१२	१६
भासिय	१०	३७
	१८	५२
	१९	६७
	२८	१
भासियव्व	१९	२६
भामुज्जुयथा	२९	सू० ४९
भिउडि	२७	१३
भिगान्गी (दे०)	३६	१४७
भित्त	२५	३७,३८
भित्तमाण	१४	२६
भित्तवन्ति	३५	१५
भित्ताना	८	११
	१०	३,९
		१७
		१,६
		१०
		२० २८

परिशिष्ट-२

भिक्षायरिया	२	सू० १ से ३
	१४	२९,३३,३५
	१९	३२
	२६	१२
	३०	८,२५
भिक्षियव्व	३५	१५
भिक्षु	१	१,२४,३१,
		३२
	२	सू० १ से ३
	२	२,७,१२,
		१९,२२,२४,
		२६,२८,२९,
		४४ से ४६
	४	११
	५	१९,२०,२५
	७	२२
	८	२,४,११,
		१९
	९	१५,१६
	११	१,१५
	१२	१,२६,४०,
		४३
	१३	१२,१४,१७,
		३०
	१५	१ से १६
	१६	सू० १ से ३

भिक्षु	१६	२, ३, ७, ९,
		१५
	१६	२४, ८२
	२१	१३, १६, १७,
		१६
	२५	६, ८, ३७
	२६	११, १७
	३०	१, ४, २४,
		३१, ३६
	३१	३ से २१
	३५	१, ५, ७,
		११, १३ से
		१५
भिक्षुय	१२	२७
भिक्षुघम्म	२	२६
	३१	१०
भिच्च	१४	३०
भित्ति	१६	सू० ७
भिन्न	१२	२५
	१६	५५, ६७
	२३	५३
भिस	५	४
भीम	१५	१४
	१६	४५, ७२
	२१	१६
	२३	४८, ५५, ५८

भीय	२	२१
	१८	३
	१६	७१
	२२	३५, ३६
भीरु	१७	१०
	३२	१७
	३४	२८
भुञ्ज(ग)	३६	१८१
भुज *		
-भुजइ	१	५
-भुज्जई	७	३
	१२	१०
-भुजए	६	४४
-भुजसू	१२	३५
-भुजामि	२०	१८
-भुजामु	१४	३१
-भुजाहि	१२	३८
	१३	१८
	१४	३३
	२०	११
-भुजिज्जा	१६	सू० १०
	३५	११
-भुजिमो	२२	३८
-भुजे	१	३१
-भुजेज्ज	६	७
-भुजेज्जा	१६	८

२५४

परिशिष्ट-२

भुजत	२	११	भूय	१	४५
भुजमाण	५	६		२	१७
	७	६		६	२
भुजित्तु	६	३		८	१०
भुजिय	१३	३४		९	५
जभुयिा	७	८		१२	६, ७, २६,
भुज्जमाण	३२	२०			३०
भुज्जो	५	२७		१३	१२
	७	१२, २५, २७		१४	१३
	१२	२५, ३६		१६	२५, ८६
	१४	२०		२०	३५, ५६
	२६	१८		२१	१३
	२६	सू० २३		२३	२०
भुत्त	१४	१२, ३२		२७	१७
	१६	१२		२६	सू० १८, ४३
	१६	११, १७		३५	८, १०
भुत्तभोगि	१६	४३		३६	२०८
	२२	३८	भूयगाम	३१	१२
भुयग	१४	३४	भूयग्गाम	५	८
भुयमोयग	३६	७५	भूयत्थ	२८	१७
भुया	१६	४२	भूसण	१६	१३
भूअ	२६	सू० ४०	भे	१२	२३
भूइकम्म	३६	२६४		२०	५५
भूइपन्न	१२	३३	भेत्तूण	६	२२
भूमि	१३	६	भेय	२	१३
	२६	३८		४	६, १३

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

भेय	५	३१	भोग(य)	१४	६,३२ से
	१६	सू० ३ से १२		१८	३४,३७,४४
	३३	७,११,१३		१६	४१
	३४	८		१६	११,१७,४३,
	३६	६६,७७,		२०	६६
		१०७,१२७,		२२	६,८,११,
		१३६,१४५,		२५	१४,५०,५७
		१७१,१६५,		३२	३८,४६
		१६७,१६८		३३	३६
भेयण	२६	सू० ४		३२	६३,१०१
भेयणी	२०	१८	भोगि	२५	१५
भेरव	१५	१४	भोच्चा	३	३६
	२१	१६		७	१६
भो	२	२८		६	११
	६	७,१०		१४	३८
	१२	१५		१७	४४
	२५	८		१४	३
भोइ	७	७	भोच्चाण	१४	६
भोइत्ता	६	३८	भोत्तु	१७	२
भोइय	१५	६	भोम	१५	७
भोई	१४	३२,३४	भोमिज्ज	३६	२०४
भोग(य)	३	१६	भोमेज्ज	३६	२१६
	८	५,१४	भोयण	२	३०
	६	३,५१,६२		६	७
	१३	१४,२०,२७,		१२	११
		३२,३३		१५	११

२५६

भोयण	१६	सू० ६,१०
	१६	१२
	३०	२६
भोयराय	२२	४३
भोयावेउ	२२	१७
क		
मअ	१२	५
	१६	७
मउय(अ)	२२	२४
	३६	१६, ३५
मगल	२२	६
	२६	४२
	२६	सू० १, १५
मत	१५	८
	२०	२२
	३६	२६४
मथु	८	१२
मस	२	११
	५	६
	७	६
	१६	६६
	२२	१५
मगर	३६	१७२

मगरजाल	१६	६४
मगहाहिव	२०	२, १०, १२
मग	३	६
	५	१४
	७	२५
	६	२६
	१०	३१ से ३३
	१३	३०
	१४	२
	२०	४०, ५०, ५१,
		५५
	२१	२०
	२३	५६, ६१ से
		६३, ८७
	२४	४, ५
	२८	१ से ३
	२६	सू० ३, ६, १७
	३२	३, ८६,
		१११
	३५	१
मग *		
-मगहा	१२	३८
मगगामि	२५	२
मघव	१८	३६
मञ्जु	५	१५
	१३	२१, २२

मच्चु	१४	४, १४, २३,	मज्झिमग	२३	२७
		२७, ५१	मज्झिमय	३६	२५१
	२०	४८	मट्टिया	५	१०
	२३	८१	मट्टियामय	२५	४०
	३२	२४, ३७	मड	१	३६
मच्छ	१४	३५		३४	१६
	१६	६४	मडग	३४	१६
	३२	६३	मडम्ब	३०	१६
	३६	१७२	मण	१	४३, ४७
मच्छरि	३४	२६		२	११, २५, २६
मच्छिय	३६	५६		४	११, १२
मच्छिया	८	५		६	११
	३६	१४६		८	१०
मज्ज *				१२	२१, ३२
-मज्जई	११	७, ११		१५	१२
मज्झ	१२	१२		१६	२
	१३	१२		१८	२०
	१७	२१		२२	२१
	२३	६६		२३	५८
	३२	१३, ३४, ४७,		२४	२१
		६०, ७३, ८६,		२५	२५
		६६		३०	११
	३६	५६		३२	२१, ८७, ८८,
मज्झिम	२३	२६			१००
	३६	५०, २१३,		३५	४, १३, १८
		२१४			

२५८

परिशिष्ट-२

मणगुत्त	१२	३	मणुन्न	३२	२१ से २३,
	२२	४७			३५, ३६, ४८,
	२६	सू० ५४			४६, ६१, ६२,
मणगुत्तया	२६	सू० १,५४			७४, ७५, ८७,
मणगुत्ति	२४	२, २०			८८
मणजोग	२६	सू० ७३	मणुन्नया	३२	१०६
मणनाण	२८	४	मणुयाहिव	६	४२
	३३	४	मणुस्स	१	४८
मणसमाधार-				२	१६
णया	२६	सू० १,५७		७	२७
मणसीकर *				६	३०
-मणसीकरे	२	२५		२०	१४, ५५
मणहारि	२५	१७		२१	१६
मणा	१८	७		२२	२२
मणि	६	५		२६	सू० ५
	६	४६		३३	१२
	१६	४		३४	४४
	३६	७४	मणुस्सया	३	७
मणुअ	१०	१, २	मणुस्सिद	१८	३७, ४२
	३२	३४, ४७, ६०,	मणूस	४	२
		७३, ८६, ९६,	मणोरम	६	६, १०
		१००		१४	४०
	३६	१५५, १६५,		१६	सू० ६
		२००, २०२		१६	११
मणुन्न	२६	सू० ४६, ६३		२५	३
		से ६७		३२	२०

मणोरह	२२	२५
मणोसिला	३६	७४
मणोहर	१६	सू० ६
	३२	१७
	३५	४
मण्डल	३१	३ से २०
मण्डलिया	३६	११८
मण्डव	१८	५
मण्डकुच्छि	२०	२
मण्णमाण	४	७
मत्त	५	१०
	२२	१०
मत्ता	३	२०
मद्व	६	५७
	२७	१७
	२६	सू० १,५०,६६
मद्वया	२६	सू० ५०
मन्द	४	१२
	८	७
	१२	३६
	१८	७
	२६	सू० २३
मन्दर	११	२६
	१६	४१
मन्दिय	८	५
मन्दिर	६	१२

मन्न *		
-मन्नई	१	३८, ३९
	५	६
-मन्नए	१	२८
-मन्नति	६	८
-मन्नसी	२३	६५, ८०
-मन्ने	१६	६
	२७	१२
मन्नत	३	१४
	२७	१३
मन्नमाण	१७	६
ममत्त	१६	८६, ९८
मम्म	११	४
मम्मय	१	२५
मय (मद)	१२	५
	१६	७
	२६	सू० ५०
	३१	१०
मय (मृत)	१८	१४, १५
	२७	६
मय (मयट्)	३६	६०
मयगा	१३	६
मर *		
-मरई	५	१६, ३२
-मरति	३६	२५७, २५६
-मरिस्सामि	१४	२७

२६०					
-मरिंहिति	३६	२६१	मसय(ग)	१६	३१
-मरिहिसि	१४	४०		३६	१४६
मरगय	३६	७५	मसारगल्ल	३६	७५
मरण	५	३, १८	मह	१३	१२
	१६	१४, १५, २३,		१४	१८
		४६, ६०		१८	२, १८
	२२	४२		१६	५०, ६७, ६८
	३०	१२		२०	५१, ५३
	३२	७		२१	११, २४
	३६	२५६, २६७		२३	६५, ६६
मरणत	५	१६, २६	महज्जुइ	१	४७
	७	६	महड्डिअ	५	२५
मरणकाल	३०	६	महण्णव	१६	१०
मरिस				३२	१०५
-मरिसेहि	२०	५७	महतथ	२३	८८
मरु	१६	५०	महन्त	१६	१८, २०
मल	१	४८		२१	११
	४	७	महप्प	१२	२२, ३५
	५	१०		१६	३२
	२५	११		२१	१
मल्ल	२०	२६		२७	१७
	३५	४	महप्पसाय	१२	३१
मस	२१	१८	महब्भय	१६	७२
मसय(ग)	२	सू० ३	महव्वय	१६	१०, २८, ८८
	२	१०		२०	३६
	१५	४		२१	१२
				२३	८७

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

महाजत	१६	५३	महाभाग	१२	३४
महाजय	१२	४२		२०	५६
महाजस	१२	२३		२३	२१
	१८	३६, ४६		३६	६३
	१६	६७	महामुणी	२	१०
	२३	२६		१२	८
महाणुभाग	१२	२३, ३७		१८	२३
	१३	११, २०		२०	५२
महातलाय	३०	५		२३	१२, २३, ४८
महादीव	२३	६६		२५	२, ६, १३,
हादोस	३५	१५			३४
हानाग	१६	८६		३५	१७
महानिज्जर	२६	सू० २०	महामेह	२३	५१
महानियट्टिज्ज	२०		महायस	१३	४
	२०	५३		१८	३६
महापउम	१८	४१		२०	५३
महापज्जवसाण	२६	सू० २०		२१	२२
महापन्न	३	१८		२२	४, २०
	५	१		२३	२, ६, ६,
	२२	१५, १८			१८, ८६
महापह	१	२६		२५	१
	५	१४	महारभ	७	६
महापाण	१८	२८	महारण	१६	७८
महापाली	१८	२८	महाराय	१४	४८
महावल्ल	१८	५०		२०	६, १७, १६,
महाभर	१६	३५			२५ से २८,
					३०

२६२

परिशिष्ट-२

महारिसि	१२	४७
महालय	१०	३२
	१३	२६
	२३	६६
महावण	१८	४८
	१६	६०
महाविमाण	३६	२४४
महावीर	२	सू० १ से ३
	५	४
	२१	१
	२६	सू० १, ७४
महासागर	३२	१८
महासिणाण	१२	४७
महासुक्क		
(महाशुक्ल)	३	१४
महासुक्क		
(महाशुक्र)	३६	२११, २२८
महामुय	२०	५३
मह्निअ	२५	१६
मह्निद्रिय	१	४८
	११	२२
	१३	४, ७, ११,
		२०, २८
	१८	३६ से ३८
	१६	८
	२०	१, ३, ८
मह्निगा	३६	८५
मह्निम	१६	५७
	३०	७६

मही	१८	४२, ५१
	२७	१७
महु	१३	१३
	१६	७०
	३४	१४
महुर	६	५५
	३६	१८
महुरअ	३६	३३
महेसि	४	१०
	१२	२७
	१३	३५
	२०	५५
	२१	२०, २३
	२३	७३, ८३
	२८	३६
महोदर	७	२
महोयहि	२३	८५
महोरग	३६	२०७
महोह	५	१
	२३	७०
मा	१	१०
माड	७	५
	१७	११
	२७	६
	३६	२६५
माइल्ल	५	६

माया (मातृ)	६	३	माहण(न)	१४	५, ३८, ५३
	१३	२२		१५	६
	२०	२५		१८	२१
	२४	३	माहणत्त	२५	३५
माया (मात्रा)	६	१४, १५	माहणी	१४	५३
मायामुसा	३२	३०, ४३, ५६, ६६, ८२, ९५	माहिद	३६	२१०, २२५
मायावेयणिज्ज	२६	सू० ७०	मिअ (सुग)	१	५
मारणतिय	५	२		८	७
मारिय	१६	६४, ६५		११	२०
मालुग (दे०)	३६	१३७		१३	६, २२
मास(माप)	८	१७		१८	३, ५, ६
मास(मास)	६	४०, ४४		१९	६३, ७६ से
	१२	३५			७८, ८३
	२६	१३, १४		२३	१६
	३६	१५१, २५१, २५५	मिउ	३२	३७
मासात्तमण	२५	५		१	१३
मासिय	१६	६५		२७	१७
	३६	२५५	मिगचारिया	२६	सू० ५०
माहअ (दे०)	३६	१४८		१६	८१, ८२, ८४
माहग (ग्राह्यण)	६	६, ३८, ५५	मिगव्वा	१८	१
	२५	१, ४, १८ से	मिच्छकार	२६	३
		२७, ३२, ३४	मिच्छत्त	१०	१६
माहण (माहण)	१०	११, १३, १८, ३०, ३८	मिच्छदिट्ठि	२६	सू० २, ५७, ६१
			मिच्छाकार	३४	२५
			मिच्छादड	२६	६
				६	३०

		परिशिष्ट-२			
मुट्टि	२०	४२	मुणि	३५	२,१६
	२२	२४		३६	२४६, २५०,
मुणि	१	३६			२५५
	२	६, १५, ३८	मुणिवर	६	६०
	४	८	मुणैयव्व	३०	२०, २३
	५	३२	मुण्डरुइ	२०	४१
	७	३०	मुण्डि	५	२१
	८	३	मुण्डिय	२५	२६
	९	१६, २२	मुत्त	१४	३४
	१२	१, १५, ३१	मुत्ता	६	४६
	१४	८, ९	मुत्ति	६	५७
	१५	३		२०	६
	१७	२०, २१		२२	२६
	१८	४४, ४७		२६	सू० १, ४८
	१९	८३	मुद्दिय	३४	१५
	२०	५३	मुद्ध (मूर्धन)	२७	६
	२३	३८, ४०, ४१,	मुद्ध (मुग्घ)	३२	३७
		६१, ६५, ८०,	मुम्मुर	३६	१०९
		८४	मुसल	१६	६१
	२४	१३, २७	मुसा	१	२४
	२५	२९, ३०		२	४५
	२६	२०, ३५		१८	२६
	२७	?		२०	१५
	३०	३७		२५	२३
	३२	१६, २६, ३६,	मुसावाइ	५	६
		५२, ६५, ७८,		७	५
		८१			

मुसावाय	१६	२६
	३०	२
मुसढी	१६	६१
मुसुण्ढी	३६	६६
मुह	२	५
	५	१५
	१२	२६
	१३	२१
	२०	४८
	२५	११, १४, १६
	२७	१३
मुहपोत्तिया	२६	२३
मुहरी	१	४
मुहाजीवि	२५	२७
मुहु	४	११
मुहुत्त	४	६
	३३	२३
	३४	३४ से ३६, ४६, ५४, ५५
मूढ	१	२६
	६	१
	८	५
	१२	३१
	१४	४३
मूल	७	१४ से १६
	१५	८

मूल	२०	२२
	२६	सू० ५
	३२	७, ६, १३
मूलअ(ग)	३२	१
	३६	६६
मूलओ	२०	३६
मूलपयडि	३३	१६
मूलिय(मूलिक)	७	१७
मूलिय(मौलिक)	७	१६, २१
मूसग	३२	१३
मेअ	७	२
मेत्त	६	६
	७	२४
	१४	१३
मेत्ति	६	२
मेत्तिज्जमाण	११	७, ११
मेयन्न	१८	२३
मेरअ(ग)	१६	७०
	३४	१४
मेरु	२१	१६
मेहावि	१	४५
	२	६, १७, ३६
	५	३०
	२०	५१
	२३	२८, ३०

२६८

परिशिष्ट-२

मेहुण	२	४२	मोह	१५	६
	२५	२५		१६	७
	३०	२		२०	६०
माकल	४	३,८		२१	११,१६
	६	६		२८	२०
	१३	१०		३२	२,६ से ६,
	१४	६,१३			१०१,१०५
	१८	३६		३३	२
	२३	३३		३६	२५६
	२८	१,१४,३०	मोहट्टाण	३१	१६
	२९	सू० ६,३२	मोहणिज्ज	६	१
	३२	२,१७,१०६		२६	सू० ७,७२
मोनममग्गइ	२८			३३	८,६,२१
माण	१४	७,३२,४१	मोहरिय	२४	६
	१५	१			
	१८	६			
	२०	४६			
मानली	२६	२६	य		
भागा	१२	१४,४१	य	१	६
	२४	२०,२२			
	३२	३१,४४,५७,			
		७०,८३,६६	र		
	४	५,११	रअ(य)	६	४२
	८	३		११	५
	१०	३३		१३	१७
	१४	१०,२०,५२		१६	सू० ८

रअ(य)	१६	२ से ६, १५	रज्जत	१६	६
	२६	सू० ३२	रज्जमाण	२६	सू० ४
	३२	१५	रच्छा	३०	१८
रइ	५	५	रट्ट	१८	२०
	१४	७, २१	रण	१४	३०
	१६	६	रणण	१४	४२
	१६	१३	रणवास	२५	२६
	२१	२१	रत्त (रक्त)	१७	१२
	३२	१०२		३२	२६, ३६, ५२,
रइय	२२	१२			६५, ७८, ९१
रक्ख *				३६	२५७ से २५६
-रक्खेज्ज	४	१२	रत्त (रात्र)	२६	१४
रक्खण	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ८०, ९३	रत्ति	२६	१७, १६
रक्खमाण	२२	४०	रम *		
रक्खस	१६	१६	-रमई	१	५
	२३	२०	-रमए	१	३७
	३६	२०७		२५	२०
रक्खसी	८	१७	-रमाम	१६	१४
रक्खा	१६	१	-रमे	१४	४१
रक्खिय	१५	२	-रमेज्जा	३६	२४६
रज्ज	७	११	रम्म	१३	१३
	६	२		१४	१
	१४	४६		१६	१
	१८	१२, १६, ३७, ४४, ४६, ४७, ४६		२१	७

रय	२	३६
	३	११
	७	८
	१०	३
	१२	४५
	२१	१८
रयण	११	२२, ३०
	१६	४
	२०	२
	२२	२२
रयणा	३५	१८
रयणाभा	३६	१५६
रयणागर	१६	४२
रयणी	१४	२३ से २५
रयस	३८	६
रन	२	३६
	८	११, १४
	१४	३१, ३२
	१६	सू० १२
	१६	१०
	१८	३, ७
	२०	३६, ५०
	२०	६
	२२	१२
	२२	सू० १६, ३३
	२३	८

रस	३२	१०, २०, ६१
		से ७३
	३४	२, १० से
		१५, २३
	३५	१७
	३६	८३, ६१,
		१०५, ११६,
		१२५, १३५,
		१४४, १५४,
		१६६, १७८,
		१८७, १९४,
		२०३, २४७,
		२६४
रसओ	३६	१५, १८, २२
		से ४६
रसत	१६	५१
रसन्तु	१६	२८
रसपरिष्काअ	३०	८
रस्ति	२३	५६
रह	११	८, १२
रहनेमि	२२	३४, ३७, ३६
रहनेमिज्ज	२२	
रहम्म(रहम्म्य)	१	१७
रहम्म(हम्म्य)	२६	सू० ७३
रहाणीय	१८	२
रहिय	१६	१
	२४	१८

राअ	१४	१४	राग	३२	४८ से ५०,
	२६	सू० ३१			६१ से ६३,
राइ (रात्रि)	१०	१			७४ से ७६,
	१३	३१			८७ से ८९,
	१४	२४, २५		३५	५
	२०	३३	रागि	३२	१००, १०५,
	२६	१७	राढामणि	२०	४२
राइ (राजन्)	२०	५	राम	२२	२, २७
राइय	२६	४७, ४८	राय	७	११
राईभोयण	१६	३०		६	२, ३
	३०	२		१२	२० से २२
राईमई	२२	६, २६, ३६		१३	८, ११, १७,
राओ	१५	२			२०, २१, २६,
राग	१०	३७		१४	३२ से ३४
	१४	२८, ४२, ४३			३, ३७, ३८,
	१६	२			४०, ५३
	२१	१६		१८	१, ६, ७, ९,
	२३	४३			१३, १५, १६,
	२५	२१			३७, ३९, ४३,
	२८	२०			४५, ४७ से
	२६	सू० ६३ से ६७			४६
	३०	१, ४		१६	१
	३१	३		२०	२, १०, ५४
	३२	२, ७, ९, १२,		२२	१, ३, ७,
		२२ से २४,			२८, ४०
		३५ से ३७,			

२७२

परिशिष्ट-२

गव्यपुत्र	१५	६	खड्ग	३२	२६, ३६, ५२,
	२२	३६			६५, ७८, ९१
रायरिसि	६	५, ६, ८, ११,	खख	१२	८
		१३, १७, १९,		१४	२९
		२३, २५, २७,		३६	९४
		२९, ३१, ३३,	खखमूल	२	२०
		३७, ३९, ४१,		१९	७८
		४३, ४५, ४७,		२०	४
		५०, ५२, ५६,		३५	६
		६२	खट्ट	२५	९
	१८	५०	खद	३०	३५
गववेद्वि	२७	१३		३४	३१
गवमीह	२०	५८	खद्व	१९	६३
गवदाणी	२	१८	खप्प	९	४८
	३०	१६		३६	७३
गि।	१९	९६	हम्भ *		
गि *			-कम्भई	३१	३
गि	२३	८, ८	व्यग	३६	७५
-गोपजा	२३	७	नहिर	१२	२५, २९
गी।	२	१३		१९	७०
	२३	३, ७		३६	७२
	२१	२	ख	३	१५
	२	१७		४	११
	२८	३०		६	११
	२८	२१		९	६, ५५
	२०	७		१२	६
		१, १०			

रुव	१३	१२
	१६	सू० १२
	१६	१०
	१८	१३, २०
	१९	६
	२०	५, ६
	२२	४१
	२९	सू० ४३, ४६, ६४
	३१	१६
	३२	१४, २२ से
		३४, ४०, ५३,
		६६, ७९, ९२,
		१०३
रुवघर	१७	२०
रुववई	२१	७
रुवि	३६	४, १०, १३,
		१४, २४८
रुविणी	२१	७
रेणुअ	१९	८७
रेवयय	२२	२२, २३
रोअ *		
-रोएइ	२८	१७
रोग	२	सू० ३
	११	३
	१६	सू० ३ से १२
	१९	१४, १५, १९

रोज्ज्म	१९	५६
रोमकूव	२०	५९
रोय *		
-रोयई	१३	१४
-रोयए	१८	३३
रोयइत्ता	२९	सू० १
रोयत	२८	२०
रोयमाण	३	१०
रोस	३६	२६६
रोहिणी	२२	२
	३४	१०
रोहिय	१४	३५

ल

लइय	२६	२३
लघिया	१	३३
लत्ताग,	३६	२१०, २२७
लवमाणअ	१०	२
लक्व	२७	६
	३६	२२१
लक्खण	८	१३
	९	६०
	१५	७
	२०	८५
	२२	१, ३, ५, ७

लक्खण	२८	१, ६, ९ से	-लभेज्ज	४	९
		१३	-लभेज्जा	१६	सू० ३ से १२
	३४	२		३२	५
लक्खणअ	१९	४३	लयण	२१	२२
लग्ग	१९	६५, ८७		२२	३३
लग्ग *			लया	२०	३
-लग्गई	२५	४०		२३	४५ से ४८
-लग्गन्ति	२५	४१		३६	९४, ९५
लज्जा	२	४	ललिय	९	६०
लज्जु	६	१६		२२	४१
लद्ध	२	३०	लव	१	२५
	१६	८	लवत	१	२१
लद्धु (लब्ध्वा)	२	२३	लविय	१६	४
	३	८ से ११	लसण	३६	९७
	११	११	लह *		
	१५	१२	-लहड	७	१४
लद्धु (लब्धुम्)	११	१४	-लहए	१४	२९
लद्धूण	६	१४	-लहामो	१४	७
	१०	१६, १७, १९	-लहित्थ	१२	१७
	११	७	-लहे	१०	१८
लप्पमाण	२०	४३	लहिड	१७	१
लभ *			लहियाण	२०	३८
-लभइ	११	३	लहु	१	१३
-लभामि	२	३१		१५	१६
लभऊ	१२	१०		२२	३१
लभे	४	५	लहुब्भूय	२३	४०, ४१
	१४	२१			

लहुभूय(अ)	१४	४४	लिंग	२३	३०, ३२
	२६	सू० ४३		२६	सू० ४३
लहुय(अ)	३६	१६, ३७	लिप *		
लाघविया	२६	सू० ४३	-लिप्पई	८	४
लाढ	२	१८		३२	२६, ३६, ५२, ६०, ६५, ७३, ७८, ८६, ९१, ९९
	१५	२, ३			
लाभ	१	२७	-लिप्पए	३२	३४, ४७
	२	३१	लिच्छु	३२	१०४
	७	१६	लित्त	८	१५
	१४	३२	लुच *		
	१६	९०	-लुचई	२२	२४, ३०
	२०	५५	लुप *		
	२६	सू० ३४	-लुप्पन्ति	६	१
	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ८०, ९३	लुक्ख	३६	२०
	३३	१५	लुक्खय	३६	४१
लाभतर	४	७	लुत्त	२२	२५, ३१
लाभय *			लुद्ध	९	४८
-लाभइस्सन्ति	१	४६		११	२, ९
लालप्पमाण	१४	१५		१७	११
लालसा	२५	४१	लुपत	६	३
लावण	३२	१४	लूह	२	६, ३४
लाह	७	१४	लैट्ठु	३५	१३
	८	१७	लैप्प	१९	६५
	१२	१७	लेव	६	१५
				८	१५

२७६

परिशिष्ट-२

लेसज्भयण	३४		लोअ(ग,य)	२३	३२,४०,६०,
	३४	१			७५,७६,७८,
लेसा	१२	४६		२५	१६
	३१	८		२८	७
	३४	२,१६ से		२९	सू० ७२
		२०,३३,४०,		३४	३३
		४४,४५,४७,		३६	२,७,११,
		५८ से ६१			६१,६७,६९,
लोअ (ग,य)	१	१५,४५			७८,८६,
	२	१६,४४			१००,१११,
	४	३,५,१०			१२०,१३०,
	५	५,६			१३६,१४६,
	८	१६,२०			१५८,१७३,
	९	१,५८			१८२,१८६,
	१०	३५			१९८,२१७
	१२	१३,२८	लोगगा	२३	८१,८३,८४
	१३	१६,२१		२६	सू० ३६
	१४	८,१६,२१	लोगनाह	२२	४
		से २३	लोण	३६	७३
	१५	१४,१५	लोभ	९	५४,५६
	१७	२०,२१		२४	९
	१८	२७,३८		२६	सू० २,७१
	१९	२३,४४,७३,		३२	२६,३०,४२,
		९२			४३,५५,५६,
	२०	४६			६८,६९,८१,
	२३	१,२,५,६,			८२,९४,९५

लोभ	३४	२६
	३५	३
लोभवेयणिज्ज	२६	सू० ७१
लोमपक्खि	३६	१८८
लोमहरिसं	५	३१
लोमहार	६	२८
लोयग्ग	३६	५६, ६३
लोल	२६	सू० ४८
	३२	२४
लोलया	७	१७
लोला	२६	२७
लोलुप्पमाण	१४	१०
लोलुअ	३४	२३
लोह (लोह)	१६	६८
लोह (लोभ)	४	१२
	८	१७
	६	३६
	२५	२३
	२६	सू० १, ७१
	३२	८, १०२
लोहणिज्जं	४	१२
लोहतुड	१६	५८
लोहभार	१६	३५
लोहमय	१६	३८
लोहरह	१६	५६
लोहि (दि०)	३६	६८

लोहिय(अ)	७	७
	३६	१६, २४
लोहियक्ख	३६	७५
व		
व(वा)	१	१६, ३४
	२	२०, ३६
	५	२२
	१०	३६
	१२	७, ४३, ४५
	१३	२२
	१४	२७, ३०
	१६	१३
	२०	१६
	२८	१६
व(इव)	१	१२, ३७, ३६
	३	५, १४
	४	५, ६
	५	१५, १६
	७	७
	८	५, ६, ६, १८
	१०	२८
	१२	२७
	१३	३१
	१८	३३, ३५, ८७

व(इव)	१५	१०	वक्क	१४	११
	१७	२१		२२	३६
	१९	८७		२५	२५
	२१	१४, २३, २४	वग्ग	१३	२३
	३४	१४		१९	२९
वअ *				३०	१०
-वए	२७	५	वग्गवग्ग	३०	११
वइ	१८	५२	वग्गू	९	५५
वइगुत्त	२९	सू० ५५	वच्च *		
वइगुत्ति	२४	२३	-वच्चवइ	१४	२४, २५
वइजोग	२९	सू० ७३	-वच्चउ	२७	१२
वइदेहि	९	६१	वच्छ	८	१८
वइर	१९	५०		९	९
	३६	७३	वच्छल्ल	२८	३१
वइसाह	२६	१५	वज्ज		
वइस्स (वैश्य)	२५	३१	-वज्जई	३१	६
वइस्स (द्वेष्य)	३२	१०३	-वज्जए	१	८, ९, २४,
वक	३४	२५			३६
वकजड	२३	२६		१७	२१
वचिअ	२	४४	-वज्जेज्जा	१६	१४
वजण	१२	३४	वज्ज	३४	२८
	२९	सू० २२	वज्जअ	११	१३
वजणलद्धि	२९	सू० २२	वज्जकद	३६	९८
वक्क	१	४३	वज्जण	१९	३०
	६	११		२८	२८
	१३	२७	वज्जपाणि	११	२३

वज्जरिह	२२	६
वज्जिता	३०	३५
	३४	३१, ४५, ६१
वज्जिय	१०	२८
	२४	५, १८
वज्जेयव्व	१६	३०
	२६	२६
वज्ज	२१	८
वज्जग	२१	८
वज्जमडण	२१	८
वट्ट *		
-वट्टइ	१७	२
-वट्टए	२६	सू० २०
वट्ट	३६	२१, ४३
वट्टन्त	२३	६०
	३५	१४
वट्टमाण	११	६
	२६	सू० २०, ५१, ५२
वट्टइ	१६	६६
वट्ट *		
-वट्टइ	३२	३०, ४३
वट्टण	१४	४७
वट्टमाण	२२	२६
वट्टावइत्ताणं	६	४६
वण	२०	३६
	२३	१५
	३२	११

वणचारि	३६	२०५
वणप्फइ	३६	१०२
वणस्सइ	२६	३०
	३६	६६, ६२
वणस्सइकाय	१०	६
वणिय	७	१४
	८	६
	१४	३०
वण्ण	६	११
	७	२७
	१३	२६
	१६	५५, ६६
	२०	६
	२८	१२
	२६	सू० ५
	३०	२३
	३२	२०
	३४	२
वण्णओ	३४	४ से ६
	३६	१५, १६, २२
		से ४६, ८३,
		६१, १०५,
		११६, १२५,
		१३५, १४४,
		१५४, १६६,
		१७८, १८७,
		१९४, २०३,
		२४७

वण्णव	३	१८	वन्दमाण	२५	१७
वण्णिय	३४	४०, ४४, ४७	वन्दिऊण	६	६०
वण्हि	२२	१३		२६	४५
वत्तणा	२८	१०	वन्दित्ता	२०	७
वत्थ	२	१२		२२	२७
	२६	२३, २४		२६	८
	३०	२२	वन्दित्ताण	२६	२२, ३७, ४०
वत्थु	३	१७			से ४२, ४८,
	१६	१६			४६, ५१
वत्थुविज्जा	१५	७	वन्दित्त	२६	२१
वद्धण	२६	सू० ६	वम*		
वद्धमाण	६	२४	-वमइ	११	७
	२३	५, १२, २३,	वमत	१२	२५, २६
		२६	वमण	१५	८
वन्त	१०	२६	वमित्ता	१४	४४
	१२	२१	वम्मधारि	४	८
	२२	४२	वय (वद्) *		
वन्तर	३६	२२०	-वयइ	१५	६
वन्तासि	१४	३८		२५	२३
वन्द *				२०	१५
-वन्दइ	६	५५, ५६	-वए	१	१४, २४
	२६	५०		२२	४०
-वन्दए	१८	८		३०	३५
वन्दण	३५	१८	-वएज्ज	१	४१
वन्दणग(अ)	१५	५	-वयति	१२	३८, ४०
	२६	सू० १, ११		३२	६, ७

-व्यासी	१४	८, १६
वय (व्रत)	१	४७
	२०	४१
	२१	११
	२२	४०
	२६	सू० १२
	३१	७
वय (वचस्)	५	१०
	८	१०
	१४	८
	१५	१२
	२४	२३
	२६	सू० ५८
वय (व्रज्) *		
वयइ	६	५४
वए	१४	४८
	२०	५१
	२७	५
वय (वयस्)	१४	३२
	२०	१६
वय (व्यय)	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ८०, ६३
वय †		
-वुच्छ	३६	११, ७८, १११, १२०, १५८, १७३,

-वुच्छं	३६	१८२, १८६, २१७
-वुच्छामि	३६	४७, १०६
वयगुत्त	१२	३
	२२	४७
वयगुत्तया	२६	सू० १, ५५
वयगुत्ति	२४	२
वयलोग	२१	१४
वयण	१	१२
	६	६
	१२	५, ८, १६, २४
	१३	४, १२, १५, २६, ३४
	१६	६
	२०	१३
	२२	१८, ४६
	२५	१०
	२७	११
वयत्य	३०	२२
वयमाण	८	७
वयसमाधारणया	२६	सू० १, ५८
वर (वर)	१	१६
	८	३
	६	३
	१४	५०
	२२	७, ४०
	३४	१४

वर (पर)	१४	२२
वरगङ्ग	३६	६३,६७
वरदसि	२८	२,७
वराडग	३६	१२६
वराय	३६	२६१
वरिस	१८	२८
	३४	४६
वलय	३६	६५
वल्लर	१६	८०,८१
वल्ली	३६	६४
वव *		
-ववन्ति	१२	१२
ववहर *		
-ववहरई	१७	१८
ववहरत	२१	२,३
ववहार	१	४२
	७	१५
ववस्स *		
-ववस्से	३२	१४
ववस्सिअ	२२	३०
वस *		
-वसामि	१८	२६
-वसामो	६	१४
-वसे	११	१४
-वुच्छामु	१३	१६,
वस	६	३२
	१४	४२

वसभ	१८	३६,४६,४७
वसह	११	१६
वसहि	१४	४८
	३२	१३
वसा	१६	७०
वसाणुग	१३	५
वसीकअ	६	५६
वसुदेव	२२	१
वसुहा	२०	६०
वसुहारा	१२	३६
वस्स	३२	१०४
वह	१	१६,३८
	७	१७
	८	७,८
	१२	१४
	१५	३,१४
	१६	३२
	३५	८
वह * (वह.)		
-वहेइ	१८	३
-वहेई	१८	५
-वहेह	१२	२७
	२६	सू० ३२
वह * (व्यथ)		
-वहिज्ज	२१	१७
वहण	२७	२

बहमाण	२७	२
बहिय	१६	७१
वा(वा)	१	१४, १७, १६, २१, २५, २७, ३४, ४८
	२	८, १८, २०, ३०, ३६, ४४
	५	१६, २२, २५, २८
	८	१२
	१२	१८, २८
	१४	१७, २२, ३६, ४०
	१५	६
	१६	सू० ३ मे १२
	१६	२५, ५६, ७७, ७९
वा(इव)	२०	६, १६, २६
	२	१०
	१४	४१
	१६	५३, ६३, ६४
वाज	६	१०
वाइय(वादित्र)	१३	१४
वाइय(वाचित)	२७	१४
वाउ	६	१०
	२६	३०

वाउ	३६	१०७, ११७, १२२ से
वाउक्काय	१०	८
वागर	१	१४
-वागरे	१	२३
-वागरेज्ज	१	८
वाघाय	१४	१४, १६
वाड	२२	३०
	३०	५१
वाणमतग	३४	३६
	३६	२०४, २०७
वाणाग्मी	२५	२, ३
वाणिअ	७	१५
	२१	१, ३, ५
	३५	१४
वाद	१५	१५
वाय (वाच)	१	१७, ४३
	६	६
वाय (वात)	१६	४०
	२१	१६
	२२	४८
	३६	२०६
वाय *		
-वाण्ड	२६	२६
वायणया	२६	सू० १

वायणा	२६	सू० २०
	३०	३४
वार *		
-वारेज्ज	२	११
वारि	२३	५१, ६६
	२५	२६
वारुणी	३४	१४
वालंगपोइया	६	२४
वालुया	१६	३७, ५०
	३६	७३
वालुयाभा	३६	१५६
वावड *		
-वावडे	१७	१८
वावन्न	२८	२८
वादर *		
-वावरे	३०	३६
वास(वर्ष)	३	१५
	४	८
	७	१३
	१२	३६
	१८	३४, ३६, ३८,
		४०, ४१
	१६	६५
	२२	३३
	३४	४१, ४८, ५३
	३६	८०, ८८,

वास(वर्ष)	३६	१०२, १२२,
		१३२, १६०,
		२१६ से २२१,
		२५० से २५२
वास(वास)	१४	२६
	१६	८३
	२३	४, ८
	२५	३
	३५	६, ७
वासत	२२	३३
वासि	१२	८
	१४	१
वासिद्वी	१४	२६
वासिय	३५	४
वासी	१६	६२
वासीमुह (दि०)	३६	१२८
वासुदेव	११	२१
	२२	८, १०, २५,
		३१
वाह *		
-वाहेइ	१७	१६
वाहअ(य)	१	३७
	१०	३३
वाहण	६	४६
	१८	१

वाहर *		
-वाहराहि	१८	१०
वाहि	१६	१४, १६
	२३	८१
	३२	१२
वाहिअ	१६	६३
वाहित्त	१	२०
विइत्तु	१५	३
विइय	१२	१३
	१८	२७
	२३	६१
विउ	२१	१२
	२५	३६
विउकम्म	५	१५
विउल	१	४६
	७	२, २१
	९	३८
	१०	३०
	११	३१
	१४	३७, ३९
	२०	१६, ३२, ५२
	२६	सू० ४३
विउच्चि	३	१५
	१३	३२
विउच्चिऊण	६	५५
विउत्तग	३०	३०, ३६

विओग	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ८०, ९३
विछिय	३६	१४७
विकत्तु	२०	३७
विकप्पण	३२	१०७
विकोविय	२१	२
विककअ	३५	१३ से १५
विक्किणत	३५	१४
विक्खाय	१८	३६
विक्खत्ता	२६	२६
विगइ	१७	१५
	३२	१०१
	३६	२५२
विगप्प	३३	६
विगप्पण	२३	३२
विगय	१	२६
	८	३
	९	२२
	१४	५२
	२०	६०
	२६	सू० ३०
विगराल	१२	६
विगालिदियया	१०	१७
विगहा	२४	९
	३१	६
	३६	२६३

२८६

विगिच *		
-विगिच	३	१३
विगिट्ट	३६	२५४
विगह	३	८
विगघ	२०	५७
	२६	सू० ६
विचित *		
-विचितए	२	२६
	२६	५०
-विचिन्तेइ	२२	२६
	२७	१५
विचितिय	१३	८
विचित्त	३६	१४८, २५२
विजढ	३६	८२, ६०, १०४, ११५, १२४, १५३, १६८, १७७, २४६
विजय	१५	७
	१८	४६
	२६	सू० १, ६८ से ७२
	३६	२१५, २४३
विजयघोस	२५	४, ५, ३४, ३५, ४२, ४३
विजहित्त	८	२

विज्ज *		
-विज्जई	२	७
	१४	४०
	२०	६, १०
	२३	६६
-विज्जए	६	१५
विज्जमाण	१८	२७
विज्जा (विद्या)	६	१०
	१२	१३, १४
	१५	७
	१८	२२, २४, ३०, ३१
	२०	२२
	२३	२, ६
	२५	१८
विज्जा (विदित्वा)	६	४६
विज्जु	१८	१३
	२२	७
	३६	११०, २०६
विज्जभव *		
-विज्जविज्ज	१	४१
विज्जभाय *		
-विज्जभायइ	२६	सू० ६१
विज्जभाविय	२३	५०
विट्ठा	१	५

विडविय	१३	१६
विणइत्ता	२६	सू० ५
विणइत्तु	१४	२८
विणग्र(अ)	१	१, ६, ७,
		२३
	१७	१, ४
	१८	८, २३
	२८	२५
	२६	सू० ५, ६०
	३०	३०, ३२
	३४	२७
विणयसुय	१	
विणस्स *		
विणस्सइ	२६	सू० ६०
-विणस्सउ	१२	१६
विणा	१३	७
	२८	३०
विणास	३२	२४, ३७, ५०,
		६३, ७६, ८६
विणासण	२२	१८
	३५	१२
विणिघाय	२०	४३
विणिच्छय(अ)	२३	२५, ८८
विणियट्ट *		
-विणियट्टन्ति	६	६२
	१६	६६
	२२	४६

विणियट्टणया	२६	सू० १, ३३
विणिवाड *		
-विणिवाडयन्ति	१२	२४
विणिहण *		
-विणिहन्नेज्जा	२	१७
-विणिहम्मन्ति	३	६
विणी *		
-विणएज्ज	४	१२
	५	३१
विणीय	१	२
	१८	२१
	३४	२७
विणोयण	३२	१०५
वितिगिच्छा	१६	३ से १२
वितिमिर	२६	सू० ७२
वित्त(वित्त)	१	४४
	४	५
	५	१०
	७	८
	१६	८७
वित्त(वेत्र)	१२	१६
वित्तास *		
-वित्तासए	२	२०
वित्ति	१६	३३
वित्थर	२०	५३
वित्थाररुइ	२८	१६, २४

२८८

परिशिष्ट-२

वित्थिण्ण	२४	१८
	३६	५८
विदित्ताण	६	८
विदेह	१८	४५
विद्ध	३२	३
विद्धस *		
-विद्धसइ	१०	२७
विद्धस *		
-विद्धसे	११	२४
विनिम्मुक्क	१८	५३
	२५	३२
विन्ध *		
-विन्धइ	२७	४
विन्नाण	२३	३१
	३६	२६२
विन्नाय	२३	१४
विन्नेअ	३६	१५
विपक्ख	१४	१३
विपरिघाव *		
-विपरिघावइ	२३	७०
विप्प	१४	६
	२५	१,७
विप्पओग	१३	८
विप्पच्चअ	२३	२४,३०
विप्पजहणा	२६	सू० ७४
विप्पजहा *		
-विप्पजहे	८	४,१६

विप्पजहिता	२६	सू० ७४
विप्पमुच्च *		
-विप्पमुच्चइ	२४	२७
	२५	३६
	३०	३७
	३१	२१
विप्पमुक्क	१	१
	६	१६
	११	१
	१५	१६
	२०	६०
	२१	२४
	३२	११०
विप्परियास	२०	४६
विप्पलाव	१३	३३
विप्पसन्न	५	१८
विप्पसीअ *		
-विप्पसीएज्ज	५	३०
विप्फुरत	१६	५४
विभन्ति	३६	४७
विभय *		
-विभयन्ति	१३	२३
विभाग	२८	१३
	३६	११,७८,
		१११,१२०,
		१५८,१७३,
		१८२,१८६,
		२१७

उत्तरजभयण शब्द-सूची

विभावन	२६	३६	विमोय *		
विभिन्न	१६	५५	-विमोयन्ति	२०	२३ से २७, ३०
	३२	६३			
विभूसा	१६	६	विमोयणया	२६	सू० ७१
विभूसाणुवाइ	१६	सू० ११	विमोह	५	२६
विभूसावत्तिय	१६	सू० ११	विम्हअ	२०	५, १३
विभूसिअ	१६	सू० ११	विम्हावेत	३६	२६३
	२२	६	वियक्त्तण	२१	१६
	३२	१६		२६	११, १७
विमग्ग			वियड	२	४
विमग्गहा	१२	३८	विययपक्खि	३६	१८८
वेमण	१२	३०	वियर *		
वेमल	१२	४६, ४७	-वियरिज्जइ	१२	१०
	२०	५८	वियाण *		
	२३	७६	-वियाणह	७	१५
विमाण	१४	१		१४	२३
विमुच्च *			-वियाणाइ	६७	१२
-विमुच्चई	३२	३०, ४३, ५६, ६६, ८२, ९५	-वियाणासि	२५	१२
	३५	२०	-वियाणाहि	४	१
विमोक्त्तण	८	३	-वियाणिज्जा	३५	२
	१४	४	वियाणमाण	१२	३३
	१६	८५	वियाणित्ता	१४	५०
	२५	१०	वियाणिया	७	२२
	२६	१, १०, २१, ३८, ४१, ४६, ४९		१६	६८
				३३	२५
				३४	६१

वियाणेत्ता	२५	२२
वियार	३२	१०४
वियाहिय	६	१७
	२४	३,१६
	२६	५२
	२८	१५
	३०	१२,१४,२६, ३२
	३२	१११
	३३	१०,१५,२०, २५
	३६	२,८,६, १३,१४,१७, ४७,५६,६१, ६८,७२,७७, ८६,९३, १००,१०६, १०६,११०, ११३,११६, १३०,१३२, १३४,१३६, १४१,१४३, १५१,१५३, १५५,१५८, १६० से १६७
		१७३,१७५,

वियाहिय	३६	
विरभ	३	
	३०	
	३५	
विरइ	१६	
	२६	सू
	३१	
विरज्ज *		
-विरज्जइ	२६	सू०
विरज्जमाण	२६	सू०
	३२	१०
विरत्त	१३	१
	१४	४
	२५	४१
	३२	३४,६
		७३,८
विरम *		
-विरमेज्जा	२६	१६

विरय	२	६,४२	विव	२०	४७,५०
	१२	६		३२	५०
	१५	२	विवचोस	३०	३
	२०	६०	विवज्ज *		
	२१	२०,२१	-विवज्जए	१६	२,४,५
विरली(दे०)	३६	१४७	विवज्जण	१६	२६,२७,२९
विराग	३२	२६,३६,५२, ६५,७८,९१		३०	२६
				३२	२,३
विराय *			विवज्जयत	३२	५
-विरायइ	११	१५,१६	विवज्जास	२०	४६
विराहअ	२६	३०	विवज्जिअ	१६	२०
विराहणा	२	३४		३०	२८
विराहिय	३६	२५६	विवज्जित्ता	१	३१
विराहेत्तु	२०	४६,५०		२४	८
विरिय	६	६	विवड *		
विरुह *			-विवडइ	१०	२७
-विरुहन्ति	१२	१३	विवडुण	१६	२,७
विरियण	१५	८		३५	५
विलवन	१६	५८	विवद्धण	१६	६८
विलविय	१३	१६	विवन्न	१४	३०
	१६	सू० ७	विवर	२०	२०
विलास	३२	१४	विवाइय	१६	५६,६३
विलत्त	१६	५८	विवाग	१०	४
विलेत्तण	२०	२६		१३	३,८
विशेवज	७	५		१६	११
विय	१६	५७,६५,६६		३२	२०,३३,४६,

२६२

पारशिष्ट-२

विवाग	३२	५६, ७२, ८५,	विस	२०	४४
		६८		२३	४५, ४६
विवागय	२	४१		३६	२६७
विवाद	१७	१२	विसअ(य)	७	६
विवाह	२२	१७		१६	६
विविच्च	६	१४		२०	४४
विवित्त	१६	सू० ३		२६	सू० ३
	१६	१		३२	२१
	२१	२२	विसज्जइत्ताण	१८	८
	२६	सू० १, ३२	विसन्न(ण्ण)	६	१०
	३०	२८		८	५
	३२	१२		१२	३०
विवित्तवास	३२	१६	विसप्प	३५	१२
विविह	१०	२७	विस	५	१४, १६
	१५	४, ८, ९,		१०	३३
		११, १२, १४,	विसारत्त	२२	३४
		१५	विसारय(अ)	२०	२२
	२१	१८		२७	१
	३२	१०२	विसाल	१३	२
	३४	१४		१४	३
विवेग	४	१०	विसालिस	३	१४
	३२	४	विसीय *		
विस	६	५३	-विसीयई	४	६
	१६	१३	विसील	११	५
	१७	२०	विसुद्ध	३	१६
	१६	११		१२	४६, ४७

विसुद्ध	२६	सू० २, १३, ४३, सू० ७२	विहग	२०	६०
विसुद्धपन्न	८	२०	विहन्न *		
विसूइआ	१०	२७	-विहन्नइ	२	२२
विसेस	५	३०	-विहन्नसि	६	५१
	१२	३७	-विहन्नेज्जा	२	सू० १ से ३
	१८	५१		२	२२, ४६
	२३	१३, २४, ३०	विहम्माण	२७	३
	३०	२३	विहर *		
	३२	१०३	-विहरइ	२०	६०
विसोग	३२	३४, ४७, ६०, ७३, ८६, ९६		२७	१७
विसोह *			-विहरए	२६	३५
-विसोहए	२४	११, १२	-विहरसी	२३	४०
-विसोहेड	२६	सू० ५, १३, १७, सू० २१, ५३, ५७ से ५६	-विहरामि	२३	३८, ४१, ४३
विसोहण	२६	२५	-विहरिसु	२३	६
विसोहि	१२	३८	-विहरिस्सामि	१४	४६
	२६	सू० २, १०, १७, सू० १८, ५१	-विहरेज्ज	१७	१
विसोहिया	१०	३२		२१	१४
विसोहेत्ता	२६	सू० ५८, ५९	-विहरेज्जा	३२	५
विन्नाभिय	३	२		१६	सू० १ से ३, ५, ७
विस्तुअ	१६	२, ६७	विहरअ	३५	१६
	२३	५	विहरित्ता	२	४३
			विहाण	३६	सू० ५
					७४, ८३, ९१, १०५, ११६,

विहाण	३६	१२५, १३५, १४४, १५४, १६६, १७८, १८७, १९४, २०३, २४७	वोड्वय *		
			-वोड्वयइ	२६	सू० २३, ३३
			वीदसय	१६	६५
			वीयरग	२६	सू० ३७
				३२	१६, २२, ३५,
विहार	१४	४, ७, १७, ३३			४८, ६१, ७४, ८७, १००, १०८
	२६	३५			
	३०	१७		३४	३२
विहारजत्ता	२०	२		३५	२१
विहारि	१४	४४	वीयरगया	२६	सू० १, ४६
विहि	२४	१३	वीरजाय	२०	४०
	२८	२४	वीरासण	३०	२७
विहिस	४	१	वीरिय	३	१, ६, ११
विहिस *				२८	११
-विहिसइ	५	८		३३	१५
विहिसग	७	१०	वीस	३६	५१, ५४, २३१
विहूण					
-विहूणाहि	१०	३	वीसइ	३३	२३
विहूण	१२	१४		३६	२३२
	१४	३०	वीसस *		
	२०	४८	-वीससे	४	६
	२८	२६	वीससणिज्ज	२६	सू० ४३
विहेडयत	१२	३६	वुड्य	१८	२६
वोअ *			वुककस	८	१२
-वोएज्जा	२	६	वुग्गह	१७	१२

वुच्च *

वुच्चइ	१	२, ३
	८	९
	११	४ से ६, ९, १०, १३
	१७	३ से १९
	२३	७३
वुच्चन्ति	८	१३
वुच्चसि	१८	२१
वुज्जमाण	२३	६५, ६८
वुद्ध	१२	३६
वुत्त	१४	२२, २३
	२०	१३
	२३	३७, ४७, ४८, ५२, ५३, ६२, ६७, ७२, ७३, ७७, ८२
	२४	५, ६, २६
	२५	१९
	२८	३४
	२९	सू० ८
	३३	८
	३६	४, २०४
वुत्तोमय	५	१८, २९
वृह *		
वृहए	१०	३६

वूहइत्ता

	४	७
	२०	४३
वेअ	२	३७
	२७	३
वेइय	१९	४७, ४८, ७१, ७२, ७४
	२९	सू० ७२
वेइया	२६	२६
वेग	२३	६५, ६६, ६८
	२७	६
वेजयत	३६	२१५
वेज्जचित्ता	१५	८
वेमाणिय	३४	५१
	३६	२०४, २०५, २०९, २१६
वेमाया	७	२०
वेय	१२	१५
	१४	९, १२
	२५	११, १४, १६, २८
वेयकाल	४	४
वेयणा	२	३२, ३५
	३	६
	५	१२
	१९	३१, ४५, ४७, ४८, ७१, ७३, ७४

वेयणा	२०	१६ से २१, ३१ से ३३	वेस	१
	२३	८१	वेसमण	२२
	२६	३२	वेसालिअ	६
वेयणिज्ज	२६	सू० ४२, ७३	वेस्स	१३
	३३	२, २०	वोक्कस	३
वेयणीय	३३	७	वोच्चत्थ	८
वेयणी	१६	५६	वोच्छिद *	
	२०	३६	-वोच्छिद	१
वेयविअ	१४	८	-वोच्छिदइ	२
	१५	२	वोच्छिदित्ता	२६
वेयविउ	२५	७, ३६	वोच्छ *	
वेयवी	२५	४	-वुच्छामि	३०
वेयस	२५	१६	-वोच्छामि	२४
वेयाल	२०	४४		३३
वेयावच्च	२६	६, १०, ३२		३४
	२६	सू० १, ४४	वोच्छेय	२६
	३०	३०, ३३	वोच्छेयण	२६
वेयावडिय	१२	२४, ३२	वोदाण	२६
वेर	४	२	वोसट्टुकाय	१२
	६	६		३५
वेरत्तिय	२६	२०	वोसिर *	
वेरुलिय	२०	४२	-वोसिरे	२४
	३४	५	व्व	३
	३६	७६		१
वेयमाण	२२	३५		१

व्व	७	६	स(स्व)	१६	५३, ६६
	१४	४८		२१	३
	१८	५१		३२	१०७
	१९	३५, ३६, ८६	स (सत्)	५	२६
	२१	१९		१२	२६
	२२	४४		२१	२३
	२६	सू० १३		२२	१२
स(स)	६	४	सअ	७	१
	१४	३७, ४६		१७	१८
	१६	२०, ८८		२६	सू० ३४
	२०	१६, ५५, ५८		३२	२५, ३८, ५१,
	२२	१८, २१			६४, ७७, ९०
	२५	१३		३६	८२, ९०,
	२६	२०			१०४, ११५,
	२६	सू० ६०			१२४, १५३,
	३२	१, ६, १६,			१६८, १७७,
		२३, ३६, ४६,			२४६
		६२, ७५, ८८	सइं	५	३
	३५	४		७	१८
	३६	१८५, १९२,		२०	३२
		२१६, २२१,	सउण	१६	६५
		२२३, २२५,	सकट्टाण	१६	१८
		२५७, २५६	सकप्प	६	५१
म(त्व)	४	३		३२	१०७
	६	३, ४	सकप्प ^३		
	१४	२, ५	-सकप्पए	३५	८

२६६

परिशिष्ट-२

वेयणा	२०	१६ से २१, ३१ से ३३	वेस	१	२५, २६
	२३	५१	वेसमण	२२	४१
	२६	३२	वेसालिअ	६	१७
वेयणिज्ज	२६	सू० ४२, ७३	वेस्स	१३	१८
	३३	२, २०	वोक्कस	३	४
वेयणीय	३३	७	वोच्चत्थ	८	५
वेयणी	१६	५६	वोच्छिद *		
	२०	३६	-वोच्छद	१०	२८
वेयविअ	१४	८	-वोच्छदइ	२६	सू० ३, २१, ३६, सू० ४६
	१५	२	वोच्छिदिता	२६	सू० ३६
वेयविउ	२५	७, ३६	वोच्छ *		
वेयवी	२५	४	-वुच्छामि	३०	२६
वेयस	२५	१६	-वोच्छामि	२४	१६
वेयाल	२०	४४		३३	१
वेयावच्च	२६	६, १०, ३२		३४	४०, ४४, ४७, ५१
	२६	सू० १, ४४	वोच्छेय	२६	सू० ४
	३०	३०, ३३	वोच्छेयण	२६	३४
वेयावडिय	१२	२४, ३२	वोदाण	२६	सू० १, २८, २६
वेर	४	२	वोसट्टकाय	१२	४२
	६	६		३५	१६
वेगत्तिय	२६	२०	वोसिर *		
वेणलिय	२०	४२	-वोसिरे	२४	१८
	३४	५	व्व	३	१२
वेणमाण	३६	७६		५	१०
	३२	३५			

सचय	१०	३०	सजअ(य)(संयत) १७	६
	१६	३०		३०
	२०	१८		५
	२१	२३		१,४,५,८,
सचिक्ख *				११, ४३, ५६
सचिक्खे	२	३३		१३, १५, २०
सचिक्खमाण	१४	३२		३५, ४६
सचिण *				१०
सचिणइ	५	१०		४, १०
सचिणु	३	१३		६
सचिणिया	७	८		३, ७, ९
सचिन्तण	३२	३	सजइज्ज	१८
सचिय	३०	६	सजम	१
सच्छन्न	२०	३		३
सजअ(सजय)	१८	१, १०, १६,		५
		२२		६
सजअ(य)(सयत) १		१६, ३४, ३५		१२
२		४, २७, ३०,		१३
		३४		१४
		१८, २६		१६
		१५		१६
		३६		८३
		६		५२
		२, ६, २०,		६६
		२२, ६०, ६५		६६
		५		६०

२६८

सकप्यज	३२	१०७
सकमाण	१४	४७
सकर	१२	६
सकहा	१६	३
सका	२	२१
	१६	सू० ३ से १२
	१६	१४
सकास	२	३
	५	२७
	१६	५०
	३४	४ से ६
	३६	६१
सकिय	२६	२७
सकिलिस्स *		
-सकिलिस्सइ	२६	सू० २५, ३५, ३६
सकुल	६	७
सख	११	१५, २१
	३४	६
	३६	६१, १२८
सखअ	३२	२
सखणग	३६	१२८
सखय	४	१३
सखवियाण	२०	५२
सग्गा	२८	१३
	३६	१६७
नपाइय	१०	५ मे ८
	३८	३३

संखिज्ज	१०	१० से १२
सखिज्जकाल	३६	१३३, १४२,
		१५२
सखेव	२८	१६
सखेवच्छई	२८	२६
सग	२	१६
	३	६
	१३	२७
	१८	५३
	२१	११
	३२	१८
	३५	२
सगह	२५	२२
	३३	१८
सगहिय	२७	१४
सगाम	२	१०
	६	२२, ३४
	२१	१७
सगोफ	२२	३५
सघ	१३	१२
	२३	३, ७, १०,
		१५
	३६	२६५
सघयण	२२	६
सघाडि	५	२१
सघायणिज्ज	२६	सू० ६०

सतइ	३६	१७४, १८३, १६०, १६६, २१८
सतत्त	१४	१०
सतल्लर	२३	१३, २६
सतस *		
-सतसन्ति	५	२६
सतसे	२	११
सतसेज्जा	२१	१४
-सतस्सइ	५	१६
सताण	१४	४१
सति	५	२८
	१२	४३ से ४६
	१८	३८
सतिकर	१८	३८
सतिमग्ग	१०	३६
सनुहु	३५	१६
सतुस्स *		
-सतुस्सइ	२६	सू० ३४
सनुहो	८	१६
सतोसीभाव	२६	सू० ७१
नवव	१५	१, १०
	१६	३, ११
	२१	२१
	२६	५१
	२८	२८

सयार	१७	७
	२३	४, ८
	२५	३
सथारअ	१७	१४
सथुय	१	४६
	१५	१०
	२३	८६
सदिट्ठ	२५	१६
सधाव *		
-सधावड	२०	४६
सधि	१	२६
सधिमूह	४	३
सनिनाय	२२	१२
सनिभ	१६	१३
	२२	३०
	३४	४, ६, ८
सनिरुद्ध	७	२४
सनिवेशणया	२६	सू० १, २६
संपइ	१०	३१
सपगार *		
-सपगरेइ	२१	१६
सपगाढ	२०	४५
संपज्जलिय	२३	५०
सपडिलेह *		
-सपडिलेहए	२६	४२

मजम	२८	३६
	२९	सू० १,२७,४०
		सू० ५४
	३१	२
	३६	१,२४९
सजममाण	१८	२६
सजल *		
-सजले	२	२४,२६
सजलण	२९	सू० ५
सजा *		
-सजायई	३२	१०७
मजुत	१८	१७
	२६	७
	२८	१
मजुय	१२	३४
	१४	२६
	२२	१,३,५
मजोणमाण	२९	सू० ६१
मजाग	१	१
	८	२
	११	१
	२८	१३
	२९	सू० ४
सजाण	१६	४
	२८	२३
	३६	२१,८२,८६,
		८३

सठाणओ	३६	१५,२२ से
		४१,४३ से
		४५,९१,
		१०५,११६,
		१२५,१३५,
		१४४,१५४,
		१६९,१७८,
		१८७,१९४,
		२०३,२४७
सठिय	३६	५७,६०
सडासतुण्ड	१९	५८
सत(सत्)	१	२२,
	१९	७
	२०	१२
	२२	३२
	२३	५३
	२५	६
	३२	३४,४७,६०,
		७३,८६,९९
सत(श्रान्त)	१८	३
सतअ	२	३
सतइ	३६	९,१२,७९,
		८७,१०१,
		११२,१२१,
		१३१,१६०,
		१५०,१५९,

समञ	३६	२६८
समहमाण	१७	६
समुच्छ * -समुच्छड	१४	८
समुच्छिम	३६	१६५, १६८
सरम्भ	२४	२१, २३, २५
सलव * -सलवे	१	२६
सलिह * -सलिहे	३६	२५०
सलीणया	३०	८
सलेहा	३६	२५१
सलोअ	२४	१६, १७
सवच्छर	३६	२५१, २५३ से २५५
सवट्ट	३०	१७
सवट्टगवात	३६	११६
सवट्ट * -सवट्टड	२१	५
सवय * -समुवाय	१४	३७
सवर	६	२०
	१२	१२
	१३	सू० १ मे ३
	२२	३६
	२८	१६, १७

सवर	२६	सू० ८०, ५६
	३३	२५
सवस * -सवसे	१०	५ से १४
सवसित्ताण	१४	२६
सविग्ग	२१	६
सविद * -सविदे	७	२२, २६
सवुड	१	३५, ४०
	३	११
	५	२५
	१७	२०
सवेग	१८	१८
	२१	१०
	२६	सू० १, २
समग्गी	१	६
ससत्त	१६	सू० ३
समय	१	६०
	६	२६
	२३	
	२१	

ससर *

-ससरइ

ससार

१०	१५
३	२,५
४	४
६	१,१२
८	१,१५
१०	१५
१४	२,४,१३, १६,४७
१६	१५
२०	३१
२२	३१
२३	७३,७८
२४	२७
२५	३८,३६
२६	१,५२
२७	२
२६	सू० ३,६,२३, सू० ३३,६०
३०	३७
३१	१,२१
३२	१७
३३	१
३६	६७
३६	४८,६८, २३८

सकाम	५	३
सकाममरण	५	२,१७,३२
सक्क	६	६,५६,६१
	११	२३
	१८	४४
सक्क *		
-सक्केइ	४	१०
सक्कर	३४	१५
सक्करा	३६	७३
सक्कराभा	३६	१५६
सक्कार	३५	१८
सक्कार-पुक्कार	२	सू० ३
सक्किय	१५	५
सक्ख	१४	२७
सक्ख	२	४२
	६	६१
	१२	३७
	१८	४४
	२२	४१
सग	२०	२६,२७
सगर	१८	३५
सगास	१२	१६,४५
सचेल	२	१३
सचेलअ	२	१२
सच्च	६	२
	७	२०

सञ्च	६	२१
	११	५
	१३	६
	१८	२४, ५२
	१६	२६
	२१	१२
	२८	२५
	२६	सू० १, ५१
सञ्चपरक्कम	१८	२४, ४८
सञ्चवा	२४	२०, २२
सञ्चवामोसा	२४	२०, २२
सजोगि	२६	सू० ७२
सज्ज *		
-सज्जइ	२५	२०
-सज्जति	३५	२
सज्जभाअ	२६	६, १०
	२६	सू० १, १६
	३०	३०, ३४
सज्जभाय	१८	४
	२४	८
	२५	१८
	२६	१२, १८, १६,
		२१, ३६, ४३,
		४४
	३२	३
सट्ठिहायण	११	१८

सङ्घा	१४	६
सङ्घि	५	२३, ३१
सढ	५	६
	७	५, १७
	२७	५
	३४	२३
सण	३४	८
सणकुमार	१८	३७
	३६	२१०, २२४
सणप्पय	३६	१८०
सणाह	२०	१६, ५५
सण्ह	३६	७१
सत्त(शक्त)	६	११
सत्त (ससन्)	१०	१३
	२६	सू० २३
	३०	२५
	३१	६
	३६	८८, १५६,
		२२४ से २२६
सत्त(सत्त्व)	१४	१८, ४३
	२६	सू० १८, ४३
	३२	१११
सत्त(सक्त)	१४	४५
	३२	२६, ४२, ५५,
		६८, ८१, ६४,
		१०३

सत्तम	२६	३
	३६	१६६, २४०
सत्तगत्त	२६	१४
सत्तरस	३६	१६४, १६५, २२८, २२९
सत्तरि	३३	२१
सत्तविह	३३	११
	२६	७१, १५६
सत्तवीस	३६	२३८
सत्तवीसइ	३६	२३९
सत्तहा	३६	१५७
सत्तावीसइ	३४	२०
सत्तु	१९	२५
	२३	३६ से ३८
	३२	१२
सन्ध(शन्त्र)	२०	२०, ४४
	३५	१२
	३६	२६७
सन्ध(शाम्त्र)	२८	२०, ४४
सन्ध(मार्थ)	३०	१७
सन्धकुम्भ	२०	२२
सदावगी	३६	१३८
सः	९	७
	१५	१८
	१३	सू० ५, १२
	१६	१०

सइ	२१	१४
	२८	१२
	२९	सू० ४०, ४६, ६३
	३२	३५ से ४७, १०६
सइह *		
-सइहाइ	२८	१८, १९, २७
-सइहे	३	११
	२८	३५
सइहत	२८	१५
सइहतया	१०	२०
सइहणा	१०	१९
	२८	२८
सइहिऊण	३६	२४९
सइहिता	२९	सू० १
सइम	३	१९
सइदा	३	१, ९, १०
	९	२०, ५९
	१२	१२
	१४	२८
सइदि	१	२६
	५	७
	१६	सू० ५
सइना	३१	६
सइनाडपिड	१७	१९
सइनिअ(य)	१०	१० से १२
	३६	६६, ६७

सन्निओग	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ८०, ९३	सवभाव	२८	१५
सन्निनाअ	२२	१२	सव्भन्तर	२९	सू० १, ४२
सन्निरुद्ध	७	२४	सवभूय	२३	३३
	२२	१४, १६	सभारियाअ	१२	३०
	३०	५	सभिकखुय	१५	
सन्निवेस	३०	१७	सम	२	१०
सन्निसेज्जा	१६	सू० ५		५	१४
सन्निहि	६	१५		७	२३
	१९	३०		९	४८
सपज्जवसिअ	३६	९, १२, ७९, ८७, १०१, ११२, १२१, १३१, १४०, १५०, १५९, १७४, १८३, १९०, १९९, २१८		११	३१
				१६	३
				१९	८९, ९०
				२०	२१
				२३	१८
				२४	१७
				२९	सू० ३७
सपरिक्रम	३०	१३		३२	५, २२, ३५, ४८, ६१, ७४, ८७
सपुण्ण	५	१८		३४	५, ९
सपेहाए	७	१९		३५	१२, १३
सप्प	३२	५०	समअ	२९	सू० ७२, ७४
सण्णि	३०	२६		३६	७, ९, ५१, ५४
सफ्फ	१३	१०		१४	३६
	१४	२५	समडक्कमत	१४	
सन्न	१९	५७			
	३१	१५			

समइककमिता	३२	१८	समय(समक)	१	३५
समत्तओ	२७	१३	समय(समय)	१०	१ से ३६
समगा	८	३		३४	३३, ४६, ५०,
समचउरस	२२	६			५४, ५५, ५८,
समज्जिय	३०	१, ४			५६
समण	२	सू० १ से ३		३६	१३, १४
	२	२७	समयखेत्तिय	३६	७
	४	११	समथा	४	१०
	८	७, १३		१६	२५
	६	३८		२५	३०
	१२	६		३२	१०१, १०७
	१३	१२	समर	१	२६
	१४	१७	समाइण्ण	५	२६
	१६	५	समाउत्त	२५	३३
	२५	२६, ३०		३४	२२, २४, २६,
	२६	सू० १, ७४			२८, ३०, ३२
	३२	४, १४, २१	समाउल	२२	३, ७, १५
	३६	१	समागअ	२७	१५
नमणत्तण	१६	३६ से ४१	समागम	२३	१४, २०, ८८
नमन	२६	सू० ४३	समागम्म	२३	३१
नमन्व	२५	८, १२, १५,	समागय	१२	१६, २८, ३३
		३३, ३७		१३	३
गलन्नागय	२६	सू० ४३		२३	१६
गलन्ना	२०	१५	समाण(समान)	३२	१८
गलन्ना			समाण(सह)	१४	३३
गलन्ना	३०	१०	नमादाय	६	१५

उत्तरज्भयण शब्द-सूची

समाधारणया	२६	सू० १	समासजो	३३	३
समाय	३०	१७	समासात् *		
समायय *			-समासातोन्ति	६	६
-समाययन्ती	४	२	समाहारण.गा	२६	सू० ५७ तो ५६
समाययत	३२	३१, ४४, ५७, ७०, ८३, ९६	समारि	१	१७
				११	२६
समाययर *				१६	सू० १ तो ३.१२
				२७	१
-समाययामो	१४	२०		३२	१०६
-समायये	१	३१		३६	२६२
समाययार	३४	२५	समाहि काम	३२	४, २१
समाययारी	१	४७	समाहिजोग	८	११
समाययभ *			समाहिय(ज)	१६	१५
-समाययभई	५	८		२२	२१
समाययभत	१२	३८		२३	५५
समाययम्भ	२४	२१, २३, २५		२६	सू० १
	३५	८, ९			
समाययञ	३२	११	ममिअ	२६	१३
समाययड	११	१७		३०	३
	२२	२२		३६	३१
समाययन्त	३	२	ममिउ	१०	१७
	५	२६			
	१८	१८			
समास	२६	३, १६			
	२६	५२			
	३०	१५, १६, २२			
	३३	१५			
	३६	५३, ५०, ६३	ममि		

नमिक्खव *			समुद्द	७	२३
-नमिक्खवाग,	२३	२५		११	३१
नमिच्च	४	१०		२१	४,२४
	१५	१,१५		३६	५०,५४
नमिद्ध	५	२७	समुद्दपाल	२१	४,६,२४
	१४	१	समुद्दपालीय	२१	
	१८	४६	समुद्दविजअ	२२	३,३६
	२०	६०	समुद्द्विस्स	७	१
नमिय	६	१६	समुद्दत्तु	२५	८,१२,१५
	८	६	समुद्दर *		
	१६	८८	-समुद्दरे	६	१३
नमियदमण	६	४	समुप्पज्ज *		
नमित्था	१६	५६	-समुप्पज्जिज्जा	१६	सू० ३ से १२
	२७	४	समुप्पन्न	१६	७,८
नमोत्तिय	७	४		२३	१०
नमुत्तग्गि	२३	८८	समुप्पाड *		
नमंगपत्ति	३८	१८८	-समुप्पाडेइ	२६	सू० ७२
नमत्ति			समुयाण	३५	१६
			समुवट्ठिय	२३	८६
				२५	६
			समुविच्च	३२	१११
			समुवे *		
			-समुवेइ	३२	२,२४,२५
			नमुम्मय	५	३२
			नमत्ति	२३	८६
			नमोत्तण्ण	२२	२१

सम्बुक्कावट्ट	३०	१६
सम्म *		
-सम्मइ	१	३७
सम्म	१४	५०
	१७	५
	१८	२७, ३२
	१९	६४
	२०	३९
	२३	१६, ५८
	२४	२७
	२९	सू० १, १७
	३०	३१, ३७
	३६	१
सम्मग	२३	६३, ८९
सम्मत्त	१४	२६
	२८	१५, २१, २२, २८, २९
	२९	सू० ५७
	३३	६
सम्मत्तपरक्कम	२९	
	२९	सू० १, ७४
सम्मइसण	३६	२५८
सम्मइमाण	१७	६
नम्महा	२६	२६
सम्माण	३५	१८
नम्मामिच्छत्त	३३	९

सम्मुड	२८	१७
सम्मुच्छिम	३६	१७०
सम्मूढ	३	६
सय (शत)	३	१५
	७	१३
	१८	२८
	२९	सू० ४१
	३६	५१, ५३, ५४, ५८
सय(स्वक)	७	१
	३६	८२, ९०, १०४, ११५, १२४, १५३, १६८, १७७, २४६
सय	१२	२२
	१३	२३
	२२	२४, ३०
	२६	५, २९
	२८	१८
	३५	८
सयभू-रमण	११	३०
सयध्वी	९	१८
सयण(शयन)	१	१८
	७	८
	१५	४, ११

नयण(नयन)	१६	सू० ३	सर(सरस्)	१६	५०,५१
	२६	सू० १,३२	सरण	१	४५
	३०	२८,३६		१२	२८,३३
मयण(म्वजन)	१४	१६,१७		१४	२
	२२	३२		१५	८
नयमाण	२	३४		२०	४५
नयय	२१	१६		२३	६५,६८
	२३	५१	सराग	३४	३२
	३२	११०	सरित्तु	६	२
नया	१	८,२०,२४, ४२,४४		१४	५
	६	६,२१	सरि	३३	१६,२१,२३
	११	४	सरिस	२	२४
	१५	६		६	३
	१६	सू० १ से ३	सरीर	२	३७
	१६	८		३	१३
	१७	२१		४	६,६,१३
	२०	४६		६	११
	२८	१४		१२	८,४४
	२५	१६		१४	१८
	३१	२१		१६	सू० ११
	३०	१५		१६	६
				१६	१२,१३
				२०	२०
				२३	७३
				२६	३४
				२६	सू० १,३६
				२३	५०

सरीरय(ग)	१०	२१ से २७
	१३	२५
	२३	४०
सल्लिग	३६	४६, ५२
सल्लिल	११	२८
सल्लोगया	५	२४
सल्ल	६	५३
	१६	६१
	२६	सू० ६
	३१	४
सवण	३	६
सवियार	३०	१२
सवोसेस	७	२१
सव्व	२	२८
सव्वओ	६	६
	६	१६
	१४	२१
	१५	१६
	१८	२
	१९	६३
	२१	२४
	२२	११
	३५	१२
सव्वगामिय	२५	८
सव्वट्टु	३६	५७, २४४
सव्वट्टुनिद्धग	३६	२१६

सव्वत्थ(सर्वार्थ)	१८	३०
सव्वत्थ(सर्वत्र)	२१	१५
	३६	१३०, १३६,
		१७३, १८२
सव्वदसि	१५	२, १५
सव्वन्नू	२३	१, ७८
सव्वभक्खि	२०	४७
सव्वसो	१	४
	६	११
	२३	४१, ४६
	२४	२६
ससत्ता	२१	३
ससमय	२६	सू० ६०
ससरक्ख	१७	१४
सह(सह)	१	६
	६	४६
	१२	१८
	१४	६, १६, ५३
	१६	३
	२१	२१
सह *		
-सहई	३१	५
-सहेज्जा	२१	१६
सह(स्व)	२८	१७
सहसवुद्ध	६	२
सहसा	१६	६

७	११,१२	साईय	३६	१०१,११२,
८	३४,४०			१२१,१३१,
१८	४३			१४०,१५०,
१९	२४			१५९,१७४,
२२	५			१८३,१९०,
२३	३५			१९९,२१८
३४	४१,४८,५३	साउ	३२	१०
३६	५८,८०,८८,	सागडिय	५	१४
	१०२,१२२	सागपत्त	३४	१८
सतन्नाग	११	सागर	१९	३६,४२
पट्टसागो	३६		२२	३१
	८३,९१,		२५	३८
	१०५,११६,		२६	१,५२
	१२५,१३५,		३१	१
	१४४,१५४,		३४	३४,३८,३९,
	१६९,१७८,			४३,५२
	१८७,१९४,		३६	१६१,१६२,
	२०३,२४७			१६४ से १६६,
	२११,२२९			२१९,२२२ से
	१६०,२१९,			२४३
	२२०			२८
सू०	१,८०	सागरगम	११	३५,४०
	४,५,१०४	सागरत	१८	२२
	६०,२६३	सागरोवम	३३	१६० से १६६,
	१,५,१५		३६	२२४,२२६ से
	११,१२			२३०,२३२,
	९,१२,६५,			
	८,८,८,			

सागरोवम	३६	२३४ से २३६, २४२, २४४	साय	२७	८
				२९	सू० ८
				३३	७
सागरोवउत्त	२९	सू० ७४		३४	२३
साण	१	६		३६	२६१
साम	१९	५४	साय	१२	३९
सामण्ण	२	१६, ३३	सार	१४	३०, ३७
	९	६१		१९	२२
	१८	४६		२०	२१
	१९	८, २४, ३४, ७५, ९५	साग्इय	१०	२८
	२०	८	सारण	२६	६
	२२	४५, ६७	साग्हि	१६	१५
	३६	२५०		२२	१५, १७, २०
सामाइय				२७	१५
(सामाजिक)	११	२६	सारीग्	१९	१५
सामाइय(अ)				२३	८०
(सामायिक)	२८	३२		२९	सू० १, १५
	२९	सू० १, ९	मालि	८	१९
सामाइयग	५	२३	मालिम	०२	३१
सामायारी	२६		मावज	०१	१, २, १
	२६	१, ६, ७, ५२	मावजगा	३०	८
सामि	२	३८	मावजा	१	२१, ३०
सानुदाणिय	१७	१९		०१	१५
साय	२	८, ३६	मावजज्जयण	०२	१०
	१९	७९	मावजा	०१	१
			मावजि	०३	१५

३१६

सास

(शिष्यमाण) १ ३७

सास

(शास्यमाण) १ ३६

सासत १ ३७

सासग ३६ ७५

सासण १४ ५२

१६ ६३

सासय १ ६

३ २०

६ २६

१६ १७

२३ ८६

३५ २१

सासयवाइय ४ ६

साह *

-साहसि १३ २७

-साहेइ २६ सू० ५

साहण २३ ३१, ३३

साहम्मिय २६ सू० १, ५

साहसिअ २३ ५५, ५८

३४ २१

साहस्सिअ ३४ २४

साहस्सी २२ २३

२३ १६

साहा १४ २६

५ २७

८ ३

८ १७

१७ ३७

१३ २७३६

१६ ७

२० ६, १३

२३ २८, ३६, ३६,

५५, ५६, ५६

५६, ६६, ६६,

७५, ७६, ८५

२५ १५

२६ ६

२७ १२

३६ २६५

८ ८

साहुयम्म

सिंग ११ १६

सिंगवेर ३६ ६६

सिंगार १६ ६

सिंगिरीडी (वे०) ३६ १४७

सिघाण	२४	१५
सिच *		
-सिचामि	२३	५१
सिचलि	१६	५२
सिक्ख *		
-सिक्खए	२१	६
-सिक्खा	५	२४
	७	२०, २१
	११	३, १४
	२३	५८
-सिक्खेज्जा	१	८
सिक्खासील	११	४, ५
सिक्खित्ता	५	२८
सिक्खिय	४	८
सिज्जा	२३	४, ८
सिज्ज *		
-सिज्जइ	२६	सू० २, २६, ४२, ख० ५६, ६२, ७४,
-सिज्जई	३६	५१, ५२, ५४ से ५६
-सिज्जन्ति	१६	१७
	२६	सू० १
-सिज्जते	३६	५३
-सिज्जिस्तन्ति	१६	१७
सिद्ध	१२	४२
सिद्धि	४	६
	२६	सू० २३

सिणाण	२	६
	१२	४७
	१५	८
सिणायअ	२५	३२
सिणेह	६	४
	८	२
	१०	२८
सित्त	३	१२
	२३	५१
सित्थ	३०	१५
सिद्ध	१	४८
	३	२०
	१२	११
	१६	१७
	१८	५३
	२०	१
	२६	५१
	२६	सू०, ३६
	३३	१७, २४
	३६	४८, ४९, ५५, ५६, ६२ से ६४, २४८
सिद्धाङ्गुण	३१	२०
सिद्धि	६	५८
	१०	३५, ३७
	११	३२

सिद्धि	१३	३५
	१६	६५
	२२	४८
	२३	८३
	२५	४३
	२६	सू० ३,५
	३६	६३, ६७
सिप्पि	१५	६
सिप्पीय	३६	१२८
सिया	६	४८
सिर	१८	५०
	१६	४६
	२०	५६
	२२	१०
	२३	८६
सिरिली (दि०)	३६	६७
सिरी	१८	५०
सिरीज	३४	१६
सिला	३६	७३
सिलोग	१५	६
	१६	सू० १२
सिव	१०	३५
	२३	८०, ८३
सिवा	२२	४
सिसुणाग	५	१०
सिस्सिली (दि०)	३६	६७

गिहा	१६	३६
गो-जोरग	२	४
गोय *		
-गोयन्ति	२०	३८
	२१	१०
गोग (ज)	१	२७
	२	६
	१५	६, १३
	१६	३१, ३८
	२१	१८
	३२	७६
	३६	२०
सीयज	३६	३८
सीयच्छाय	६	६
सीयपिंड	८	१२
सीया (सीता)	११	२८
	३६	६१
सीया (शिविका)	२२	२२, २३
सील	१	५, ७
	३	१४
	५	१६
	१३	१२, १७
	१४	५, ३५
	१७	३
	१६	५

सील	२१	११
	२२	४०
	२३	५३, ८८
	२७	१७
	२६	सू० ५
	३६	२६३
सीलवत	५	२६
	७	२१
	२२	३२
सीस(शिष्य)	१	१३, २३
	२१	१
	२३	२, ३, ६, ७, १०, १४, १५
	२७	१५, १६
सीस(शीर्ष)	२	१०
	७	३
	१२	२८
	२१	१७
सीसग	३६	७३
सीसय	१६	६८
सीह	११	२०
	१३	२२
	२१	१४
	३६	१८०
सीहज्ज्मणी	३६	६६
सीहु	१६	७०

सुअ	२८	२१
सुइ(श्रुति)	३	१, ८, १०
	१०	१८, १६
सुइ(शुचि)	१२	४२
सुइर	७	१८
सुए	२	३१
	१४	२७
सुंदर	१३	२४
	१६	१७
सुसमार	३६	१७२
सुकड	१	३६
	२	१६
सुकय	१	४४
सुकहिय	१०	३७
सुकुमाल	१६	३४
	२०	४
सुकक(शुष्क)	२५	४०, ४१
सुकक(शुक्ल)	३०	३५
	३४	३१
सुककज्ज्मण	२६	सू० ७३
	३५	१६
सुककलेसा	३४	३, ६, ३२, ३६, ४६
	३६	२५८
सुकका	३४	१५, ५५, ५७
सुकिकल	३६	१६, २६, ७२

मुग्गवगधिय	२२	२८
मुग्गड	३८	५७
मुग्गाव	१९	१
मुच्चिण्ण	१३	१०
	१८	५
मुच्चि	०७	९
मुच्चाइय	१	४८
मुच्चा	२१	१८
मुच्चिन्न	१	३६
मुज्जट्ट	१२	८०
मुज्ज	८	६
मुट्टिय	२२	४०
मुट्टु	२०	५८
	२५	३५
मुण "		
-मुण	२८	६
	३०	१,४
	३३	१६
	३६	४८, १७९
-मुणादि	१३	२६
-मुर्णोम	२०	८
-मुण्ह	१	१
	२	१
	५	१७
	११	१
	२०	१, १७

-मुणेह	२८	१
	३४	१, २
	३५	१
	३६	१, ६९,
		१०७, १२७,
		१३६, १४५,
		१७१, १९५,
		२०४
-मुणेहि	२०	३८
-मुव्वन्ति	९	७
मुणग	१९	५४
	३४	१६
मुणिट्टिय	१	३६
मुणित्ता	१७	१
मुणिया	१	६
मुणी	१	४
मुणेत्ता(श्रुत्वा)	१२	१९
मुणेत्ता(श्रोतु)	१६	सू० ५
मुणेमाण	१६	सू० ७
मुत्त(सूत्र)	१	२३
	२३	८५
	२८	१६
	२९	सू० २१, ६०
	३२	३
मुत्त(मुत्त)	४	६
मुत्तग	२२	२०

सुत्तरुइ	२८	२१
सुदसण	११	२७
सुदिट्ट	१२	३८
	२८	२८
सुदुक्कर	१६	२८ से ३०, ३८, ३६
सुदुक्खिअ	२२	१४
सुदुक्खर	१८	३३
सुदुल्लह	८	१५
	१७	१
	२०	११
	२२	३८
सुइ	२५	३१
सुद्ध	३	१२
	८	११
	१८	३२
	१६	६८

सुपावय	१२	१८
सुपिवासिय	२	५
सुपुण्ण	५	१८
सुपेसल्ल	१२	१३, १५
सुप्पणिहिय	२६	सू० १२
सुप्पमारअ	२	२६
सुप्पिय	११	८
सुव्विभ(दे०)	२६	२७
सुव्विभगव	३६	१७
सुभामिय	२०	५१
	२२	६६
सुभेरव	१६	५३, ६८
सुमज्जिय	१६	३३
सुमह	११	२६
सुमिण	१५	७
सुय(मुत्त)	१३	२५
	१३	११, ३५

१०	सुलद्ध	२०	५५
३,५३,५६,	सुलह	३६	२५८
८८	सुलहवोहियत्त	२६	सू० ५८
सू० १,२०,२५	सुव ^{२०}		
४	सुवई	१७	३,१४
७	सुवण्ण(सुवर्ण)	६	४६,४८
४४		३६	७३
३७	सुवण्ण(सुपर्ण)	१४	४७
२७		३६	२०६
४,२३	सुवण्णग	३६	६०
११	सुविण	८	१३
१३,४१		२०	४५
३६	सुविणीय	१	४७
१६		११	१०,१३
५१	सुविमिह्य	२०	१३
०११ २१५,	सुविसोज्झ	२३	२७
०१३	सुव्वअ	५	२२,२४
०२		७	२०
,		८	६
		१५	५
		१७	२१
		२०	१३
		११	३१
		०	१०
		१०	६२
		११	१०

सुसमाहिइदिय	२१	१३
सुसमाहिय(अ)	१२	२, १७
	२०	४
	२३	६
	२७	१७
	३०	३५
सुसाण	२	२०
	३५	६
मुसीइभूय	१२	४६
मुमील	२२	७
मुस्मुयाडत्ता	२७	७
मुस्सूणया	२६	सू० १, ५
स्ह (मुख)	७	२७
	६	१४, ३५
	१३	३, १७
	१४	३२
	१७	३
	१८	१७
	१९	७६, ६०
	२०	३७

मुह (गुभ)	१०	१५
	३३	१३
	३६	६१
मुहड	१	३६
मुहफरिस	२६	सू० ७२
मुहसाय	२६	सू० १, ३०
मुहमेज्जा	२६	सू० ३४
मुहावह	१६	६८
	२३	८७
	३०	२७
	३१	१
	३५	१५
मुहामिय	१२	२४
मुहि (मुग्विन)	१	१५
	१६	२०, २१, ८०
	२६	सू० ३६
	३०	११० १११
मुहि (मुहद)		
मुहत्त		
मुहम		

सुवर्ण)	१६	१०	सुलद्ध	२०	५
	२३	३,५३,५६,	सुलह	३६	२५
		८८	सुलहबोहियत्त	२६	सू०
	२६	सू० १,२०,२५	सुव *		
	३३	४	सुवई		
	३४	७	सुवण्ण(सुवर्ण)		
	६	४४			
	२२	३७	सुवण्ण(सुपर्ण)		
	२८	२७			
	२८	४,२३	सुवण्णग		
	१८	१४	सुविण		
	१२	१३,४४			
	१०	३६	सुविणीय		
	३१	१६			
	३४	५१	सुवि		
	३६	२११, २१५,	सु		

सेविज्जा	२	४
	१६	सू० ३
-सेवे	४	१८
-सेवेज्जा	१८	१२
सेवण	२८	२८
	३५	३
सेवणया	२६	सू० १
	३०	२८
सेवमाण	१६	सू० ३
सेवा	३२	३
	३६	२६७
सेवित्ता	१६	सू० ३
सेस	१२	१०
	१४	२
	२६	२८
	२८	२६
	३२	१८
सेसअ	३४	६०
सोइदिय	२६	सू० १, ६३
सोउ	३६	२६२
साज्जण	१३	२
	१८	१८
	२२	१८, २८
सात्त	१४	१३
	२६	सू० ४
	३२	२

सोग	१६	६१
	२०	२५
	२२	२८
	२६	सू० ३०
	३२	१०२
सोगघिय	३६	७६
सोगइ	२८	३
	२६	सू० ५
सोच्च	३	११
सोच्चा	२	सू० १ गे ३
	३	८, ६
	५	२६
	७	२५
	१२	२४
	१४	३७
	१५	१४
	१६	सू० १ से ३
	१८	३४
	२२	६६
	२५	४२
	३६	२४६
सोच्चाण	२०	५१
सोच्चाण	२	६, २५
सोढ	१६	८५, ८६
सोणिय	२	११
सोभाग	२१	८

हसगव्भ	३६	७६	-हरति	१४	१५
हृद्	१८	१६	हरअ	१२	४५, ४६
हृद	२२	४४	हरतणु	३६	८५
हृण			हरिएस	१२	२७
-हृणह	१२	२६	हरिएसबल	१२	१
हृणाड	२०	४४	हृगिएसिज्ज	१२	
-हृणे	२	११	हरिण	३२	३७
	६	६	हरिय	१७	६
-हृणेज्जा	२	२७	हरियकाय	३६	६५
हृत्य	५	६	हरियाल	३४	८
	१४	४५		३६	७४
हृतिय	२०	१४	हरिसेण	१८	४२
हृतियणपुर	१३	१, २८	हलिद्दा	३४	८
हृतियपिप्पली	३४	११		३६	६६
हम्म *			हव *		
-हम्मिहिति	२२	१६	-हवड	१	४४, ४५, ४८
-हम्मति	३५	११		२	३५
हम्ममाण	१२	२०		३	२०
ह्य	१	३७		११	७, १६ मे
	१८	३			३०
	३६	१८०		१८	५३
ह्यागीअ	१८	२		२५	३१
ह्य	७	५		२६	१३
	११	१५		२६	सू० ५१
			-हवति	१०	२१
	१३	२३		१२	३१

३२८

-हवति	१३	२७
	१४	१२
	३३	२४
-हविज्जा	१५	१०
-हवेज्जा	१६	सू० ३ से १२
हव्व (दे०)	२९	सू० २,३
हसिअ (य)	१६	सू० ७
	१६	५,१२
हस्स	२९	सू० २३
हा *		
-हायइ	१०	२१ से २६
-हायए	३६	१४
हार *		
-हारए	७	११
हार	३४	९
हारित्ता	७	१५
हालिद्दा	३६	१६,७२
हाव *		
-हावए	५	२३
हास	१	९
	१६	६
	१९	९१
	२४	९
	२५	२३
	३२	१४,१०२
	३६	२६३

परिशिष्ट २

हिएसअ	३४	२८
हिएसि	१३	५
हिङ्गुलुय	३४	७
	३६	७४
हिंस	५	९
	७	५
हिंस *		
-हिंसइ	२५	२२
	३२	२७,४०,५३, ६६,७९,९२
हिसग	१२	५
	३६	२५७
हिसा	१८	११
	३५	३
हिच्च	१४	३४
हिच्चा	३	१३
	५	१४
	७	८
	१८	३५
हिम	३६	८५
हिय	१	६,२८,२९
	२	१३
	८	३,५
	१३	१५
	१९	२६
	३२	१,११,१५, १६

द्वियय (अ)	२३	४५	हुण *		
	२६	सू० १३	-हुणामि	१२	४४
द्विरण	३	१७	-हुणासि	१२	४३
	६	४६, ४६	हुयासण	१६	४६, ५७
	१६	१६	हेउ	३	१३
	३५	१३		६	१४
द्विरिम	११	१३		७	११, २४
	३२	१०३		६	८, ११, १३,
द्विरिली (दे०)	१३६	६७			१७, १६, २३,
हीण	३६	६४			२५, २७, २६,
हीर *					३१, ३३, ३७,
हीरसि	२३	५५			३६, ४१, ४३,
हीरमाण	६	१०			४५, ४७, ५०
हील *				१३	२०
-हीलए	१५	१३		१४	१६
	१६	८३		२५	१०
-हीलह	१२	२३		२६	३४
हीला	१२	३०		२७	१०
हीलिय	१२	३१		३२	२२, २३, ३५,
	१	१३			३६, ४८, ४६,
					६१, ६२, ७४,
		३०			७५, ८७, ८८,
		३३			१००
		२६६			३६
		३१	हेट्टिम	१७	२०
		२२		३६	२१३, २१८

हो

परिशिष्ट-२

-अहोत्था	२०	१६	-होड	३३	५, १४, १६,
-हुति	२८	३०		३८	२०, ३४ से
-होइ	१	१५, २८, २९			४१, ४३, ४६,
	२	१३, २४, २८		३७	४८, ५२, ५३
	३	४, १८		३६	१८
	७	१८			६८, १६८,
	८	१५			२६६
११	२		-होक्खामि	२	५
१४	८, १६			५	७
१७	२१		-होज्ज	८	१
१९	१८, २१, ३५, ३६, ४०, ८०			३२	३२, ४५, ५८, ७१, ८४, ९७
२०	४१, ४२		-होति	३४	३८
२५	३० से ३२, ३६			३६	२५६, २७०
२६	३०, ३३		-होमि	२०	११
२८	२०, २३, २६, ३३		-होमो	२२	४३
३०	३, ८, १०, ११		-होह	१४	६
३२	८, ३३, ४६, ५६, ७२, ८५, ९८, १०६, ११०		-होहिइ	२७	१२
			-होहिसि	६	५८
				१३	३२
			होउ	२५	१३
			होम	१२	४३, ४४

जसा	१४	३	महापउम	१८	४१
दसणभद्	१८	४४	महावल	१८	५०
दसार	११	२७	महावीर	२	सू० १ से ३
	२२	११		५	४
दुम्मुह	१८	४५		२१	१
देवई	२२	२		२६	सू० १, ७३
नग्गइ	१८	४५	मिया	१६	१, ६७
नमि	६	२, ३, ५, ८,	मियापुत्त	१६	२, ६, ८, ६६
		११, १३, १७,	रहनेमि	२२	३४, ३७, ३६
		१६, २३, २५,	राईमई	२२	६, २६, ३६
		२७, २६, ३१,	राम	२२	२, २७
		३३, ३७, ३६,	रोहिणी	२२	२
		४१, ४३, ४५,		३४	१०
		४७, ५०, ६१,	वद्धमाण	६	२४
		६२		२३	५, १२, २३,
	१८	४५			२६
नायपुत्त	६	१७	वसुदेव	२२	१
पालिय	२१	१, ४	वासुदेव	११	२१
पास	२३	१, १२, २३,		२२	८, १०, २५,
		२६			३१
वभदत्त	१३	१, ४, ३४	विजय	१८	४६
वलभद्	१६	१	विजयघोस	२५	४, ५, ३४,
वलसिरि	१६	२			३५, ४२, ४३
भरह	१८	३४, ४०	सजय	१८	१, १०, १६,
भोयराय	२२	४३			२२
मघव	१८	३६	सति	१८	३८

सभूय	१३	३, ११
सगर	१८	३५
सणकुमार	१८	३७
समुद्दपाल	२१	४, ६, २४
समुद्दविजय	२२	३, ३६
सिवा	२२	४
सेणिय	२०	२, १०, १२, ५४
हरिएसवल	१२	१
हरिसेण	१८	८२

देशों व नगरों के नाम

उसुयार	१४	१
कम्पिल्ल	१३	२, ३
	१८	१, ३
कम्बोय	११	१६
कलिंग	१८	४५
कासी	१३	६
	१८	४८
कोसबो	२०	१८
गघार	१८	४५
चम्पा	२१	१, ५
दसण्ण	१३	६
	१८	४८
पचाल	१३	१३, २६, ३४
	१८	४५

पिहुण्ड	२१	२, ३
पुरिमताल	१३	२
वारगा	१२	२२, २७
भरह	१८	४०
भारह	१८	४१
मगध	२०	२, १०, १२
मिहिला	६	४, ५, ७, ६, १४
वाणारसी	२५	२, ३
विदेह	१८	४५
साक्थी	२३	३, ७
सुगीव	१६	१
सोरियपुर	२२	१, ३
सोवोर	१८	४७
हन्थिणपुर	१३	१, २८

पर्वतों के नाम

कालिजर	१३	६
केलास	६	४८
नीलवत	११	२८
मदर	११	२६
	१६	४१
रेवयय	२२	२२, ३३

समुद्रों के नाम

रयणागर	१६	४२
सयभूरमण	११	३०

वित्त	१२	१६
सडास	१६	५८
सयगधी	६	१८
सूल	१६	५१

धातु और रत्न

अक	३४	६
अजण	३६	७४
अब्भपडल	३६	७४
अब्भवालुया	३६	७४
अय	३६	७३
इन्डनील	३६	७५
उवल	३६	७३
उत्स	३६	७३
कस	६	४६
गेल्य	३६	७६
गोमेज्जअ	३६	७५
चन्दण	३६	७६
चन्दप्पह	३६	७६
तउय	३६	७३
तम्ब	३६	७३
पवाल	३६	७४
पुढवि	३६	७३
पुलअ	३६	७६
फलिह	३६	७५
भुयमोयग	३६	७५

मणोसिला	३६	७४
मरगय	३६	७५
मसारगल्ल	३६	७५
मुत्ता	६	४६
रुप्प	३६	७३
रुयग	३६	७५
लोण	३६	७३
लाह	१६	६८
लोहियक्क	३६	७५
वइर	३६	७३
वालुया	३६	७३
वेरुलिअ	३६	७६
सक्करा	३६	७३
सासग	३६	७४
सिला	३६	७३
सीसग	३६	७३
सुवण्ण	३६	७३
सूरकत	३६	७६
सोगघिअ	३६	७६
हसगब्भ	३६	७६
हरियाल	३६	७४
हिगुलअ	३६	७४
हिरण्ण	६	४६

वनस्पति

अवग	१६
अयसि	७

असण	३४	८
अस्सकणी	३६	६६
आलुअ	३६	६६
उच्छु	१६	५३
कद	३६	६८
कदली	३६	६७
कण्ह	३६	६८
कविट्टु	३४	१२
कालीपव्वग	२	३
किम्पाग	१६	१७
कुद	३४	६
कुडुबअ	३६	६७
कुहग	३६	६८
कूडसामली	२०	३६
केदकदली	३६	६७
खज्जूर	३४	१५
जव	६	४६
जावइ	३६	६७
णिहु	३६	६८
तिट्टुय	१२	८
तिगडु	३४	११
थीहु	२६	६८
निम्ब	३४	१०
सीलासोग	३४	५
पलडु	३६	६७
पोम	२५	२६

मुदिया	३४	१५
मुमुण्ढी	३६	६६
मूलअ	३६	६६
रोहिणी	३४	१०
लसण	३६	६७
लोहि	३६	६८
वज्जकद	३६	६८
सण	३४	८
सालि	६	४६
सिगवेर	३६	६६
सिम्बलि	१६	५२
सिरिली	३६	६७
सिरीस	३४	१६
सिस्सिरिली	३६	६७
सीहकणी	३६	६६
सूरणअ	३६	६८
हढ	२२	४४
हत्थिपिप्पली	३४	११
हलिद्दा	३६	६६
हिरिली	३६	६७

प्राणि

अच्छिरोडअ	३६	१४८
अच्छिल	३६	१४८
अच्छिवेहअ	३६	१४७
अणुल्लअ	३६	१२६

अन्विय	३६	१४६	कुल्ल	१४	४६
अरिदुग	३४	४	कोडल	३४	६
अलस	३६	१२८	कोल	१६	५४
अस्स	२०	१४	खलुक	२७	३
अहि	३६	१८१	गवहत्तिय	२२	१०
आइण्ण	११	१६	गवल	३४	४
इदकाइय	३६	१३८	गाहा	३६	१७२
इदगोवग	३६	१३६	गिद्ध	१६	५८
उक्कल	३६	१३७	गुम्मी	३६	१३८
उड्डस	३६	१३७	गो	३४	१६
उद्देहिय	३६	१३७	गोण	३६	१८०
उरग	१४	४७	गोह	३६	१८१
ओहिजलिय	३६	१४८	चन्दण	३६	१२६
कथग	११	१६	चम्म	३६	१८८
कच्चम	३६	१७२	चास	३४	५
कट्टहार	३६	१३७	चित्तपत्तअ	३६	१४८
कप्पासट्टि मिज	३६	१३८	जलकारी	३६	१४८
कागदुहा वेणु	२०	३६	जलूग	३६	१२६
कावोय	१६	३३	जालग	३६	१२६
किमि	३६	१२८	डोल	३६	१४७
कीड	३६	१४६	ढक	१६	५८
कुक्कुण	३६	१४६	ढिगुण	३६	१४६
कुच	१४	३६	तउममिज	३६	१३८
कुन्कुड	३६	१४७	तनवग	३६	१४८
कुन्धु	३६	१३७	तणहाग	३६	१३७
कुग्गी	२०	५०	तिदुग	३६	१३८

दस	१६	३१	मूसग	३२	१३
नदावत्त	३६	१४७	रोहियमच्छ	१४	३५
नाग	१४	४८	रोज्झ	१६	५६
नीय	३६	१४८	लोमपक्खि	३६	१८८
पत्तहारग	३६	१३७	वराडग	३६	१२६
पयग	३२	२४	वसह	११	१६
पल्लोय	३६	१२६	वासीमुह	३६	१२८
पारेवय	३४	६	विचित्त	३६	१४८
पिवील	३६	१३७	विच्छिअ	३६	१४७
पोत्तिय	३६	१४६	विययपक्खि	३६	१८८
बलागा	३२	६	विगली	३६	१४७
बिराल	३२	१३	वीदसअ	१६	६५
ममर	३६	४६	सख	३६	१२८
भारुड	४	६	सखणग	३६	१२८
भिगारी	३६	१४७	सदावरी	३६	१३८
भुजग	१४	३४	समुगपक्खि	३६	१८८
मगर	३६	१७२	सिगिरिडी	३६	१४७
मच्छ	३६	१७२	सिप्पी	३६	१२८
माच्छय	३६	१४६	सीह	३६	१८०
मसग	३६	१४६	सुपुमार	३६	१७२
महिस	३२	७६	सुणग	३४	१६
माइवाहय	३६	१२८	सुय	३४	७
मालुग	३६	१३७	सुवण्ण	१४	४७
माहअ	३६	१४८	सोमगल	३६	१२८
मिग	३२	१३७	हस	१४	३३

शुद्धि और आपूरक पत्र-१

मूल पाठ

द्वैतकालिक

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
१४	५।३	कमं	कम्मं
१५	११।२	पावग ?	पावग
२१	३१	(एवं ३४॥)	(एव)
२८	६३	(एव ६३॥)	(एव)
२७	८६।४	पडिक्कम्मे	पडिक्कमे
३३	८७।८	ईमं	इम
३८	३८।२	कवल्ल	कंवल्लं
४६	२८।३	नाभो	नाभी
८७	८३।३	अविक्किय °	अविक्किय °
५०	१।१	आयार °	आयार °
५०	४।१	भित्ति	भित्ति
५०	८।२	व	वा
५७	१।१	सिक्ख	सिक्खे
६१	४।३	° मेज्जनि	° मेज्जनि
७५	२०।३	निकवम्म	निकवम्म
८२	७।२	गया	गओ
८३	१२।३	कि	किं

उत्तराध्ययन

८८	६।३	मनगि	मनगि
१००	१६।८	वोहि	वोहि
१२०	३।१	मो	मो
१२३	१७।३	गयगिमि	गयगिमि
१२६	८८।१	° न्यम्म	° न्यम्म
१२७	१८।१	उत्तमो	उत्तमा
१३८	३०।१	अवउगिन्ध	अवउगिन्ध

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
१४२	१५११	भावधरा	भारधरा
१४२	१६१४	दहाम्	दाहाम्
१५२	२३१४	० मेव	० मेव
१५८	१८१२	तेल्लामहा तिलेमु	तेल्ल महातिलेमु
१७०	प ८	कुडुत्तसि	कुडुत्तरमि
१७३	१३११	गत ०	गत्त ०
१७५	११२	मुणित्ता	मुणित्ता
१७६	१०११	अहम्मीति	अहमस्सीति
१८२	४०१२	भरह	भरह
१८३	४७११	सवीर ०	सोवीर ०
१८६	४११३	निहुय	निहुयं
१९०	५०१२	० वालुए	० वालुए
१९३	७७१२	मिगे	मिगो
२०६	४११	धरणी	धरणी
२३२	१३१४	महानुणि	महामुणि
२३४	३४१३	लय	तय
२३८	१०१३	निउत्तेण	निउत्तेण
२३९	२४१२	वा	ता
२४३	४७१३	य	×
२४४	७१४	उज्जाहिता	उज्जहिता
२४७	४१३	तु	×
२४९	२०१३	रीयतो	रोयन्तो
२५५	प ६	अणगारेए	अणगारे
२५६	सू०२४	पभावेण	पभावे ण
२५६	सू०२५	खवेइ	अन्नाण खवेइ
२६६	सू०६०	विणुस्सइ	विणस्सइ
२६६	सू०७४	कम्माइ	कम्माइ
२७५	३७११	एव	एय
२७७	१७११	० णावणाहि	० भावणाहि
३०५	४१३	खजणण ०	खजणजण ०

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
३०६	१०।१	कडुय	कडुय
३१७	१	'मे एगगमणा'	मेगगमणा
३३०	६५।१	लयावलय	लयावलय
३४६	२६६।३	कारणेहि	कारणेहि

शुद्धि और आपूरक पत्र-२

पाठान्तर

दशवैकालिक

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
२	पा० १	कइज्हं	कइज्हं
३	पा० ६	सपन्ता (अ,ज)	सपन्ता (अ,ज), सबुद्धा (आ)
४	पा० १	(अ)	(आ)
५	पा० ८	(क,ख,)	(क,ग)
७	पा० ४	(जिचू पा०, जिचू पा०)	(अचू पा० जिचू पा०)
७	सू० ६	एसो ^१ खलु	एसो खलु ^५
८	पा० १	(अचू)	(अचू सू० १०-२२)
१०	सू० १५	'गामे वा' ^१ नगरे वा रणे ^२ वा	'गामे वा नगरे वा रणे ^१ वा ^२
१०	पा० १	×(क,ख,ग,घ, हाटी०)	अरणे (अचू)
१०	पा० २	अरणे (अचू)	×(क,ख,ग,घ, हाटी०)
११	सू० १८	सलागाए वा' ^३	सलागाए वा सलागहृत्येण वा' ^३
१२	पा० ३	उज्जालावेज्जा	उज्जालावेज्जा
१४	पा० १	इडगसि वा	इडगसि वा
१८	पा० ६	कट्ट	कट्ठं
२१	पा० ४	६—हारताल °	६—हरिताल °
		७—हिगोलए °	७—हिगोलुय °
		१४—सोरट्टिय °	१४—सोरट्टिय °
२३	पा० २	(अ,ज)	(अ)
२७	८४१३	वा वि	'वा वि' ^१
२७	८४१४	'वा वि' ^१	वा वि
३१	पा० २	(आ,जा,ह)	(आ,जा,हा)
३६	पा० २	(आ,ज)	(अ,ज)

उत्तराध्ययन

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
८७	पा०२	जाहिताणं (वृ०, चू०)	जहिताणं (वृ०, चू०), चइत्ताणं (वृ०पा०)
८८	पा०७	(वृ०, चू०) ।	(वृ०, चू०) , अप्पाचेव दमेयज्जो (वृ०पा०) ।
८९	पा०१	(अ, उ, म,)	(अ, उ, ऋ)
९२	पा०१, २	(चू०पा०)	(चू०)
९२	पा०३	(अ, उ, ऋ), किल्ली ति(ऋ) ।	(अ, उ), किल्ली य(वृ०) ।
१०३	पा०२	(वृ०पा०, चू०पा०) ।	(ऋ, वृ०पा०, चू०पा०)
१०३	पा०७	पीहाति	पीहति
१०९	पा०२	आधा °	आधा °
११०	पा०२	(चू०, वृ०पा०)	(चू०पा०, वृ०)
१११	पा०१	(सु)	(स)
११९	पा०१ पं०४	(चू०)	(चू०पा०)
११९	पा०२	सेवए णिसेवए	सेवए णिसेवए
१३२	पा०३	(उ, म, वृ०),	(उ, ऋ, वृ०),
१३६	अ०११	बहुस्सुयपुज्जा	बहुस्सुयपुज्ज
१३७	१५।२	'निहिय दुहओ' ^२	'निहिय दुहओ वि' ^२
१४७	पा०२	सुसंबुडा	सुसंबुडा
१४७	पा०४	वोसट्ट °	वोसट्ट °
१५०	पा०५	वित्तधण °	चित्तधण °
१८२	पा०८		× (आ, इ, स)
१८३	४७।२	चेच्चा ^३	'चेच्चा रज्ज' ^३
१८५	पा०३		× (आ, इ, सु, चू०)
१८८	३४।४	° पालिउ	° पालिउ ^३
१८८	३७।१	वालुयाकवले ^३	वालुयाकवले ^४
१८८	३७।२	उ ^४	उ ^५
१८८	पा०	३—	४—
१८८	पा०	४—	५—
१९९	पा०१२	पा० टि० ७	पा० टि० ८

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२००	पा०४	अणुत्तरमणुव्वया (उ, ऋ, वृ० पा०)	अणुरत्तमणुव्वया(उ, ऋ), अणुत्तरमणुव्वया (वृ० पा०)
२०७	पा०४	जहिज्ज समंथ(वृ०), जहित्तुऽसमंथ (चू०), जहित्तु संगंथ ° (सु)	जहित्तु संगथ (वृ०), जहित्तुऽसमंथ (चू०), जहित्तु संगंथ (सु)
२१४	पा०८	से ओ	सेओ
२१६	पा०१,३		× (अ,इ,ऋ,स,सु)
२४२	पा०५	से से 'गुरु'	सेसे गुरु'
२४८	पा००	° तवेड या	तवे इ या
२५५	सू०६ पं०४	उज्जुभावपडिवन्ने ^६	'उज्जुभाव पडिवन्ने य ण' ^६
२५६	सू०७ पं०३	'पडिवन्ने य' ^५	'पडिवन्ने य ण' ^२
२६१	सू०३४ पं०५	अणासायमाणे ^३	अणासायमाणे
२६१	सू०३५ पं०३	निक्कखे ^६	निक्कखे ^३
२६१	सू०३६ पं०२	जीविय्याससप्पओग ^५	जीविय्यासंसप्पओग ^४
२६१	सू०३६ पं०२	वोच्छिन्दइ ^६	वोच्छिन्दइ
२६१	सू०३६ पं०३	वोच्छिन्दित्ता	वोच्छिन्दित्ता ^५
२६१	पा०	२—'नो आभाएइ' °(वृ०)	२—× (उ, ऋ, वृ०)
		३—	×
		४—	३—
		५—	४—
		६—	५—
२६३	पा०६	वन्धाणि	वन्धणाणि
२६५	सू०५१ पं०५	परलोगधम्मस्स ^२	'परलोगधम्मस्स आराहए' ^२
२६५	सू०५५ पं०२	'निव्वियारेणं जीवे' ^४	'निव्वियारे' ° 'ज्जाणगुत्ते' ^५
	पा०	४—	५—
	पा०	५—	४—
२६६	पा०६	(वृ० पा०)	(वृ०)
२७२	१ ६।३	'द्व्वजो खेत्तकालेण' ^८	खेत्तकालेण ^८
२७२	पा०१	° कालाय	° काला य
२७२	पा०१	चउत्थोउ	चउत्थो उ

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२८४	२५।२	'उ उवेइ दुक्ख' ^२	'उवेइ दुक्ख' ^२
३०२	१०।३	'कसायमोहणिज्ज' ^३	'कसायमोहणिज्ज तु' ^३
३०३	२४।४	जीवेसु ऽइच्छिय ^३	जीवेसुऽइच्छिय ^३
३०३	पा०	३-स इच्छिय (उ,सु), अहिच्छिय (स)	३-जीवे स इच्छिय (अ,सु), जीवे अहिच्छिय (स)
३०५	६।२	कोइलच्छदसन्निभा	कोइलच्छदसन्निभा ^२
३०५	७।२	तरुणाइच्चसन्निभा ^२	तरुणाइच्चसन्निभा
३०५	पा०२	० च्छावि ०	० च्छवि ०
३०६	६।४	उ ^२	उ
३०६	१०।४	उ ^३	उ ^२
३०६	१२।२	तुवरकविट्टस्स ^४	तुवरकविट्टस्स '
३०६	पा०२		×
३०६	पा०	२, ३—	२—
३०६	पा०	४—	३—
३०६	पा०	५—	४—
३०६	२६।१	उप्फालगदुट्टवाई ^४	'उप्फालगदुट्टवाई य' ^४
३१२	पा०३	पलियमसख	पलियअसंख
३१५	पा०४		न ह्व कस्सवि उववत्ति (वृ०) । न वि० (वृ० पा०) , न ह्व ० (उ, ऋ, सु) ।
३४५	पा०५ पं०४	वियाहिय	वियाहिया
३४६	पा०२	२४८, २४९	२४८ से २६८
३४८	२६१।२	बहुणि ^१	'य बहुणि' ^१

शुद्धि और आपूर्क पत्र-३

उत्तराध्ययन शब्द-सूची

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
६३		अइमन्त	अइमन्त
६४	अंत	२८।४१, ५८, ६१, ७३, २६।सू०१	२६।सू०१, २८, ४१, ५८, ६१, ७३
६५		अंतरमासिल्ल	अंतरभासिल्ल
६६	अकिचण	१४।१५	×
६६			अकिच्च १४।१५
६७	अगारि	२७।२२	७।२२
६७		अग्ग *	अग्घ *
६८		अजाणमाण	अजाणमाण
१०४	अणुभाग	३४।१	३४।६१
१०४		अणुरत्त	अणूरत्त
१०६		अतित्ति	अतित्ति
१०६	अत्य (अर्थ)	२६।सू०२, ४८	२६।सू०२१, ४८
१०७	अदत्त	३२।४२ से ४४,	३२।४२, ४४
१०६	अप्प (आत्मन्)	१४।४६	१४।४८
१११		अवभचरि	अवभचारि
१११		अवभाइय	अवभाह्य
१११		-अवभट्टेइ	-अवभट्टेइ
१११		अवभुट्टिच्चा	अवभुट्टिता
११२		अभिगमरूड	अभिगमरूड
११०	अभिभूय (अभिभूय)	१५।३	१५।०
११०		अलित	अलित्त
११७	अनण (अशन)	२।३०	२।३
११८	अमायावेयणिज्ज	००।४०	×
११८			अनार १६।१४, २२, ००।४०
११८		अम्मविणी	अम्मविणी
११८		अट्टिमया	अट्टिमया

३५०

दसवेआलिय-उत्तरज्मयण

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१२०		अहुणेववन्त	अहुणोववन्त
१२०	आइ	(दि०)	(दि)
		२६।सू०३	२६।सू०४
१२१	आउकम्म	३२।२,	३३।२
१२१	आउट्टिइ	३६।१३२ से १४१	३६।१३२, १४१
१२१		आगन्तु	आगन्तु
१२३		-आमन्तयामो	-आमन्तयामो
१२३		आमीस	आमोस
१२३	आयय *		-आययन्ति ३।७
१२३	-आयरे	२४।७	२४।२७
१२३	आयहिअ	२१।१२	२१।२१
१२४	आराहणया	२६।सू०४६	२६।सू०५१
१२४		आरूह *	आरूह *
१२४		-आरूहइ	-आरूहइ
१२७		-आहारेज्जा	-आहारेज्जा
१२८		इक्कतीसइ	इक्कतीसइ
१२६	ईसाणग	३६।२१	३६।२१०
१३०	उक्कोस	३४।४६ से ५०	३४।४६, ४८ से ५०
१३०	उग्ग	१८।५०	१५।६, १८।५०
१३१	उज्जाण	१८।३४	१८।३, ४
१३१			उज्जुपन्त २३।५६
१३१	उज्जुभाव	२६।सू०६,	२६।सू०१,
१३१		उज्जेय (उद्योत)	उज्जेय (उद्योत)
१३२	उत्तम	१८।४१	१८।४०
१३२	उदग(क,अ)	८।८	८।६
१३२	उदहि		३६।२०६
१३३		उद्धतुकाम	उद्धतुकाम
१३३	उरग	१४।४७, ३६, १८१	१४।४७, ३६।१८१
१३४		उल्लघन	उल्लघन
१३४	उवट्टिअ(य)	२०।२२	२०।८, २२
१३५	-उवट्टिअई	२५।३६	२५।२६, ३६

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१३७	एक	१३।३	१३।३, ०३
१३७	एग	१।२६, ३३	१।२६, ३३, २।१८, ५।१, ५, ००, ६।८, ७।१४, १५, ८।७, ९।३४, ४६, १४।१, १६।८३
१३७	एगत	१६।३८	X
१३७	एगमा	२६। सू०३१,	२६।सू०३६,
१४३	कम्म	३३।१,	३३।१, ३
१४३			कम्मगण्टि २६।सू०३०, ७०
१४३	कम्मपयडि	२६।सू०२३	२६।सू०३३ ३३
१४३	कर	१३।२७	१३।२७, १।४।८
१४७	काय	३३।८१, ८२, ८६ ३६।६०, १०३	३६।८१, ८२, ८६, ६०, १०३
१४७	कारण	६।२६, से ३३ ४४,	६।२६, ३१, ३३ १५,
१४८	काल	२६।३७,	२६।३७, ४२, ३३।१३
१४६	कासी	१८।४८	/
१४६			कामीगय १।८।८
१४६	किल्लर	१६।६	१६।१३
१५१	कुदसण	२८।१८	२८।०८
१५१	कुदिट्ठि	२८।३६	२८।३६
१५१	कुल	२०।४०, ४२	२०।४०, ४३
१५६	गअ	६।३, १०, ३६, ३७	६।३, १०।३३, ३७
१६८		चिट्ठमाण	चिट्ठमाण
१६६	छत्त	१८।४२	X
१७५	जाणित्ता	१।३४	१।४३
१७८		जीवाजीवविभक्ति	जीवाजीवविभक्ति
१६८	देविद	६।२३, २७,	६।२३, २५, २७,
२०२		वारेह	-वारेह
२०७		-नामड	-नासेड
२०७		निकखमे	-निकखमे
२०८	-निज्जगेड	२६।सू०३७,	२६।सू०३८,

३५२

दसवेआलियं-उत्तरज्मयण

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२०६		निदहे *	निदह *
२१६	-पगरेह	१२।३६	X
२२०		पडिसविक्ख *	पडिसविक्ख
२२२		पन्मवय	पन्मवय
२४१		-फ से	-फासे
२४६		-अब्बवी	-अब्बवि
२५३		भुज	भुज *
२५३	-भुजिज्जा	३५।१५	३५।१७
२५४		जभुयिा	भुजिया
२६०	मल	२५।११	२५।२१
२६८	मोह	२०	२०।६०
२७३	रेवयय	२२।२२,२३	२२।३३
२८६	विमोयणया	२६।सू०७१	२६।सू०७२
२९१		विवज्ज त	विवज्जयत
२९२		विस	विसम
२९४		वुक्कस	वुक्कस
२९६		सजअ (संजय)	सजअ (सजय)
३०१		-सतसन्ति	-संतसन्ति
३०५	सत्त (सत्व)	१४।१८,४३	१४।१८,४२
३१७	-सिज्झन्ति	२६।सू०१	X
३२७	हरिएस	१-।२७	१२।३७